

114 B

DIONYSII

HALICARNASENSIS

ANTIQUITATVM ROMANARVM

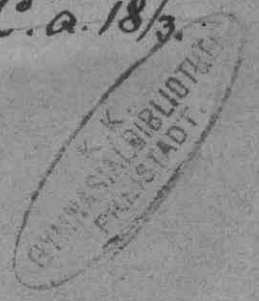
QVAE SVPERSVNT

RECENSIT

ADOLPHVS KIESSLING

VOL. IV

*C. a. 18/3.*



LIPSIAE

IN AEDIBVS B. G. TEVNERI

MDCCLXX.

ADNOTATIO CRITICA.

LIBER X

1 post inscriptionem libri haec leguntur in *AB*:  
 ἡ δεκάτη βύβλος τῆς ἑαταικῆς ἀρχαιολογίας ἣν συνέγραψε  
 [συνεγράφητο *A*] Διονύσιος ὁ Ἀλεξάνδρου Ἀλικαρνασσεύς  
 περιέληψε τὰ προαχθέντα ὑπὸ Ῥωμαίων ἀπὸ τοῦ πρώτου  
 τῆς ὀγδοηκοστῆς ὀλυμπιάδος ἔτους καὶ ἀπὸ τῶν (om. *A*)  
 ὑπάτων Ποπλίου Οὐλομανίου καὶ Ποπλίου Σολπικίου.  
 χρόνος τῶν ὑπὸ τῆς βύβλου δηλουμένων πράξεων ἔτη δεκα-  
 δύο: ~ Μετὰ δε κ. τ. λ. | 4 Σερούλιος *AB* | Μακερίνος  
*B* | 5 στρατεία *B* | 16 βασιλεῖς ἐφ' αὐτῶν maluit Reiske |  
 20 ἔργα *A* εἶτα *Ba* ἔργα εἶτα *Bb* | καὶ δὴ καὶ ἡ τοῦ δικαίου  
 δ. Reiske.

2, 3 τοῖς ἐπιτρόποις libri, corr. Reiske qui et ἀκό-  
 λουθα ἢ post ἀρχόντων transponenda censuit | 5 βίβλοις  
*ABb* | 8 γεωροῦντες διὰ libri, καὶ inserui | 11 Τεργέντιος  
*AB* | 13 στρατοπέδου *A* | 15 αὐτῶ maluit Reiske.

3, 2 διανοίας? | 3 ὅμοια τότε συνέπιπτεν c. Reiske. |  
 4 ἦτιον δὲ καὶ μᾶλλον *AB*, correxit Sylburg | 5 δὲ inse-  
 rui ex *B* | 8 ἔτι μετάρσια Reiske | 9 προσπετόμενα — ὅσα  
 ἔστιν ἀγελαια maluit Casaubonus | 10 τὴν addidi ex *B* |  
 12 διέμεινεν Casaubonus inseruit, quo vocabulo addito  
 κείμενα fortasse delendum est | οἷα πάσχουσι Casaubonus  
 ὄλαν ἴσχουσι libri | 14 διαλυόμενοι libri, quod correxi |  
 22 ἀποτρέψαι *B* ἀποστρέψαι *A* | ἔσεσθαι *A* | 23 ἱερεῖα ma-  
 luit Stephanus | 29 καταλύσασθαι δεῖν?

a.\*

4, 1 καὶ πῶς omisi cum B | παύσεται τὸ στασιάζον A | 7 ἀνάξιον δοῦν οὔτε ἄδικον A ἀξιούν οὔτε ἄδ. B | 10 ἔσεσθαι] γενέσθαι? | 11 ἕθνη libri ἤθη Sylburg | 14 οὔτε δημόσιον οὔτ' ἴδιον maluit Reiske | 15 ἐρίνετο AB | 16 μὲν addidi ex B | 18 εἰς ἐκκλησίαν? | 24 φρονίμους AB, correxit Sylburg.

5, 16 ἐπιτρέψουσιν (A) | 20 φανερωτάτου? | 23 ποίαν uolgo ποίας AB | 32 ἀρχαιρεσίων B.

6, 1 οὐκέτι addidi ex B | 4 ἀρχαιρεσίων B | 8 ἐν τι B ἔτι A | 16 ἴδια om. B | 19 αὐτὸν libri | 24 πρὸς λόγους coniecit Reiske | 30 αὐτοὶ B αὐτὸν A.

7, 27 μόνον μὴ Bb μόνον ABa | 28 εἰς ὀλίγους scripsi εἰς λόγους libri | 32 παρὰ τῶν πολιτῶν?

8, 1 πάσας libri | 2 τὰριστιᾶ? | 5 ἀντι addidi ex B | 13 τὸ addidi | 14 Κόιντε AB | 16 πάρεστιν libri περίεστιν Reiske | 24 νῦν γ'? | 25 μεθ' ἡμῶν maluit Portus | 26 τε om. B | 29 ὅτι ἡγνόεις A.

9, 1 ἐπιτρέφων libri, correxit Stephanus | 16 νῦν γε δὴ ἦνικα maluit Reiske | 25 εἰς om. B | 26 ὡς ἂν AB ὅσ' ἂν scripsi | εἰς τούτων ἕνα εἶπεν coniecit Reiske | 31 ὁμότητα καὶ add. B | 32 τοσαῦτα addidi ex B.

10, 7 μου addidi ex B | 9 ἐρίνετο libri quod correxi | 14 Λευκίου δὲ addidi ex B | 17 τῶν ὑπᾶτων add. AB | 19 προέλθοιμι libri, correxit Reiske | 30 ἡ τοῦ δαιμονίου πρόνοια maluit Stephanus.

11, 4 χορήμασι δὲ ἐγγνηθὲν B | 11 ψευδῆ om. B | 12 ὡς A ὅτ' B | 16 Τεβέριος B | 19 τὴν πόλιν Reiske | 29 τοὺς αὐτοὺς B.

12, 13 τῷ βιαίῳ τρόπῳ mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 345 | 18 δι' ἧς καταπλήξονται μὲν τὸν δῆμον ἀναβαλοῦσι δὲ libri quae correxi; partem veri viderat Stephanus qui καταβαλοῦσι coniecerat | 25 ταῦτα om. A | 31 εἶπαν Ba.

13, 1 προσίδη τούτων ἄδικα AB, correxit Sylburg | 3 ἂν om. B | 4 δηλώσομεν et 5 πράξομεν Bb | 5 δέοντα A δόξαντα B | 8 παρηγγέλλετο AB | 15 ἀγείραντα libri quod correxi | 18 καταλυθείη B | 27 προσελθόντες libri, quod correxi.

14, 2 τὸ om. B | 12 νεωστὶ om. A | 23 εἶεν libri εἰδὶν scripsi | 25 τι add. B | 28 ἄλλους aut abesse maluit Reiske aut scribere ἄλλους [τε πολλοὺς καὶ μάλιστα] τοὺς; ἀθρόους Grasberger Philol. XXVIII, 346 | 32 καὶ ἀναιρεθῆναι?

15, 5 ἡμετέρων (A) | 9 προτείνονται A | 11 δὲ omisi cum B | 12 ἤξει B ἤξειν A | 17 χωρῆσιν quod correxi addidit A om. B.

16, 1 μνημόνων A | 8 ἡμᾶς AB quod correxi | 12 καὶ om. B | 16 ἢ B εἰ δὲ μὴ που A | 24 πώποτε add. B | 26 ἀξιόσομεν Bb | 27 ποιείτε B | 28 οὐκ deleui cum B | 30 οὕτως addidi | 32 οὐ Ba οἷς ABb.

17, 8 συγχωρεῖν addidi ex A, om. B | 13 ὡς om. B | 15 ὄντος B οὕτως A quod fortasse praestat. | 20 οὕτως ὄν μέγα A | 24 εἰ om. B | 28 πρώτες om. A | 32 τὸ om. B | βούλημα libri, quod correxit Sylburg.

18, 2 ἐπιβαλόμενοι Reiske | 3 νῦν aut delendum aut in κατὰ νοῦν mutandum censet Reiske; an νῦν τε ὑμῶν? | 7 ἀξιώσι Ba ἀξιώση Bb A | 14 μὴ del. Sylburg et Reiske, et abfuit ab Ba | 17 δόξῃ] δοκῇ B | 21 τὴν addidi ex B | τε addidi ex B | 32 τῶν ἀντιπάλων Grasberger Philol. XXVIII, 346.

19, 2 συμβουλευόντας καὶ omisi cum B | 5 εὐαγεστάτων A | 7 Οὐρεγνίε καὶ ὑμεῖς οἱ τὰ δ. maluit Reiske | 13 τί οὐκ ἄγετε proposuit Reiske | 14 πρώτου Reiske | 17 μνόμενα B γενόμενα A | 21 ὑμῶν A ἡμῶν B | οὐ καθ' ἡμῶν σ. ἀλλὰ κατὰ τούτων δ. maluit Reiske | 22 μάτην κρύψαντες coniecit Reiske | 30 ἀθρόως libri, quod correxi.

20, 6 ἕνα συντέμω Reiske συντέμω A συντεμῶ B | 7 παύσομαι libri, correxit Reiske; an v. 8 παραινῶν rependendum? | 9 ἐκφέροντας libri quod correxi | 12 τι om. B | 32 συμπράττων mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 346.

21, 5 τοὺς om. libri, addidit Reiske | 9 Τεβέριος B | 16 ἀκλειστοὶ ἀνεμμένα coniecit Reiske | 17 Καρμεντίνας libri quod correxi | 18 εἶχε libri εἶλε scripsi | 26 ἀνελάβοντο AB | 30 οὐδεμίαν om. B.

22, 6 καὶ om. Ba | 24 ἐγνώσθη κεκρατημένα τὰ τῆς π. maluit Sintenis Em. D. III, p. 15.

23, 1 ὁμῖν libri, quod correxi | 3 ἡμῖν A ὁμῖν B | 11 τῆς om. B | 16 συνάροηται AB συναρῆται Ba | 26 πολέμου; | τὰ γε δίκαια libri, correxit Sintenis l. I. III, p. 25 | 27 aut διαφορὰς aut παρατριβὰς coniecit Reiske | 31 ὁμοσεν libri ὁμολόγησεν scripsi | συναίρηται Ba.

24, 1 προσθεῖναι libri, correxit Hudson | 13 ὑπὸ — σημαίας maluit Sylburg | 14 καὶ om. Bh | 17 ὁ κληῖρος om. Ba | 24 verba ὅσα τῆς πόλεως ἐντὸς ἣν vix sana videntur | 30 μόνων?

25, 3 ἐρίνετο B | δ' ἦ | δὲ AB | 7 ὑπὲρ] ἐπὶ maluit Reiske | τῶν λόφων B | συμφέροντες B | αὐῶν scripsi αὐτῶν A om. B | 17 ἀσκήσαντες scripsi καταστήσαντες libri | 29 ἐπιλιπόντων maluit Reiske.

26, 32 καὶ add. B.

27, 10 ἀπολειπομένων libri, quod correxi | 13 παραληφόμενος τὸν ἀνδρα? | 19 τε add. B | 22 ἀμφισάμενος AB.

28, 9 τὸ σώζειν] ἀποσώζει? | 16 Οὐολούσκους B | 19 post ὁμαμόκασι in B tres litterae erasae; an ἦδη? | 20 πολεμίους? | 24 χησασθαι libri correxit Stephanus.

29, 4 τελείσθαι libri τελέσαι scripsi auctore Reiskio | 9 ὅλης τῆς ἡμέρας A | 22 post ἀραπήσαι πολλάνισ intercidisse suspicatus est Reiske | 24 ἐπεὶ A ἐπὶ B.

30, 20 καὶ om. B | ἀνδρας πολλοὺς A ἀνδρας μὲν οὖν πολλοὺς B; οὐ addidi auctore Reiskio | 22 σωσάμενοι? | διὰ τῶν ἐναντίων πυλῶν coniecit Reiske | 27 ὑπὸ τῶν διαφυγόντων?

31, 19 Τυσιλάνφ A Τυσιλάνων B | 20 ἐλαύνων om. B.

32, 2 Ἀλυιδον Ba | Ἀλγηδόνα ABb | 8 δὲ om. Ba | 10 πεῖροι οὖν ἀλαλάξαντες B, correxit Reiske | 13 ἐφρευγον B φεύγοντες ἐσκεδάννυντο A | 19 ἐν om. B.

33, 4 αὐτῶν om. B | 21 ἦσαν δ' οὐ πολλοί? | 29 χῶραν?

34, 4 παραλαβὸν Ba παραλαβῶν ABb παραλαβόντες scripsi | 19 ἐν τοῦ φανεροῦ? | 27 γράγγος ABb hic et passim.

35, 2 ἔφερν A | 26 λαλεῖτε· φηγὸν δείξας Reiske | 32 ἱερεῖς A quod recipere debui.

36, 15 φιλοῖς B ὑψηλοῖς A | 19 βιάσασθαι δὲ? | 21 αὐτὸν libri αὐτῶν Sylburg auctore Gelenio | 28 ἀναγκαιότατον libri, correxit Sylburg.

37, 4 ὀλίγοις B τοῖς ἄλλοις A | 7 πολιτῶν libri βουλευτῶν scripsi | 10 Κόιντιον praeter libros addidi | 22 ἐκοσμεῖτο B | 25 ἀλλὰ καί?

38, 4 γεννοῖον libri quod correxi | 6 λαβῶν libri παραλαβῶν coniecit Reiske | 7 ἦκεν libri ἦγεν Reiske | 15 τὰ πολέμια seclusi, nisi malis καὶ τὰ πολέμια δεινός | 20 πάλιν add. B | αὐτοῦ B | 21 ὁ addidi | 25 ἐπιέναι? | 26 οἱ om. B | 28 πανταχόθεν? | 29 διαλεξόμενοι? | 31 σώμασιν B, an σώμασιν ἄδειαν?

39, 2 χησασθαι libri, correxit Sylburg | 10 τῶν Δικαιῶν addidi ex B | προήεσαν libri ἀπήεσαν scripsi | μετὰ τοὺς Ba μετὰ τ' οὐ Bb | 14 καθ' ἓνα addidi ex A | 17 περὶ libri ὑπὲρ Portus.

40, 3 ἀγαθῶν A om. B | 5 παντὶ B πάντη A | νόμφ libri, correxit Sylburg | 10 τε deleui cum A | 17 μετελήφει AB | 26 παρέλαβε libri, quod correxi.

41, 2 ἐν om. B | 5 hiatum significavit Sintenis em. Dion. III 9 καὶ τὴν πόλιν κατέσχον αὐτοὶ intercidisse suspicatus | 6 . . . ριῶνα Ba βοιῶνα Bb βιριῶνα A | 9 γὰρ addidi ex A | 15 ἀνέστρεψαν om. ABa.

42, 8 φερούμενης A | 18 ἀπεφῆναιτο μάλιστα ABa ἀπεφῆναιτο ἐν ἣ μάλιστα Bb; in ἐν ἣ exitum participii ut [πᾶσι κεχαρισμ]ῆνην latere suspicor, nisi ut a correctore fictum deleas | 19 πείθει B | 22 ἀναβάλλεσθαι Ba | 23 πλησιάζοντα maluit Stephanus | 29 ὑπὲρ addidit Reiske.

43, 3 ἐν αὐτῇ vix sana | 5 ἀπολήψεσθαι Ba ἀπολελήψεσθαι maluit Reiske | 28 χρόνον A om. B | εἰ om. ABa, add. Bb.

44, 1 τὸν περὶ? | 4 ἡμεῖς add. B | 5 ὁ om. B | βλος ἡμαῶν A | 21 ἐγκαταλιποῦσι B | 24 ταύτην γε διαφεύξεσθε coniecit Reiske | 28 οὐ γὰρ δὴ? | 31 τὰς δὲ A τὰ δὲ B τοὺς δὲ maluit Sylburg.

45, 4. ὀρῶντες delet Cobet N. L. p. 272 | 16 λέγεσθαι add. B | 19 ὁ om. AB | 31 καταστησάμενοις?

46, 3 τῷ μεταδοῦναι Ba | 17 ἐνεγκάμενος B εἰς ἐν συνενεγκάμενος coniecit Reiske | 25 τὸν add. B | 29 ἐν τῇ libri ἐπὶ τῇ Sylburg.

47, 11 πλείους Sylburg πλείστους libri | 14 ἄρχον libri, correxit Sylburg.

48, 1 πολλὴν τῆς χώρας Grasberger Philol. XXVIII, 346. | 8 τινα addidi ex B | 9 πλέον addidi ex coniectura Reiskii | 14 πρώτοις B | 17 ἱσμαιίους ABa | 23 ὄκητο libri, quod correxi | 31 ὑπὸ τῶν ὑπάτων addidi ex B.

49, 1 ἰψάντες Ba | 3 ὑβρίσθαι δοκοῦντες B | 10 ἐπιβαλλόμενον scripsi βαλλόμενον B βουλλόμενον A | 12 ὅπερ scripsi ὁ γὰρ B ἀλλ' ὁ ἂν A | 13 τοῦτ' εἶναι κύριον omissa ab AB seclusi | 22 ἐφῆκαν libri, correxit Sylburg | 24 τὸν delevi auctore Reiskio | 30 ὁ om. AB.

50, 6 λόφον νόμον A νόμου λόγον B | 7 ἐκ τοῦ δικαίου? | 11 ἂν delevi cum B | 20 συγκαταλέγοντες libri συναγορευόντες scripsi ex coniectura Reiskii | 22 τοῦτο οἱ ἱεροφαντῶν B | 31 τρεῖς AB.

51, 12 sive παρέσχον ὠφέλειαν sive οὐ μικρὰ δ' ὠφέλησαν maluit Sylburg | 25 ἰδόντες Ba ut videtur.

52, 2 εἰς addidi ex B | 6 αὐτοὶ δὲ μόνοι ἐξουσίαν ἐκ τῶν νόμων B οἱ ἐκ τῶν νόμων ἐξουσίαν A | 10 καὶ addidi et lacunam significavi, sed utrumque male, cum codicum scriptura proba sit | 23 ὡς addidi ex B | 27 τὰ add. B | 29 ἑαυτῶν B | 30 ἀπὸ τῆς A τῆς Bb om. Ba || 31 μόνον δ' εἰς B.

53, 7 τῆς τε ὑβρεως B quod correxi, τε om. A | 20 ἂν μὴ βουλή ABa | 31 ἀπειναι AB.

54, 6 πάντα τὰ ἐγκλήματα B τὰ πάντων ἐγκλήματα A | 8 τοῖς νόμοις om. ABa, add. Bb | 9 κελύουσιν ἢ ποιεῖν ἢ τεθνήσκειν libri, correxit Casaubonus | 18 κολύσαν maluit Reiske | 24 ταῖς ἐξῆς ἡμέραις libri quod correxi | 28 ἐπιβουλής B | 29 τε add. B | 31 ἀφήκασι libri, correxit Sylburg.

55, 1 ἠδικεῖτο libri quod correxi | 7 τὰς ἡμέρας? |

10 αὐτοὶ ante διελθόντες delevi cum AB | 29 ἐγὼ δ' ὦ AB | 30 καθ' ἐν ἑαστον maluit Sylburg.

56, 1 μὲν add. B | 2 ὑπέρ] περὶ AB | 12 τῇ σπείρα B | 13 ἐν αἰσχύνῃ libri, correxit Reiske | 16 αὐτοὶ γε B αὐτοὶ A, quod correxi | 21 τέγματος Reiske συντάγματος libri.

57, 21 καὶ ἑκατὸν add. B | 29 lacunam significavi quam sic fere supplere licet: ἀλλὰ [πάντας ὑποστάς] | καὶ ἐν scripsi ἦν ἐν libri | 31 μόνοις B.

58, 4 ἔχετε libri, quod correxi | καὶ ἄλλων τινῶν delevi cum B | 17 ὑμέτερα AB | 23 προεχόμενος ABa προεχόμενος Bb | 26 ὑπερβαλλόμενος B.

59, 7 τὰ γὰρ ἄλλα maluit Reiske | 11 πρώτον om. AB | 14 λαμπρότατον? | 21 πολίτευμα τοῦτο B | 32 ὅτε?

60, 8 λάβετε? aut καὶ delendum?

61, 3 χορήσασθαι AB, correxit Hudson.

62, 13 βούλονται B | 14 τοῦ ἐπομένου B τότε ἐπομένου A quod correxi | 14—16 verba inclusa quae in AB desunt delevi | 16 παρήσαν B | 17 τῷ δήμῳ omisi cum AB | 29 καὶ τοῦτο καὶ AB.

63, 7 φοβερώτατον AB | 11 περὶ τῆς κληρονομίας om. A | 30 ἐπιτελέσασθαι B.

64, 3 τῶν om. B | 8 ροῦν et δύναμις καὶ delevi cum AB | 16 τῶν om. B | 23 οὖν delevi cum A | 26 τις add. B | 29 ἐπραξεν libri, correxit Reiske.

65, 4 τῇ addidit Reiske | 7 συμμαχῶν B | 23 κεχορημένη] ἐξηγομένη mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 347 | 27 ἀνίου B | 32 οὐ om. B.

66, 3 τοῖς addidi | 7 διατρέβειν τὸν χρόνον coniecit Reiske | 10 τοῦ Reiske τὸ libri | 12 ἐκ delevit Sylburg | προήγαγεν? | 24 ἐγκατέγραστοι γένονται post βιαζόμενοι transponenda censuit Sylburg | 25 τὸν om. Ba.

67, 3 αὐτοὺς A αὐτὸν B αὐτὴν scripsi | 5 ἐν αὐτῷ Reiske | 26 οἱ om. AB add. Reiske | 27 ψέλια AB | 31 ὡς ἀλάξων add. B.

68, 3 σοι θάτερον ἢ ζῶντα διεργάσασθαι libri, quae correxi | 4 ἀποδοῦναι corruptum est; an εἰς τὸ μηδὲν ἀποδοθῆναι? | 8 κατεγνωσμένον Ba | 24 ἀγαγὼν? | τε

addidi ex *A* | 29 καὶ ante ἀθλον aut delendum aut in κατ' mutandum esse censuit Reiske | 30 κατὰ κοροφήν libri, correxit Reiske.

69, 2 ἐπίοντα mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 347 | 4 συν πολλῶ πόνῳ χρόνῳ coniecit Reiske | 5 παρεκείμενον libri, quod correxi | 7 ἐγένετο *Ba* | 10 παρεχόμενοι *AB*.

70, 3 ἀνήσαν *Bb* | 4 τοὺς om. *AB*, addidit Sylburg | 13 τὰ om. *Ba* | 15 καὶ τῶν ἄλλων φιλοφρονήσεων ἡδονὰς *AB*, correxit Reiske | 16 ἅμα τοῖς ὑπᾶτοις addidi ex *AB* | 17 ἀπὸ om. *AB* | 22 ὁρθῶς delevi cum *B* | 25 μὲν om. *AB* | 28 καὶ σίτου addidi ex *AB*.

71, 8 εἰς ἐκκλησίαν *B*; an intercidit τὸν δῆμον? | 14 ἢ post δύναμις om. *AB* | 16 τὴν addidi ex *A* | 19 οὐτ' ἔλαττον addidi ex *B* | 26 οὐδὲ γὰρ οὐδ' ἢ βουλὴ maluit Sylburg | 30 ἀπέδειξαν *B*.

72, 4 περὶ τῶν ἀρχῶν maluit Sylburg | 15 θύσας εἰσ-ιτήρια coniecit Reiske | 19 Λεύκιος corruptum; an Γενύκιος? apud Livium III 31 est L. Allienus | 22 προσεκαλέσατο Reiske | 25 ὑπατικοὶ *B* ὑπόδιοι *A* | 31 καιρὸς *A* χρόνος *B*.

73, 11 καὶ add. *B* | 26 ἀγαπήσειν *AB* correxit Sylburg | 31 αὐτῶν ἐκείνων libri, correxit Reiske.

74, 8 φρονούντα libri quod correxi | 9 οἱ πολλοί? | 32 μόνοις om. *AB*.

75, 1 ἐπ' αὐτοῖς ζημιούσιν *AB* quod correxi | 7 γράφειν *AB* | 17 ἐαυτῶ libri, correxit Sylburg | 23 ἔνεκα *B* χάριν *A* | ἔρωγε om. *B* | ὑμῖν delet Grasberger Philolog. XXVIII, 349 | 26—29 verba ἀπὸ τοῦ βελτίστου τὰ συμφέροντα ἐρῶ. θαυμάσιον δὲ μηδεὶς εἰ πρότερόν τε πολλάκις καὶ ἡνίκα ὑπατος ἦν τῆς ἐτέρας om. *A* | 31 τὰ τότε καλῶς δόξαντα maluit Reiske.

76, 6 ἀραμένους maluit Sylburg | 11 καὶ addidi ex *AB* | 25 συνδικῶν ὑμῖν libri, correxit Reiske | προβαλόντας *Ba* προβάλλοντας *ABb* | 29 κεφάλαια?

77, 19 ἡγεῖσθαι Sylburg γίνεσθαι libri | 21 ἀποδείξασθαι *A* ὑποδείξασθαι *B* quod recipiendum erat, ἐπιλέξασθαι coniecit Reiske.

78, 2 Σερούλιος Σολπίκιος *AB* | 11 δεδεγμένων *B* | 13 πρότερον *B* | 16 εἰς τὸ βοηθεῖν *A* ἔτι βοηθεῖν *B* | 26 ἀπορίας *AB*, correxit Sylburg | 30 ἀπορινομένων libri, quod correxi.

79, 19 Κόιντιος *B* Κόιντος *A* | 20 φρούριος libri | 23 πόλεως πονούσης?

80, 5 Σήστιος *Bb* Σίκκιος *A* et *Ba* ut videtur | 9 θαλαίαις *Bb* | 11 καὶ seclusi cum *A* | 12 ἤχθη libri, quod correxi | 14 ἐπὶ scripsi ἐν libri | 24 ἐπὶ τῆς αὐτῶν ἀρχῆς add. *B* | 26 δεῖν scripsi δεῖον libri | ποιήσεται δὲ *A* ποιήσαι τε *Bb* ποιήσειν δὲ Reiske | 29 ἀνύσειν *Bb*.

81, 1 Γενύκιον] Λεύκιον *AB* | 2 περὶ addidi ex *A* | 7 ἐμπειροσύνης libri, correxit Sylburg | 10 ὧν Reiske ἦν libri | 19 ξένη νέαν scripsi ξένην libri | 28 πάντα βουλευσαμενος?

82, 1 τοὺς νομοθέτας maluit Sylburg | 3 παντὸς addidi ex *A* | 4 ἀποφαίνονται ταύτην τὴν γνώμην φανερώς? | 10 νέαν add. *B* | 12 ἡμῶν] νέαν? | 14 τῆς ὑπατείας add. *B* | 16 καὶ τὴν προθυμίαν *B* | 30 πρῶτον libri πρότερον Sylburg.

83, 7 τούτους addidi | 8 διατῆν coniecit Portus | 12 θέντος libri, quod correxi | 22 τίτος λεύκιος γενύκιος *AB* | 24 τρεῖς τε libri, quod correxi | 25 Σερούλιος libri, correxit Sylburg | 32 ἢ *B* αὶ *A*.

84, 12 ἐκάστου Reiske ἐπ' αὐτοῦ *B* ἐπ' ἐνιαυτοῦ *A* | 13 παραλαμβάνοντες *B* | 15 τ' inserui | ἰδιωτικά *B* δημοτικά *A* | 20 δεκαρχίας libri, quod correxi | 24 τῶν πολλῶν *B* | 26 σάφρονος libri, correxit Reiske.

85, 13 ἐκάλεσαν libri, quod correxi | 25 τε addidi ex *B* | 28 δεῖν scripsi δὲ libri.

86, 13 αὐτόν addidit *B* | 14 καὶ ante ὀκληρῶς addidi ex *B* | 15 μετεῖναι *AB* | 19 ἀποδείκνυται μὲν οὖν πάλιν maluit Reiske | 24 Μάρκος Κορνήλιος καὶ om. *AB* add. Sylburg | 25 Σέργιος] Σερούλιος *AB*, correxit Sylburg | 26 θαβόλιος libri | 28 διοάλιος *BbA* | ὄππιος *Ba* ἄππιος *ABb*.

87, 4 ὑπὸ addidi ex *B* | 8 μαιίαις *Ba* μίαις *Bb* μέ-

σαις *A* | 15 ἰσοτίμους τε ἅπαντας *Bb* | 21 παντὸς *ABa* πάν-  
τες *Bb* | 32 καὶ addidi ex *A*.

88, 1 ἐγένετο *Bb* | 10 ἐπισκεφόμενοι *B* | 12 φαινόμε-  
νον coniecit Reiske | γένηται scripsi φαίνηται libri | 20  
αὐτῶν om. *B* | 30 δοκεῖ of πάσαις libri, ἐδόκει οὐς ἐκείνοι  
πάσαις scripsi of πάσαις δουλεύοντες vulgo.

89, 3 καὶ delendum censuit Reiske | 10 τὰ addidi |  
26 ὁ om. *ABa*.

90, 3—10 quae ex initio libri XI male repetita in  
libris leguntur, hoc loco delevi.

## LIBER XI.

Undecimi libri codices mihi praesto erant hi:

- L* = Laurentianus Plut. LXX 5 chart. saec. XV.  
*V* = Vaticanus 133 chart. saec. XV.  
*M* = Ambrosianus A 159 sup. chart. saec. XV.  
*C* = Coislinianus.

Ex his libris fide et bonitate praestat Laurentianus, praeter Dionysii librum undecimum Appiani reliquasi continens, quem plerumque secutus sum; ex ipso enim archetypo lacerato et pessime habito accuratissime descriptus mihi videtur. proximus ei est Vaticanus qui undecimi libri fragmenta una cum decem prioribus Dionysii antiquitatum libris exhibet, quamvis interpolationis maculis hinc et inde inquinatus, tamen longe superior reliquis codicibus, velut Coisliniano et Ambrosiano, in quibus hae reliquiae ex ignoti cuiusdam Itali recensione emendatae vel potius depravatae leguntur. Laurentianum librum partim ipse partim Wilmanns et Dilthey amici excusserunt; Ambrosianum ipse contuli. Vaticani collatio ab Aem. Braunio in Ritschelii usum confecta mihi praesto erat, et de Coisliniani scripturis potioribus C. Wescher humanissime me certiore fecit, unde intellexi plerumque eum cum Ambrosiano consentire. Elbingensis libri ab Ambrosio detecti accuratorem cognitionem non habui.

91, 6 στάδιον om. libri | 18 περὶ τούτου maluit Sylburg.

92, 2 ἐπετέλεσα *V* | 15 lacunam indicavit Reiske, qui οὔτε ἀντιλέξαντες οὐδὲν intercidisse coniecit | 21 ἐν om. *L* | 26 παρὰ τοὺς — καιροὺς? | 31 παραδείγματα τοιαῦτα *M* παραδειγμάτων ταῦτα *LV*; ἐπὶ παραδείγμασι — πολλοῖς maluit Casaubonus.

93, 7 λέγω δὴ (*M*) | 11 δεκαρχίας libri, quod correxi | 13 γεννηθείσας *LV* | 14 ἦν ἢ addidit Reiske | 16 τὴν τρίτην ἀρχὴν τῇ δευτέρᾳ proposuit Reiske | 21 κατηγοροῦν τε αὐτοὺς *M* | 25 ἐν τῇ πολιτείᾳ maluit Sylburg.

94, 3 συγγενὲς Sylburg ἀσθενὲς libri | τὴν ἑναγχοῦς δεδομένην maluit Sylburg | 7 τε libri γε scripsi | 9 οὐδ' of Reiske οὐδ' of libri | 17 δυναμένους *LM* | 18 ἀσελγέσι libri quod correxi | 19 ἔθνος *LV* μέρος *M* | 21 Αἰκαιοὶ Casaubonus ἐκείνοι of libri, an ἔχειν of? | 31 Ἡρότης Sylburg ἡρώ *L* ἡρώ *MV*.

95, 2 ἐκβαλόντες *L* | 3 ἀληθοπόλει *L* ἀργηδοπόλει *M* ἀλγειδοπόλει *V* | 15 μετρίαν *L* | 16 οὐτ' libri, correxit Reiske | 24 ἐπιτρέψη libri | 28 καταλυομένης *MV* καταλελυμένης *L* | 30 εἴ τι δόξειεν libri quod correxi.

96, 2 ἐταίρων *LV* γονέων *M* | 4 ταῦτα *LV* | 6 βουλευόντας maluit Reiske | 10 τῆς πόλεως μέρος coniecit Reiske | of δὲ καὶ ταῦθ' libri, correxit Reiske | 17 ἀνεβάλλοντο libri, correxit Casaubonus | 20 προσελθῶν libri, correxit Portus | δεκαρχίας libri, quod correxi | ἀπήγγελεν *LV*, quod correxi | 26 γαλέριος hic et passim libri | 27 μεγαλοφρονῶν libri, quod correxi.

97, 2 καθ' ἑαυτοῦ maluit Reiske | 19 κακοῦ (*M*) | ὅτε libri ὅτι Sylburg | 23 τὴν ἴσσην ἐκείνω ἐξουσίαν coniecit Reiske | 26 βούλομαι scripsi βουλόμενος libri.

98, 1 Λεύκιος Ουάλέριος delevi cum *LV*, extant in *CM* | 7 ὁρούγιος libri | πολέμια? | 12 σχολῆν *CLaM* χολῆν *Lb(V)* | με (*V*) μὲν *CM* om. *L* | 13 ἀναγκάσεις libri, correxit Portus | 16 βουλευομένων *CL* | 19 δ' ἢ διαδοχῆ? | 25 πρῶσσειν libri, correxit Sylburg | 26 ἀφελείσθε libri, correxit Casaubonus | 30 verba ταῦτ' εἰς τὸν δῆμον βου-

λέεσθε ἐξενεργεῖν absunt ab *MCA* | 32 βουλευόμενον ὑμῶν *L* | κωλύσον coniecit Reiske.

99, 1 τὴν ἐξουσίαν libri, correxit Reiske | 3 τὴν deest in *L* in lacuna sex litterarum | δεκαοχθῆν libri, quod correxi | 5 καὶ εἰ τοῦτο desunt in *L* in lacuna decem litterarum | ὑπομείνη *LV* ὑπομένειν *C* ὑπομένει *M*, unde colligitur in hiatu codicis Florentini esse reponendum καὶν τοῦτο | 6 καὶ εἰ om. *L* in lacuna quinque litterarum; an μὴ δὴ? | 7 verba καὶ εἰ δίκαια ταῦτα δόξωσιν quae prorsus inepta sunt omisit *L* in lacuna quindecim litterarum | 9 τούτων om. *CM* | ὑμῖν libri, correxit Hudson. | 10 τε om. *CM* | 20 προσελθὼν maluit Portus | 22 ἐπισχῶν *MF* ἐπισχεῖν *L*.

100, 1 post οὐδὲν aliquid intercidisse ut ἐνδώσομεν αὐτοῖς suspicor | δ' inserui ex *LV* | 14 κράτιστα? | 16 πρῶτον libri praeter *L* | 22 τιμῶν δὴ τὸ σ. maluit Reiske.

101, 2 ἡμῖν proposuit Sylburg | 4 ἀκούοντες libri, correxit Reiske | 9 προπολεμήσασαν *LV* | 10 ἔξειν *LMV*; an ὄρκον ἀπαντήσων? | 12 γρηῃσάσθαι *LV* | 14 τοὺς δέ γε maluit Reiske | 23 πολέμοις *LV* πολεμίσις *M* ut videtur, Sylburg | 27 τὰ ὅλα *L* τὰλλα *FM* | 29 διαφθεῖραι?

102, 1 ἐπαρθέτων vix sanum est; an ἐκ τῶν παρόντων? | 4 ἐκείνοις *LM* | 12 ἐπανορθούμενοι scripsi ... θούμενοι *L* ὠθούμενοι *MF* | 13 διαλεγόμενοι Reiske διαλεξόμενοι libri, quod retinere debui | 13 τε (*M*) τὰς *LV* | 14 νοῦν (*V*) νῦν *LM* | 20 εἰς τοῦτο καταστήσασθαι τὸν π. *L* εἰς τοῦτον καταστήσασθαι π. *V* εἰς τοῦτο καταστήσασθαι περὶ πολέμων *M*; correxit Reiske | 21 σκοπεῖν delevi cum *V* | 22 οὕτως ἐχόντων καὶ *M*; om. *LV* quos secutus sum | 23 εἴγε *V* | 24 τοῦτον et 25 ἐκείνω Reiske, ἐκείνον et τοῦτω libri | 28 αὐτῶν libri ἄλλων maluit Sylburg.

103, 1 ἀπάντων συμφέρον Sylburg ἀπὸ τῶν συμφερόντων libri | 4 ἀπεχθάνεσθαι libri, quod correxi | 10 τῇ πατρίδι δάσιν *V* τῇ πατρίδι σώσειν *L* τῇ πατρίδι μέλει τοῦ καλῶς ἔχειν *M* et vulgo ex aperta interpolatione | 12 ἄρξειν *L* ἄρχειν Sylburg (*MF*) | 16 δεκαοχθῆς libri, quod correxi | 17 ὅταν μάλιστα libri, transposuit Sylburg | 18 πάντως libri παντός Sylburg | 19 τοιαύτην addidi cum

Sylburgio | 20 διαδέδειγμα *LV* | 23 hiatus significavit Reiske; an supplendum φυλάξω δὴ τοιαύτην τοῦ β. π.? | 27 πάντες αὐτῇ μέγιστον — τεκμηρίον πάντες οἱ τὰ κοινὰ διοικούντες ὁ μόνον libri, quae transponendo sanavi | 28 ἡμῖν libri, correxit Sylburg.

104, 4 ἄρροσιν mavolt Grasberger Philol. XXVIII, 348 | 6 ὅτε libri ὅτε Sylburg | 9 ὅτε γὰρ Hudson | 10 τὴν om. *LV* | 32 οὐδεὶς ὡς εἰπεῖν libri, correxit Casaubonus.

105, 4 καὶ addidi | 12 γενόμενον libri, correxit Reiske | 15 ἀρχὴν ὑμῶν *M* | 17 ἔσθ' ] ἔθ' ? | 32 γε Reiske τε libri | γενόμενον libri, correxit Sylburg.

106, 13 post πατρίδος intercidisse γενενημένιας coniecit Reiske | 20 πρόθυμος in μικρόθυμος correxit *Lb*.

107, 2 γὰρ om. *L* | ὁ addidi ex *L* | 15 οὐν *LMV* | 16 αἶ Portus ἐάν libri | 20 κατὰ σιῆς *V* καὶ τὰς σκοτίας *M* κατὰ σκοτίας *L*, correxit Sylburg | εὐηθειῶν libri, correxit Reiske | 26 χαρίεις τε καὶ *LM*, correxit Reiske | 27 στρέψε libri, correxit Reiske | 32 οὐδ' ἐν *M* οὐδὲν *LV* οὐδὲ vulgo.

108, 3 γέ τοι *L* γὰρ τοι *V* γὰρ *M* | μηδὲ maluit Sylburg | 9 ὑπέστρεψαν libri, correxit Casaubonus | 10 ἀκόλουθον *MF* ἀκολούθως (*L*) Reiske | 11 πάντες addidi ex *L* | 19 ἐπιθέσθαι *MF* ὑποθέσθαι *L* | 20 μόνος μόνω libri praeter *L* | 23 πρὸς τὸν οἰκειὸν maluit Reiske | 24 ἔτερά τι *LV* | 25 δὴ τι Reiske δ' ἐπι libri | 27 ἐφ' *M* ἀφ' *LV* | 30 ἐν addidit Casaubonus.

109, 1 παρ' ἀνθρώποις quid sibi velint non magis intellego quam Reiske | 2 δὴ σοι libri | 16 πλείω ταῦτα maluit Reiske | 26 ὀλιγαρχῶν *LMV* | 30 τῇ φρονιμοτάτῃ libri, quod correxi | 31 τῶν ἰδία συμφερόντων?

110, 1 ἀνὴρ πρεσβύτερος libri, quod correxi | 6 ἀποδειξάμενος *LMV* | 11 ὦ addidit Sylburg | 12 ἀποκλείσον *LV* | 13 ὅσονπερ Sylburg ὅσπερ libri | 19 ἰνῆλιον libri, correxit Sylburg | 22 δεκαοχθῆν libri, quod correxi | 25 ἀποδείκνυμι libri, correxit Sintenis Em. Dion. II, 14 | 26 ἂν delevi cum *L* | 27 νέαι ἀρχαί? idem suasit Grasberger in tess. Herbig. p. 34. | 37 Κόιντος libri | ὁ om. *LV*.

111, 1 δέκα praeter libros ab editoribus expulsum



restitui | 4 τιμῆς ἀξίωσιν? | 11 οἱ *L* εἰ (*MV*) | 12 οἷαν addidi praeter libros | 15 ἔχουσι omittunt libri, addidit Sylburg | 16 orationem corruptam et fortasse mutilam sic restitui posse existimavit Reiske: οὗς ἐχρῆν οἷον ἐντελή [καὶ δολοκλήρον τοῖς πολεμίοις αὐτῆν] φυλάττειν | 24 τοῦτό γε Casaubonus τούτοις libri | 25 θεοβλαβείας ἀπειναί εὐκασί? verba οὐ πόρρω δὲ θεοβλαβείας cum praecedentibus coniunxit Reiske, sic pergens: [οὕτω δὲ] πεποιήκασι.

112, 1 μετανάστατον libri, correxit Sylburg | 11 πονηρὰς addidi | 12 λέγουσι Reiske ἔχουσι libri | 15 βουληθέντα *V* | 16 ἄν om. *LV* | 17 ἄλλως Casaubonus ἀληθῶς libri | 20 παραιτῶντας libri, correxit Sylburg | 28 μηδὲ δυνάμεις? | 32 εὐπρεπέη *M*.

113, 3 ἐκβολὰς *M* | 4 διαλύσατε *LV* ληφόμεθα *M* | 12 ὁμῖν *LV* | 19 ὑπονοθευομένη libri, correxit Sylburg | 27 ὡς deleuit Reiske.

114, 5 ἡμῖν *LM* | 9 ἀμφοτέροις libri, correxit Sylburg | 11 λάβοι *L* | 13 λόγον ἀπαιτεῖται τοῖς δέκα *V* | 15 καὶ τιμωρεῖσθε addidi | 20 τῆν om. *L* | 22 ταῦτα addidi ex *LMV* | 26 ἐκ addidi ex *LMV*.

115, 7 αὐτοῖς libri, correxit Sintenis Em. Dion. II, 25 | 13 τὰ seclusi | 14 ἐστὶ libri ἔσται auctore Sylburgio Sintenis I. I. | 15 δεκαρχίας libri | 25 ὁμῶν Sylburg male.

116, 2 οὐδεμίαν ἐμὴν coniecit Reiske | ὁμῖν *La* ἡμῖν *LbV* | 5 εἰνῆ maluit Reiske | 7 ὄντες ἄν coniecit Sintenis Em. Dion. II, 12 | 10 γεννητῶν libri Μεννικίου Sylburg | 17 Σαβίνων libri, correxit Sylburg | 18 εἶναι scripsi ἦν libri, quod nunc retinere malim | μήθ' libri μηδὲν Reiske | 25 εὐρασθε libri | ἥπερ *M* ἥπερ *L* ὅπερ (*V*) | 27 verba περὶ μέσας νύκτας εἰς τὸ βουλευτήριον συνελθόντες, quae in libris post εὐρασθε ὑμεῖς v. 25 leguntur, huc transposui | 28 ἀποδειξαι *LMV* | 29 καὶ εἰρήνης (*M*) τῆς εἰρήνης *LV*.

117, 4 αὐτὸν *LV* | 6 καὶ deleui cum *LV* | 8 κολύσον libri, quod correxi | 10 ὁμᾶς libri, correxit Sylburg | 12 ὑποβαλώμεθα *LV* | 16 ἐπιτηδειότερον libri, correxit Reiske | ἐκλέξαντες libri, quod correxi | 18 μεσοβασιλεῖς libri, correxit Sylburg | 25 τῇ τοῦδε προφάσει maluit Reiske.

118, 3 εἴη libri ἦν Sylburg | 4 αὐτῶν *V* αὐτῶ *L* | 8 ἀναδικασίαν maluit Reiske | τῶν γνωμῶν coniecit Sylburg | 12 συμβασιλεύων *LMaV* συμβουλεύων *Mb* | 17 ἐκατέρου? | 23 τῶν Κορινθίων *L*.

119, 1 διέγνω τὰς *LV* διέγνωτε Sylburg | 2 περὶ ὧν *LV* παριῶν Reiske | 4 νόμων *L* νόμους *MV* quod correxi | 13 στρατοῦ ποιῆσθαι maluit Reiske | 20 καὶ στρατιάς addidi ex *L* | 22 ὡς addidit Reiske | 23 καὶ abesse malim | 24 ἀγενεστέρων *LMV* | 25 verba καὶ καταπέμειν ἑαυτοὺς εἰς τὰς ὀλιγαρχίας (sic *LV*) ἐταιρίας desunt in *M* | 30 φυλακῆς *L* | 31 μεταναστάσει libri, correxit Reiske.

120, 1 δεκαρχίας libri, quod correxi | 5 μήτε τι *VM* μητ' ἐκ *L* quod recipere debui | μητ' ἐκ τοῦ δολίου om. *M* | 6 verba μήτ' ἐκ τοῦ φανεροῦ δειλίαν καταγνωσθῆναι quae prorsus inepta sunt cum *LV* seclusi | 10 ἀνόητον scripsi οὐ βλάβιον libri | 11 οὐ βλάβιον scripsi ἀνόητον libri ἀνήνυτον maluit Reiske | 13 ἦν addidit Sintenis Em. Dion. III, 6 | 20 ἀθρόον *MV* ἀθρόον *L*.

121, 1 δὴ addidit Portus | 3 πατριούς *L* | 4 μὲν γὰρ maluit Sylburg | 7 διέμεινεν *MV* | 15 ἀφείλαντο libri | 29 Ἄππιος *MV* | 30 Πουτέλλιος libri.

122, 7 σύμμαχον vel συμμαχικὴν maluit Reiske | 13 καὶ φάλαγγ' addidi praeter libros | 23 ἀργυρίω *LMV* | 25 λαμβάνοντες ὑπὸ *L* | 26 ἐπανορθωσάμενοι *LV*.

123, 6 ὅσοιπερ scripsi ὅσοι γὰρ libri | 15 ἐκ πολλῆς ὑπεροφίας libri, quod a Reiskio deceptus mutare non debui | 25 καὶ addidi ex *L* | 31 οἱ δὲ *M* οὐδὲ *LV*.

124, 2 ἐγίνετο δὴ? | 18 ἀριστεῖα libri, quod correxi | 26 δὴ *L* δὲ *V* om. *M*.

125, 7 τῶν ἐκεῖ ἡγεμόνων maluit Sylburg | 11 τῇ γοητείᾳ libri, correxit Sylburg | 12 ἐγίνετο *L* | 13 ἐπύθετο *V* ἐπέθετο *LM* ὑπέθετο Sylburg | 26 εὐζώνων *M*.

126, 3 ἀνιόντι *Lb* ἀπιόντι *LaMV* | 4 ὡς ἅμα χωρήσοντες Sintenis Em. Dion. III, 14 ὡς ἀναχωρήσοντες *LMV* | 6 πολέμια? cf. quoque Grasberger tess. Herbip. p. 35 | 12 ἅμα πολλῶν *L* πάντων πολλῶν ὄντων *VM* | 13 ἅμα περὶ *L* | 17 τι deleui cum *LV* | 21 τὸν ὄχθον Reiske τῶν ὄχθων libri | 28 διέσπειρον maluit Sylburg.

127, 5 τῷ addidi ex *V* | 6 τιμῆς libri, quod correxi | διαφόρου *L* διαφόροις *VM* | 11 ἀναίρεσις *L* | 15 περὶ *Va* ἐπὶ *Vb* | βουλῆς *V* ἐπιβουλῆς *L* | 17 τε οὐδαμοῦ delevi cum *LV* | 19 sive ὑποκαθίξεσθαι sive λόγους μανὸν *L* Grasberger tess. Herbip. p. 36. | 25 περιελάντο *Lb VM* εἴλαντο *La*; an ἀφείλοντο?

128, 2 ἀκουίτι τ' *LMV* | 3 ἐνουπόστατον *M* | 6 αὐτός γε *LV* | 8 ὑπὸ βελῶν pro ὑπὸ μαχαιρῶν maluit Reiske | 11 οὐδὲ μὲν *LM*, correxit Portus, qui totum locum sic scribendum censuit: πάντες μαχαιρῶν μὲν, χειρῶν δὲ ἢ σαυλῶν ἢ βέλους οὐδεμίαν | 11 ἀγαυάκησις δὲ *L* | καὶ πάντων *MV* | 12 ὄδυρμος *MV* ὁ δρόμος *L* | 25 ἐπαρχόμενοι libri, correxit Sylburg | 30 τοῦ προσβυτάτου *MV*.

129, 4 πολέμια mavolt Grasberger tess. Herbip. p. 36. | 11 τὴν om. *L* | 16 περιμέναι *V* | 21 δι' ὑπεροπίας? | 26 διδομένων libri, quod correxi | παρηγγέλλετο *L* παρηγγέλετο *V* quod correxi | 30 ἔπειθεν *V*.

130, 17 καὶ delevit Sylburg | 18 Νομιτόριος libri | 21 ἐνεργημένος libri, quod correxi | 28 χρόνον *La* λόγον *MVLb* | 30 αὐτῆς Sylburg αὐτὸς libri | 31 ἐμοί *LV*.

131, 11 ἔργονα *LV* | 12 μὲν οὐσῶν Reiske τε οὐσῶν libri | 16 ὑπέχειν τοῖς βουλομένοις coniecit Reiske | 17 καθίστησιν libri, quod correxi | ἀξιοχρόους *L* | 18 τὴν addidi | 20 μήτε libri μηδὲ scripsi | 21 προσλέγειν libri, correxit Reiske | 27 in οὖν ἦν latere videtur γνήσιον vel tale quid; ἦν abest a *MV* | 32 τραφεῖσα *L*.

132, 3 ἔστη libri, correxit Casaubonus | 6 δὲ delendum censuit Reiske | 13 στρατείας libri, correxit Sylburg | 16 τὰς δίκας maluit Reiske | 17 ἀποδίδοται libri, quod correxi; Reiske audacious totum locum sic refigurere voluit: τοῖς ἄλλοις ἅπασιν δέδοται Ῥωμαίοις δίκαιον, εἰ δὲ μὴ δεῖ ὑποστέλλεσθαι πᾶσιν ἀνθρώποις | 24 δεκαρχίας libri | 32 πάντων ὁ libri, transposuit Portus.

133, 9 ἔδοξε libri ἔλεξε Casaubonus | 27 τόνδι' ὑπὲρ τῆς ἐγγυήσεως *L*; an τὸν ὑπὲρ τῆς διεγγυήσεως? | 29 τοῦς ἀφαιρουμένους *LM*.

134, 2 ἐκείνο *L* | 3 ἀξιοχρόους *L* | 9 ὑπὲρ *M* ὑπὸ *LV* | 12 τε addidi ex *L* | 14 ἀπέξεται *L* | 17 ἄρνοῦ om. *M* | κέλευε

addidit Sylburg | ἀποκόψας libri, correxit Sylburg | 24 ἢ τοι scripsi ἦτοι ἢ *LV* ὅτι ἢ *M* | 28 ὑπὸ *L* | 31 πένθος libri πάθος scripsi.

135, 14 ἔασαι μὲν τοῖς συγγενέσιν τὴν πάρθενον, δοῦναι δὲ ἐγγύησιν maluit Sintenis Em. Dion. II, 10 quae non intellego | 19 αὐτὸν scripsi αὔριον libri | 25 μεθεῖσθαι libri, correxit Reiske | τοῖς παρθένου *L* | 30 δοκῆ τοῦτο πράττειν scripsi δόκη τοῦτο πράττην libri.

136, 1 καὶ delendum censuerunt Sylburg et Reiske | 2 ὅφ' ὄν libri | αὐτοῦ κατέχειν maluit Reiske | 18 τε addidi ex *V* | 32 τεύξωνται *LV*, correxit Sylburg.

137, 2 ἔνα delevi | 10 τὰ addidi ex *L* | 11 ἀνελάμβανε libri, correxit Reiske | 14 ἔξεν *LM* | 15 ὁποῖαν *L* | ἄν addidi | 16 ἀνάγκη libri, correxit Stephanus | 17 τῶν τέκνων δεομένην vix sana sunt | 30 τὴν addidi | 32 ὡς addidit Sylburg.

138, 5 τὸ τικόμενον deleteo παιδῶν? | 6 ἐπεδείκνυτο libri, correxit Sylburg | ἤξεν *VM* | 8 πολλῶν libri, correxit Reiske | 15 ἐν libri ἐπὶ scripsi | 17 τὸν λόγον *La* | 20 καλλὸν *L*; an κάλλος? | 22 ψυχῆς *L* | 30 διεφθαρμένον *L*.

139, 2 τῆς κόρης om. *LV* | 3 πλείονος ἦν *LV* | 6 καταφανῆς libri, quod correxi | 7 τοῖς τάληθῆς ὑπονοοῦσιν coniecit Reiske | 8 ἔγραψε *LV* ἔπλασε *M* quod correxi | 12 ἐλάμβανε libri, correxit Casaubonus | 22 παῖδα libri νήπιον scripsi | 26 περὶ *LV* | 28 ἐμαυτῶ οὐ προσήκει *L* | 32 ζοηματισθεῖς ἢ libri, correxit Reiske.

140, 7 εἶχον libri, correxit Sylburg | 18 τε quod libri post σιωπὴν addunt delevit Sylburg | 19 παύσησθε *LV* | 23 κατὰ πετωλλόν *L* | 25 παρασκευάσαι libri, correxit Sylburg.

141, 1 aut ὑπεχώρον aut ἀνεχώρον aut ἀπεχώρον maluit Reiske | 12 εἰς τὴν libri αὐτὴν Portus | 13 κατέχουσαν libri, correxit Reiske | 15 ἦν om. *L* | 19 κατὰ γῆν libri, correxit Sylburg | 20 οὐχὶ scripsi οὐχ libri | ἔχειν addidi ex *L* | 21 σφραγίδα *La* quod correxi, μάχαιραν *LbMV* | 22 ὁ προσέφυσεν libri, correxit Casaubonus.

142, 10 ὁ δ' ὡς εἶχεν ὀργῆς πέμπει maluit Grasberger

tess. Herbig. p. 37 | 11 τάχους addidit Syllburg | 16 μὲν Portus d' libri | 17 δὲ inseruit Portus | 21 περιβαλλομένων libri, correxit Syllburg | 25 ὁ om. L | 26 κελύειν (sic!) L | 31 ἔχοντες maluit Syllburg | 32 ἐγίνοντο libri, quod correxi.

143, 1 προπηλακιστᾶς L | 6 κωλύσεως libri, correxit Syllburg | 18 ὀλιγαρχῶν libri, correxit Portus | 25 αὐτοῦς δη τοῦς M | 26 ὀλιγαρχικῆς libri, correxit Reiske | 31 ἐπιβαλλόμενος libri, correxit Reiske | 32 ἄν add. Syllburg.

144, 2 τῆς addidit Reiske | 10 ἔμελλον libri, quod correxi | 13 κόμης libri, κομίζουσαι Lobeck Aglaopham. p. 1095 | 20 ὀλιγαρχῶν libri, quod correxi | 30 σφαγίδα La μάχαιραν LbMV.

145, 6 θορύβων MV θορύβον La θορύβα Lb | περιεγόμενοι libri, correxit Syllburg | 24 ἐκλογιζόμενος libri, quod correxi.

146, 6 τισι] σφίσι? | 9 ὑμῖν add. L | 15 καὶ addidit Reiske οἰκεία φύσεως προγόνων maluit Sintenis Em. Dion. III, 24 | 24 ἄλλους addidi ex LV | 32 διαχειρισμένης M.

147, 1 ἐπὶ τῷ πάθει post παρωξύνθησαν transposita in L. | 13 καὶ ὑπομενεῖτε M | 16 πολλαὶ libri, correxit Syllburg | 18 καὶ add. Reiske | 19 τοῦ MV τοῦτου L | 21 ἡμῶν L | 25 σκαιότητος M κακότητος LV et M in margine | 26 νοούμενα libri, correxit Reiske.

148, 2 ὅτε libri, quod correxi | 16 παύσῃ libri, quod correxi | 27 τοῦς σφετέρους CbMb τοῖς σφετέροις LVCaMa | ἑῶντας om. L in lacuna quattuor litterarum | 32 vocabula uncis inclusa hinc usque ad finem capituli desunt in lacunis LV, addita sunt in CM vulgo ex foedissima interpolatione.

149, 2 ὄχλους libri, quod correxi | 3 ὡς CM ὅτι LV | 4 χρηστὰς λαβόντες ἐλπίδας? | 9 δι' ἀνδρίαν L, unde δι' ἀναδρίαν correxi | 12 ὅσοις M | 16 πᾶσι corruptum videtur, νομιζόντων τοῖς πᾶσι V.

150, 8 ἠγούμενοι καὶ om. MV | 11 πλήθει? | 14 τοσοῦτο L | 16 πορευθέντες maluit Reiske | 25 οὐδὲν libri, quod correxi; οὐδένα οὐδὲν maluit Reiske | 29 θ' scripsi d' libri | 32 ἄππιος libri Όππιος Syllburg.

151, 7 πρότερον libri, correxit Syllburg | 17 ἄππιον et 26 ἄππιος libri, correxit Syllburg | 29 τὸ δέος M | 32 οἱ addidit Syllburg.

152, 5 ἀπειῖναι libri, correxit Syllburg | κατέχοντας scripsi ταχθέντας libri | v. 14 hic in libris sequitur lacuna, in L cum nota λείπει φύλλα β, quam excipiunt verba μηδὲν δὲ αὐτῶν cap. 52 usque ad finem libri; ordinem restituit Syllburg | 18 ἤρμοιτον L.

153, 2 λέγειν La γράφειν Lb reliqui | 6 προέκειντο maluit Syllburg | 13 αὐτὸν libri αὐτοῖς Reiske | 14 ἴδιον libri, quod correxi | 26 ὑπὸ τὴν δίκην maluit Reiske.

154, 4 τῶν πολλῶν? | καὶ delere voluit Reiske | 14 ἐπιδειχθεῖσαν libri, correxit Reiske | 18 ἄππιος libri | 25 τῶν πολιτικῶν οἱ V τῶν πεφηνότων M τῶν πο..... L, quod correxi | 27 ἐπιλαβόμενος MV.

155, 3 πολιτῶν libri πολλῶν festinantius reposui | τῶν inserui et hiatus significavi; ἐν πολεμίων γενέσθαι λόγῳ προσδοκῶντων Grasberger Philol. XXVIII, p. 949. sed hostium mentionem necessariam esse demonstrant quae sequuntur | 5 κατὰ πόλεις LV | 6 τὴν βουλήν om. L, in lacuna | οἱ ὑπάτοι addidit Reiske | 15 ἐπαρθέντας Reiske παρόντας libri | 18 δεδιότως maluit Reiske | 26 καταλιπομένην LV | 28 παρέστησεν libri, quod correxi | 30 ἐξῆς om. L in lacuna.

156, 1 ταχέως ἦγον Reiske τοῦ ἄστεως ἦγον MV, om. L in lacuna | 2 εἶχον om. L in lacuna | 9 verba τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν κρατήσαντες χρήματα πολλὰ καὶ λείαν ἄφθονον περιεβάλοντο in solo L servata addidi | 14 προαγωγῶν, quod in libris post ἔγνω v. 15 legitur, huc transposui | 16 ὄλη δυνάμει om. L in lacuna | 18 verba uncis inclusa desunt in L in lacuna et manifestam interpolationem redolent | 19 verba πρὸς τοὺς usque ad προηγούμενος v. 21 in L a priore manu omissa supplevit Lb, sed item ob interpolationem mihi suspecta sunt; ἦν γὰρ etqs. ad Romanorum ducem referenda esse apparet | 20 ἀντεχομένους LbM ἀντιμαχομένους V | 26 τετυχηκῶς om. L in lacuna | αὐτῶν L αὐτοῦ MV | 27 ἀποσκευῆν

.....ων πολλήν *L* | 30 ante ἀνεσώσατο in *MV* adduntur εὔρε καί, quae omisi cum *L*.

157, 7 καὶ om. *L* in lacuna καὶ ἦν *MV*, καλή *Grasberger Philol. XXVIII*, p. 349 | 8 γε] τε *L* | 10 εἰς quod addidi om. libri | 19 ὅσα οὔτοι πολιτευόμενοι *MV* ὅσα του ..... πολιτευόμενοι *L*; an ὅσα ὑπὲρ του δήμου π. ? | 23 συνθήκας γενομένην ? | 29 ἐλέου reponendum, cf. *Grasberger Philol. XXVIII*, p. 349 | 30 ἀνήρ scripsi ἀνήρ libri | ἀνήρ ἀπέφυγεν ἐν maluit *Reiske* | 31 πολλὰ ἂ τὸ κοινὸν ἐφαίνετο εὐ πεπ. coniecit *Reiske* | 32 ἀνθρωποι scripsi ἀνθρωποι libri.

158, 2 ἄλλα *L*, quod reponere debui | φέρων add. *Lb* in lacuna | εἰς οἶκτον ..... οἰκτονὸν τὸ π. *L* | 3 δὴ *MV* δὲ *L* | 4—5 ὑπάτων πολ. .... τῶν παρόντων *L* cum lacuna fere viginti litterarum, ὑπάτων πολλά κατ' αὐτῶν ἐκχεάντος *Κλαυδίου Γαίου* καὶ αὐτῶν παρόντων *V* ὑπάτων πολλὰ φέρων εἰς οἶκτον ἐφελκόμενα τὸ πλήθος κατ' αὐτῶν ἐκχεάντος *Κλαυδίου Γαίου* καὶ αὐτῶν παρόντων *M*; lacunam sic fere suppleverim ὑπάτων [ἐκχεάντος *Κλαυδίου* καὶ ἐπαινεσάντων ἀπάντων] τῶν π. | 7 τιμῶν scripsi τιμῶν libri | τοσοῦτων ? | συγχωρήσεων libri, quod correxi | οὔτε *L* | 14 νόμων libri, correxit *Reiske* | 23 ἀξηθείσαν maluit *Reiske* | ὀλίγοις libri ἄλλοις scripsi | 25 δόξα δ' αὐτῆ ἰσχυρὰ coniecit *Reiske* | 26 τοῦ addidit *Reiske* | 29 Ἐρουίνος libri, correxit *Sylburg* | 30 Μάρκος *Γε* libri qui hic desinunt, vide quae dixi ad p. 152, 14.

159, 2 κάπιος *L* κάπιος *V* κάλιος *M* | 6 ὄρωντες del. *Cobet N. L.* p. 272 | 7 καπίου *L* καπίου *V* | 19 τῆς ἀμφισβήτητος μὴ γῆς *L* τῆς ἀμφισβήτητος γῆς *VM* quod correxi | 22 αὐτοὺς maluit *Reiske* | 25 ἑτέροις *MV* ἑτέρων *L* | 27 καδδίσσιον *V* καδδίσσιον *M* | 31 μινυλίου *M* μινυλίου *V* γενυκίου *L*.

160, 27 καὶ δεόμενοι *Reiske* δεόμενοι libri.

161, 5 ὑπὸ τῶν ὑπάτων scripsi ὑπ' αὐτῶν libri | 6 verba ἔχουσι δ' ἐξουσίαν ἐναντιοῦσθαι δήμαρχοι τοῖς ὑπάτοις quae glossema sapiunt seclusi | 13 οἱ δήμαρχοι scripsi οἱ δὲ libri | 15 ἑάσειν *La* ἑλεῖν *Lb* | 16 ὑπ' *Sylburg* ὑπὲρ libri | 21 διωμόσαντο *Sylburg* διωμοσόμενοι libri | μηδὲν

scripsi μηδέ τι libri | 22 καταλείν *M*, om. *LV* | 25 εἰς ἰδιωτικὸν σύλλογον οὐχ ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἀλλ' αὐτοὶ maluit *Reiske*.

162, 1 ποιούμενος *LMV* | 19 ψῆφον ἀναλαβεῖν ? | οὐ δυνάμενος *LMV* | 20 μόνος addidi ex *L* | 21 βουλήμασι libri, quod correxi | 27 ἔστι add. *L* | 30 χιλιάρχος μὲν maluit *Reiske* | ἀποδεικνύναι maluit *Portus* | 32 τε scripsi δὲ libri.

163, 1 ἐλάττονος ἀριθμοῦ libri, correxit *Reiske* | 4 καταβάλητε libri, correxit *Reiske* | 10 λόγον addidit *Sylburg* | 13 ἄρξῆσθε *V* ἄρξασθε *L* | 22 εἰσηγεῖσθαι libri, correxit *Reiske* | 29 τῷ δήμῳ libri, correxit *Sylburg* | 30 ἀλλ' *LV* καὶ *M*.

164, 10 Κάτων *Κενολήιος LV*, correxit *Sylburg*; an καίτων ? | 30 δικαίω γεγένηται maluit *Reiske*.

165, 4 *Κενολήου* libri | 5 μὴ om. *L* | 10 τι addidit *Sylburg* | 25 βουλευτῶν μαρτυρούμενος *Reiske*, quod recipiendum erat | 26 ἀπολύσασθαι libri, quod correxi; διαλύσασθαι maluit *Sylburg* | 29 τῇ ἐρωτήσει *Reiske* | κατάξεν maluit *Sylburg* καλέσαι coniecit *Reiske* | 31 ἀποδίδοται *Portus*.

166, 14 πεπολιτευμένων maluit *Reiske* | 16 ἀποδείξασι libri, correxit *Sylburg* | 20 μὴ om. *LMV* | 20 εἶναι om. *LMV* | 21 ἀνέλη *Stephanus* ἀν' ἐάν *LMV* | 23 γε *Sylburg* τε libri | 24 ἐπιδεδειγμένους maluit *Sylburg* | 29 στρατηγῶν *MVa* στρατιωτῶν *LVb*.

167, 4 οὐ ταῦτὸ maluit *Portus* | 9 ἐπελέξαντο libri, correxit *Sylburg* | 22 ἐθιμοῖς διαπεπραχθῆαι maluit *Reiske* | 23 αὐτῶ ἢ γνώμη *Grasberger Philol. XXVIII*, p. 349 | 32 αὐτὸν *La* ταῦτη *LbMV* αὐτῆ *Reiske*.

168, 3 ἀποτρέψασθαι maluit *Reiske* | βουλομένην coniecit *Sylburg* | 7 παρασπάσαι τοι *L* | 9 τε add. *L* | 22 ἀποδείξάμενον *L* | 23 ἐγένετο *M*.

169, 4 καταλήφοντες *L* | 5 αὐτὴν *L* | 14 ἀτέλιον libri | λοῦσον *MV* λοῦγγον *La* λοῦγγον *Lb* | *Κλύδιον L* | 18 μετασχόντες libri, correxit *Sylburg* | 29 *Μενύκιος πατρίκιος M* *μενίκιος παπίκιος LV*.

170, 1 ἔχειν *L* ἔχουσι *V* | 2 φαίνονται libri, cor-

rexit Sylburg | 27 verba ὑπατείας ὥστε in *L* in lacuna suppleta, om. *V* | 28—30 edidi secundum *LV*; in *M* haec sic interpolata leguntur: ὥστε τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ ἀφελμους ἀνδρας ἐν τιμαῖς καὶ ἐν στρατείαις εἶναι, τοὺς δ' ἀσελεστάτους καὶ πονηροτάτους ἀτίμους καταλείπεσθαι, καὶ τόποι ἕτερον μεταλαμβάνειν, ἐν ᾧ περιέσει ζῆν αὐτοῖς ὡς προήγηται. Hinc sequuntur in libris verba ἄλλ' ὑπὲρ τῶν. *P.* cap. 44. cf. ad pag. 152, 15.

## FRAGMENTA.

Amplissimi Constantiniani operis quae Dionysii reliquias continent partes sunt haec:

*Val.* = Excerpta περὶ ἀρετῆς καὶ κακίας ab Henrico Valesio edita 1634 ex codice Turonensi, in quo nunc multorum foliorum interitu Dionysii quoque reliquias periisse certior me fecit L. Wollenberg.

*Vrs.* = Excerpta περὶ προσηλαίων ab Fulvio Ursino edita 1582, quorum mihi praesto erant scripturae libri Monacensis 267 chart. saec. XVI, a Nisseno amico enotatae et libri Vaticani 1418 chart. saec. XVI, ex libris Fulvii Ursini, quem ipse inspexi.

*Esc.* = Excerpta περὶ ἐπιβολῶν ex codice Scorialensi (I Q 11 chart. saec. XVI) a Federo (1855) et C. Müllerero in fragmentorum Historicorum Graecorum volumine altero (Par. 1848) edita.

*Ath.* = Excerpta περὶ πολιορκιῶν ex Poliorceticorum codice vetustissimo ab Atho monte Parisiis transvecto primum a C. Müllerero ex Minae apographo ad calcem alterius voluminis Iosephi operum Parisiis apud fratres Didot 1847, deinde a Weschero Poliorcétique des Grecques Parisiis 1868 accuratissime edita.

Huc accedunt.

*Ambr.* = Eclogae Ambrosianae ex codice Ambrosiano (Q 13 sup. chart. saec. XV) ab Angelo Maio negligentissime editae. Ipse librum denuo contuli. Qui praeterea Mediolani servatur harum eclogarum liber (A 80 sup.) alterius apographum sine ullo pretio est, itaque eum prorsus neglexi. In his eclogis emendandis mihi praesto erant Caroli Ludovici Struvii notae

editionis Francofurtensis margini adscriptae, quarum usum debeo Th. Struvii V. Cl. benevolentiae.

Nova fragmenta quae ex Escorialensi et Parisino libro accesserunt suis locis inserui, ordine vulgato plerumque servato, quem si emendare voluissem, certe XIII, 10—fin. ante XIII 6 collocanda erant. Nolui autem eclogarii Ambrosiani consilium corrigere.

Librorum XVII et XVIII fragmenta distinguere non potui propter perturbationem qua numerorum notae apud Stephanum Byzantium confusae sunt. Maiorem denique decimi noni qui fertur libri partem vicesimo adscripsi propter adnotatiunculam, quae in initio fragmenti Parisini legitur, unde apparet bellum contra Pyrrhum fere totum in ultimo libro a Dionysio esse narratum.

171, 3 Μάλλιος hic et passim *Esc.* | 5 ἡλικίαν τε *Esc.* | 11 τὴν ῥαστώνην τῶν *Esc.* correxit Feder | 16 διεμέγει *Esc.* correxit Müller.

172, 4 μεστὰς Feder μετὰ *Esc.* | 13 οὐδὲν *Esc.* οὐδενὸς scripsi | 14 βαρὺς ἐτι *Esc.* correxit Müller | 17 ἔθος ἐστὶν *Esc.* teste Müllerero | 20 ἔπαρχον Feder ὑπαρχον *Esc.* | 23 τῆς ἀρχῆς? | 26 πράττοντες *Esc.* | 26 ὀλίγους *Esc.* correxit Feder.

173, 10 ἐξάνθρώπων *Esc.* quod correxi | 14 ἐλάτωνα *Esc.* | 16 λαμπρῶ *Esc.* quod correxi | 21 κατέπαυσε *Esc.* κατέπλησε Müller κατέκλυσε scripsi | 26 ἐπιτρέποντος *Esc.* ἐπιστροφόμενος Müller.

174, 8—10 verba corrupta satis probabili emendatione sanare non potui; ποιήση τὴν διάστασιν ἐκ τ. ἐ. Feder, altero ποιήσεται deleto μηχανήσεται maluit Müller | 18 βέβαιον *Esc.* quod correxi | 26 ἐφέρειν *Esc.* | 28 βουλευόμενοι *Esc.* correxit Feder.

175, 5 μετέωρον *Esc.* | 10 lacunam significavit Müller | 19 ἔδει, τότε? | 22 hiatum notavit Feder | 23 ὑπ' addidi | 25 ἔξωθεν *Esc.* | 30 ἐπὶ *Esc.*

176, 2 ὄπον *Esc.* correxit Feder | 11 τρέχουσι? | 18 ἄξοντα *Esc.* correxit Müller | 23 ἀναπήδα *Esc.* ἀνεπήδα

Müller | 26 καλοῦμαι delevi | πρὸς αὐτὸν Esc. quod correxi | 30 ὑποκαθίσθαι Esc. correxit Feder.

177, 4 ἀθρόον Esc. correxit Feder | 14 τῶν δεδρακότων Esc. correxit Müller | 21 fragmentum Ambrosianum hic inserui | 27 μὴ Ambr. quod correxi.

178, 1 μὲν οὐ addidit Müller | 2 ἐπὶ addidi | 4 κοινωήσαντες οὖν τῆς καὶ τὸ σ. Esc. | 11 τοῦ θυροῦβου Esc. correxit Feder | 15 κέχρηται Esc. | Κίρκης καὶ Καλπουρύνος Esc. | 16 καὶ ἄλλοι ἐπιχώριοι? | 21 καὶ inseruit Müller | 22 ἢ μὲν Esc. | 23 πεισθέντες Esc. | καὶ delevi | 27 προελθόντα Esc. quod correxi.

179, 3 καὶ addidi | 10 μάχης Esc. | 17 τὸ ἰσόπεδον αἰκνυμίλιον Ῥωμαῖοι καλοῦσιν· αἶνον γὰρ τὸ μηδ. Ambr. ἰσόπεδον μένον Esc. quod in i. Μήλιον correxi | 18 καλεῖται Esc. λέγουσι Ambr. | τόπον οὖν τινα Μήλιον ἐξ ἀρχῆς κληθέντα ὕστερον add. Ambr. a Struvio correctus, om. Esc. | 20 δὲ om. Ambr. | κατὰ τὴν εἰς μίαν λέξιν συνεκφορὰν maluit Struve | 21 αἰκνύμηνον Esc. | 27 πάνδεινα ποιούντος corrupta esse censuit Struve.

180, 4 τοῦ addidit Struve | 5 αὐτὸν addidi ex Ambr. | 12 ναματιαίων maluit Struve | 13 ἐπιλείψεις extat in Ambr. | 21 μαθεῖν Ambr. βαθεῖαν Struve | 24 ταῖς πολιτικάς—ταραχαῖς Ambr. correxit Struve | 26 ἀνίστανται? | 28 καὶ Ambr. καὶ Struve | 29 ἐλπιδες ἤτιους?

181, 6 αὐτῶν? | 8 τιμηθέντες corruptum censuit Struve | 19 περιφανῶς Ambr. | 23 χιλίας om. Ambr. | 27 ἔαδον τὸ πρᾶγμα maluit Struve | 30 τοῖς addidi ex Ambr. | 31 ἴσον Ambr.

182, 7 κατευέρθη Ambr. correxit Struve | 15 ἐγένοντο Ambr. correxit Struve | 16 ἐλέχθησαν Ambr. ἐλύθησαν scripsi | 25 γῆν ἀέρος?

183, 3 καταθύνοντες Ambr. | 10 πληθυνούσης δ' ? | 15 ἑορτάδων Ambr. correxit Struve | 21 οὐ πλείον Struve | 27 καταλαβεῖν Ambr. correxit Struve | 27 τελευτώσαν (Ambr.) τελευτώσα Struve.

184, 5 ἀπέστειλαν addidi ex Ambr. | 8 ἐκ προογόνων maluit Struve | 20 τὴν et 21 τότε addidi ex Ambr. | 26 σκοπῶ Ambr. quod correxi.

185, 2 αὐτῶ Ambr. correxit Struve | 5 συνιόντας Ambr. correxit Struve | 9 περιβαλὼν Ambr. correxit Struve | 17 ἢ addidit Struve.

186, 2 τεινομένοις maluit Struve | 14 τὰς θυρὰς Ambr. correxit Struve | 15 εἰς addidi ex Ambr. | 17 οἷ — ἀξιοῦτε? | 31 ἴσους Ambr. correxit Maius.

187, 10 δυνάμεις Ambr. correxit Maius | 12 πολέμους quod abest ab Ambr. huc inserui | 13 πολεμεῖν corruptum esse vidit Struve, qui ἐγκλείεσθαι vel tale quid coniecit | 21 ἔμελλεν Ambr. correxit Struve | καινή Struve | 22 τῶν Ῥωμαίων Ambr. | 28 ὑπερκείμενον Ambr. correxit Struve.

188, 1 περιουσίαν coniecit Struve | 7 ἀρχαίων Ambr. | 11 πολεμίον ὄψιν Struve | 19 πατρικίους Ambr. | 25 ὅτι οὔτε Ambr. correxit Maius | 29 καὶ τὸ addidi ex Ambr.

189, 1 τῶν Φαλλίσκων Ambr. quod correxi | 2 Φαλερίων Ambr. quod correxi | 3 ἰδία Ambr. correxit Struve | 12 ὀπλιτῶν maluit Struve | 15 αὐτῶν addidi ex Ambr. | 16 περιποιουμένους Suidas s. v. περιποιήσει.

190, 11 παραδόνς maluit Struve | 14 κοιμισάμενοι Ambr., quod correxi | 22 καταστήσασθαι Ambr. correxit Struve.

191, 3 ὑφ' ὧν maluit Struve | 7 σπανισάμενος Ambr. | 9 lacunam significavit Struve; an ἐγένετο, ὀπηνίκα? | 14 δεῖν addidi | 23 ἀσσαρίων addidit Maius.

192, 23 τὴν addidi ex Ambr. | 28 Κεδίκιον hic et 32 Ambr.

193, 5 με maluit Struve | 9 ἐλθούσας Ambr. | 13 μόνον Ambr. correxit Struve | 19 τῷ addidit Struve | 22 καὶ delendum censuit Struve.

194, 8 ὁ delevit Struve | 10 δὲ inseruit Struve | 12 τὴν ὑπάτου ἀρχὴν maluit Struve | 14 καὶ inserui | 16 πάλει Ambr. | 17 ἢ delevi | 24 τροφήν Ambr. quod correxi | 25 ἐν addidit Struve.

195, 16 τοῖς addidit Struve | 24 ἐς om. Ambr., addidit Maius | 31 καταληφθεῖσαν Ambr. correxit Struve | 30 γέγονει coniecit Struve.

196, 6 καὶ om. Ambr., add. Maius | 7 ἀσπασμῶ Ambr.,

correxit Struve | 22 δὲ inseruit Struve, qui postea maluit τὸ τε πρώτον.

197, 2 Κλονσήνους *Ambr.* | 3 πολεμῆν *Ambr.* quod correxi | 9 ἠξίου *Ambr.* | 12 ἀναγκαιώς] ἐξαπιναιώς coniecit Struve | 17 τε addidi ex *Ambr.* | 19 καὶ delevi.

198, 3 καθήκοντα *Ambr.* | 5 Ρικαίους maluit Struve | 12 μέγιστος ἴστι? | 13 τὸν ποτικόν *Ambr.* | 20 Γερμανία μέγχι δρυμοῦ Ταρκυνίου *Ambr.*

199, 2 βλέποντα *Ambr.* correxit Struve | 3 παραλαμβάνουσα *Ambr.* correxit Struve | 21 τοῦ scripsi τῆ *Ambr.* | 31 καλῶ *Ambr.* quod correxi.

200, 5 ἐπικράπτων *Ambr.* correxit Struve | 17 πολεμικὰ *Tur.* πολιτικά Valesius | 22 τὸν ἐν αὐτῶν *Ambr.*

201, 18 ἐν τῇ πόλει Vales. quod correxi | 24 post πρᾶξιν verbum ut συνέχειν intercidisse coniecit Valesius.

202, 10 χάριτι maluit Valesius | 12 μηδενὶ Valesius, correxit Reiske | 13 πρὸς inserui | 14 τὰ ἐπὶ πλείον Vales. quod correxi; τὰ ἐπιεικῆ πλείονα coniecit Reiske | 19 γίνονται Vales. quod correxi | 21 ἀλλὰ delevit Reiske.

203, 10 ἀμφ'] ἀφ' *Ambr.* | 11 pro ἐν οἷς καὶ τὰδε quae in *Ambr.* extant, inde a Maio edebatur Ἄνδρες τὰ μὲν | 22 λόγχοι *Ambr.* | μάχαιραι delevi μαγειρικά maluit Struve | 23 δὲ Struve τε *Ambr.* quod servare debui | 26 φοβέτω *Ambr.* correxit Struve | μηδὲ *Ambr.* μηδεὶς Maius | 30 κρείττων *Ambr.*

204, 5 αἱ add. Struve || 6 εἴτονται *Ambr.* | 8 ἐν delevi auctore Struvio | 9 ἐργάσεσθαι *Ambr.* quod correxi | 11 αἱ δὲ δὴ *Ambr.* quod correxi | 14 μορφῆς *Ambr.* | 16 πέφυκε addidi ex *Ambr.* | 17 πρὸς τὰ δεινὰ maluit Struve | 20 τὴν add. Struve | 30 ἐν τῇ πατρίδι στέφανου καταλαβεῖν coniecit Struve.

205, 1 ἐκπληρώσαντες *Ambr.*, οἱ ταύτῃ ἂν ἐκπληρώσαντες coniecit Struve | 7 τοῖς ἐν ὅπλοις *Ambr.* | 15 εὐπαιδὸς *Ambr.* correxit Struve | 16 διαιρουμένων *Ambr.* quod correxi | 26 βοῆ *Ambr.*

206, 9 διαρραγήναι *Ambr.*, quod correxi ut et v. 11 διαμένειν | 13 τῶν Ῥωμαίων *Ambr.* correxit Struve |

15 ἀπάντων ἀγαθῶν ἀνήσει coniecit Struve, quod recipiendum erat | 17 ὦν ᾤετο ἔχειν Struve.

207, 3 ἐπεὶ δὲ *Ambr.* | 16 τιβερονάτας *Ambr.* | 21 ὁ προεσβεντής maluit Struve | 28 βέβαιοι *Ambr.* quod correxi | 29 δ' inseruit Struve.

208, 9 ἐκφέρει *Ambr.* | 12 γίνεσθαι *Ambr.* | 16 προσβολῆς *Ambr.* quod correxi.

209, 8 νεκρὸς *Ambr.* correxit Struve | 17 ἐπικλύσαι *Ambr.* | 19 ὑπατεύοντος delevit Müller | 20 Ροτύλου *Esc.* | 30 ἄγειν *Esc.* correxit Feder.

210, 6 γενομένης *Esc.* | 27 distinxi post ὀλίγοις | 30 καὶ fortasse delendum.

211, 1 ἐν delevi | 4 τι δαί *Esc.* | 7 βελίστου scripsi πεδίου *Esc.* παλαιοῦ Feder | 8 Τυρανοῖς *Esc.* | 12 ἀρξαντες Feder | 13 τί δαί *Esc.* | κωλύσαν *Esc.* quod correxi | 17 ἡμᾶς τε *Esc.* quod correxi | 18 ἐάσωμεν *Esc.* | 19 ἐκάστοις *Esc.* quod correxi | 21 προσποιούνται?

212, 2 ἐμφανῆς *Esc.* quod correxi | 6 παρείληψεν ὅτι *Esc.* παρείληφτότα scripsi Federo auctore | 7 ὅντι *Esc.* | 8 λέξιν *Esc.* correxit Feder | 9 μηδ' scripsi μήτ' *Esc.* | 12 αὐτοῖς *Esc.* αὐτὸς Feder | 13 προσεσκεύασε *Esc.* quod correxi | 15 ἐπεὶ δὲ *Esc.* correxit Feder | 28 ὑπομένοντες *Esc.* quod correxi.

213, 4 τοῦτο *Esc.* quod correxi | 7 τινα *Esc.* τινῶν Feder | 10 οἱ addidit Feder | Ταρρακινάπολιν *Esc.* || 15 τὸν addidit Feder | 18 χεῖρ] γὰρ *Esc.* teste Müllerero | 28 βασιληῶν *Esc.*

214, 9 τὲ γὰρ *Esc.* τ' ἀγέριεν Feder | 10 τῆς *Esc.* τὰς scripsi | 12 χρόνου *Esc.* χρονισμού Müller | 16 ἀπιθῆς *Esc.* correxit Müller | 23 φόνον *Esc.* teste Federo, qui correxit; ψόγον teste Müllerero | 24 πολεμίων] πόλεων *Esc.* | 28 καὶ om. *Vat.* | 31 κατὰ addidit Ursinus | 31—32 Νεαπολιτῶν ἀποστεῖλαι *Vat.* (?) Νεαπολιτῶν πρέσβεις ἐποίησατο πρὸς τοὺς Νεαπολίτας ἀποστείλας *Mon.* quae nunc sic potius corrigenda esse video: *N.* πρέσβεις ἐψηφίσασατο πρὸς τ. *N.* ἀποστεῖλαι.

215, 1 ἀξιώσαντας libri, correxit Sylburg | 3 καὶ delevit Valesius | εἶχε libri, correxit Sylburg | 4 post

λόγων verbum interciderit ut διαλύσασθαι suspicatus est Stephanus | 7 ἄ Stephanus τὰ libri | προσήκειν scripsi προσήκειν libri | 9 θεραπείας libri, correxit Sylburg | 18 καταλύσασθαι maluit Reiske | 23 πιστεύοντες libri, correxit Portus | 24 ἀφανιζομένη libri, correxit Ursinus | 28 οὐν τῆς Mon. δὲ Vat.

216, 8 διεξέτεσαν libri, correxit Sylburg | 10 ἀπίστους καὶ δολίους libri, correxit Ursinus | τελευταῖος libri, correxit Sylburg | 11 τοὺς Νεαπολίτας libri, correxit Ursinus | 16 κακείνους libri, correxit Sylburg | 17 ἐπιχορηγοῦντες libri, correxit Reiske | 24 κατεῖχον Mon. κατεῖσχον Vat. | πᾶν πολλὴν Reiske τινα πόλιν libri | 26 εὐλόγιστον maluit Stephanus | 30 συνελάμβανεν maluit Ursinus. πόλεμον ὄρμα, ἐξ ὧν ἐπειδὴ ἕκαστος τῷ ἑαυτοῦ μέρει συνελάμβανεν coniecit Reiske | 31 χειροκράται maluit Stephanus.

217, 6 βουλευμάτων libri, correxit Sylburg | 9 ὀνόματι libri, quod correxi | 15 Ῥωμαίους libri, correxit Ursinus | 19 Οὐολούσκιος συστάντες libri, correxit Sylburg | 25 ἡμῶν libri, correxit Reiske | 26 ἐγείροντες libri, correxit Sylburg | 28 ἐποίκους libri, correxit Ursinus.

218, 1 ποιῶντες delevit Ursinus | 2 ἔκριναν libri, correxit Reiske | 4 προσκαλούμεθα libri, correxit Sylburg | 7 μηδεμίαν Ursinus δὲ μίαν libri | 10 ἔδοξεν scripsi δόξατα libri | ὑμῖν ἂ ἐπραττόν τινες ἐλλ' libri, quae transponendo correxi | 23 ἡμεῖς libri, correxit Ursinus | ἐπηχθέντες libri, correxit Sylburg | 24 γὰρ γοῦν Vat. | 25 οἱ add. Stephanus | 26 ὑμετέρων libri, correxit Ursinus.

219, 3 οὐδ' ἐν τούτῳ maluit Reiske | 7 διαφθεῖρειν Reiske φέρειν libri | 13 φυλακῆς Vat. | 14 ἀντικαλούμεθα libri, correxit Sylburg | 15 φλυγέλλης libri | οὐ πρὸ πολλοῦ Mon. | πολέμου Vat. | 16 ὅπερ libri, correxit Sylburg | 18 τυχόντες margo Vaticanus κατέχετε male Vat. | 19 ἠδικῆσθαι coniecit Sylburg | 23 lacunam notavit Reiske | 24 βουλευέσθε libri | τον τῶν P. Mon. | 25 πατρίους maluit Stephanus | 32 ἀραῖς Vat.

220, 3 χωρήσαι libri | 5 πράξιεν πᾶσι διδόναι τοῖς πολεμίοις ἐντυχεῖν libri, nisi quod ἐντυχεῖν Vat.; correxit

Reiske | 6 τὰ περὶ libri, correxit Reiske | 8 αὐτοῖς libri, αὐτοὺς scripsi | 9 δὲ addidit Stephanus | 12 βραδύτερα ἔσεσθαι τῶν Ῥωμαίων ἔσεσθαι Mon. | τὰ add. Ursinus | 15 ἐποίκους libri, correxit Stephanus | 16 αὐτοῖς maluit Ursinus | συνέβη παθεῖν Vat. | 23 ἢ addidi | 24 χειμερίζουσα Mon.

221, 4 πέντε in ipso Ambrosiano extat | 6 κατημέχθησαν maluit Struve | 7 ἔτοιμον Ambr. correxit Maius | 14 μεταωροπορεῖν Struve | 15 τὸ πῦρ addidit Struve | 16 ὑφαίστου Ambr. | λύσει Ambr. quod correxi; λύοι Struve | 20 χωρίον Ambr. correxit Struve.

222, 15 βαρὺ Ambr., correxit Maius | 23 κἂν scripsi καὶ Ambr. | 25 γε in Ambrosiano extare videtur, τε Struve | 28 τῆδε τῆ γῆ maluit Struve | 30 περιχυθέντες? | διασπασσάσθαι Ambr. teste Maio.

223, 2 ἀγορᾶς Ambr. | 4 οὔτε ἀγωνιζόμενοι (in rasura) παιόμενοι Ambr. | 12 τοὺς additum supra versum | 14 μιμήμασιν maluit Struve | 26 ὑφ' ἑαυτῷ Ambr., quod correxi | 30 verba lacera emendare nolui | 32 ἐφ' ἑλκῶν ἔχοντα?

224, 5 κοινὰ καὶ νόμιμα Suidas | 16 τοῦ delevi cum Suida | 18 δημοσίαν maluit Reiske | 20 θανάτου cod. Turonensis | 22 ἐν ταῖς στρατηγίαις καὶ ταῖς ἄλλαις coniecit Reiske.

225, 2 Ποπλίον Turon. Suidas; an Πουπλίλον conl. Liv. VIII 28? | ὡς Reiske ὄν libri | 3 καταληφθεῖς Turon. | 17 καὶ τὴν κελίον Turon. om. Suidas; ἀχθεῖς εἰς τὴν κελ. scripsi | 28 τοιοῦτό τι σεισμῶν maluit Struve.

226, 2 ἐναπολειφθέν Ambr., correxit Struve.

227, 5 ὁμόρρους Mon. | ὄρηθέντας Vat. | 7 τε delevit Sylburg | 14 συμπεσεῖν libri | 15 ἀπάσης πόλεως maluit Sylburg | 20 ἀπεκύρωσε Mon.

228, 2 δηλώσαντες et 4 παρακαλέσαντες libri, quod correxi | 3 τὴν τότε χώραν libri, correxit Hudson | 6 ἔργον. περιουσιμένη Mon. | 7 οἰνέτας Mon. | 11 ἰδίᾳ maluit Sylburg | 13 οὐ πολλῶ πρότερον maluit Stephanus | 18 ἔπεσθαι libri | 19 πείσεσθαι Mon. Vat., correxit Sylburg | 20 εἰ δὲ μὴ libri καὶ εἰ μὴ scripsi | 24



αὐτὸς *Vat.* | 30 καταφεύγοντας libri, correxit Ursinus | 32 τὴν inserui.

229, 1 ἐπὶ πλείω libri, correxit Sylburg | 2 εἰ addidit Reiske | 4 τε deleuit Stephanus, καὶ τὰ maluit Sylburg | 8 τῆς τάξεως τοῦ γένους *Tur. Suidas*, correxit Valesius; τῆς τ' ἀξίας maluit Reiske | 14 πλήθος om. *Suid.* | 21 ἡγεμόνα γενόμενον *Suid.* | 31 Φάβιον Σαννιτῶν *Turn.*, Φάβιον post. Πέντρος transposui.

230, 2 ταύτην add. Reiske | 14 ἐξέπλευσεν *Tur. ἐξήλασεν* Reiske | 16 Φάβιος μὲν οὖν maluit Reiske.

231, 3 ἄν inserni | 9 οὐ ἦται βουλή συνεχώρησεν *Tur.* correxit Reiske | 16 ἔχουσαν *Tur.* correxit Valesius.

232, 7 γινομένης *Ambr.*, quod correxi | 17 ἄν inseruit Struve.

233, 4 μένοντας? *Ambr.* | 8 ὀνεισμαμένην *Ambr.*, correxit Creuzer ὀπνιόμενον Struve | 11 verba uncinis inclusa desunt in *Ambr.*, addidit Maius | 21 πεπρωμένον maluit Maius, quod recipere debui | καὶ τὸν *Ambr.* | 29 ἀπεινῶν *Ambr.* | 32 δ' inserui.

234, 5 ὄν — τόπων *Ambr.*, correxit Struve | 9 αἰνησίας *Ambr.*, ἀνόσιος Maius | 18 ταραντίνων *Mon.* | 19 βουλομένων *Vat.* | 21 παρατηροῦν *Mon.* | 22 ἀναστάσεις libri, correxit Sylburg | 23 βαρβάρους *Mon.* | βαρβάρων *Vat.* | τελεντῶν *Mon. Vat.*, correxit Ursinus | 25 Ταραντίνων Ursinus παρα τίνων *Mon. Vat.* | 26 ὑπὸ libri ἀπὸ Sylburg.

235, 4 οὐδὲ scripsi οὐ libri | 10 δεξόμεθα libri, correxit Sylburg | ὅτι μὴ καὶ τὰ libri, correxit Ursinus | 14 τὸν addidi | ἦκουεν libri, correxit Stephanus | 14 τὸν ὑβριστήν coniecit Reiske | 29 ὑποισμένοι libri ὑβρισμένοι Sylburg.

236, 3 λελύσθαι ἢ μὴ maluit Reiske | 6 ὑπ' αὐτῆς libri, correxit Sylburg | 11 θύρας *Vat.* | 12 δὲ inseruit Sylburg ex cod. Pacii | 17 ἀριθμείσθαι *Vat. Mon.*, correxit Sylburg ex libro Pacii | 17 οὐ τοι] *al* Reiske | 18 καιροῦς om. *Vat.* | 21 ἔχουσαι *Ambr.* | 24 παντὸς ἀγαθοῦ εἶναι σύμβολον coniecit Struve | 24 τοῖς ἄλλοτριῶς *Ambr.* |

27 περίσκοποι *Ambr.* correxit Struve | 30 nescio quo casu μέρος pro eo quod *Ambr.* recte exhibet θέρος in ordinem verborum inrepperit.

237, 6 ῥωμαῖον *Ambr.* | 8 τύχη *Ambr.*, correxit Struve | 10 ἐσσελεύσεται κακῶ? | 13 προσανθούσαν *Ambr.* teste Maio προσανουῶσαν scripsi | 24 ἡριθμείτε *Ambr.*

238, 2 ἐπαγόμενος *Ambr.* correxit Struve | 3 οἰόμενος δὴ *Ambr.* correxit Struve | 4 ἄν inserui | περιμενεῖν coniecit Struve. Fortasse totum enuntiatum sic interpungendum: Οἰόμενος δὴ — συμβουλεύω τε — (διατήσω γὰρ — τὰ διαφορὰ) καὶ παρῆξω | 11 ὡς Struve οὖς *Ambr.* | 12 ποιήσητε *Ambr.* | 15 ἐπαγγέλομεν (sic) *Ambr.*, correxit Maius ex codice Vaticano quodam, mihi ignoto | 22 ὡς Maius καὶ *Ambr.*

239, 13 τοὺς ἄλλους πολεμούς? | 16 τοῦτο *Ambr.* ταῦτο Struve | 25 καὶ delendum cum Struvio.

240, 13 νεανιευόμενον extat in *Ambr.* | 18 διασκεδάσας φέρει τῷ κοντῷ in *Ambrosiano* addita post στίφος, sed postea a librario deleta | 19 ἀυφοτέρας τὰς χεῖρας *Ambr.*, correxit Struve | 31 τὸ νεκρὸν *Ambr.* | 32 διασήμενος *Ambr.*

241, 3 λυσιτελέστερον *Ambr.* correxit Struve | 5 ἐτέρων *Ambr.* | 7 τὴν κεφαλὴν *Ambr.*, correxit Struve | 10 ἡπειρώτων libri, correxit Sylburg | 22 ὅλων *Vat.* | 23 γέωνας *Mon.* νέωνας *Vat.* correxit Ursinus | πολέων κρατήσας ἀπαντας coniecit Reiske | 27 πόλεων libri πολέμων Ursinus | 29 προαίρεσιν libri, correxit Stephanus | ἀργύριον αὐτῶν τ. ἀ. libri, correxit Ursinus.

242, 5 ἔχοιτε *Mon.* | βουλευέσθαι libri, correxit Sylburg | 10 ἀγαθοῦς ἀνδρας maluit Reiske | 14 σε addidit Ursinus | 15 κὰν τῷ βίῳ maluit Struve | 16 ἄλλας *Mon.* ὄλας *Vat.* | 17 χρημάτων τε libri, correxit Sylburg | 18 ἐλασσόμενον libri, correxit Sylburg | μηδένα *Vat.*, teste Ursino | 29 μέτασχε *Vat.* μέταχς *Mon.*, correxit Sylburg | 31 ἴσεται *Vat.* | 32 οὐκ ἐλάττω τῶν ἐμῶν φίλων φέρεσθαι καὶ ξένων ἐν τοῖς τιμιωτάτοις εἶναι Reiske.

243, 2 ὑπηρετήσας *Mon.* | 3 τε addidi | 7 ὡς οὐκ ἐπὶ maluit Reiske | 9 οἷς libri οὖς Sylburg | 10 νενικηκόσι

libri, correxit Ursinus | 11 ἐγκαταλιπεῖτε καὶ *Vat.* ἐγκαταλιπεῖν δὲ καὶ *Mon.* | 16 εἶναι ἑωμαῖοι ποιήσαντα φίλον *Mon. Vat.* quae correxi | 17 λέγεις *Vat.* | 21 τεκμαιρόμενον libri, correxit Sylburg.

244, 4 περὶ τούτων Sylburg τούτων Reiske | 6 πράττει *Vat.* | 8 οὔτε ἀκούσας *Mon.* | 10 παρὰ τῷ libri, correxit Sylburg | 15 ἐξέγινετο *Vat.* | 16 ἄρχων *Mon.* | καὶ μεγίστας libri, correxit Ursinus | 17 καὶ addidit Ursinus | προσβείων *Mon.* | 18 σεβασμῶν libri, correxit Sylburg | 20 μετώπῳ *Mon.* μετώπῳ *Vat.* με τόπῳ Sylburg | 22 εἰ μὴ *Vat.* εἰμὶ *Mon.* | 25 ἐνοχλεῖν libri, correxit Ursinus. | 27 ὁ δὲ] οὐδὲ *Mon.* | 29 ἂν addidi | 32 ἀπαξίωσιν *Vat.*

245, 2 ἀλλήλους *Vat.* | 4 κατηγόρηκε *Mon.* κατηγόρηκα *Vat.*, quod correxi | 5 ἐξίσωσε Sylburg ἐποίησε libri | 8 πάντων μακαρίων *Mon.* | ἐμαυτὸν *om. Vat.* | 9 τοῦτο libri, correxit Sylburg | 11 παρέχει *Mon.* | 14 σκεδάσει libri, correxit Sylburg | ὅταν libri ὅτι ἂν scripsi | 16 παρασχούσα Sylburg | 19 εἶναι libri εἶην Reiske | 20 παρέσχων *Mon.* | 21 ὑπερβαλόντων *Mon.* | 23 τοὺς πλουσίους *Vat.* τοὺς πλεισίτους *Mon.*, correxit Sylburg | 25 ὁ *om. Mon.* | 26 αὐτοὺς libri, correxit Ursinus | δ' inseruit Sylburg | 28 ταῦτα τὰ κοινὰ libri, correxit Sylburg | 29 ἐπαίτιον maluit Reiske | 31 αἰτεῖς scripsi αἴτιος εἰ libri.

246, 1 τὸ *om. Mon.* | πράγματα libri χρήματα Ursinus | 2 μακαριωτάτους *Mon.* μακάριον τούτους *Vat.* | 6 καλῶν *Vat.* | πάρασχε *Mon.* | 8 ἐπεὶ inserui ἦνίκα coniecit Reiske | 9 καὶ ante Βρεττίους addidit Ursinus | 10 ἐστάλη *Mon.* | 13 ἐξελὼν libri, correxit Sylburg | 15 προσήνεγκαν libri, correxit Reiske | 17 τῶν θριάμβων libri, correxit Portus | 18 βουλόμην libri, correxit Sylburg | 19 τὸν] τῶν *Vat.* | 21 αὐτὸν πλείστοι αὐτὸν συχνοὶ cum Sylburgio delendum est | τούτοις libri τούτῳ Sylburg | 23 δέξωμαι *Vat.* | 25 πρὸς τὸ libri πρὸς τῷ Sylburg | 26 καλῶ καὶ δικαίῳ coniecit Reiske | πόσος ἦν libri προσῆν Stephanus | 28 βαρύνοντες libri, correxit Sylburg | 29 κοσμήσας libri, quod cum Sylburgio in κοσμήσει corrigendum erat.

247, 6 ταῦτα προφερόμενοι accesserunt ex Ambro-

siano, omittunt libri Ursiniani | 13 ἦν *Ambr.* | 14 ποιήσασθαι εἰρημν ταύτην ποιήσας Struve ποιήσασθαι *Ambr.* | 22 προσβευτιῶν Struve προσβύτερον *Ambr.* | 26 τῆς μεγάλης *Ambr.* correxit Struve.

248, 13 μετάγωγιν *Ambr.* quod correxi | 16 περιλαβῶν *Ambr.* correxit Struve | 17 χρήσιμον *Ambr.* correxit Struve | 21 αὐτοῦ *Ambr.* correxit Struve | 31 τὸ εὐγενές scripsi εὐγενές *Ambr.*

249, 7 λαμβάνουσι *Ambr.* | 11 ὕφ' ὑμῖν *Ambr.* correxit Struve | ἔστι Mainus ἔτι *Ambr.* | 15 πολλὰ ὅσα scripsi ὅλα ὅσα *Ambr.* | 23 ἐμαυτὸν scripsi ἐαυτὸν *Ambr.* | 30 σεαυτῷ maluit Struve | μηδὲ *Ambr.*, quod correxi.

250, 11 συστήναι et 12 συνέστη coniecit Struve.

251, 12 θεῶν πρώτους *Ath.*

252, 3 ὁμοῦ τε *Ath.*, correxit C. Müller | 5 ἐπάραξιν Dübner πάραξιν *Ath.* | 8 ἀπλακτωτικῆ *Ath.* correxit Wescher | 13 κατομολοττους *Ath.* correxit Müller | 14 κέρως *Ath.* κέρως Müller | 17 θυρασαφόω *Ath.* | 18 οὐλεσκουο *Ath.* | 23 τ' addidi | 27 στομίω coniecit Wescher | στάλιξιν Müller στόρδυξιν ὀρθαῖς Dübner | 29 ἀεπάκρων *Ath.* correxit Wescher | 31 καταράκτας *Ath.*

253, 3 ἄς *Ath.*, correxit Müller | 8 χερμάδων coniecit Müller | 10 τάξεις *Ath.* | 12 ἴδιον *Ath.* ἴονιον Müller | 15 τε addidit Müller | 19 ἀλλάξαντες *Ath.*

254, 1 ἵππων *Ath.*, quod correxi | ἡ add. Minas | 10 στρατείας ut et v. 16 *Ath.*, correxit Müller | 11 ἐνέτειλαν *Ath.* | 18 περασφόροις *Ath.*, correxit Dübner | 21 προαγόντων coniecit Müller | 25 καὶ delevi cum Müller.

255, 1 λαχόντες mavolt Müller | 7 ἐαυτῶν *Ath.*, correxit Minas | 8 ὑπολαβεῖν *Ath.* correxit Minas | 21 οὔτε scripsi οὐδὲ *Ath.* | 24 συλλαβεῖν *Ath.* συμβολεῖν scripsi | 32 ἐλθόντες Müller | εἰλήφασιν *Ath.* correxit Minas.

256, 3 ὅς Dübner ὡς *Ath.* | 5 παρῆν Dübner παρῶν *Ath.* | γὰρ delevit Dübner | 10 ὕφο *Ath.* ἄφω Wescher; an ὑφάπτεται ὁ χάραξ.? | 13 ἔφυγον inseruit Dübner | 19 περοῖδόντες *Ath.*, correxit Wescher | 22 ὄχλον *Ath.* ὄχθον scripsi | 23 καὶ *om. Ath.* | 27 πιστικῆς *Ath.* correxit

Minas; περικῆς Dübner | 31 αὐτὸν add. Wescher | 32 πλείω Ath.

257, 15 Μεσήνην hic et ubique fere Esc. | 24 ἀπελυθόντων Esc., correxit Müller | 25 ἐν τῇ ὑποφίαις Esc. sed τῇ a librario iam deletum | 26 ἐν τῇ πόλει mavolt Feder | 28 ἢ τις Esc. correxit Müller | 32 τοὺς ἐπιφανεστάτους Esc. quod correxi.

258, 1 τε delevi | 2 καὶ ante κατασκευῶς inserendum censent Müller et Feder | 5 ὡς ἀξιούς Esc. | 7 κοινανοῦς Esc. | 11 ὅτι καὶ Μεσσήνην mavolt Müller | 12 πρότειχον Esc. correxit Müller; nomen Mamertincrum intercidisse suspicor | ὑφ' οὗ delevit Müller | 14 γραμματάρχης Esc. | 17 αὐτοῖς? | ἐπιπρομασθέντα Esc. correxit Feder; ἐπιπρομασθέντα Müller | 24 ὅς ἐξ ὁδοῦ Esc. | 26 μέλλειν Esc. correctum a Federo ex Ambrosiano | 29 τινὲς μὲν οὖν mavolt Feder | 32 φθάσειν Esc. correxit Feder.

259, 11 τὰς τε γὰρ γυναῖκας quamvis dubitanter coniecit Feder | 14 Λέκιος δὴ? | 23 τὸν ἕτερον τῶν κ. π. στρατηγῶν scripsi ἕτερον τὸν κ. π. στρατηγῶν Esc. | 28 περιοδίας φερύσας Esc. | 29 ἀνθρωπον Esc., correxit Feder.

260, 9 ὁ addidit Feder | 12 ἐκκεκαυμένας Müller ἐκκεκαυμένους Esc. | 15 φαβρικιον delevi | 19 φρουράς Esc.

261, 5 οὐς] ὅς Ambr. | 12 ὀσιωτέρους et δικαιωτέρους maluit Struve | 18 ἐν ὀδίνους Ambr. | 21 πᾶσι Ambr. | 27 ταῖς πόλεσι Tur. correxit Reiske.

262, 6 κατέλειπε Tur. correxit Reiske | 32 τὰ om. Suidas.

263, 3 ἐτρέπετο Tur. Suidas, correxit Reiske | 15 ἢ ὅτι Tur. ἢ delevit Reiske | 17 καὶ add. Reiske | 23 φύλαρχος Tur. φρούραρχος Valesius.

264, 9 ἀνοσίων Tur. corr. Reiske | 11 ταύτη] πάνν coniecit Reiske | 15 πράγματος, τοῖς εἰσηγησαμένοις prae-ter libros addidi, partim auctore Valesio | 17 ἐξαχθέντα sive ἐξεληθέντα (sic!) sive ἐξενεχθέντα coniecit Reiske | 21 αὐτῆς Tur. | 27 προσενεχθείς Tur. correxit Reiske.

265, 2 δι' αὐτοῦ Suidas v. παραιτησόμενος | 4 οὐ

om. Tur. | 20 ἐπικουρία τοῖς ἑτέροις ἢ ἄφιξις Tur. correxit Reiske.

266, 2 συστάδν Ambr. | 3 κατορθοῦντας Ambr.

267, 2 κ' ἀργούς Ambr. | 7 γινομένων? | 8 ἐκάστου Ambr. correxit Nauck | 14 τῆς τιμωρίας Ambr. | 18 ἀδελφούς τῆς οὐσίας maluit Struve | 19 ἀμελείας Ambr. ἀσελγείας Struve | 20 ταφρῶν Ambr. | 26 Φάκιος Ambr. | Οἰούλιος scripsi Ἀλγούλιος Ambr. | 28 περὶ πρεσβείας mihi ex nota in margine apposita in verborum ordinem irrepsisse videntur | δωρεαῖς ἰδίᾳ maluit Struve.

268, 13 παινόμενοι Ambr. | 14 συμφαινομένη Ambr., quod correxi; συμφνομένη Struve | 19 διαρκείς Ambr. | 22 ὄπλων Ambr. correxit Struve | 30 καταληφθείσης Ambr. | 32 σφαγαί τε καὶ πολλῶν Ambr.

269, 9 διὰ πάντων Ambr. δὴ ἀπάντων Struve | 24 ᾧ addidit Visconti apud Maium | 27 μέλινα Struve πλείονα Ambr. in quo aliud latere videtur, velut λιτὸν.

Corrigenda.

6, 13 lege δὲ 15, 5 l. φηγάδων Κάισωνα 15, 12 l. ἤξει τε  
 48, 31 l. ἀπήλασε τὸν ὄ. 66, 3 l. ἔμποις 81, 20 l. πατρίδι,  
 ὁμοιοῦς τε καὶ εἰρήνης καὶ τ. 116, 19 l. οἴω 144, 26 l.  
 ἐντῆρος 145, 24 l. ἐπιλογιζόμενος 145, 25 l. μήτε νόμῳ  
 156, 14 l. Σαβίνων 161, 13 l. δήμαρχοι 166, 19 l. ἡγε-  
 μονίας, ἐπεὶ 175, 17 l. Μαίλιος 175, 21 l. νόξ 182, 1  
 l. δόλοις καὶ 188, 3 l. Αἰνείαν 194, 24 l. τροφῆς 205,  
 20 l. ἐποίουν, αὐτοὶ 222, 6 l. λιμῶ 223, 15 l. ῥάπον  
 228, 27 l. ἄπαντας 247, 6 l. 247, 1 — 6 Ambr. 256, 12  
 l. ὑπὸ τοῦ βασιλέως.

ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΛΑΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΔΕΚΑΤΟΣ.

Μετὰ δὲ τούτους ὀλυμπιάς μὲν ἦν ὀγδοηκοστή,  
 ἦν ἐνίκα στάδιον Τορὺμβας Θεσσαλὸς ἄρχοντας Ἀθη-  
 νησι Φρασικλέους ὑπατοὶ δὲ ἀπεδείχθησαν ἐν Ῥώμῃ  
 Πόπλιος Οὐολούμμιος καὶ Σερούιος Σολπίκιος Κα-  
 μερίνος. οὗτοι στρατιὰν μὲν οὐδεμίαν ἐξήγαγον οὔτε 5  
 1982 ἐπὶ τιμωρίας ἀναπράξει τῶν ἀδικούντων σφᾶς τε αὐ-  
 τοὺς καὶ τοὺς συμμάχους οὐδ' ὡς διὰ φυλακῆς τὰ  
 οἰκεία ἔχοντες τῶν δ' ἐντὸς τείχους κακῶν πρόνοιαν  
 ἐποιούντο, μὴ τι δεινὸν ὁ δῆμος ἐπὶ τῇ βουλῇ συστάς  
 ἐξεργάσθαι. ἐταράττετο γὰρ αὐτῆς ὑπὸ τῶν δημάρ- 10  
 χων ἀναδιδασκόμενος, ὅτι πολιτειῶν κρατίστη τοῖς  
 ἐλευθέροις ἐστὶν ἰσηγορία, καὶ κατὰ νόμους ἡξίου  
 διοικεῖσθαι τὰ τε ἰδιωτικά καὶ τὰ δημόσια. οὐπω  
 γὰρ τότε ἦν οὔτ' ἰσονομία παρὰ Ῥωμαίοις οὔτ' ἰση-  
 γορία, οὐδ' ἐν γραφαῖς ἅπαντα τὰ δίκαια τεταγμένα 15  
 ἀλλὰ τὸ μὲν ἀρχαῖον οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἔταττον τοῖς  
 δεομένοις τὰς δίκας, καὶ τὸ δικαιωθῆν ὑπ' ἐκείνων,  
 τοῦτο νόμος ἦν. ὡς δ' ἐπαύσαντο μοναρχούμενοι,  
 τοῖς κατ' ἐνιαυτὸν ὑπατεύουσιν ἀνέκειτο τὰ τε ἄλλα  
 τῶν βασιλέων ἔργα καὶ ἡ τοῦ δικαίου διάγνωσις, καὶ 20

τοῖς ἀμφισβητοῦσι πρὸς ἀλλήλους ὑπὲρ ὀτουδήτινος  
 ἐκεῖνοι τὰ δίκαια οἱ διαιροῦντες ἦσαν. τούτων δὲ τὰ  
 μὲν πολλὰ τοῖς τρόποις τῶν ἀρχόντων ἀριστίνδην  
 ἀποδεικνυμένων ἐπὶ τὰς ἀρχὰς ἀκόλουθα ἦν· κομιδῇ 1983  
 5 δὲ ὀλίγα τινὰ ἐν Ἱερραῖς ἦν βύβλοις ἀποκειμένα, ἃ  
 νόμων εἶχε δύναμιν, ὧν οἱ πατρίκιοι τὴν γνώσιν εἶ-  
 χον μόνοι διὰ τὰς ἐν ἄστει διατριβάς, οἱ δὲ πολλοὶ  
 ἐμπορευόμενοι τε καὶ γεωργοῦντες καὶ διὰ πολλῶν  
 ἡμερῶν εἰς ἄστυ καταβαίνοντες ἐπὶ τὰς ἀγορὰς  
 10 ἄπειροί ἐτι ἦσαν. τὸ δὲ πολίτευμα τοῦτο πρῶτος μὲν  
 ἐπέλασεν εἰσαγαγεῖν Γάιος Τερέντιος δημαρχῶν ἐν 1984  
 τῷ παρελθόντι ἔτει· ἀτελεῖς δὲ ἠναγκάσθη καταλι-  
 πεῖν, τοῦ τε πλήθους ὄντος ἐπὶ στρατοπέδων καὶ  
 τῶν ὑπάτων ἐπίτηδες ἐν τῇ πολεμίᾳ γῆ τὰς δυνά-  
 15 μεις κατασχόντων, ἕως ὅ τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς παρέλθῃ  
 χρόνος.

II. Τότε δ' αὐτὸ παραλαβόντες οἱ περὶ Αὐλον  
 Οὐεργίνιον δήμαρχοι τελειῶσαι ἐβούλοντο· ἵνα δὲ  
 μὴ τοῦτο γένοιτο μηδὲ κατὰ νόμους ἀναγκασθεῖεν  
 20 πολιτεύεσθαι, πάντα ἐπιμηχανώμενοι διετέλουν οἱ  
 τε ὑπάτοι καὶ ἡ βουλὴ καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν οἱ  
 πλεῖστον ἐν τῇ πόλει δυνάμενοι· βουλαὶ τε πολλαὶ  
 καὶ ἐκκλησίαι συνεχεῖς ἐγίνοντο πειραί τε παντοδα-  
 τὰς ἀρχαῖς κατ' ἀλλήλων, ἐξ ὧν οὐκ ἄδηλον ἄπασιν  
 25 ἦν, ὅτι μεγάλη τις καὶ ἀνήκεστος ἐξ ἐκείνης τῆς φι-  
 λονεικίας ἀναστήσεται τῇ πόλει συμφορὰ. συνήπτετο  
 δὲ τοῖς ἀνθρωπίνους λογισμοῖς καὶ τὰ θεῖα δειμάτα 1985  
 προσγεγόμενα, ὧν ἕνια οὐτ' ἐν δημοσίαις εὐρίσκειτο  
 γραφαῖς οὔτε κατ' ἄλλην φυλαττόμενα μνήμη οὐδε-  
 30 μίαν. ὅσα μὲν γὰρ ἐν οὐρανῷ σέλα φερόμενα καὶ  
 πυρὸς ἀνάψεις ἐφ' ἐνὸς μένουσαι τόπου γῆς τε μυ-  
 κήματα καὶ τρόμοι συνεχεῖς ἐγίνοντο, μορφαὶ τ' εἰ-

δώλων ἄλλοτ' ἄλλοιαι δι' ἀέρος φερόμεναι καὶ φω-  
 ναὶ ταράττουσαι διάνοιαν ἀνθρώπων, καὶ πάντα ὅσα  
 τούτοις ὅμοια συνέπιπτεν, εὐρίσκειτο καὶ πάσαι ποτὲ  
 γεγονότα ἦν τε καὶ μᾶλλον· οὐ δὲ ἄπειροί τε καὶ  
 ἀνήκοι ἐτι ἦσαν καὶ ἐφ' ᾧ δὲ μάλιστα ἐταράχθησαν, 5  
 τοιούτῳ ἦν· νικητὸς ἐξ οὐρανοῦ κατέσκηψεν εἰς γῆν  
 πολὺς οὐ χιόνα καταφέρων, ἀλλὰ σαρκῶν θραύσματα  
 1000 ἐλάττω τε καὶ μείζω. τούτων τὰ μὲν πολλὰ μετάρσια  
 προσπετόμεναι πτηνῶν ὅσαι εἰσὶν ἀγέλαι τοῖς στόμα-  
 σιν ἤρπαζον· τὰ δ' ἐπὶ τὴν γῆν ἐνεχθέντα ἐν αὐτῇ 10  
 τε τῇ πόλει καὶ κατὰ τοὺς ἀγρούς μέχρι πολλοῦ χρόνου  
 κείμενα διέμεινεν οὔτε χρόαν μεταβάλλοντα, οἷα πά-  
 σχουσι παλαιούμεναι σάρκες, οὔτε σηπεδόνι διαλυό-  
 μενα, ὥς ἐτε ἀπ' αὐτῶν οὐδὲν πονηρόν. τοῦτο τὸ τέρας  
 1087 οἱ μὲν ἐπιχώριοι μάντις οὐχ οἰοί τ' ἦσαν συμβαλεῖν· 15  
 ἐν δὲ τοῖς Σιβυλλείοις εὐρέθη χρησμοῖς, ὅτι πολε-  
 μίων ἄλλοεθνῶν παρελθόντων εἰς τὸ τεῖχος ἀγῶν  
 ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ καταλήψεται τὴν πόλιν, ἄρξει  
 δὲ τοῦ πρὸς τοὺς ἄλλοεθνεῖς πολέμου στάσις ἐμφύ-  
 λιος, ἣν χοῆν ἀρχομένην ἐξελαύνοντας ἐκ τῆς πόλεως 20  
 καὶ θεοὺς παραιτουμένους θυσίαις τε καὶ εὐχαῖς  
 ἀποτρέψαι τὰ δεινὰ· καὶ κρείττους ἔσονται τῶν  
 ἐχθρῶν. ὡς δ' ἐξηνέχθη ταῦτ' εἰς τὸ πλῆθος, Ἱερά  
 μὲν πρῶτον ἔθυσαν οἷς ἡ τούτων ἐπιμέλεια ἀνέκειτο  
 θεοῖς ἐξακεστηρίοις τε καὶ ἀποτροπαίοις, ἔπειτα συνα- 25  
 χθέντες εἰς τὸ βουλευτήριον οἱ σύνοδοι παρόντων  
 καὶ τῶν δημάρχων ὑπὲρ ἀσφαλείας τε καὶ σωτηρίας  
 τῆς πόλεως ἐσκόπουν.

III. Τὸ μὲν οὖν καταλύσασθαι τὰ πρὸς ἀλλήλους  
 ἐγκλήματα, καὶ μιᾶς χρῆσασθαι γνώμῃ περὶ τῶν κοι- 30  
 νῶν, ὡς ὑπετίθεντο οἱ χρησμοί, πάντες ὁμολογοῦν·  
 ὅπως δ' ἂν τοῦτο γένοιτο καὶ ἀπὸ τίνων ἀρχαμένων

εἰκεῖν τοῖς ἑτέροις τὸ διάφορον [καὶ πῶς] παύσαιτο 198  
 στασιάξον, οὐ μικρὰν αὐτοῖς παρελχεν ἀπορίαν. οἱ  
 μὲν γὰρ ὑπάτοι καὶ οἱ τῆς βουλῆς προεστώτες τοὺς  
 εἰσφέροντας καινὰ πολιτεύματα δημάρχους καὶ κατα-  
 5 λύειν ἀξιοῦντας τὸν πάτριον τῆς πολιτείας κόσμον  
 αἰτίους ἀπέφαινον τῆς ταραχῆς. οἱ δὲ δήμαρχοι σφᾶς  
 μὲν αὐτοὺς οὐδὲν ἔλεγον ἀξιοῦν οὔτε ἄδικον οὔτε  
 ἀσύμφορον εὐνομίαν εἰσάγειν βουλομένους καὶ ἰση-  
 10 γορίαν τοὺς δὲ ὑπάτους καὶ τοὺς πατρικίους αἰτίους  
 ἔσεσθαι τῆς στάσεως ἔλεγον, ἀνεμίαν αὔξοντας καὶ  
 πλεονεξίαν καὶ ζηλοῦντας τὰ τῶν τυράννων ἦθη.  
 ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια παρ' ἑκατέρων ἐπὶ  
 15 πολλὰς ἡμέρας ἔλέγετο, καὶ προὔβαινε διὰ κενῆς ὁ  
 χρόνος· ἐν ᾧ τῶν κατὰ τὴν πόλιν οὔτε δημοσίων  
 οὔτε ἰδίων οὐδὲν ἐτελεῖτο. ὡς δ' οὐδὲν ἐγένετο τῶν  
 1989 προὔργων, λόγων μὲν ἐκείνων καὶ κατηγοριῶν, ὡς  
 ἐποιοῦντο κατὰ τῆς βουλῆς, οἱ δήμαρχοι ἀπέστησαν·  
 συναγαγόντες δὲ τὸ πλῆθος εἰς τὴν ἐκκλησίαν ὑπ-  
 ἔσχοντο τῷ δήμῳ νόμον εἰσολέσειν ὑπὲρ ὧν ἤξιοιεν.  
 20 ἐπαινέσαντος δὲ τοῦ πλήθους τὸν λόγον, οὐδὲν ἔτι  
 ἀναβαλόμενοι τὸν παρασκευασθέντα νόμον ἀνέγνω-  
 σαν· κεφάλαια δὲ αὐτοῦ τάδε ἦν· ἄνδρας αἰρεθῆναι  
 δέκα ὑπὸ τοῦ δήμου συναχθείσης ἀγορᾶς ἐννόμου  
 τοὺς πρεσβυτάτους τε καὶ φρονιμωτάτους, οἷς ἐστὶ  
 25 πλεῖστη πρόνοια τιμῆς τε καὶ δόξης ἀγαθῆς· τούτους  
 δὲ συγγράφοντας τοὺς ὑπὲρ ἀπάντων νόμους τῶν τε  
 κοινῶν καὶ τῶν ἰδίων εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν·  
 τοὺς δὲ συγγραφομένους ὑπ' αὐτῶν νόμους κεί-  
 σθαι ἐν ἀγορᾷ ταῖς καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδει-  
 30 χθησομέναις ἀρχαῖς καὶ τοῖς ἰδιώταις ὄρους τῶν  
 πρὸς ἀλλήλους δικαίων. τοῦτον προθέντες τὸν νό-  
 μον, ἐξουσίαν ἔδωκαν τοῖς βουλομένοις αὐτοῦ κατη-

γορεῖν, ἀποδείξαντες τὴν τρίτην ἀγοράν. ἦσαν δὲ  
 1990 πολλοὶ καὶ οὐχ οἱ φαυλότατοι τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου,  
 πρεσβύτεροι καὶ νέοι, κατήγοροι τοῦ νόμου, λόγους  
 διεξιόντες ἐκ πολλῆς ἐπιμελείας καὶ παρασκευῆς·  
 καὶ τοῦτ' ἐφ' ἡμέρας ἐγένετο συχνάς. ἔπειτα οἱ δῆμ- 5  
 αρχοὶ δυσχεραίνοντες ἐπὶ τῇ διατριβῇ τοῦ χρόνου,  
 λόγον μὲν οὐδένα ἔτι τοῖς κατηγόροις τοῦ νόμου  
 προσέθεσαν, ἡμέραν δὲ ἀποδείξαντες, ἐν ἣ κωρώσειν  
 αὐτὸν ἐμελλον, παρεῖναι τοὺς δημότας εἰς αὐτὴν  
 παρεκάλουν ἀθρόους, ὡς οὐκέτι ταῖς μακροαῖς δημη- 10  
 γορίας ἐνοχληθησομένους, ἀλλ' ἐποίησαν ὑπὲρ αὐ-  
 τοῦ τὴν ψῆφον κατὰ φυλάς. οἱ μὲν δὲ ταῦτα ὑποσχό-  
 μενοι διέελυσαν τὴν ἐκκλησίαν.

III. Μετὰ δὲ ταῦτα οἱ τε ὑπάτοι καὶ τῶν πατρι-  
 κίων οἱ πλεῖστοι δυνάμενοι τραχύτερον ἤδη αὐτῶν 15  
 προσιόντες καθήπτοτο, λέγοντες, ὡς οὐκ ἐπιτρέ-  
 πουσιν αὐτοῖς νόμους εἰσηγεῖσθαι καὶ τούτους ἀπρο-  
 βουλεύτους. συνθήκας γὰρ εἶναι κοινὰς πόλεων τοὺς  
 1991 νόμους, οὐχὶ μέρους τῶν ἐν ταῖς πόλεσιν οἰκούντων.  
 τοῦ τε πονηροτάτου ὀλέθρου καὶ ἀνηκέστου καὶ 20  
 οὐδ' εὐσχήμονος ἀρχὴν ἀπέφαινον εἶναι πόλεσι τε  
 καὶ οἰκοῖς, ὅταν τὸ κείριστον τῷ κρατίστῳ νομοθετῇ.  
 Ποίας δὲ ὑμεῖς, ἔφασαν, ᾧ δήμαρχοι, νόμων εἰσφο-  
 ρᾶς ἢ ἀναιρέσεως ἐξουσίαν ἔχετε; οὐκ ἐπὶ ᾧ τοῖς  
 μὲν δικαίοις ταύτην τὴν ἀρχὴν παρὰ τῆς βουλῆς 25  
 ἐλάβετε, τοῖς δ' ἀδικουμένοις ἢ κατισχυμένοις τῶν  
 πενήτων βοηθεῖν ἠτήσασθε τοὺς δημάρχους, ἄλλο  
 δὲ μηδὲν πολυπραγμονεῖν; εἰ δ' οὖν καὶ πρότερον  
 ἦν τις ὑμῖν δύναμις, ἦν οὐκ ἐκ τοῦ δικαίου βιασά-  
 30 μενοι ἡμᾶς ἐλάβετε, ὑποκατακλινομένης ἐκάστῳ  
 πλεονεκτηματι τῆς βουλῆς, οὐχὶ καὶ ταύτην νῦν  
 ἀπολωλέκατε τῇ μεταβολῇ τῶν ἀρχαιρεσιῶν; οὔτε

γὰρ βουλῆς δόγμα ὑμᾶς οὐκέτι ἀποδείκνυσιν ἐπὶ τὴν ἀρχήν, οὔτε αἱ φράτραι τὴν ψῆφον ὑπὲρ ὑμῶν ἐπιφέρουσιν, οὔτε ἱερά προθύεται τοῖς θεοῖς πρὸ τῶν ἀρχαιρεσιῶν, ἃ κατὰ νόμους ἐχοῖν ἐπιτελεῖσθαι, οὔτε ἄλλο τῶν πρὸς τοὺς θεοὺς εὐσεβῶν ἢ πρὸς ἀνθρώπους ὁσίων οὐδὲν ἐπὶ τῆς ἀρχῆς τῆς ὑμετέρας γίνεται. τίνος οὖν ὑμῖν ἔτι μέτεστι τῶν ἱερῶν καὶ σεβασμοῦ δεομένων, ὧν ἔν τι καὶ ὁ νόμος ἦν, ἐξαρηνησαμένους ἅπαντα τὰ νόμιμα; Ταῦτά τε δὴ τοῖς 10 δημάρχοις ἔλεγον οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ νέοι αὐτῶν κατὰ ἐταιρίας διεξιόντες ἀνὰ τὴν πόλιν, καὶ τοὺς μὲν ἐπιεικεστέρους τῶν δημοτῶν ὁμιλλοὺς ἀνελάμβανον κεχαρισμέναις, τοὺς δὲ ἀπειθεῖς καὶ ταραχώδεις ἀπειλαῖς κατεπλήττοντο κινδύνων, εἰ μὴ σωφρονήσκειαν· ἦδη δὲ τινὰς τῶν πάντων ἀπόρων καὶ ἀπερομμένων, οἷς οὐθενὸς τῶν κοινῶν παρὰ τὰ ἴδια κέρδη φροντῖς ἦν, παίοντες ὡσπερ ἀνδράποδα ἀνεῖργον ἐκ τῆς ἀγορᾶς.

V. Ὁ δὲ πλείστους τε περὶ αὐτὸν ἔχων ἐταίρους καὶ μέγιστον τῶν τότε νέων δυνάμενος Κάλσων Κοῖντιος ἦν, υἱὸς Λευκίου Κοιντίου τοῦ καλουμένου 1993 Κικιννάτου, ᾧ γένος τ' ἦν ἐπιφανὲς καὶ βίος οὐδενὸς δεύτερος, ἀνὴρ ὀφθηναῖ τε κάλλιστος νέων καὶ τὰ πολέμια πάντων λαμπρότατος φύσει τε περὶ λόγους κεχωρημένος ἀγαθῆ· ὃς ἐν τῷ τότε χρόνῳ πολὺς ἔρρει κατὰ τῶν δημοτικῶν, οὔτε λόγων φειδόμενος, ὧν βαρὺ τοῖς ἐλευθέροις ἀκούειν, οὔτε ἔργων ἀκούουσαν τοῖς λόγοις ἀπεχόμενος. οἱ μὲν οὖν πατρίδιοι τίμιον αὐτὸν ἐπὶ τούτοις εἶχον, καὶ μένειν παρὰ τὰ δεινὰ ἤξιον, αὐτοὶ παρασχεῖν τὸ ἀσφαλὲς ὑπισχνούμενοι· οἱ δ' ἐκ τοῦ δήμου πάντων δὴ μάλιστα αὐτὸν ἀνθρώπων ἐμίσουν. τοῦτον τὸν ἄνδρα

ἔγνωσαν οἱ δημαρχοὶ πρῶτον ἐκποδῶν ποιήσασθαι, ὡς καταπληξόμενοι τοὺς λοιποὺς τῶν νέων καὶ προσαναγκάσοντες σωφρονεῖν. γνόντες δὲ ταῦτα καὶ παρασκευασάμενοι λόγους τε καὶ μάρτυρας πολλοὺς, εἰσάγουσιν αὐτὸν ὑπὸ δίκην ἀδικήματος δημοσίου, 5 θανάτου τιμησάμενοι τὴν δίκην. παραγγείλαντες δ' αὐτῷ παρεῖναι πρὸς τὸν δῆμον, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ χρόνος, ὃν ἔταξαν τῇ δίκῃ, συναγαγόντες ἐκκλησίαν 1994 μακροὺς ἐποίησαντο κατ' αὐτοῦ λόγους, διεξιόντες ὅσα βία διαπεπραγμένους ἐτύγχανεν εἰς τοὺς δημότας, ὧν τοὺς πεπονθότας αὐτοὺς παρήγον μάρτυρας. ὡς δὲ παρέδωκεν τὸν λόγον, αὐτὸ μὲν τὸ μειράκιον οὐχ ὑπήκουε καλούμενον ἐπὶ τὴν ἀπολογία, ἀλλ' ἤξιον τοῖς ἰδιώταις αὐτοῖς ὑπὲρ ὧν ἠτιῶντο παθεῖν κατὰ τὸν νόμον ὑπέχειν δίκας, ἐπὶ τῶν ὑπάτων τῆς κρισεως γινομένης· ὁ δὲ πατήρ αὐτοῦ χαλεπῶς φέροντας τὴν αὐθάδειαν τοῦ μειράκιου τοὺς δημοτικούς ὁρῶν, ἀπελογεῖτο τὰ μὲν πολλὰ ψευδῆ τε καὶ ἐξ ἐπιβουλῆς συγκείμενα κατὰ τοῦ παιδὸς ἀποδεικνύς· ὅσα δ' οὐκ ἐνῆν ἀρνήσασθαι μικρὰ καὶ φαῦλα καὶ οὐκ 20 ἄξια δημοσίας ὀργῆς εἶναι λέγων, καὶ οὐδὲ ταῦτα ἐξ ἐπιβουλῆς ἢ δι' ὕβριν, ἀλλ' ὑπὸ φιλοτιμίας μειρακιώδους γερονότα ἐπιδεικνύμενος, δι' ἣν πολλὰ μὲν αὐτῷ συμβῆναι δοῦσαι τῶν ἀβουλήτων ἐν ἀψιμαχίαις, πολλὰ δ' ἴσως καὶ παθεῖν, οὔτε ἡλικίας ἐν τῷ 25 κρατίστῳ ὄντι οὔτε φρονήσεως ἐν τῷ καθαρωτάτῳ. ἤξιον τε τοὺς δημοτικούς μὴ μόνον ὀργῆν μὴ ἔχειν ἐφ' οἷς ἤμαρτεν εἰς ὀλίγους, ἀλλὰ καὶ χάριν εἰδέναι περὶ ὧν ἅπαντας εὖ ποιῶν ἐν τοῖς πολέμοις διετέλεσε, τοῖς μὲν ἰδιώταις ἐλευθερίαν κτώμενος, τῇ δὲ 30 πατρίδι ἡγεμονίαν, ἐαντῷ δὲ εἰ ποτε ἀμάρτοι τι φιλοανθρωπίαν παρὰ τῶν πολλῶν καὶ βοήθειαν. καὶ

διεξήκει τὰς τε στρατείας ἀπάσας καὶ τοὺς ἀγῶνας  
ἅπαντας, ἐξ ὧν ἀριστεία καὶ στεφάνους παρὰ τῶν  
στρατηγῶν ἔλαβε, πολιτῶν τε ὀπόσων ἐν ταῖς μάχαις  
ὑπερήσπισε καὶ τείχεσι πολεμίων ὀσάκισ πρώτος ἐπέβη.  
5 τελευτῶν δ' εἰς οἰκτους κατέβαινε καὶ δεήσεις, ἀντὶ  
τῆς ἑαυτοῦ πρὸς ἅπαντας ἐπιεικείας βίου τε, ὃς  
ἐμαρτυρεῖτο αὐτῷ πάσης καθαρῶς διαβολῆς, μίαν  
ἀπαιτῶν παρὰ τοῦ δήμου χάριν, φυλάξει τὸν νότον  
αὐτῷ.

10 VI. Ὁ μὲν οὖν δῆμος ἤδετο πάννυ τοῖς λόγοις  
καὶ χαρίζεσθαι τὸ μισράκιον τῷ πατρὶ πρόθυμος ἦν.  
ὁ δὲ Οὐρργίνιος ὁρῶν, ὅτι μὴ δόντος ἐκείνου δίκην 1996  
ἀφόρητον ἔσται τὸ θράσος τῶν ἀνθάδων μισρακίων,  
ἀνίσταται καὶ φησιν· Σοὶ μὲν, ὦ Κόιντιε, ἢ τε ἄλλη  
15 μαρτυρεῖται πᾶσα ἀρετὴ καὶ ἢ πρὸς τοὺς δημοτικούς  
εὐνοία, ἀνθ' ὧν τὸ τιμᾶσθαί σοι περίεστιν. ἢ δὲ  
τοῦ μισρακίου βαρύτης καὶ ἢ πρὸς ἅπαντας ἡμᾶς  
ὑπερηφανία παραίτησιν ἢ συγγνώμην οὐδεμίαν ἐπι-  
δέχεται· ὅστις ὑπὸ τοῖς σοῖς ἤθεσι τραφεῖς, οὕτως  
20 οὔσι δημοτικοῖς καὶ μετρίοις ὡς ἅπαντες ἴσμεν, τῶν  
μὲν σῶν ὑπερεῖδεν ἐπιτηδευμάτων, τυραννικὴν δὲ  
ἀνθάδειαν καὶ βαρβάρων ἀνθρώπων ὕβριν ἠγάπησε,  
καὶ πονηρῶν ἔργων ζῆλον εἰς τὴν πόλιν ἡμῶν εἰσα-  
γῆοχεν. εἰ μὲν οὖν ἐλάνθανέ σε τοιοῦτος ἄν, νῦν  
25 ὄτ' ἐγνωκας ἀνανακτεῖν ὑπὲρ ἡμῶν δίκαιος ἄν εἴης·  
εἰ δὲ συνήδεις τε καὶ συνέπραττες οἷς προεπηλάκιζε  
τὴν τῶν πενήτων πολιτῶν τύχην, πονηρὸς ἄρα καὶ  
αὐτὸς ἦσθα, καὶ ἢ τῆς καλοκάγαθίας δόξα οὐκ ἐκ τοῦ  
δικαίου σοι περιγέγονεν. ἀλλὰ γὰρ ἠγνόεις αὐτὸν  
30 οὐκ ὄντα τῆς σῆς ἀρετῆς ἄξιον· ἐγὼ σοι τοῦτ' ἔχω 1997  
μαρτυρεῖν. ἀπολύων δέ σε τοῦ τότε συναδικεῖν ἡμᾶς,  
μέμφομαι τοῦ νῦν ἡμῖν μὴ συνανανακτεῖν. ἵνα δὲ

μᾶλλον μάθης, ἠλίκων ἄρα τῇ πόλει κακὸν ὑποτρέ-  
φον ἐλάνθανες, ὡς ἄμιον καὶ τυραννικὸν καὶ οὐδὲ  
φόνου πολιτικοῦ καθαρὸν, ἄκουσον αὐτοῦ φιλότιμον  
ἔργον καὶ ἀντιπαρεξέτασον αὐτῷ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις  
ἀριστείας· καὶ ὑμῶν ὅσοι συνεπαθεῖτε ἀρτίως οἰκτι- 5  
ζομένῳ τῷ ἀνδρὶ σκοπεῖτε, εἰ ἄρα καλῶς ὑμῖν ἔχει  
τοιοῦτου φείσασθαι πολίτου.

VII. Ταῦτ' εἰπὼν ἀνίστησιν ἐκ τῶν συναρχόν-  
των Μάρκον Οὐολούσκιον καὶ λέγειν ἐκέλευσεν, ἃ  
σύννοιθε τῷ μισρακίῳ. σιωπῆς δὲ γενομένης καὶ πολ- 10  
λῆς ἐξ ἀπάντων προσδοκίας, μικρὸν ἐπισχὼν ὁ Οὐο-  
λούσκιος εἶπεν· Ἐγὼ μάλιστα ἐβουλόμην ἄν, ὦ πολι-  
ται, δίκην ἰδίαν, ἣν ὁ νόμος δίδωσί μοι, παρὰ τοῦτου  
1098 λαβεῖν, δεινὰ καὶ πέρα δεινῶν πεπονθῶς· κωλυθεῖς  
δὲ τοῦτου τυχεῖν διὰ πενίαν καὶ ἀσθένειαν καὶ τὸ 15  
τῶν πολλῶν εἰς εἶναι, νῦν γ' ἠνίκα ἔξεστί μοι τὸ  
τοῦ μάρτυρος σχῆμα, ἐπειδὴ οὐ τὸ τοῦ κατηγοροῦ,  
λήψομαι. ἃ δὲ πέπονθα, ὡς ὠμὰ καὶ ἀνήγεστα, ἀκού-  
σατέ μου. ἀδελφὸς ἦν μοι Λεύκιος, ὃν ἐγὼ πάντων  
ἀνθρώπων μᾶλλον ἠγάπησα. οὗτός μοι συνεδείπνει 20  
παρὰ φίλῳ, καὶ μετὰ ταῦτ' ἀναστάντες τῆς ἐχομένης  
νυκτὸς φώγομεθα. διεληλυθόσι δ' ἡμῖν τὴν ἀγορὰν  
περιτυγγάνει Κάισων οὐτοσί κωμάζων σὺν ἑτέροις  
ἀγερώχοις μισρακίοις. καὶ οὗτοι τὸ μὲν πρῶτον ἔσκα-  
πτόν τε καὶ ὕβριζον εἰς ἡμᾶς, οἷα μεθύοντες ἄν νεοὶ 25  
καὶ ἀνθάδεις, ὅσ' ἄν εἰς ταπεινοῦς καὶ πένητας  
ὑβρίσαιεν. ὡς δ' ἠγανακτοῦμεν πρὸς αὐτούς, ἐλεύ-  
θερον ὄημα εἰς τοῦτον εἶπε. δεινὸν δ' ἠγρησάμενος  
1099 οὐτοσί Κάισων ἀκούσαι τι, ὧν οὐκ ἐβούλετο, προσ-  
δραμῶν αὐτῷ παίων καὶ λακτίζων καὶ πᾶσαν ἄλλην 30  
ὠμότητα καὶ ὕβριν ἐνδεικνύμενος ἀποκτείνει. ἐμοῦ  
δὲ κεκραγὸτος καὶ ἀμνημονομένου τῶσαῦτα ὅσα ἐδυνάμην,



ἐκεῖνον ἤδη νεκρὸν κείμενον ἀφ' αἰς ἐμὲ πάλιν ἔπαιε, καὶ οὐ πρότερον ἐπαύσατο, πρὶν ἀκίνητόν τε καὶ ἄφωνον εἶδεν ἐρριμμένον, δόξας εἶναι νεκρὸν. μετὰ δὲ ταῦτα οὗτος μὲν ἀπίων ὄχρητο χαίρων ὥσπερ ἐπὶ 5 καλῶ ἔργῳ· ἡμᾶς δὲ οἱ παραγενόμενοι μετὰ ταῦτα αἵματι πεφυρμένους αἵρουσι καὶ εἰς τὴν οἰκίαν ἀπεκόμισαν, τὸν μὲν ἀδελφόν μου Λευκίου νεκρὸν, ὥσπερ ἔφην, ἐμὲ δὲ ἡμιθανῆ καὶ ἐλπίδας ἔχοντα τοῦ ξῆν ὀλίγας. ταῦτα δ' ἐγένετο Πεκλίου Σερουιλίου 10 καὶ Λευκίου Αἰβουτίου τὴν ὑπατείαν ἔχοντων, ὅτε ἡ μεγάλη νόσος κατέλαβε τὴν πόλιν, ἣς ἀπελαύσαμεν καὶ ἡμεῖς ἀμφοτέρω. τότε μὲν οὖν δίκην οὐχ οἶόν 2000 τ' ἦν μοι παρ' αὐτοῦ λαβεῖν, τεθνηκότων ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων· Λευκίου δὲ Λοκρητίου καὶ Τίτου Οὐετουρίου παραλαβόντων τὴν ἀρχὴν βουλόμενος αὐτὸν ἀγαγεῖν ὑπὸ δίκην ἐκαλύθη διὰ τὸν πόλεμον, ἐκλειπόμενος ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων τὴν πόλιν. ὥς δὲ ἀνέστρεψαν ἀπὸ τῆς στρατείας, πολλάκις αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν καλῶν, ὅσάκις προσέλθοιμι· καὶ ταῦτα 20 δὴ πολλοὶ τῶν πολιτῶν ἴσασι· πληγὰς ἐλάμβανον ὑπ' αὐτοῦ. ταῦτ' ἐστὶν ἃ πέπονθα, ἃ δημόται, μετὰ πάσης ἀληθείας εἰρημένα πρὸς ὑμᾶς.

VIII. Ταῦτ' εἰπόντος αὐτοῦ κραυγὴ τε ἐκ τῶν παρόντων ἐγένετο καὶ ὄρη πολλῶν ἐπὶ τὴν ἐκ χειρὸς 25 δίκην. ἀλλ' οἷ τε ὑπατοὶ ἐμποδῶν ἐγένοντο καὶ τῶν δημάρχων οἱ πλείους, πονηρὸν ἔθος οὐκ ἀξιούντες εἰς τὴν πόλιν εἰσάγειν. ἦν δὲ καὶ τοῦ δήμου τὸ καθαρώτατον οὐ βουλόμενον ἀποστερεῖν λόγου τοὺς ὑπὲρ τῶν μεγίστων ἀγωνιζομένους. τότε μὲν οὖν 30 ἐπέσχε τὴν τῶν θρασυτέρων ὄρημν ἢ τοῦ δικαίου πρόνοια, καὶ ἀναβολὴν ἔλαβεν ἢ δίκην, οὐ μικρὰς 2001 ἐμπεδούσης φιλοτιμίας καὶ ζητήσεως ὑπὲρ τοῦ σώμα-

τος, εἴτ' ἐν δεσμοῖς αὐτὸ δεῖ φυλάττεσθαι τέως, εἴτ' ἐγγυητὰς δοῦναι τῆς ἀφίξεως, ὥσπερ ὁ πατὴρ ἠέλιου· καὶ ἡ βουλή συνελθοῦσα ἐψηφίσαστο χρήμασι διεγγυηθῆν ἐλεύθερον εἶναι τὸ σῶμα μέχρι δίκης. τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ συναγαρόντες οἱ δῆμαρχοὶ τὸ πλῆθος, 5 ἐκλιπόντος τοῦ μειρακίου τὴν δίκην, ἐκύρωσαν τὴν κατ' αὐτοῦ ψῆφον καὶ τοὺς ἐγγυητὰς δέκα ὄντας ἐπράξαντο τὰ περὶ τοῦ σώματος τῆς ἀποκαταστάσεως 2002 ὁμολογηθέντα χρήματα. Καίσων μὲν οὖν τοιαύτη περιπεσὼν ἐπιβουλῇ, κατασκευασαμένων ἅπαντα τῶν 10 δημάρχων, καὶ Οὐλοουσκίου ψευδῆ μαρτυρήσαντος, ὥς ἐγένετο φανερόν σὺν χρόνῳ, φεύγων εἰς Τυρρηνίαν ὄχρητο· ὁ δὲ πατὴρ αὐτοῦ τὰ πλεῖστα τῆς οὐσίας ἀπεμπολήσας καὶ τὰ ὁμολογηθέντα ὑπὸ τῶν ἐγγυητῶν χρήματα ἀποδοὺς, ἐαντῷ χωρίῳ ἐν μικρὸν ὑπο- 15 λειπόμενος πέραν τοῦ Τεβέρεως ποταμοῦ, ἐν ᾧ ταπεινὴ τις ἦν καλύβη, γεωργῶν αὐτόθι μετὰ δούλων ὀλίγων ἐπίπονον καὶ ταλαίπωρον ἔξη βίον ὑπὸ λύπης τε καὶ πενίας, οὔτε πόλιν ὄρων οὔτε φίλους ἀσπαζόμενος οὔτ' ἐορτάζων οὔτ' ἄλλης εὐφροσύνης οὔδε- 20 μιᾶς ἐαντῷ μεταδιδούς. τοῖς μέντοι δημάρχοις πολὺ τὸ παράλογον ἐγένετο τῆς ἐλπίδος. οὐ γὰρ ὅπως ἐπαύσατο ἢ τῶν νέων φιλοτιμία σωφρονοῦσα τῇ Καίσωνος συμφορᾷ, πολὺ δὲ χαλεπωτέρα καὶ πλείων 2003 ἐγένετο ἔργοις τε καὶ λόγοις καταγωνιζομένη τὸν νό- 25 μόν· ὥστ' οὐθὲν ἐτι αὐτοῖς ἐξεγένετο διαπραξασθαι, δαπανηθέντος εἰς ταῦτα τοῦ χρόνου τῆς ἀρχῆς. ὁ μὲντοι δῆμος εἰς τὸν ἐπιόντα πάλιν ἐνιαυτὸν ἄρχοντας ἀπέδειξεν αὐτούς.

VIII. Ποπλίου δὲ Οὐαλερίου Ποπλικόλα καὶ 30 Γαίου Κλαυδίου Σαβίνου τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν παραλαβόντων, κίνδυνος ὅσος οὐπω τὴν Ρώμην κατέ-

σχεν ἐξ ἄλλοεθνῶς πολέμου, ὃν παρήγαγεν ἐντὸς  
 τείχους ἢ πολιτικῆς στάσις, ὡς οἱ τε Σιβύλλειοι χρη-  
 σμοὶ προὔλεγον καὶ τὰ ἐκ τοῦ δαιμονίου φανέντα  
 προεθέσπισε τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ. διηγήσομαι δὲ  
 5 τὴν τε αἰτίαν, ἀφ' ἧς ὁ πόλεμος εἰσῆλθε, καὶ τὰ  
 πραγθέντα τοῖς ὑπάτοις κατὰ τὸν τότε ἀγῶνα. οἱ  
 παρειληφότες τὸ δεύτερον τὴν δημοκρασίαν ἐπὶ τῇ ἐλπίδι  
 τοῦ κινῶσθαι τὸν νόμον, ὁρῶντες τῶν τε ὑπᾶτων τὸν  
 ἕτερον, Γάϊον Κλαύδιον, ἔμφυτον τὸ πρὸς τοὺς δημο-  
 10 τικούς ἔχοντα μῖσος διὰ προγόνων καὶ παρεσκευα-  
 σμένον ἀπάσῃ μηχανῇ κωλύειν τὰ γινόμενα, τῶν τε  
 νέων τοὺς πλείστον δυναμένους εἰς ἀπόνοιαν φανερὰν  
 προεληλυθότας, οὓς οὐκ ἐνῆν τῷ βιαίῳ καταγωνί- 2004  
 σασθαι, μάλιστα δὲ τοῦ δήμου τὸ πλεῖον ὑποκατα-  
 15 κινούμενον ταῖς θεραπείαις τῶν πατρικίων καὶ προ-  
 θυμίαν οὐκέτι περὶ τοῦ νόμου τὴν αὐτὴν παρεχόμενον,  
 ἰταμιότεραν ὁδὸν ἔγνωσαν ἐπὶ τὰ πράγματα πορευ-  
 εσθαι, δι' ἧς ἀναλήφονται μὲν τὸν δήμον, καταβα-  
 λούσι δὲ τὸν ὑπάτον. πρῶτον μὲν κατεσκευάσαν φήμας  
 20 λέγεσθαι κατὰ τὴν πόλιν παντοδαπὰς· ἔπειτ' ἐξ ἑωθη-  
 νοῦ καθεζόμενοι δι' ὅλης ἡμέρας συνήδρευον ἐν τῷ  
 φανερῷ, μεταδιδόντες οὐθένι τῶν ἐξωθεν οὔτε βου-  
 λεύματος οὔτε λόγου. ἐπεὶ δὲ καιρὸς ἐπιτήδειος ἔδο-  
 ξεν αὐτοῖς εἶναι πράττειν τὰ βεβουλευμένα, πλασά-  
 25 μνοι γράμματα καὶ ταῦτα παρασκευάσαντες ἀναδο-  
 θῆναι σφίσι ἐπ' ἀνδρὸς ἀγνώτος καθημένοισ ἐν  
 ἀγορᾷ, ὡς διήλθον αὐτά, παίοντες τὰ μέτωπα καὶ  
 κατηρεῖς τὰς ὄψεις ποιήσαντες ἀνίστανται. πολλοῦ  
 δὲ συνδραμόντος ὄχλου καὶ μέγα τι κακὸν ἐν τοῖς 2005  
 30 γράμμασιν ἐνεῖναι γεγραμμένον μαντενομένου, σιω-  
 πὴν προκηρύξαντες εἶπον· ἐν ἐσχάτοις ἐστὶν ὑμῖν  
 κινδύνους, ὧ πολῖται, τὸ δημοτικόν· καὶ εἰ μὴ θεῶν

τις εὔνοια προείδετο τῶν ἄδικα πάσχειν μελλόντων,  
 εἰς δεινὰς ἂν ἅπαντες ἦλθομεν συμφορὰς. αἰτούμεθα  
 δὲ ὑμᾶς βραχὺν ἐπισχεῖν χρόνον, ἕως [ἂν] τῇ βουλῇ  
 δηλώσωμεν τὰ προσαγγελθέντα καὶ μετὰ κοινῆς γνώ-  
 5 μης πράξωμεν τὰ δόξαντα. Ταῦτ' εἰπόντες ὄχοντο  
 πρὸς τοὺς ὑπάτους. ἐν ὅσῳ δὲ ἡ βουλή συνήγετο  
 χρόνῳ πολλοὶ καὶ παντοδαποὶ λόγοι κατὰ τὴν ἀγο-  
 ρὰν ἐγίνοντο, τῶν μὲν ἐκ παρασκευῆς ἢ παρηγγελο  
 αὐτοῖς ὑπὸ τῶν δημάρχων κατὰ συστροφὰς λαλούν-  
 10 των, τῶν δέ, ἃ μάλιστα ἐδεδοίκεσαν μὴ γένηται,  
 ταῦτα ὡς ἀπηγγελέμενα τοῖς δημάρχοις λεγόντων. ἔφη  
 δ' ὁ μὲν τις Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους ὑποδεξαμέ-  
 2006 νους Καίωνα Κοίντιον τὸν ὑπὸ τοῦ δήμου καταδι-  
 κασθέντα ἠρῆσθαι στρατηγὸν αὐτοκράτορα τῶν ἐθνῶν,  
 καὶ πολλὰς δυνάμεις ἀγείραντας μέλλειν ἐπὶ τὴν Ρώ- 15  
 μην ἐλαύνειν· ὁ δὲ τις ἀπὸ κοινῆς γνώμης τῶν πα-  
 τρικίων τὸν ἄνδρα καταγεσθαι ξενικὰς δυνάμειν,  
 ἵνα ἡ φυλακὴ καταλυθῇ νῦν τε καὶ εἰς τὸν λοιπὸν  
 χρόνον τῶν δημοτικῶν· ὁ δὲ τις οὐκ ἅπαντας εἶναι  
 τοὺς πατρικίους ἔφη τοὺς ταῦτα βεβουλευμένους, ἀλλὰ 20  
 μόνους τοὺς νέους. ἐτόλμων δὲ τινες λέγειν, ὅτι καὶ  
 ἐντὸς τῆς πόλεως ὁ ἀνὴρ εἴη κρυπτόμενος καὶ μέλ-  
 λοι καταλαμβάνεσθαι τῶν τόπων τοὺς ἐπικαιροτάτους.  
 ὅλης δὲ κραδαινομένης ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ τῶν δεινῶν  
 τῆς πόλεως, καὶ πάντων ἀλλήλους ἐχόντων δι' ὑπο- 25  
 ψίας καὶ φυλακῆς, οἱ μὲν ὑπάτοι τὴν βουλὴν ἐκάλουν,  
 οἱ δὲ δημαρχοὶ προελθόντες ἐδείκνυσαν τὰ προσαγ-  
 γελλόμενα. ἦν δὲ ὁ τοὺς λόγους ὑπὲρ αὐτῶν ποιού-  
 μενος Αὐλὸς Οὐεργίνιος, καὶ ἔλεξε τοιάδε·

X. Ὅσον μὲν χρόνον οὐθέν ἀκριβὲς ἡμῖν ἐφαί- 30  
 νετο τῶν προσαγγελλομένων δεινῶν, ἀλλὰ φῆμαι  
 2007 μετέωροι, καὶ τὸ βεβαιῶσον αὐτὰς οὐθέν ἦν, ὁκνοῦ-

μεν, ὦ βουλή, φέρειν τοὺς περὶ αὐτῶν λόγους εἰς  
 [τὸ] μέσον, ταραχὰς τε ὑποπτεύοντες ἔσεσθαι μεγά-  
 λας, οἷα εἰκὸς ἐπὶ δεινοῖς ἀκούσμασι, καὶ δι' εὐλα-  
 βείας ἔχοντες, μὴ ταχύτερα δόξωμεν ὑμῖν βεβουλεῦ-  
 5 σθαι μᾶλλον ἢ φρονιμώτερα. οὐ μὴν ὀλιγοῖα γ'  
 αὐτὰ παραδόντες ἀφήκαμεν, ἀλλ' ὅση δύναμις ἡμῖν  
 ἦν ἐπιμελῆ ζήτησιν ἐποιούμεθα τῆς ἀληθείας. ἐπεὶ  
 δὲ ἡ τοῦ δαιμονίου πρόνοια, ὑφ' ἧς αἰεὶ σωζόμεθα  
 κοινῇ, καλῶς ποιούσα τὰ κεκρυμμένα βουλευόμενα  
 10 καὶ τὰς ἀνοσίλους ἐπιχειρήσεις τῶν θεοῖς ἐχθρῶν εἰς  
 φῶς ἄγει, καὶ γράμματα πάρεστιν ἡμῖν, ἃ δεδέρμεθα  
 νεωστὶ παρὰ ξένων εὐνοίαν ἡμῖν ἐνδεικνυμένων, οὓς  
 ὕστερον ἀκούσεσθε, καὶ συντρέχει τε καὶ συνάδει  
 τοῖς ἔξωθεν ἐπιστελλομένοις τὰ ἐνθένδε μνησόμενα,  
 15 καὶ τὰ πράγματα οὐκέτι μέλλουσιν οὐδ' ἀναβολὴν ἐν  
 χερσὶν ὄντα ἐπιδέχεται, πρὶν εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγ-  
 κεῖν, ὑμῖν πρώτοις ὥσπερ ἐστὶ δίκαιον ἀπαγγεῖλαι  
 διέγνωμεν αὐτά. ἴστε δὴ συναρμόσιαν ἐπὶ τῷ δήμῳ  
 γεγεννημένην ὑπ' ἀνδρῶν οὐκ ἀφανῶν, ἐν οἷς ἐνεῖναι  
 20 μὲν τι λέγεται μέρος οὐ πολὺ καὶ τῶν εἰς τόδε συλ- 2008  
 λεγομένων τὸ συνέδριον πρεσβυτέρων, τὸ δὲ πλεῖστον  
 ἐκ τῶν ἔξω τῆς βουλῆς ἰσπέων, οὓς οὐπω καιρὸς  
 οὔτινές εἰσιν ὑμῖν λέγειν. μέλλουσι δ' οὖν, ὡς πυν-  
 θανόμεθα, σκοταίαν φυλάξαντες νύκτα κοιμώμενοις  
 25 ἡμῖν ἐπιχειρεῖν, ἠνίκαι οὐτε προιδεῖν τι τῶν γινο-  
 μένων οὔτε φυλάξασθαι καθ' ἐν γενόμενοι δυνάμεθα·  
 ἐπιπεσόντες δὲ ταῖς οἰκίαις τοὺς τε δημάρχους ἡμᾶς  
 κατασφάττειν καὶ τῶν δημοτῶν ἄλλους τοὺς ἐναν-  
 τιωθέντας ποτὲ αὐτοῖς περὶ ἐλευθερίας ἢ τὸ λοιπὸν  
 30 ἐναντιωσομένους. ὅταν δὲ ἡμᾶς ἐκποδῶν ποιήσων-  
 ται, τότε ἤδη κατὰ πολλὴν ἀσφάλειαν ἡγούνται δια-  
 πράξασθαι παρ' ὑμῶν τὰ λοιπὰ ἀναρθεῖναι διὰ κοι-

νοῦ ψηφίσματος τὰς γενομένας ὑμῖν πρὸς τὸν δῆμον  
 ὁμολογίας. ὁρῶντες δὲ ὅτι ξενικῆς αὐτοῖς χειρὸς εἰς  
 τὰ πράγματα δεῖ κρούφα παρασκευασθείσης καὶ οὐδὲ  
 2009 ταύτης μετρίας, ἄνδρα προσειλήφασιν εἰς ταῦτα τῶν  
 ὑμετέρων φρυγᾶδων, Καίσωνα Κολύτιον ἡγεμόνα, ὃν 5  
 ἐπὶ φόνοις πολιτῶν καὶ διαστάσει τῆς πόλεως ἐξελεγ-  
 χθέντα διεπράξαντό τινες τῶν ἐνθάδε μὴ δοῦναι δι-  
 κην, ἀλλ' ἀθῶον ἀπελθεῖν ἐκ τῆς πόλεως, καθοδόν  
 τε πράξειν ὑπέσχηται καὶ ἀρχὰς προτείνουσι καὶ  
 τιμὰς καὶ ἄλλους μισθοὺς τῆς ὑπουργίας. κάκεινος 10  
 [δὲ] ὑπέσχηται στρατιὰν αὐτοῖς Αἰκωνῶν καὶ Οὐολού-  
 σκων ἄξιον ἐπίκουρον, ὅσης ἂν δεηθῶσιν, ἧξειν τε  
 οὐκ εἰς μακρὰν αὐτὸς μὲν ἐπαγόμενος τοὺς εὐτόλμο-  
 τάτους, κρούφα κατ' ὀλίγους εἰσάγων καὶ σποράδας,  
 ἢ δ' ἄλλη δύναμις, ὅταν οἱ τοῦ δήμου προεστηκότες 15  
 ἡμεῖς διαφθαρώμεν, ἐπὶ τὸ ἄλλο πλῆθος τῶν πενή-  
 των χωρήσει, ἐὰν τινες ἄρα περιέχωνται τῆς ἐλευ-  
 2010 θερίας. ταῦτ' ἔστιν, ἃ βεβούλευνται ὑπὸ σκότους  
 καὶ μέλλουσι δεῖν, ὦ βουλή, δεινὰ καὶ ἀνόσια ἔργα,  
 οὔτε θεῖον φοβηθέντες χόλου οὔτε ἀνθρωπίνην ἐν- 20  
 τραπέντες νέμεσιν.

XI. Ἐν τοσούτῳ δὴ κινδύνῳ σαλεύοντες ἰκέται  
 γινόμεθα ὑμῶν, ὦ πατέρες, ἐπισκήπτουτες θεοὺς τε  
 καὶ δαίμονας, οἷς κοινῇ θύομεν, καὶ πολέμων ὑπο-  
 μιμνήσκοντες, οὓς πολλοὺς καὶ μεγάλους σὺν ὑμῖν 25  
 ἠράμεθα, μὴ περιδεῖν ὡμὰ καὶ ἀνόσια ὑπὸ τῶν  
 ἐχθρῶν παθόντας ἡμᾶς, ἀλλ' ἐπαμύναί τε καὶ συνα-  
 γνακτῆσαι τιμωρίας ἡμῖν συνεισπράξαντας παρὰ τῶν  
 ταῦτα βουλευσαμένων τὰς προσηκούσας, μάλιστα μὲν  
 παρὰ πάντων, εἰ δὲ μή γε, παρὰ τῶν ἀρχάντων τῆς 30  
 ἀθεμίτου συναρμόσιας. πρῶτον δὲ πάντων ἀξιούμεν  
 ὑμᾶς, ὦ βουλή, ψηφίσασθαι πρᾶγμα, ὅπερ ἐστὶ δικαι-

ὅτατον, τὴν ὑπὲρ τῶν μνηνομένων ζήτησιν ὑφ' ἡμῶν  
 τῶν δημάρχων γίνεσθαι. χωρὶς γὰρ τοῦ δικαίου καὶ  
 ἀκριβεστάτας ἀνάγκη γίνεσθαι ζητήσεις, ἃς ἂν οἱ κιν- 201  
 δυνεύοντες ὑπὲρ αὐτῶν ποιήσονται. εἰ δὲ τινες ὑμῶν  
 5 εἰσὶν οἳ οὐκ ἐπιθυμοῦσι ἐν εὐγνωμονεῖν, ἀλλὰ πρὸς  
 ἀπαντας τοὺς ὑπὲρ τοῦ δήμου λέγοντας ἀντιπαύεσθαι,  
 ἠδέως ἂν πυθοίμην παρ' αὐτῶν, ἐπὶ τῷ δυσχεραί-  
 νουσι τῶν ἀξιουμένων καὶ τί μέλλουσιν ὑμᾶς πεί-  
 10 δεῖν ἔργον οὕτω μέγα καὶ μιᾶρον ἐπὶ τῷ δήμῳ συνι-  
 στάμενον; καὶ τίς ἂν τοὺς ταῦτα λέγοντας ὑγαίνειν  
 φήσῃεν, ἀλλ' οὐχὶ συνδιεφθάρθαι καὶ κοινωνεῖν τῆς  
 συνωμοσίας, ἔπειτα ὑπὲρ αὐτῶν δεδιότας, ἵνα μὴ  
 γένωνται καταφανεῖς, ἀποσπεύδειν τὴν τῆς ἀληθείας  
 15 ἐξέτασιν; οἷς οὐκ ἂν δικαίως προσέχοιτε δήπου τὸν  
 νοῦν. ἢ τῆς διαγνωσέως τῶν μνηνομένων οὐκ ἡμᾶς  
 εἶναι κυρίου ἀξιόσουσιν, ἀλλὰ τὴν βουλήν καὶ τοὺς  
 ὑπάτους; τί οὖν τὸ κωλύον ἔσται τὸ αὐτὸ τοῦτο καὶ  
 τοὺς προεστηκότας τοῦ δήμου λέγειν, ἔάν τινες ἐκ 2012  
 20 τῶν δημοτικῶν ἐπὶ τοῖς ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ συστάν-  
 τες πράττωσι τὴν τοῦ συνεδρίου κατάλυσιν, ὅτι τὴν  
 περὶ τῶν δημοτικῶν ἐξέτασιν αὐτοὺς δίκαιόν ἐστι ποι-  
 εῖσθαι τοὺς ἀνειληφότας τὴν τοῦ δήμου φυλακὴν; τί  
 οὖν ἐκ τούτου συμβήσεται; μηδεμίαν πώποτε γενέ-  
 25 σθαι ζήτησιν περὶ μηθενὸς πράγματος ἀποροῆτου.  
 ἀλλ' οὔτε ἡμεῖς ἂν ταῦτα ἀξιόσαιμεν· ὑποπίος γὰρ  
 ἢ φιλοτιμία· ὑμεῖς τ' οὐκ ἂν ὀρθῶς ποιοῖτε τοῖς τὰ  
 ὅμοια [οὐκ] ἀξιούσι καθ' ἡμῶν προσέχοντες τὸν νοῦν,  
 ἀλλὰ κοινούς ἠγνούμενοι τῆς πόλεως ἐχθρούς. οὐδε-  
 30 νὸς μέντοιγε οὕτως, ὡς βουλή, τοῖς πράγμασιν ὡς  
 τάχους δεῖ. ὁ γὰρ κίνδυνος ὄξυς, καὶ ἡ μέλλουσα τῆς  
 ἀσφαλείας ἄσφοδος ἐν οὐ μέλλουσι δεινοῖς. ὥστ' ἀφέντες

τὸ φιλονεικεῖν καὶ λόγους διεξιέναι μακρούς, ψηφί-  
 σασθε ὅ τι ἂν δοκῇ κοινῇ συμφέρον ἦδη.

XII. Ταῦτα εἰπόντος αὐτοῦ πολλή τις ἐκπληξίς  
 2013 κατέσχε τὸ συνέδριον καὶ ἀμηχανία, διελογίζοντό  
 5 τε καὶ συνειλάουον ἀλλήλοις, ὡς χαλεπὸν ἐκάτε-  
 ρον ἦν, καὶ τὸ συγχωρεῖν τοῖς δημάρχοις ζητήσεις  
 ἐφ' ἑαυτῶν ποιεῖσθαι περὶ κοινῶν καὶ μεγάλων πράγ-  
 ματος, καὶ τὸ μὴ συγχωρεῖν. ὑποπτεύσας δ' αὐτῶν  
 τὴν γνώμην ἀνέστη τῶν ὑπάτων ἄστρος, Γάιος Κλαύ-  
 10 διος, καὶ ἔλεξε τοιαύδε· Οὐ δέδοικα, Οὐεργίνιε, μὴ  
 με ὑπολάβωσιν οὗτοι κοινωνῶν εἶναι τῆς συνωμοσίας,  
 ἢ ἐφ' ὑμῖν καὶ τῷ δήμῳ πράττεσθαι λέγετε, ἢ τὰ  
 ὑπὲρ ἑαυτοῦ δεδιότα ἢ τῶν ἐμῶν τινος [ὡς] ἐνόχου  
 ταῖς αἰτίας ὄντος ἀναστάναι τὰναντία ὑμῖν ἐροῦντα·  
 15 ὁ γὰρ βίος ἀπολύει με πάσης ὑποψίας τοιαύτης. ἂ  
 δὲ νομίζω τῇ τε βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ συμφέρον, ἀπὸ  
 τοῦ κρατίστου καὶ δίχα πάσης εὐλαβείας ἐρῶ. πολ-  
 λοῦ, μᾶλλον δὲ τοῦ παντὸς ἀμαρτάνειν δοκεῖ μοι  
 Οὐεργίνιος, εἰ τινα ὑπέληφεν ἡμῶν ἐρεῖν, ἢ ὡς  
 ἀνεξέταστον ἀφείσθαι δεῖ πρᾶγμα οὕτωσι μέγα καὶ 20  
 2014 ἀναγκαῖον, ἢ ὡς οὐ δεῖ κοινωνεῖν οὐδὲ παρεῖναι τῇ  
 ζητήσει τοὺς ἀνειληφότας τὴν τοῦ δήμου ἀρχήν. οὐ-  
 θεῖς οὔτε ἠλίθιος ἔστιν οὕτως οὔτε τῷ δήμῳ κακό-  
 νους, ὥστε ταῦτα λέγειν. τί οὖν, εἰ τις ἐροῖτό με,  
 παθῶν, ἂ συγχωρῶ καὶ φημι δίκαια εἶναι, τούτοις 25  
 ἀντιλέξων ἀνέστην, καὶ τί βούλεται μοι ὁ λόγος, ἐγὼ  
 νῆ Δία φράσω πρὸς ὑμᾶς. παντὸς οἴομαι δεῖν πράγ-  
 ματος, ὡς βουλή, τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς πρώτας ὑποθέ-  
 σεις τοὺς εὖ φρονούντας ἀκριβῶς σκοπεῖν· οἳ γὰρ  
 30 ἂν αὐταὶ τύχῳσιν οὔσαι, τοιούτους ἀνάγκη γίνεσθαι  
 καὶ τοὺς περὶ αὐτῶν λόγους. φέρε δὴ τίς ἢ τοῦδε  
 τοῦ πράγματος ὑπόθεσις ἔστι καὶ τί τὸ βούλευμα τῶν

δημάρχων ἀκούσατέ μου. οὐκ ἐνῆν τούτοις οὐδέν, ὧν ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ πράττειν ἐπιβαλλόμενοι διεκωλύθησαν, ἐπιτελέσασθαι νῦν, ὑμῶν τε ἐναντιουμένων αὐτοῖς ὡς πρότερον καὶ τοῦ δήμου μηκέθ' ὁμοίως συναγωνιζομένου. συνιδόντες δὴ τοῦτο ἐσκόπονν, ὅπως ἂν ὑμεῖς τ' ἀναγκασθῆτε παρὰ γνώμην αὐτοῖς εἶξαι, καὶ ὁ δῆμος ἅπαντα ὅσ' ἂν ἀξιῶσι συμπράττειν. ἀληθῆ μὲν οὖν καὶ δικαίαν ὑπόθεσιν οὐδεμίαν εὗρισκον, δι' ἧς ἐκάτερον τούτοις ἔσται, πολλὰ δὲ βουλευματα πειράζοντες καὶ στρέφοντες ἄνω καὶ κάτω τὸ πρᾶγμα τελευτῶντες ἐπὶ τοιοῦτον δὴ τινα λογισμὸν ἤλθον· αἰτιασώμεθα συνίστασθαι τινὰς ἐκ τῶν ἐπιφανῶν ἐπὶ καταλύσει τοῦ δήμου, καὶ σφάττειν διεγρωκέαι τοὺς [μὴ] παρέχοντας αὐτῷ τὸ ἀσφαλές. καὶ ταῦτα ἐκ πολλοῦ παρασκευάσαντες λέγεσθαι κατὰ τὴν πόλιν, ὅταν ἤδη πιστὰ εἶναι τοῖς πολλοῖς δόξῃ· δόξει δὲ διὰ τὸ δέος· ἐπιστολὰς μηχανησώμεθα πολλῶν παρόντων ἡμῖν ὑπ' ἀνδρὸς ἀγνώτος ἀναδοθῆναι· ἔπειτ' ἐλθόντες ἐπὶ τὸ συνέδριον ἀνανακτώμεν τε καὶ σχετλιάζωμεν καὶ τοῦ ζητεῖν τὰ προσηγερμένα αἰτῶμεν τὴν ἔξουσίαν. εἴαν τε γὰρ ἀντιλέγωσιν ἡμῖν οἱ πατρίοιοι, ταύτην ληψώμεθα τοῦ διαβαλεῖν αὐτοὺς πρὸς τὸν δῆμον ἀφορμήν, καὶ οὕτως ἅπαν τὸ δημοτικὸν ἠγρωμένον αὐτοῖς ἐτοιμοὶ ἡμῖν εἰς ἃ βουλώμεθα ὑπάρξει· εἴαν τε συγχωρῶσι, τοὺς γενναιοτάτους ἐξ αὐτῶν καὶ πλείστα ἡμῖν ἐναντιωθέντας προσβυτέρους τε καὶ νέους ἐλαύνωμεν, ὡς εὐρηκότες ταῖς αἰτίαις ἐνόχους. ἐκεῖνοι δὲ ἄρα τὰς καταγνώσεις δεδιότες, ἢ συμβήσονται πρὸς ἡμᾶς ἐπὶ τῷ μηθὲν ἐπιαντιπράττειν, ἢ καταλιπεῖν ἀναγκασθήσονται τὴν πόλιν. ἐκ δὲ τούτου πολλὴν ποιήσομεν ἐρημίαν τοῦ ἀντιπάλου.

XIII. Ταῦτα τὰ βουλευματα ἦν αὐτῶν, ὧ βουλή, καὶ τὸν μεταξὺ χρόνον ὃν ἐωρᾶτε [συμβουλευόντας καὶ] συνεδρευόντας αὐτούς, οὗτος ὁ δόλος ὑπ' αὐτῶν ὑφαίνεται ἐπὶ τοῖς ἀρίστοις ὑμῶν, καὶ τοῦτο τὸ δίκτυον κατὰ τῶν εὐγενεστάτων ἰκπέων ἐπλέκετο. καὶ ὅτι ἀληθῆ ταῦτ' ἐστὶ, βραχέος μοι πάνυ δεῖ λόγου. φέρε γὰρ εἶπατέ μοι, Οὐεργίνιε, οἱ τὰ δεινὰ πεισόμενοι, παρὰ τίνων ἐδέξασθε τὰ γράμματα ξένων; τῶν ποῦ κατοικούντων, ἢ πόθεν ὑμᾶς εἰδότες, ἢ πῶς τάνθαδε συνεδρευόμενα ἐπισταμένων; τί ἀναβάλλεσθε καὶ μετὰ ταῦτ' ἐρεῖν αὐτοὺς ὑπισχρεῖσθε, ἀλλ' οὐ πάλα λέγετε; τίς δ' ὁ τὰ γράμματα κομίσας ὑμῖν ἀνὴρ ἐστὶ; τί οὐ κατάγετε αὐτὸν εἰς μέσον, ἵν' ἀπ' ἐκείνου πρώτου ἀρξώμεθα ζητεῖν, εἴτε ἀληθῆ ταῦτ' ἐστίν, εἴτε ὡς ἐγὼ φημι πλάσματα ὑμέτερα; αἱ δὲ δὴ συνάδουσαι τοῖς ξενικοῖς γράμμασι μηνύσεις παρὰ τῶν ἐνθάδε τίνες τ' εἰσὶ καὶ ὑπὸ τίνων γενόμεναι; τί κρύπτετε τὰς πίστεις, ἀλλ' οὐκ εἰς τὸ ἐμφανὲς ἄγετε; ἀλλ' οἶμαι τῶν μήτε γενομένων μήτε ἔσομένων ἀδύνατον εὐρεθῆναι πίστιν. ταῦτ' ἐστίν, ὧ βουλή, μηνύματα, οὐ κατὰ τούτων συναμοσίας, ἀλλὰ καθ' ὑμῶν δόλον καὶ πονηρᾶς γνώμης, ἣ κέχρηται κρύψαντες οὗτοι· τὰ γὰρ πράγματα αὐτὰ βοᾷ. αἴτιοι δ' ὑμεῖς οἱ τὰ πρῶτα ἐπιτρέψαντες αὐτοῖς καὶ τὸ ἀνόητον τῆς ἀρχῆς μεγάλη καθοπλίσαντες ἔξουσία, ὅτε Κόιντιον Καίσαρα τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ κρῖνειν ἐπ' αἰτίαις ψευδέσιν εἰάσατε, καὶ τοσοῦτον φύλακα τῆς ἀριστοκρατίας ἀρπαζόμενον ὑπ' αὐτῶν περιείδετε. τοιγαροῦν οὐκέτι μετριάζουσιν οὐδὲ καθ' ἕνα τῶν εὐγενῶν περικόπτουσιν, ἀλλ' ἀθρόους ἤδη περιβαλόντες τοὺς ἀγαθοὺς ἔλκουσιν ἐκ τῆς πόλεως· καὶ πρὸς τοῖς ἄλλοις κακοῖς οὐδ' ἀντειπεῖν αὐτοῖς ἀξιούσιν οὐδένα

ὑμῶν, ἀλλ' εἰς ὑποψίας καὶ διαβολὰς ἄγοντες ὡς  
 κοινωνοῦντα τῶν ἀπορρήτων δεδίττονται καὶ μισό-  
 δημον εὐθὺς εἶναι φασί, καὶ προλέγουσιν ἤκειν ἐπὶ 2019  
 τὸν δῆμον ὑφ' ἑξόντα τῶν ἐνθάδε ῥηθέντων δίκας.  
 5 ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων ἕτερος ἔσται καιρὸς ἐπιτηδειό-  
 τερος τοῖς λόγοις· νυνὶ δέ, ἵνα συντέμω τὸν λόγον καὶ  
 παύσωμαι τὰ πλεῖω διατεινόμενος, φυλάττεσθαι ὑμῖν  
 παραινῶ τοῦσδε τοὺς ἄνδρας ὡς συνταράττοντας τὴν  
 πόλιν καὶ μεγάλων εἰσφέροντας ἀρχὰς κακῶν· καὶ  
 10 οὐκ ἐνθάδε μὲν ταῦτα λέγω, πρὸς δὲ τὸν δῆμον ἀπο-  
 κρύψομαι, ἀλλὰ κάκει παρηγοῖα δικαία χρήσομαι,  
 διδάσκων ὡς οὐδὲν αὐτοῖς ἐπικρέμαται [τι] δεινόν,  
 ὅτι μὴ κακοὶ καὶ δόλιοι προστάται πολεμίων ἔργα ἐν  
 προσποιήματι φίλων διαπραττόμενοι. Ταῦτ' εἰπόντος  
 15 τοῦ ὑπάτου κραυγὴ τε καὶ πολὺς ἔπαινος ἐκ τῶν παρ-  
 οντων ἐγένετο· καὶ οὐδὲ λόγου τοῖς δημάρχοις ἔτι  
 μεταδόντες διέλυσαν τὸν σύλλογον. ἔπειθ' ὁ μὲν  
 Οὐεργίνιος ἐκκλησίαν συναγαγὼν κατηγορεῖ τῆς τε  
 βουλῆς καὶ τῶν ὑπάτων· ὁ δὲ Κλαύδιος ἀπελογεῖτο  
 20 τοὺς αὐτοὺς λόγους διεξιῶν, οὗς εἶπεν ἐπὶ τῆς βου- 2020  
 λῆς. οἱ μὲν οὖν ἐπιεικέστεροι τῶν δημοτικῶν κενὸν  
 ὑπόπτενον εἶναι τὸν φόβον, οἱ δ' εὐηθέστεροι πι-  
 στεύοντες ταῖς φήμαις ἀληθῆ· ὅσοι δὲ κακοήθεις ἦσαν  
 ἐν αὐτοῖς καὶ μεταβολῆς ἀεὶ δεόμενοι, τοῦ μὲν ἐξετά-  
 25 ξειν τάληθες ἢ ψεῦδος οὐκ εἶχον πρόνοιαν, ἀφορηὴν  
 δὲ διχουστασίας ἐζήτουν καὶ θορύβου.

XIII. Ἐν τοιαύτῃ δὲ ταραχῇ τῆς πόλεως οὕσης  
 ἀνὴρ τις ἐκ τοῦ Σαβίνων ἔθνους πατέρων τε οὐκ  
 ἀφανῶν καὶ χρήμασι δυνατός, Ἄππιος Ἐρδώνιος  
 30 ὄνομα, καταλύσαι τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν ἐπεβί-  
 λετο, εἰθ' ἑαυτῷ τυραννίδα κατασκευαζόμενος εἴτε  
 τῷ Σαβίνων ἔθνει πράττων ἀρχὴν καὶ κράτος εἴτ'

ὀνόματος ἀξιοθῆναι βουλόμενος μέγαλον. κοινωνά-  
 μενος δὲ πολλοῖς τῶν φίλων ἦν εἶχε διάνοιαν, καὶ  
 τὸν τρόπον τῆς ἐπιχειρήσεως ἀφηγησάμενος, ἐπειδὴ  
 κάκεινοις ἐδόκει συνήθροιξε τοὺς πελάτας καὶ τῶν  
 θεραπόντων οὗς εἶχε τοὺς εὐτολμοτάτους· καὶ δι' 5  
 ὀλίγου χρόνου συγκροτήσας δύναιμι ἀνδρῶν τετρα-  
 2021 κισχιλίων μάλιστα, ὅπλα τε καὶ τροφὰς καὶ τὰλλα  
 ὅσων δεῖ πολέμῳ πάντα εὐτρεπισάμενος, εἰς σκάφας  
 ποταμηγούς ἐνεβάλετο. πλείσας δὲ διὰ τοῦ Τεβέρεως  
 ποταμοῦ προσέσχε τῆς Ῥώμης κατὰ τοῦτο τὸ χωρίον, 10  
 ἐνθα τὸ Καπιτώλιόν ἐστιν, οὐδ' ὄλον στάδιον ἀπέχον  
 τοῦ ποταμοῦ. ἦσαν δὲ μέσαι τηρικαῦτα νύκτες, καὶ  
 πολλὴ καθ' ὅλην τὴν πόλιν ἡσυχία, ἦν συνεργὸν  
 λαβῶν ἐξεβίβασε τοὺς ἄνδρας κατὰ σπουδὴν, καὶ διὰ  
 τῶν ἀκλείστων πυλῶν· εἰσὶ γὰρ τινες ἱεραὶ πύλαι 15  
 τοῦ Καπιτωλίου κατὰ τι θέσφατον ἀνειμέναι, Καρ-  
 μεντίδας αὐτὰς καλοῦσιν· ἀναβιβάσας τὴν δύναιμι,  
 εἶλε τὸ φρούριον. ἐκεῖθεν δ' ἐπὶ τὴν ἄκραν ὠσάμε-  
 νος, ἔστι δὲ τῷ Καπιτωλίῳ προσεχῆς, κάκεινης ἐγε-  
 γόνει κύριος. ἦν δὲ αὐτοῦ γνώμη μετὰ τὸ κρατῆσαι 20  
 τῶν ἐπικαιροτάτων τόπων τοὺς τε φηγάδας εἰσδέχε-  
 σθαι καὶ τοὺς δούλους εἰς ἐλευθερίαν καλεῖν καὶ  
 2022 χρεῶν ἄφεσιν ὑπισχεῖσθαι τοῖς ἀπόροις, τοὺς τε ἄλ-  
 λους πολίτας, οἱ ταπεινὰ πράττοντες διὰ φθόνου καὶ  
 μίσους εἶχον τὰς ὑπεροχὰς καὶ μεταβολῆς ἄσμενοι 25  
 ἂν ἐλάβουτο, κοινωνοὺς ποιεῖσθαι τῶν ὠφελειῶν. ἢ  
 δὲ θαρρεῖν τε αὐτὸν ἐπαγομένη καὶ πλανῶσα ἐλπὶς,  
 ὡς οὐδενὸς ἀτυχήσοντα τῶν προσδοκωμένων, ἢ πολι-  
 τικὴ στάσις ἦν, δι' ἣν οὔτε φιλίαν οὔτε κοινωνίαν  
 οὐδεμίαν ὑπελάμβανε τῷ δήμῳ πρὸς τοὺς πατρικίους 30  
 εἴτε γενήσεσθαι. εἰάν δὲ ἄρα μηδὲν αὐτῷ τούτων κατὰ  
 νοῦν χωρῆ, τηρικαῦτα Σαβίνους τε πανστρατιᾶ κα-

λείν ἐδέδοκτο καὶ Οὐολούσκους καὶ τῶν ἄλλων πλη-  
σιοχώρων ὅσοις ἂν ἦ βουλομένοις ἀπὸ ἀλλήλας τῆς  
Ῥωμαίων ἐπιφθόνου ἀρχῆς.

XV. Συνέβη δὲ αὐτῷ πάντων διαμαρτεῖν ὧν  
ἤλπισεν, οὔτε δούλων αὐτομολησάντων πρὸς αὐτὸν  
οὔτε φυγάδων καταλθόντων οὔτε ἀτίμων καὶ κατα-  
χρέων τὸ ἴδιον κέρδος ἀντὶ τοῦ κοινῆ συμφέροντος  
ἀλλαξαμένων, τῆς τε ἕξωθεν ἐπικουρίας οὐ λαβούσης  
χρόνον ἱκανὸν εἰς παρασκευὴν τοῦ πολέμου· τρισὶ 2023  
γὰρ ἢ τέτταρσι ταῖς πρώταις ἡμέραις τέλος εἰλήφει  
τὰ πράγματα μέγα δέος καὶ πολλὴν ταραχὴν Ῥωμαῖοις  
παρασχόντα. ἐπεὶ γὰρ ἑάλω τὰ φρούρια, κραυγῆς ἄφρω  
γενομένης καὶ φυγῆς τῶν περὶ ἐκείνους οἰκούντων  
τούς τόπους, ὅσοι μὴ παραχοῖμα ἐσφάγησαν, ἀγνοοῦν-  
τες οἱ πολλοὶ τὸ δεινὸν ὃ τι ποτ' ἦν ἀρπάσαντες τὰ  
15 ὄπλα συνέτρεχον, οἱ μὲν ἐπὶ τὰ μετέωρα χωρία τῆς  
πόλεως, οἱ δ' εἰς τοὺς ἀναπεπταμένους αὐτῆς τόπους  
πολλοὺς σφόδρα ὄντας, οἱ δ' εἰς τὰ παρακείμενα πε-  
δία· ὅσοι δ' ἡλικίας ἐν τῷ παρηκμακότε ἦσαν καὶ  
20 ῥώμης σώματος ἐν τῷ ἀδυνάτῳ, τὰ τέγγη τῶν οἰκιῶν  
κατεῖχον ἅμα γυναιξίν, ὡς ἀπὸ τούτων ἀγωνιούμενοι  
πρὸς τοὺς εἰσεληλυθότας· ἅπαντα γὰρ αὐτοῖς ἐδόκει  
μεστὰ εἶναι πολέμου. ἡμέρας δὲ γενομένης, ὡς ἐγνώ-  
σθη τὰ κεκρατημένα τῆς πόλεως χωρία, καὶ ὅστις  
25 ἦν ὁ κατέχων ἀνῆρ τοὺς τόπους, οἱ μὲν ὑπάτοι προελ-  
θόντες εἰς τὴν ἀγορὰν ἐκάλουον τοὺς πολίτας ἐπὶ τὰ 2024  
ὄπλα, οἱ δὲ δήμαρχοι προσκαλεσάμενοι τὸν δῆμον  
εἰς ἐκκλησίαν ἔλεγον, ὅτι τῷ μὲν συμφέρουσι τῆς  
πόλεως οὐδὲν ἀξιοῦσι πράττειν ἐναντίον, δίκαιον δὲ  
30 ὑπολαμβάνουσιν εἶναι τηλικούτου ἀγῶνα μέλλοντα  
τὸν δῆμον ὑπομένειν ἐπὶ φητοῖς τισι καὶ διωρισμέ-  
νοις ἐπὶ τὸ κινδύνευμα χωρεῖν. Εἰ μὲν οὖν, ἐφασαν

λέγοντες, ὑπισχνούνται τε ἡμῖν οἱ πατριῶκοι καὶ πί-  
στεις βούλονται δοῦναι τὰς ἐπὶ θεῶν, ὅτι καταλυ-  
θέντος τοῦδε τοῦ πολέμου συγχωρήσουσιν ἡμῖν ἀπο-  
δεῖξαι νομοθέτας καὶ τὸν λοιπὸν χρόνον ἐν ἰσηγορίᾳ  
πολιτεύεσθαι, συνειλευθερώμεν αὐτοῖς τὴν πατρίδα· 5  
εἰ δὲ οὐθὲν ἀξιοῦσι ποιεῖν τῶν μετρίων, τί κινδυ-  
νεύομεν καὶ τὰς ψυχὰς ὑπὲρ αὐτῶν προίεμεθα μηθε-  
νὸς ἀγαθοῦ μέλλοντες ἀπολαύσεσθαι; Ταῦτα λεγόν-  
των αὐτῶν, καὶ τοῦ δήμου πειθομένου καὶ μηδὲ φωνὴν  
ὑπομένουτος ἀκούειν τῶν ἄλλο τι παραινούτων, ὁ 10  
μὲν Κλαύδιος οὐθὲν ἤξιον δεῖσθαι [τῆς] τοιαύτης συμ-  
2025 μαχίας, ἣτις οὐχ ἐκούσιος ἀλλ' ἐπὶ μισθῷ καὶ οὐδὲ  
τούτῳ μετρίῳ βοηθεῖν βούλεται τῇ πατρίδι, ἀλλ'  
αὐτοῖς ἔφη τοὺς πατριῶκοις ἑαυτῶν σώμασι καὶ τῶν  
συνόντων αὐτοῖς πελατῶν ὀπλισαμένους, καὶ εἰ τι 15  
ἄλλο πλῆθος ἐθελούσιον αὐτοῖς συναρξεται τοῦ πο-  
λέμου, μετὰ τούτων πολιορκεῖν τὰ φρούρια· ἐὰν δὲ  
μηδ' οὕτως ἀξιοχρεῶς ἢ δύναμις αὐτοῖς εἶναι δοκῇ,  
Λατίνους τε καὶ Ἑρηνίκας παρακαλεῖν, ἐὰν δ' ἀνάγκη,  
καὶ δούλους ἐλευθερίαν ὑπισχνεῖσθαι καὶ πάντας μάλ- 20  
λον ἢ τοὺς ἐπὶ τοιούτων καιρῶν μνησικακοῦντας  
σφίσι παρακαλεῖν. ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπᾶτων Οὐαλέ-  
ριος ἀντέλεγε πρὸς ταῦτα, οὐκ οἰόμενος δεῖν ἡρε-  
θισμένον τὸ δημοτικὸν ἐκπολεμῶσαι τελέως τοῖς πα-  
τριῶκοις, εἶξαι τε συνεβούλευε τῷ καιρῷ καὶ πρὸς μὲν 25  
τοὺς ἕξωθεν πολεμίους τὰ [γε] βίαια ἀντιτάττειν, πρὸς  
δὲ τὰς πολιτικὰς διατριβὰς τὰ μέτρια καὶ εὐργνώμονα.  
ἐπειδὴ δὲ τοῖς πλείοσι τῶν ἐν τῷ συνεδρίῳ τὰ κρά-  
τιστα ἐδόκει λέγειν, προελθὼν εἰς τὴν ἐκκλησίαν καὶ  
3020 λόγον εὐπροεπῆ διεξελθὼν, τελευτῶν τῆς δημηγορίας 30  
ᾧμολόγησεν, ἐὰν ὁ δῆμος συνάρηται μετὰ προθυμίας  
τοῦ πολέμου καὶ καταστῆ τὰ πράγματα τῆς πόλεως,

συγκωρήσειν τοῖς δημάρχοις προθεῖναι τῷ πλήθει τὴν περὶ τοῦ νόμου διάγνωσιν, ὃν εἰσέφερον ὑπὲρ τῆς ἰσονομίας, καὶ σπονδάσειν ὅπως ἐπὶ τῆς ἑαυτοῦ ἀρχῆς ἐπὶ τέλος ἀχθῆ τὰ δόξαντα τῷ δήμῳ. ἦν δὲ ἄρα οὐδὲν αὐτῷ πεπωμένον ἐπιτελεῖσαι τῶν ὁμολογηθέντων, πλησίον οὕσης τῆς τοῦ θανάτου μοίρας.

XVI. Λυθείσης δὲ τῆς ἐκκλησίας περὶ δαίτην ὄψιαν συνέρρεον ἐπὶ τοὺς ἀποδειχθέντας ἕκαστοι τόπους, ἀπογραφόμενοι τε πρὸς τοὺς ἡγεμόνας τὰ ὀνόματα καὶ τὸν στρατιωτικὸν ὀμνύντες ὄρκον. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ἐπιούσαν νύκτα ὄλην ἄμφι ταῦτα ἦσαν· τῇ δ' ἕξῃς ἡμέρᾳ λοχαγοὶ τε προσ-  
 10 ἐνέμουντο ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ ἐπὶ τὰς ἱερὰς ἐτάττοντο σημείας, συνεπιρρέοντος καὶ τοῦ κατ' ἀρχοῦς  
 15 διατρίβοντος ὄχλου. γενομένων δὲ διὰ τάχους ἀπάντων εὐτρεπῶν, μερισάμενοι τὰς δυνάμεις οἱ ὑπάτοι 2027  
 κλήρῳ διείλοντο τὰς ἀρχάς. Κλαυδίῳ μὲν οὖν ὁ κλήρος ἀπέδωκε τὰ πρὸ τῶν τειχῶν διὰ φυλακῆς ἔχειν, μὴ τις ἔξωθεν ἐπέλθῃ στρατιὰ τοῖς ἔνδον ἐπίκουρος·  
 20 ὑποψία γὰρ ἅπαντας κατείχε μεγάλης σφόδρα κινήσεως, καὶ τὸ ἀντίπαλον ἅπαν ὡς ὁμοῦ συνεπιδησόμενον σφίσιν ἐφοβοῦντο· Οὐαλερίῳ δὲ τὰ φρούρια πολιορκεῖν ὁ δαίμων ἐφῆκεν. ἐτάχθησαν δὲ καὶ ἐπὶ  
 25 τοῖς ἄλλοις ἐρύμασιν ἡγεμόνες ὅσα τῆς πόλεως ἐντὸς ἦν καθέξοντες, καὶ κατὰ τὰς ἐπὶ τὸ Καπιτώλιον ἀγούσας ὁδοὺς ἔτεροι καλύσεως ἕνεκεν τῶν ἀποστησομένων πρὸς τοὺς πολεμίους δούλων τε καὶ ἀπόρων, ὃ παντὸς μάλιστα ἐφοβοῦντο. ἐπικουρικὸν δὲ αὐτοῖς οὐδὲν ἐφθασε παρὰ τῶν συμμάχων ἀφικόμενον,  
 30 ὅτι μὴ παρὰ Τυρκλάνων μόνον ἐν μιᾷ νυκτὶ ἀκουσάντων τε καὶ παρασκευασμένων, οὓς ἤγε Λεύκιος Μαμίλιος, ἀνὴρ δραστήριος, ἔχων τὴν μερίστην ἐν

2028 τῇ πόλει τότε ἀρχὴν· καὶ συνεκινδύνεον οὗτοι τῷ Οὐαλερίῳ μόνον καὶ συνεξείλον τὰ φρούρια πᾶσαν εὐνοίαν καὶ προθυμίαν ἀποδειξάμενοι. ἐγένετο δ' ἡ προσβολὴ τοῖς φρουρίοις πανταχόθεν· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ τῶν πλησίον οἰκιῶν ἀσφάλτου καὶ πίσεως πεπερω-  
 5 μένης ἀγγεῖα σφενδόνας ἐναρμόττοντες ἐπέβαλλον ὑπὲρ τὸν λόφον· οἱ δὲ συμφοροῦντες αὐῶν φακέλους φρονγάνων καὶ παρὰ τοῖς ἀποτόμοις τῆς πέτρας βωμοὺς ἐγείροντες ὑψηλοὺς ὑφῆπτον, ἀνέμῳ παρα-  
 10 διδόντες τὰς φλόγας ἐπιφόρῳ. ὅσοι δ' ἦσαν ἀνδρείοτατοι πυκνώσαντες τοὺς λόχους ἐχώρουν ἄνω κατὰ τὰς χειροποιήτους ὁδοὺς. ἦν δ' αὐτοῖς οὔτε τοῦ πλήθους, ᾧ παρὰ πολὺ τῶν ἀντιπάλων προείχον, ὄφελος οὐδὲν διὰ στενῆς ἀνοιῶσιν ὁδοῦ καὶ πληθούσης προ-  
 15 βόλων ἄνωθεν ἐπικαταραττομένων, ἐνθα συνεξίσωθησθεσθαι ἐμελλε τῷ πολλῷ τὸ ὀλίγον· οὔτε τῆς παρὰ  
 2029 τὰ δεινὰ ὑπομονῆς, ἦν πολλοῖς ἀσκήσαντες πολέμοις εἶχον, οὐδεμίᾳ ὄνησις πρὸς ὀρθίους βιαζομένους σκοπᾶς. οὐ γὰρ συστάδην μαχομένους εἶδε τὸ εὐτόλμον καὶ καρτερικὸν ἀποδείξασθαι, ἀλλ' ἐκηβόλοις 20  
 χρῆσθαι μάχαις. ἦσαν δὲ τῶν μὲν κάτωθεν ἐπὶ τὰ μετέωρα βαλλομένων βραδείαι τε καὶ ἀσθενεῖς, εἰ καὶ τύχοιεν, ὥσπερ εἰκός, αἱ πληγαί· τῶν δ' ἄφ' ὕψους κάτω ὄπιπτονμένων ὀξεῖαι καὶ καρτεραί, συνε-  
 25 γούντων τοῖς βλήμασι καὶ τῶν ἰδίων βαρῶν. οὐ μὲν ἔκαμνόν γε οἱ προσβάλλοντες τοῖς ἐρύμασιν, ἀλλὰ διακαρτέρον ἀναγκοφοροῦντες τὰ δεινὰ, οὔτε ἡμέρας οὔτε νυκτὸς ἀναπαυόμενοι τῶν πόνων. τέλος δ' οὖν ὑπολιπόντων τοὺς πολιορκουμένους τῶν βελῶν καὶ τῶν σωμάτων ἐξαδυνατούντων τρίτῃ τὰ φρούρια 30  
 ἔεπολιορκήσαν ἡμέρᾳ. ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ πολλοὺς Ῥωμαῖοι καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀπέβαλον, κράτιστον



δέ, ὡς περὸς πάντων ὁμολόγητο, τὸν ὑπατον  
 ὃς οὐκ ὀλίγα τραύματα λαβὼν οὐδ' ὡς ἀφίστατο τῶν  
 δεινῶν, ἕως ἐπικαταρραγείς αὐτῷ πέτρος ὑπερμεγέ- 20  
 5 αὐτὸν ἐπιβαίνοντι τοῦ περιτειχίσματος ἅμα τὴν τε νίκην  
 αὐτὸν ἀφείλετο καὶ τὴν ψυχὴν. ἀλισκομένῳ δὲ τῶν  
 φρουρίων ὁ μὲν Ἐρδώνιος ἦν γὰρ καὶ ῥώμῃ σώ-  
 ματος διάφορος καὶ κατὰ χεῖρα γενναῖος· ἀπιστόν τι  
 χρῆμα περὶ αὐτὸν ποιήσας νεκρῶν ὑπὸ πλήθους βελῶν  
 ἀποθνήσκει, τῶν δὲ σὺν αὐτῷ τὰ φρούρια καταλα-  
 10 βομένων ὀλίγοι μὲν τινες ξῶντες ἐάλωσαν, οἱ δὲ πλεί-  
 οντες σφάττοντες ἑαυτοὺς ἢ κατὰ τῶν κρημνῶν ᾤθουν-  
 τες διεφθάρησαν.

XVII. Τοῦτο τὸ τέλος λαβόντος τοῦ ληστρικοῦ  
 πολέμου, τὴν πολιτικὴν πάλιν ἀνεροίπτουν οἱ δήμ-  
 15 αργοὶ στάσιν ἀξιοῦντες ἀπολαβεῖν παρὰ τοῦ περι-  
 ὄντος ὑπάτου τὰς ὑποσχέσεις, ἃς ἐποιήσατο πρὸς  
 αὐτοὺς ὁ τεθνηκώς ἐν τῇ μάχῃ Οὐαλέριος ὑπὲρ τῆς  
 εἰσφορᾶς τοῦ νόμου. ὁ δὲ Κλαύδιος μέχρι μὲν τινος  
 παρείλικε τὸν χρόνον, τοτὲ μὲν καθαρμούς τῆς πόλεως  
 20 ἐπιτελῶν, τοτὲ δὲ θυσίας τοῖς θεοῖς χαριστηρίους  
 ἀποδιδούς, τοτὲ δ' ἀγῶσι καὶ θείαις ἀναλαμβάνων τὸ  
 πλῆθος εἰς εὐπαθείας. ὡς δ' αἱ σκῆψεις αὐτῷ πᾶσαι  
 κατηγάλωντο, τελευτῶν ἔφη δεῖν εἰς τὸν τοῦ τεθνη- 2031  
 κότες ὑπάτου τόπον ἔτερον ἀποδειχθῆναι. τὰ μὲν  
 25 γὰρ ὑφ' ἑαυτοῦ μόνου πραχθέντα οὔτε νόμιμα οὔτε  
 βέβαια εἶσεσθαι, τὰ δ' ὑπ' ἀμφοῖν ἔννομά τε καὶ  
 κύρια. ταύτῃ διακρουσάμενος αὐτοὺς τῇ προφάσει  
 προείπεν ἀρχαιρεσίαν ἡμέραν, ἐν ἣ τὸν συνάροντα  
 ἐμελλεν ἀποδείξειν. ἐν δὲ τῷ μεταξύ χρόνῳ δι' ἀπορ-  
 30 ρήτων βουλευμάτων οἱ προεστηκότες τοῦ συνεδρίου  
 συνέθεντο κατὰ σφᾶς αὐτοὺς, ὅτω παραδώσουσι τὴν  
 ἀρχήν. καὶ ἐπειδὴ ὁ τῶν ἀρχαιρεσίαν ἐνέστη χρόνος,

καὶ ὁ κῆρυξ τὴν πρώτην τάξιν ἐκάλεσεν, εἰσελθόντες  
 εἰς τὸν ἀποδειχθέντα τόπον οἱ τ' ὀκτωκαίδεκα λόχοι  
 τῶν ἱππέων καὶ οἱ τῶν πεζῶν ὀγδοήκοντα τῶν τὸ  
 μέγιστον τμήμα ἐχόντων Λεύκιον Κοίντιον Κικιν-  
 5 νάτον ἀποδεικνύουσιν ὑπατον, οὐ τὸν υἱὸν Καίσινα  
 2032 Κοίντιον εἰς ἀγῶνα θανάτου καταστήσαντες οἱ δήμαρ-  
 χοὶ τὴν πόλιν ἠνάγκασαν ἐκλιπεῖν· καὶ οὐδεμιᾶς ἔτι  
 κληθείσης ἐπὶ τὴν ψηφοφορίαν τάξεως· τρισὶ γὰρ  
 ἦσαν λόχοις πλείους οἱ διενέγκαντες τὴν ψῆφον λόχοι  
 τῶν ὑπολειπομένων· ὁ μὲν δῆμος ἀπήει συμφορὰν 10  
 βαρεῖαν ἠγούμενος, ὅτι μισῶν αὐτοὺς ἀνὴρ ἔξουσίας  
 ὑπατικής ἔσται κύριος, ἡ βουλὴ δὲ ἔπειπε τοὺς παρα-  
 ληφόμενους τὸν ὑπατον καὶ ἄξοντας ἐπὶ τὴν ἀρχήν.  
 ἔτυχε δὲ τῆνικαῦτα ὁ Κοίντιος ἀρουρᾶν τινα ὑπερ-  
 15 γαζόμενος εἰς σπορᾶν, αὐτὸς ἀκολουθῶν τοῖς σχί-  
 ζουσι τὴν νειὸν βοιδίους ἀχίτων, περιζωμάτιον ἔχων  
 καὶ ἐπὶ τῇ κεφαλῇ πῖλον. ἰδὼν δὲ πλῆθος ἀνθρώπων  
 εἰς τὸ χωρίον εἰσιόντων τὸ τε ἄροτρον ἐπέσχε καὶ  
 πολὺν ἠπόρει χρόνον, οἵτινες τε εἶεν καὶ τίνος δεό-  
 20 μενοι πρὸς αὐτὸν ἤκοιεν· ἔπειτα προσδραμόντος τινὸς  
 καὶ κελεύσαντος κοσμιώτερον ἑαυτὸν ποιῆσαι, παρελ-  
 2033 θῶν εἰς τὴν καλύβην καὶ ἀμφιεσάμενος προῆλθεν.  
 οἱ δ' ἐπὶ τὴν παράληψιν αὐτοῦ παρόντες ἠσπάζαντό  
 τε ἅπαντες οὐκ ἐκ τοῦ ὀνόματος ἀλλὰ ὑπατον, καὶ  
 τὴν περιπόρφυρον ἐσθῆτα περιέθεσαν, τοὺς τε πελέ- 25  
 κεις καὶ τὰλλα παράσημα τῆς ἀρχῆς παραστήσαντες  
 ἀκολουθεῖν εἰς τὴν πόλιν ἤξιον. κάκεινος μικρὸν  
 ἐπισχῶν καὶ διαδακρύσας τοσοῦτον εἶπεν· Ἄσπορον  
 ἄρα μοι τὸ χωρίον ἔσται τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν, καὶ  
 κινδυνεύσομεν οὐχ ἔξιν πόθεν διατραφῶμεν. ἔπειτα 30  
 ἀσπασάμενος τὴν γυναῖκα καὶ τῶν ἔνδον ἐπιμελε-  
 σθαι παραγγείλας ᾤχετο εἰς τὴν πόλιν. ταῦτα δὲ

οὐχ ἑτέρου τινὸς χάριν εἰπεῖν προήχθη, ἀλλ' ἵνα φανερὸν γένηται πάσιν, οἳ τότε ἦσαν οἱ τῆς Ῥωμαίων πόλεως προεστηκότες, ὡς αὐτουργοὶ καὶ σωφρονεῖς καὶ πενίαν δικαίαν οὐ βαρυνόμενοι καὶ βασιλικὰς οὐ διώκοντες ἐξουσίας, ἀλλὰ καὶ διδομέναις ἀναινόμενοι· φανήσονται γὰρ οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἐοικότες ἐκείνοις οἱ νῦν, ἀλλὰ τὰναντία πάντα ἐπιτη- 208 δεύοντες, πλὴν πάνυ ὀλίγων, δι' οὓς ἔστηκεν ἔτι τὸ τῆς πόλεως ἀξίωμα καὶ τὸ σώζειν τὴν πρὸς ἐκείνους τοὺς ἄνδρας ὁμοιότητα. ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων ἄλλοις.

XVIII. Ὁ δὲ Κοίντιος παραλαβὼν τὴν ὑπατείαν, 10 πρῶτον μὲν ἔπαυσε τοὺς δημάρχους τῶν καινῶν πολιτευμάτων καὶ τῆς ἐπὶ τῷ νόμῳ σπουδῆς προειπῶν, ὡς εἰ μὴ παύσονται ταράττοντες τὴν πόλιν ἀπάξει 15 Ῥωμαίους ἅπαντας ἐκ τῆς πόλεως στρατεῖαν κατὰ Οὐολούσκων παραγγελίας. ἔπει δὲ κωλύσειν αὐτὸν ἔλεγον οἱ δήμαρχοι στρατοῦ ποιεῖσθαι καταγραφὴν, συναγαγὼν τὸ πλῆθος εἰς ἐκκλησίαν εἶπεν, ὅτι πάν- 20 τες ὁμωμόκασι τὸν στρατιωτικὸν ὄρκον, ἀκολουθήσειν τοῖς ὑπάτοις ἐφ' οὓς ἂν καλῶνται πολέμους, καὶ μῆτε ἀπολείψειν τὰ σημεῖα μῆτε ἄλλο πράξειν μηθὲν ἐναντίον τῷ νόμῳ· παραλαβὼν δὲ τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν αὐτὸς ἔχειν ἔφη κρατουμένους ἅπαντας τοῖς ὄρκοις. εἰπὼν δὲ ταῦτα καὶ διομοσάμενος χρήσεσθαι 25 τῷ νόμῳ κατὰ τῶν ἀπειθούντων, ἐκέλευσεν ἐκ τῶν 2035 ἱερῶν τὰ σημεῖα καταφέρειν· καὶ ἵνα, ἔφη, πάσαν ἀπογνώτε δημαγωγίαν ἐπὶ τῆς ἐμῆς ὑπατείας, οὐ πρότερον ἀναστήσω τὸν στρατὸν ἐκ τῆς πολεμίας, πρὶν ἢ πᾶς ὁ τῆς ἀρχῆς μοι διέλθῃ χρόνος. ὡς οὖν 30 ἐν ὑπαίθρῳ χειμάσσοντες παρασκευάσασθε τὰ εἰς ἐκεῖνον τὸν καιρὸν ἐπιτήδεια. τούτοις καταπληξάμενος αὐτοὺς τοῖς λόγοις, ἐπειδὴ κοσμιωτέρους εἶδε γεγο-

υῖοτας καὶ δεομένους ἀφεθῆναι τῆς στρατείας, ἐπὶ τούτοις ἔφη χαρισεῖσθαι τὰς ἀναπαύλας τῶν πολέμων, ἐφ' ᾧ τε μηθὲν ἔτι παρακινεῖν αὐτούς, ἀλλ' εἶν αὐτὸν ὡς βούλεται τὴν ἀρχὴν τελέσαι, καὶ ἐπὶ τῷ τὰ δίκαια διδόναι τε καὶ λαμβάνειν παρ' ἀλλήλων. 5

XVIII. Καταστάντος δὲ τοῦ θορύβου δικαστή- 10 ριά τε ἀπεδίδου τοῖς δεομένοις ἐκ πολλῶν παρεικλυ- σμένα χρόνων, καὶ τὰ πλείστα τῶν ἐγκλημάτων αὐτὸς ἴσως καὶ δικαίως διέκρινε δι' ὅλης ἡμέρας ἐπὶ τοῦ 2036 βήματος καθεζόμενος, εὐπρόσοδόν τε καὶ πρᾶον καὶ 10 φιλάνθρωπον τοῖς ἐπὶ τὴν δικαιοδοσίαν ἀφικνουμένοις ἑαυτὸν παρεῖχε, καὶ παρεσκεύασεν ἀριστοκρατικὴν οὕτως φανῆναι τὴν πολιτείαν, ὥστε μῆτε δημάρχων δεηθῆναι τοὺς διὰ πενίαν ἢ δυσγένειαν ἢ ἄλλην τιὰ ταπεινότητα ὑπὸ τῶν κρειττόνων κατισχυομένους, 15 μῆτε καινῆς νομοθεσίας πόθον ἔχειν ἔτι τοὺς ἐν ἰσηγορίᾳ πολιτεύεσθαι βουλομένους, ἀλλ' ἀγαπᾶν τε καὶ χαίρειν ἅπαντας ἐπὶ τῇ τότε κατασχούσῃ τὴν πόλιν εὐνομίᾳ. ταῦτά τε δὴ τὰ ἔργα τοῦ ἀνδρὸς ἐπηρεῖτο 20 ὑπὸ τοῦ δήμου, καὶ ἐπεὶ τὸν ὠρισμένον ἐτέλεσε τῆς ἀρχῆς χρόνον, τὸ μὴ δέξασθαι τὴν ὑπατείαν διδο- μένην τὸ δεύτερον, μὴδὲ ἀραπῆσαι τηλικαύτην λαμ- βάνοντα τιμὴν. κατεῖχε γὰρ αὐτὸν ἐπὶ τῆς ὑπατικῆς ἐξουσίας ἢ βουλῇ πολλὰς προσφέρουσα δεήσεις, ἐπεὶ 25 τὸ τρίτον οἱ δήμαρχοι διεπράξαντο μὴ ἀποδέσθαι τὴν 2037 ἀρχὴν, ὡς ἐναντιωσόμενον αὐτοῖς καὶ παύσοντα τῶν καινῶν πολιτευμάτων, τὰ μὲν αἰδοῖ, τὰ δὲ φόβῳ, τὸν δὲ δῆμον ὀρῶσα οὐκ ἀναινόμενον ὑπ' ἀνδρὸς ἀγαθοῦ ἄρχεσθαι. ὁ δ' οὔτε τῶν δημάρχων ἐπαινεῖν ἔφη τὸ ἀπαραχώρητον τῆς ἐξουσίας, οὔτε αὐτὸς εἰς 30 ὁμοίαν ἐκείνοις ἤξειν διαβολὴν. συναγαγὼν δὲ τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν καὶ πολλὴν κατηγορίαν τῶν οὐκ

ἀποτιθεμένων τὰς ἀρχὰς διαθέμενος ὄρκους τε διο-  
μοσάμενος ἰσχυροὺς περὶ τοῦ μὴ λήψεσθαι πάλιν τὴν  
ὑπατείαν, πρὶν ἀποθίσθαι τὴν προτέραν ἀρχήν, προ-  
εἶπεν ἀρχαιρεσίῳ ἡμέραν· ἐν ἣ καταστήσας ὑπάτους  
5 ἀπῆει πάλιν εἰς τὸ μικρὸν ἐκεῖνο καλύβιον καὶ τὸν  
αὐτοῦργον ἐξῆ βίον ὡς πρότερον.

XX. Κοίντου δὲ Φαβίου Οὐβολανοῦ παρειλη-  
φότος τὴν ὑπατείαν τὸ τρίτον καὶ Λευκίου Κορνη-  
λίου, καὶ τελούντων πατρίους ἀγῶνας, Αἰκανῶν ἄνδρες 2038  
10 ἐπίλεκτοι πλῆθος ἀμφὶ τοὺς ἐξακισχιλίους ὄπλισμα  
τ' εὐζῶνῳ συνεσταλμένοι καὶ ἐν νυκτὶ ποιησάμενοι  
τὴν ἐξοδον, σκότους ἔτι ὄντος ἐπὶ πόλιν ἀφικνουῦνται  
Τυσκιάνων, ἣ ἔστι μὲν τοῦ Λατίνων ἔθνους, ἀφέ-  
στηκε δὲ τῆς Ρώμης οὐκ ἔλαττον σταδίων ἑκατόν.  
15 εὐρόντες δὲ ὡς ἐν εἰρήνῃ πύλας τε ἀκλείστους καὶ  
τείχος ἀφύλακτον αἰρούσι τὴν πόλιν ἐξ ἐφόδου, μνησι-  
κακοῦντες τοῖς Τυσκιάνοις, ὅτι τῇ Ρωμαίων πόλει  
τά τε ἄλλα μετὰ προθυμίας συμπράττοντες διετέλουν,  
καὶ ἐν τῇ πολιορκίᾳ τοῦ Καπιτωλίου μόνοι συνήραντο  
20 τοῦ πολέμου. [καὶ] ἄνδρας μὲν οὖν οὐ πολλοὺς τινὰς  
ἐν τῇ καταλήψει διέφθειραν, ἀλλ' ἐφθασαν ἤδη αὐ-  
τοὺς ὑπὸ τὴν ἄλωσιν τῆς πόλεως ὀσάμενοι διὰ τῶν  
πυλῶν οἱ ἔνδον, χωρὶς ἢ ὅσοι ὑπὸ νόσων ἢ γήρας  
φυγεῖν ἀδύνατοι ἦσαν· γυναῖκα δὲ καὶ παιδία καὶ  
25 θεράποντας αὐτῶν ἠνδραποδίσαντο καὶ τὰ χρήματα  
διήρπασαν. ὡς δ' ἀπηγγέλη τὸ δεινὸν εἰς τὴν Ρώ- 2039  
μην ἐκ τῶν διαφνυγόντων ἐκ τῆς ἀλώσεως, οἱ μὲν  
ὑπάτοι βοηθεῖν ᾤοντο δεῖν τοῖς φυγάσι κατὰ τάχος  
καὶ τὴν πόλιν αὐτοῖς ἀποδιδόναι, ἀντίπραττον δὲ οἱ  
30 δῆμαρχοι στρατιάν οὐκ ἔδωκτες καταγράφειν, ἕως ἂν  
ἢ περὶ τοῦ νόμου διενεχθῆ ψῆφος. ἀγανακτούσης δὲ  
τῆς βουλῆς καὶ διατριβὴν λαμβανούσης τῆς στρατείας,

ἕτεροι παρήσαν ἀπὸ τοῦ Λατίνων ἔθνους ἀποσταλέν-  
τες, οἱ τὴν Ἀυτιατῶν πόλιν ἠγγελλον ἐκ τοῦ φανεροῦ  
ἀπεστηκέναι, μιᾶ χρησαμένων γνώμῃ Οὐολούσκων τε  
τῶν ἀρχαίων οἰκητόρων τῆς πόλεως καὶ Ρωμαίων τῶν  
ἀφικνουμένων ὡς αὐτοὺς ἐποίκων καὶ μερισσάμενον τὴν 5  
γῆν. Ἑρῶνικων τε ἄγγελοι κατὰ τοὺς αὐτοὺς παρήσαν  
χροῖνους δηλοῦντες, ὅτι Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν  
δύναμις πολλὴ ἐξελήλυθε καὶ ἔστιν ἐν τῇ αὐτῶν ἤδη  
γῆ. τούτων ἅμα προσαγγελλομένων οὐδεμίαν ἀνα-  
στροφὴν ἔτι ποιῆσθαι τοῖς ἐκ τοῦ συνεδρίου ἐδόκει, 10  
ἀλλὰ πανστρατιᾶ βοηθεῖν καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφο-  
τέρους ἐξίέναι· εἰ δὲ τινες ἀπολειφθῶσι τῆς στρα-  
τείας Ρωμαίων ἢ τῶν συμμάχων, ὡς πολεμίους αὐτοῖς  
2010 χρῆσθαι. εἰζάντων δὲ καὶ τῶν δημάρχων καταγρά-  
ψαντες τοὺς ἐν ἡλικίᾳ πάντας οἱ ὑπάτοι, καὶ τὰς παρὰ 15  
τῶν συμμάχων δυνάμεις μεταπεμφάμενοι κατὰ σπου-  
δὴν ἐξήρσαν, ὑπολειπόμενοι φυλακὴν τῇ πόλει τρίτην  
μοῖραν τῆς ἐπιχωρίου στρατιᾶς. Φάβιος μὲν οὖν ἐπὶ  
τοὺς ἐν τῷ Τυσκιάνῳ ὄντας Αἰκανοὺς τὴν στρατιάν  
ἤγε διὰ τάχος [ελαύνων]. τῶν δ' οἱ μὲν πλείους 20  
ἀπεληλύθεισαν ἤδη διηρπακότες τὴν πόλιν, ὀλλοὶ δὲ  
τινὲς ὑπέμενον φυλάττοντες τὴν ἄκραν· ἔστι δὲ σφό-  
δρα ἐχρῶα καὶ οὐ πολλῆς δεομένη φυλακῆς. τινὲς μὲν  
οὖν φασὶ τοὺς φρουροὺς τῆς ἄκρας ἰδόντας ἐξιοῦσαν  
ἐκ τῆς Ρώμης τὴν στρατιάν· εὐσύνοπτα γάρ ἔστιν 25  
ἐκ μετεώρου τὰ μεταξὺ χωρία πάντα· ἐκόντας ἐξελ-  
θεῖν· ἕτεροι δὲ ἐκπολιορκηθέντας ὑπὸ τοῦ Φαβίου  
καθ' ὁμολογίαν παραδοῦναι τὸ φρούριον, τοῖς σώ-  
μασι αὐτοῖς ἄδειαν αἰτησαμένους καὶ ζυγὸν ὑπο-  
στάντας. 30

2041 XXI. Ἀποδοὺς δὲ τοῖς Τυσκιάνοις τὴν πόλιν  
Φάβιος περὶ δειλὴν ὄψιαν ἀνίστησι τὴν στρατιάν.

καὶ ὡς εἶχε τάχους ἤλαυνεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, ἀκούων περὶ πόλιν Ἀλγιδὸν ἀθρόας εἶναι τὰς τε Οὐλοῦσκων καὶ τὰς Αἰκανῶν δυνάμεις. ποιησάμενος δὲ δι' ὅλης νυκτὸς σύντονον ὁδὸν ὑπ' αὐτὸν τὸν ὄρθρον  
 5 ἐπιφαίνεται τοῖς πολεμίῳις ἐστρατοπεδενκόσιν ἐν πεδίῳ, καὶ οὔτε τάφρον περιβεβλημένοι οὔτε χάρακα, ὡς ἐν οἰκίᾳ τε γῆ καὶ καταφρονήσει τοῦ ἀντιπάλου. παρακλευσάμενος δὲ τοῖς ἀμφ' αὐτὸν ἀγαθοῖς ἀνδράσι γίνεσθαι, πρῶτος εἰσελαύνει μετὰ τῶν ἱππέων  
 10 εἰς τὴν τῶν πολεμίων παρεμβολήν, καὶ οἱ πεζοὶ συναλαλάξαντες εἶποντο· τῶν δ' οἱ μὲν ἔτι κοιμώμενοι ἐφρονεῦοντο, οἱ δ' ἀρτίως ἀνεστηκότες καὶ πρὸς ἀλκήν ἐπιχειροῦντες τραπέσθαι, οἱ δὲ πλείους ἐφευγον. 2042  
 15 ἐπιτρέψας τοῖς στρατιώταις τὰ χρήματα ὠφελείσθαι καὶ τὰ σώματα πλην ὅσα Τυσκλέων ἦν, οὐ πολὺν ἐνταῦθα διατρέψας χρόνον ἐπὶ τὴν Ἐχετροῦων πόλιν ἦγε τὴν δύναμιν, ἣ τότε ἦν τοῦ Οὐλοῦσκων ἔθνους ἐπιφανεστάτη τε καὶ ἐν τῷ κρατίστῳ μάλιστα τόπῳ  
 20 κειμένη. στρατοπεδύσας δὲ πλησίον τῆς πόλεως ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας κατ' ἐλπίδα τοῦ προελεύσεσθαι τοὺς ἔνδον εἰς μάχην, ὡς οὐδεμία ἐξῆι στρατιὰ, τὴν γῆν αὐτῶν ἐδῆου ἀνθρώπων μεστὴν οὖσαν καὶ βοσκημάτων. οὐ γὰρ ἐφθασαν ἀνασκευασάμενοι τὰ ἐκ τῶν  
 25 ἀγρῶν αἰφνιδίῳ γενηθείσης αὐτοῖς τῆς ἐφόδου. ἐφελς δὲ καὶ ταῦτα τοῖς στρατιώταις διασπάξεν ὁ Φάβιος καὶ πολλὰς ἐν τῇ προνομῇ διατρέψας ἡμέρας ἀπήγε ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν. ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Κορνήλιος ἐπὶ τοὺς ἐν Ἀντίῳ Ῥωμαίους τε καὶ Οὐλοῦσκους ἐλαύνων, ἐπιτυγχάνει στρατιᾷ πρὸ τῶν  
 30 ὄρειων αὐτὸν ὑποδεχομένη. παραταξάμενος δὲ αὐτοῖς καὶ πολλοὺς μὲν φονεύσας, τοὺς δὲ λοιποὺς τρεψά-

μενος, ἀγγυὸν τῆς πόλεως κατεστρατοπέδευσεν. οὐ τολμώντων δὲ τῶν ἐκ τῆς πόλεως οὐκέτι χωρεῖν εἰς μάχην, πρῶτον μὲν τὴν γῆν αὐτῶν ἔκειρεν, ἔπειτα τὴν πόλιν [αὐτῶν] ἀπετάφρευε καὶ περιεχαράκου. τότε δὴ πάλιν ἀναγκασθέντες ἐξῆλθον ἐκ τῆς πόλεως 5 πανστρατιᾷ, πολλὸς καὶ ἀσύντακτος ὄχλος, καὶ συμβαλόντες εἰς μάχην ἔτι κάκιον ἀγωνισάμενοι κατακλείονται τὸ δεύτερον εἰς τὴν πόλιν, αἰσχροῶς καὶ ἀνάνδρως φεύγοντες. ὁ δ' ὑπάτος οὐδεμίαν αὐτοῖς ἐναστροφήν ἔτι δοὺς κλίμακας προσέφερε τοῖς τεύχεσι 10 καὶ κροῖσι ἐξέκοπτε τὰς πύλας. ἐπιπόνως δὲ καὶ ταλαιπώρως τῶν ἔνδον ἀπομαχομένων, οὐ πολλὰ πραγματευθεὶς κατὰ κράτος αἰρεῖ τὴν πόλιν. χρήματα μὲν οὖν αὐτῶν, ὅσα χρυσὸς καὶ ἄργυρος καὶ χαλκὸς ἐνῆν, εἰς τὸ δημόσιον ἐκέλευσεν ἀναφέρειν, ἀνδράποδα δὲ 15 τοὺς ταμίαις παραλαμβάνοντας καὶ τὰ λοιπὰ λάφυρα πωλεῖν· τοῖς δὲ στρατιώταις ἐσθῆτα καὶ τροφὰς καὶ ὅσα ἄλλα τοιαῦτα ἐδύνατο ὠφελείσθαι ἐπέτρεψεν. ἔπειτα διακρίνας τῶν τε κληρούχων καὶ τῶν ἀρχαίων Ἀντιατῶν τοὺς ἐπιφανεστάτους τε καὶ τῆς ἀποστά- 20 σεως αἰτίους· ἦσαν δὲ πολλοί· ῥάβδοις τε ἠκίστατο μέχρι πολλοῦ καὶ τοὺς ἀνένας αὐτῶν ἐκέλευσεν ἀποτεμεῖν. ταῦτα διαπραξάμενος ἀπήγε καὶ αὐτὸς ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν. τούτοις ἡ βουλή τοῖς ὑπάτοις προσιοῦσί τε ἀπήντησε, καὶ θριάμβους ἀμφοτέροις 25 καταγαγεῖν ἐψηφίσατο· καὶ πρὸς Αἰκανοὺς πρεσβευσάμενος ὑπὲρ εἰρήνης ἐποίησατο συνθήκας περὶ καταλύσεως τοῦ πολέμου, ἐν αἷς ἐγράφη, πόλεις τε καὶ χώρας ἔχοντας Αἰκανοὺς, ὧν ἐκρά- 30 τουν ὅτε αἱ σπονδαὶ ἐγίνοντο, Ῥωμαίους εἶναι ὑπηκόους, ἄλλο μὲν ὑποτελοῦντας μηθέν, ἐν δὲ τοῖς πολέμοις συμμαχίαν ἀποστέλλοντας ὁσηδῆποτε,

ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι σύμμαχοι. καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτε-  
λευτα.

XXII. Τῷ δ' ἐξῆς ἐνιαυτῷ Γάιος Ναύτιος τὸ δευ- 20  
τερον εἰσθεῖς καὶ Λεύκιος Μηνύκιος παραλαβόντες  
5 τὴν ὑπατου ἀρχήν, τέως μὲν ὑπὲρ τῶν πολιτικῶν  
δικαίων πόλεμον ἐντὸς τείχους ἐπολέμουν πρὸς τοὺς  
ἅμα Οὐρεργινίῳ δημάρχους τοὺς τέταρτον ἔτος ἤδη  
τὴν αὐτὴν καταστροφῆς ἀρχήν. ἐπεὶ δ' ἀπὸ τῶν  
πλησιοχώρων ἔθνῶν πόλεμος ἐπεγένετο τῇ πόλει, καὶ  
10 δέος ἦν μὴ τὴν ἀρχὴν ἀφαιρεθῶσιν, ἀσμένως δεξά-  
μενοι τὸ συμβῆν ἀπὸ τῆς τύχης τὸν στρατιωτικὸν  
ἐποιοῦντο κατάλογον, καὶ μερισάμενοι τοιχῇ τὰς τε  
οικείας καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων δυνάμεις, μίαν  
μὲν ἐν τῇ πόλει μοῖραν κατέλιπον, ἣς ἠγεῖτο Κόιν-  
15 τος Φάβιος Οὐμβολάνος· τὰς δὲ λοιπὰς αὐτοὶ παρα-  
λαβόντες ἐξήεσαν διὰ ταχέων, ἐπὶ μὲν Σαβίνους  
Ναύτιος, ἐπὶ δ' Αἰκανοὺς Μηνύκιος. ἀμφοτέρω γὰρ  
ταῦτα τὰ ἔθνη κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἀφειστήκει τῆς  
Ῥωμαίων ἀρχῆς, Σαβῖνοι μὲν ἐκ φανεροῦ, καὶ μέχρι  
20 Φιδήνης πόλεως ἤλασαν, ἣς ἐκράτουν Ῥωμαῖοι· τετ- 2046  
ταράκοντα δ' εἰσὶν οἱ διὰ μέσου τῶν πόλεων στάδιοι·  
Αἰκανοὶ δὲ λόγῳ μὲν φυλάττοντες τὰ τῆς νεωστὶ γε-  
νομένης συμμαχίας δίκαια, ἔργῳ δὲ καὶ οὗτοι πράτ-  
τουτες τὰ τῶν πολεμίων. ἐπὶ γὰρ τοὺς συμμάχους  
25 αὐτῶν Λατίνους ἐστράτευσαν, ὡς οὐ γενομένου αὐ-  
τοῖς πρὸς ἐκείνους ὁμολογιῶν περὶ φιλίας. ἠγεῖτο δὲ  
τῆς στρατιᾶς Γράκχος Κόλλις, ἀνὴρ δραστήριος ἀρχῇ  
κοσμηθεὶς αὐτοκράτορι, ἦν ἐπὶ τὸ βασιλικώτερον ἐξή-  
γαγεν. ἐλάσας δὲ μέχρι Τύσκλου πόλεως, ἦν Αἰκα-  
30 νοὶ τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ καταλαβόμενοι καὶ διαρπά-  
σαντες ὑπὸ Ῥωμαίων ἐξεκρούσθησαν, ἀνθρώπους τε  
πολλοὺς ἐκ τῶν ἀγρῶν συνήρπασε καὶ βοσκήματα ὅσα

κατέλαβε καὶ τοὺς καρποὺς τῆς γῆς ἐν ἀκμῇ ὄντας  
2047 ἐφθειρεν. ἀφικομένης δὲ πρεσβείας, ἦν ἀπέστειλεν  
ἢ Ῥωμαίων βουλή μαθεῖν ἀξιούσα, τί παθόντες Αἰκα-  
νοὶ πολεμοῦσι τοῖς Ῥωμαίων συμμάχοις, φιλίας τ'  
αὐτοῖς ὁμομοσμένης νεωστὶ καὶ οὐδενὸς ἐν τῷ μεταξὺ 5  
χρόνῳ γενομένου προσκρούσματος τοῖς ἔθνεσι, καὶ  
παραίνουσης τῷ Κοιλίῳ τοὺς τ' αἰχμαλώτους αὐτῶν  
οὓς εἶχεν ἀφιέναι καὶ τὴν στρατιάν ἀπάγειν καὶ περὶ  
ᾧν ἠδίκησεν ἢ κατέβλαψε Τυσκλάνους δίκην ὑπο-  
σχεῖν, πολλὸν μὲν χρόνον διέτριψεν ὁ Γράκχος οὐδ' 10  
εἰς λόγους τοῖς πρεσβευταῖς ἐρχόμενος, ὡς ἐν ἀσχο-  
λίαις δὴ τιςι γεγονώς. ἐπεὶ δ' οὖν ἔδοξεν αὐτῷ  
προσάγειν τοὺς πρέσβεις, κἀκεῖνοι τοὺς ἐπισταλέν-  
τας ὑπὸ τῆς βουλῆς λόγους διεξῆλθον· Θανμάζω,  
φησὶν, ὑμῶν, ὦ Ῥωμαῖοι, τί δή ποτ' αὐτοὶ μὲν ἅπαν- 15  
τας ἀνθρώπους ἠγεῖσθε πολεμίους, καὶ ὑφ' ᾧν οὐδὲν  
κακὸν πεπόνθατε, ἀρχῆς καὶ τυραννίδος ἕνεκα· Αἰκα-  
νοῖς δ' οὐ συγχωρεῖτε παρὰ τουτωνὶ Τυσκλάνων  
ἐχθρῶν ὄντων ἀναπράττεσθαι δίκας, οὐδενὸς ἡμῖν  
20 διωμολογημένου περὶ αὐτῶν, ὅτε τὰς πρὸς ὑμᾶς ἐποι- 20  
2048 οῦμεθα συνθήκας. εἰ μὲν οὖν τῶν ὑμετέρων ἰδίων  
ἀδικεῖσθαι τι ἢ βλάπτεσθαι λέγετε ὑφ' ἡμῶν, τὰ  
δίκαια ὑπέξομεν ὑμῖν κατὰ τὰς ὁμολογίας· εἰ δὲ περὶ  
Τυσκλάνων ἀναπραξόμενοι δίκας ἤκατε, οὐθεὶς ἐστίν  
ὑμῖν πρὸς ἐμὲ περὶ τούτων λόγος, ἀλλὰ πρὸς ταύτην 25  
λαλεῖτε τὴν φηγόν· δείξας αὐτοῖς τινα πλησίον πεφυ-  
κυται.

XXIII. Ῥωμαῖοι δὲ τοιαῦτα ὑβρισθέντες ὑπὸ τοῦ  
ἀνδρὸς οὐκ εὐθύς ὀργῇ ἐπιτρέψαντες ἐξήγαγον τὴν  
στρατιάν, ἀλλὰ καὶ δευτέραν ὡς αὐτὸν ἀπέστειλαν 30  
πρεσβείαν, καὶ τοὺς φιλιάεις καλουμένους ἄνδρας  
λιγούς ἐπεμψαν ἐπιμαρτυρούμενοι θεοὺς τε καὶ δαι-  
3\*

μονας, ὅτι μὴ δυνηθέντες τῶν δικαίων τυχεῖν ὅσιον ἀναγκασθήσονται πόλεμον ἐκφέρειν· καὶ μετὰ ταῦτα 201 τὸν ὑπάτον ἀπέστειλαν. ὁ δὲ Γράκχος, ἐπειδὴ τοὺς Ῥωμαίους προσιόντας ἔμαθεν, ἀναστήσας τὴν δύνα- 5 μιν ἀπῆγε προσωτέρω, τῶν πολεμίων ἐκ ποδὸς ἐπο- μένων, βουλόμενος αὐτοὺς εἰς τοιαῦτα προσαγαγέ- σθαι χωρία, ἐν οἷς πλεονεκτήσῃν ἐμελλεν· ὅπερ καὶ συνέβη. φυλάξας γὰρ αὐλῶνα περικλειόμενον ὄρεσιν, ὡς ἐνέβαλον εἰς τοῦτον οἱ Ῥωμαῖοι διώκοντες αὐτόν, 10 ὑποστρέφει τε καὶ στρατοπεδεύεται κατὰ τὴν ἐκ τοῦ αὐλῶνος ἔξω φέρονσαν ὁδόν. ἐκ δὲ τούτου συνεβε- βῆκει τοῖς Ῥωμαίοις οὐχ ὄν ἐβούλonto ἐκλέξασθαι τόπον εἰς στρατοπεδεῖαν, ἀλλ' ὄν ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ καιρός, ἔνθα οὐθ' ἵπποις χιλὸν εὐπορον ἦν λαμβά- 15 νειν, ὄρεσι περικλειόμενου τῆς τόπου ψιλοῖς καὶ δυσ- βάτοις, οὐθ' ἑαυτοῖς τροφὰς ἐκ τῆς πολεμίας συγ- κομίζειν, ἐπειδὴ κατηγάλλοντο ἄς οἰκοθεν ἔφερον, οὔτε μεταστρατοπεδεύσασθαι τῶν πολεμίων ἀντικαθ- ημένων καὶ κωλύοντων τὰς ἐξόδους. βιάσασθαι τε 20 προελόμενοι καὶ προελθόντες εἰς μάχην ἀνεκρούσθη- σαν, καὶ πολλὰς πληγὰς λαβόντες εἰς τὸν αὐτῶν κατε- κλείσθησαν χάρακα. ὁ δὲ Κοίλιος ἐπαρθεὶς τῷ προ- τερήματι τούτῳ περιετόφρευε τε αὐτοὺς καὶ περιε- χαράκου, καὶ πολλὰς ἐλπίδας εἶχε λιμῷ πιεσθέντας 25 παραδώσειν αὐτῷ τὰ ὄπλα. ἀφικομένης δ' εἰς Ῥώμην περὶ τούτων ἀγγελίας, Κοίντος Φάβιος ὁ καταλει- φθεὶς ἐπὶ τῆς πόλεως ἐπαρχος ἀπὸ τῆς σὺν αὐτῷ στρατιᾶς ὅσον ἦν ἀκμαιοτάτον τε καὶ κράτιστον μέρος ἐπιλέξας ἐπὶ συμμαχίαν ἐπεμψε τῷ ὑπάτῳ. ἡγεῖτο 30 δὲ τῆς δυνάμεως ταύτης Τίτος Κοίντιος ὁ ταμίης ἀνὴρ ὑπατικός. πρὸς δὲ τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Ναύτιον ἐπὶ τῆς ἐν Σαβίνοις στρατιᾶς ὄντα γράμ-

ματα διαπέμφας τὰ τε συμβάντα τῷ Μηνυκίῳ διεσά- φησε καὶ αὐτὸν ἦκειν ἡξίου διὰ ταχέων. κἀκεῖνος 3001 ἐπιτρέψας τοῖς πρεσβευταῖς τὸν χάρακα φυλάττειν αὐτὸς σὺν ὀλίγοις ἵππευσιν εἰς τὴν Ῥώμην ἐλαύνει συντόνῳ χρησάμενος ἱππασία· εἰσελθὼν δ' εἰς τὴν 5 πόλιν ἐτι πολλῆς νυκτὸς οὔσης, ἐβουλευέτο σὺν τῷ Φαβίῳ καὶ τῶν ἄλλων βουλευτῶν τοῖς πρεσβυτάτοις ὅτι χρὴ ποιεῖν. ἐπεὶ δὲ πᾶσιν ἐδόκει δικτάτορος δεῖσθαι ὁ καιρός, ἀποδείκνυσιν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ταύ- την Λεύκιον Κοίντιον Κικιννάτον. καὶ αὐτὸς μὲν 10 ταῦτα διαπραξάμενος ὄχητο πάλιν ἐπὶ τὸ στρατό- πεδον.

XXIII. ὁ δὲ τῆς πόλεως ἐπαρχος Φάβιος ἐπεμψε τοὺς παραληψομένους τὸν Κοίντιον ἐπὶ τὴν ἀρχὴν. 15 ἔτυχε δὲ καὶ τότε ὁ ἀνὴρ τῶν κατ' ἀγρὸν ἔργων τι διαπρατόμενος· ἰδὼν δὲ τὸν προσιόντα ὄχλον καὶ ὑποπτέυσας ἐπ' αὐτὸν ἦκειν, ἐσθῆτά τ' ἐλάμβανε ἐμπροσθέντα καὶ ὑπαντήσων αὐτοῖς ἐπορευέτο. ὡς δ' ἔγγυς ἦν, ἵππους τ' αὐτῷ φαλάροισι κεκοσμημένους 20 ἐμπροσέσι προσήγρον καὶ πελέκεις ἅμα ταῖς θάβδοις εἰκοσιτέτταρας παρέστησαν ἐσθῆτά τε ἀλουργῆ καὶ 3002 τᾶλλα παράσημα, οἷς πρότερον ἢ τῶν βασιλέων ἐκε- κόσμητο ἀρχή, προσήνεγκαν. ὁ δὲ μαθὼν ὅτι δικτά- τω ἀποδέδεικται τῆς πόλεως οὐχ ὅπως ἠγάπησε τηλικαύτης τιμῆς τυχόν, ἀλλὰ προσαγανακτῆσας 25 εἶπεν· Ἀπολείται ἄρα καὶ τούτου τοῦ ἑμαυτοῦ ὁ καρ- πὸς διὰ τὰς ἐμὰς ἀσχολίας, καὶ πεινήσομεν ἅπαντες κακῶς. μετὰ ταῦτα παραγενόμενος εἰς τὴν πόλιν, πρῶτον μὲν ἐθάρουνε τοὺς πολίτας λόγον ἐν τῷ πλή- 30 θει διεξελθὼν ἐξεργεῖραι τὰς ψυχὰς δυνάμενον ἐλπί- σαι ἀγαθαῖς· ἔπειτα συναγαγὼν ἅπαντας τοὺς ἐν ἀκμῇ, τοὺς τε κατὰ πόλιν καὶ τοὺς ἐκ τῶν ἀγρῶν,

καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων ἐπικουρίας μεταπεμψά-  
 μενος, ἰσπάρχην τ' ἀποδείξας Λεύκιον Ταρκύνιον,  
 ἄνδρα τῶν ἡμελημένων μὲν διὰ πενίαν, τὰ δὲ πολέ-  
 μια γενναίων, ἐξῆγε συγκεκοτημένην ἔχων δύναμιν, 2053  
 5 καὶ καταλαβὼν τὸν ταμίαν Τίτον Κοίντιον ἀναδεχό-  
 μενον αὐτοῦ τὴν παρουσίαν, λαβὼν καὶ τὴν σὺν  
 ἐκείνῳ δύναμιν ἦκεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους. ὡς δὲ  
 κατώπτευσεν τὴν τῶν χωρίων φύσιν ἐν οἷς ἦν τὰ  
 στρατόπεδα, μέρος μὲν τι τῆς στρατιᾶς ἐπὶ τοῖς μετε-  
 10 ὄροις ἔταξεν, ὡς μήτε βοήθεια παραγένοιτο τοῖς  
 Αἰκανοῖς ἑτέρα μήτε τροφαί· τὴν δὲ λοιπὴν δύναμιν  
 αὐτὸς ἔχων προῆγεν ἐκτεταγμένην ὡς εἰς μάχην. καὶ  
 ὁ Κοίλιος οὐδὲν ὑποδείσας· ἢ τε γὰρ δύναμις ἢ περὶ  
 αὐτὸν ἦν οὐκ ὀλίγη, καὶ αὐτὸς ἐδόκει ψυχὴν οὐ κακὸς  
 15 εἶναι [τὰ πολέμια]· δέχεται αὐτὸν ἐπιόντα, καὶ γίνε-  
 ται μάχη καρτερὰ. χρόνου δὲ πολλοῦ διεληθόντος, καὶ  
 τῶν Ῥωμαίων διὰ τοὺς συνεχεῖς πολέμους ἀναφερόν-  
 των τὸν πόνον, τῶν τε ἰσπέων κατὰ τὸ κάμον μέρος  
 αἰεὶ ἐπιβοηθούτων τοῖς πεζοῖς, ἠσσηθεῖς ὁ Γράκχος  
 20 κατακλείεται πάλιν εἰς τὸν ἑαυτοῦ χάρακα. καὶ μετὰ  
 τοῦτο ὁ Κοίντιος περιταφρεύσας αὐτὸν ὑψηλῷ χάρακι  
 καὶ πύργοις πυκνοῖς περιλαβὼν, ἐπεὶ κάμνοντα ἔμαθε  
 τῶν ἀναγκαίων τῆ σπάνει, αὐτὸς τε προσβολὰς ἐποι-  
 εῖτο συνεχεῖς πρὸς τὸν χάρακα τῶν Αἰκανῶν, καὶ τῷ 2054  
 25 Μηνυκίῳ προσέταξεν ἀπὸ τῶν ἑτέρων ἐξίεναι μερῶν.  
 ὥστε ἠναγκάσθησαν [οἱ] Αἰκανοὶ τροφῆς τε ἀπορού-  
 μενοι καὶ συμμάχων βοήθειαν ἀπεγνωστότεσ πολιορ-  
 κούμενοί τε πολλαχόθεν ἰκετηρίας ἀναλαμβάνοντες ἐπι-  
 30 πρεσβεύεσθαι πρὸς τὸν Κοίντιον περὶ φιλίας διαλεγό-  
 μενοι. ὁ δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις Αἰκανοῖς ἔφη σπένδεσθαι  
 καὶ δίδουαι τοῖς σώμασι τὴν ἄδειαν, τὰ τε ὅπλα  
 ἀποθεμένους καὶ καθ' ἓνα διεξιούσιν ὑπὸ ζυγόν,

Γράκχῳ δὲ τῷ ἡγεμόνι τῶν πολεμίων καὶ τοῖς σὺν  
 ἐκείνῳ βουλευσάσι τὴν ἀπόστασιν ὡς πολεμίους χρή-  
 σεσθαι, ἐκέλευσέ τε αὐτοῖς ἄγειν τοὺς ἄνδρας δεδε-  
 μένους. ὑπομενόντων δὲ ταῦτα τῶν Αἰκανῶν, τελευ-  
 ταῖον αὐτοῖς ἐκείνο προσέταξεν· ἐπειδὴ Τύσκιον 5  
 πόλιν Ῥωμαίων σύμμαχον ἐξηνδραποδίσαντο καὶ διήρ-  
 पासαν οὐδὲν ὑπὸ Τυσκλάνων παθόντες κακόν, ἀντι-  
 παρασχεῖν αὐτῷ πόλιν τῶν σφετέρων, Κορβιῶνα, τὰ  
 10 ὅμοια διαθεῖναι. ταύτας λαβόντες τὰς ἀποκρίσεις οἱ  
 πρῆσβεις τῶν Αἰκανῶν ἀπήεσαν, καὶ μετ' οὐ πολὺ 10  
 παρήσαν ἄροντες τὸν Γράκχον καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ  
 δεδεμένους· αὐτοὶ δὲ τὰ ὅπλα θέντες ἐξέλιπον τὴν  
 παρεμβολὴν διαπορευόμενοι καθάπερ ὁ στρατηγὸς  
 ἐκέλευσε διὰ τοῦ Ῥωμαίων χάρακος καθ' ἓνα ὑπὸ  
 ζυγόν, καὶ τὴν Κορβιῶνα κατὰ τὰς ὁμολογίας παρῆ- 15  
 15 δσαν, τὰ ἐλεύθερα σώματα μόνον ἐξελεθεῖν αἰτησά-  
 μενοι, ὑπὲρ ὧν διήλλαξαν τοὺς Τυσκλάνων αἰχμα-  
 λώτους.

XXV. Παραλαβὼν δὲ ὁ Κοίντιος τὴν πόλιν, τὰ  
 μὲν ἐπιφανέστατα τῶν λαφύρων εἰς Ῥώμην ἐκέλευσε 20  
 φέρειν, τὰ δ' ἄλλα πάντα διελέσθαι κατὰ λόχους  
 ἐπέτρεψε τοῖς τε σὺν αὐτῷ παραγενομένοις στρατιώ-  
 ταις καὶ τοῖς ἅμα Κοιντίῳ τῷ ταμίᾳ προαποσταλεῖσι.  
 τοῖς δὲ μετὰ Μηνυκίου τοῦ ὑπάτου κατακλεισθεῖσιν  
 ἐν τῷ χάρακι μεγάλην ἔφη δεδωκέναι δωρεὰν τὰ σώ- 25  
 25 ματα αὐτῶν ἐκ θανάτου ἠυσάμενος. ταῦτα πράξας  
 καὶ τὸν Μηνυκίον ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν ἀναγκάσας  
 30 ἀνέστρεψεν εἰς τὴν Ῥώμην καὶ κατήγαγε λαμπρό-  
 30 τaton ἀπάντων ἡγεμόνων θρόναμβον, ἐν ἡμέραις ἐκ-  
 30 καίδεκα ταῖς πάσαις, ἐφ' ἧς παρέλαβε τὴν ἀρχὴν, 30  
 30 στρατόπεδόν τε σώσας φίλιον καὶ πολεμίων δύναμιν  
 ἀκμάζουσαν καθελὼν πόλιν τε αὐτῶν πορθήσας καὶ

φρουράν αὐτῆς ὑπολιπὼν τὸν τε ἡγεμόνα τοῦ πολέμου καὶ τοὺς ἄλλους ἐπιφανεῖς ἄνδρας ἀλύσει δεδεδεμένους ἄγων. καὶ ὁ μάλιστα πάντων αὐτοῦ θαυμάζειν ἄξιον, ὅτι τὴν τοσαύτην ἀρχὴν εἰς ἐξάμηνον 5 εἰληφώς οὐκ ἐχορήσατο παντὶ τῷ χρόνῳ, ἀλλὰ συναγαγὼν τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν καὶ περὶ τῶν πεπραγμένων λόγον ἀποδοὺς ἐξωμόσατο τὴν ἀρχὴν, τῆς τε βουλῆς δεομένης γῆν τε ὅσῃν ἐβούλετο λαβεῖν ἐκ τῆς δορικτήτου καὶ ἀνδράποδα καὶ χρήματα ἐκ τῶν 10 λαφύρων, ἐπανορθῶσαι [τε] τὴν πενίαν πλοῦτῳ δικαίῳ, ὃν ἀπὸ πολεμίων κάλλιστον ἐκτήσατο τοῖς ἰδίῳις πόνοις, οὐκ ἠξίωσε, φίλων τε καὶ συγγενῶν δωρεὰς προσφερόντων μεγάλας καὶ ἀντὶ παντὸς ἀγαθοῦ 2057 τιθεμένων ἐκείνῳ τὸν ἄνδρα εὖ ποιεῖν, ἐπαινέσας αὐτοὺς τῆς προθυμίας οὐδὲν τῶν διδομένων ἔλαβεν, ἀλλ' ἀπῆλθε πάλιν εἰς τὸ μικρὸν ἐκεῖνο χωρίον, καὶ τὸν αὐτοῦργον αὐτοῦ ἀντὶ τοῦ βασιλικοῦ μετέληψε βίον, μείζον φρονῶν ἐπὶ πενίᾳ ἢ ἄλλοι ἐπὶ πλοῦτῳ. 15 μετ' οὐ πολὺν δὲ χρόνον καὶ Ναύτιος ἄτερος τῶν ὑπάτων νικήσας Σαβίνους ἐκ παρατάξεως καὶ τῆς χώρας αὐτῶν πολλὴν καταδραμῶν ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὰς δυνάμεις.

XXVI. Μετὰ δὲ τούτους Ὀλυμπιάς μὲν ἦν ὀρθοκοστή καὶ πρώτη, ἣν ἐνίκα στάδιον Πολύμναστος 25 Κυρηναῖος, Ἀθήνησι δὲ ἄρχων Καλλίας, ἐφ' οὗ τὴν ὑπάτων ἀρχὴν ἐν Ρώμῃ παρέλαβον Γάιος Ὀράτιος καὶ Κόιντος Μηνύκιος. ἐπὶ τούτων Σαβῖνοι πάλιν στρατεύσαντες ἐπὶ Ῥωμαίους πολλὴν τῆς χώρας αὐτῶν ἐδήλωσαν, καὶ ἦκον οἱ φυγόντες ἐκ τῶν ἀγῶν ἀθρόοι, 30 κρατεῖσθαι πάντα ὑπ' αὐτῶν τὰ μεταξὺ Κρουστομερείας τε καὶ Φιδήνης λέγοντες. Αἰκανοὶ τε οἱ νεωστὶ καταπολεμηθέντες ἐν τοῖς ὅπλοις ἀνδρῶν ἦσαν· καὶ 2058

οἱ μὲν ἀκμαιότατοι αὐτῶν νυκτὸς ἐλάσαντες ἐπὶ Κορβιῶνα πόλιν, ἣν [ἐν] τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ Ῥωμαίοις παρέδοσαν, τὴν τε φρουράν τὴν ἐν αὐτῇ κοιμημένην εὐρόντες κατέσφαξαν πλὴν ὀλίγων, οἱ ἔτυχον ἀφυστεροῦντες. . . . οἱ δὲ λοιποὶ μεγάλην χεῖρὶ στρατεύσαντες ἐπὶ πόλιν Ὀρτώνα τοῦ Λατίνων ἔθνους ἐξ 5 ἐφόδου καταλαμβάνονται, καὶ ὅσα Ῥωμαίους οὐχ οἰοῖτε ἦσαν ἐργάσασθαι, ταῦτα δι' ὀργὴν τοὺς συμμάχους αὐτῶν διέθεσαν. τοὺς μὲν γὰρ ἐν ἡβῇ πάντας, πλὴν εἰ τινες διέφυγον εὐθὺς ἀλισκομένης τῆς πόλεως, ἀπέκτειναν, γυναῖκας δὲ καὶ παῖδας αὐτῶν 10 καὶ τὰ γηραιὰ τῶν σωμάτων ἠνδραποδίσαντο, καὶ τῶν χρημάτων ὅσα δύνανται ἦν αὐτοῖς φέρειν συσκευασάμενοι κατὰ σπουδὴν, πρὶν ἅπαντας ἐπιβοηθήσαι 2059 Λατίνους, ἀνέστρεψαν. τούτων δὲ ἅμα προσαγγελομένων ὑπὸ τε Λατίνων καὶ τῶν ἐκ τῆς φρουρᾶς 15 διασωθέντων, ἡ μὲν βουλή στρατιὰν ἐκπέμπειν ἐψηφίσατο καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους πορευέσθαι· οἱ δὲ περὶ τὸν Οὐεργίνιον δήμαρχοι πέμπτον ἔτος ἐπὶ τῆς αὐτῆς ὄντες ἐξουσίας ἐκώλυον, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς 20 πρότερον ἐποίουν ἔτεσιν, ἐνιστάμενοι ταῖς στρατολογίαις τῶν ὑπάτων, τὸν ἐντὸς τείχους πρῶτον ἀξιούντες καταλυθῆναι πόλεμον ἀποδοθείσης τῷ δήμῳ τῆς περὶ τοῦ νόμου διαγνώσεως, ὃν ὑπὲρ τῆς ἰσηγορίας εἰσέφερον, ὃ τε δῆμος αὐτοῖς συνελάμβανε 25 πολλοὺς κατὰ τῆς βουλῆς καὶ ἐπιφθόνους διεξιούσι λόγους. ἐλκομένου δὲ τοῦ χρόνου, καὶ οὔτε τῶν ὑπάτων ὑπομενόντων προβουλεύσαι τε καὶ εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν τὸν νόμον, οὔτε τῶν δημάρχων σύγχωρησαι βουλομένων τὴν καταγραφὴν καὶ τὴν ἔξοδον 30 τῆς στρατιᾶς γενέσθαι, λόγων τε πολλῶν καὶ κατηγοριῶν ὡς ἐποίουντο κατ' ἀλλήλων ἐν τε ταῖς ἐκκλη-



σίαις καὶ ἐπὶ τῆς βουλῆς μάτην ἀναλισκομένων, ἑτέρω  
 τις εἰσαχθεῖσα ὑπὸ τῶν δημάρχων ἐπὶ τῇ βουλῇ πολι-  
 τεία καὶ παρακρουσαμένη τὸ συνέδριον, τὴν μὲν τότε  
 κατέχουσιν στάσιν ἐπράυνεν, ἑτέρων δὲ πολλῶν καὶ  
 5 μεγάλων ἐγένετο πλεονεκτημάτων αἰτία τῷ δήμῳ.  
 διηγήσομαι δὲ καὶ ταύτην τὴν δυναστείαν ὃν τρόπον  
 ὁ δῆμος ἔλαβε.

XXVII. Φθαιρομένης καὶ διαρπαζομένης τῆς τε  
 Ῥωμαίων καὶ τῶν συμμάχων γῆς, καὶ τῶν πολεμίων  
 10 ὡς δι' ἐρημίας ἐλαυνόντων κατ' ἐλπίδα τοῦ μηδεμίαν  
 ἐπ' αὐτοὺς ἐξελεύσεσθαι δύναμιν διὰ τὴν κατέχουσιν  
 ἐν τῇ πόλει στάσιν, οἱ μὲν Ἔπατοι τὴν βουλήν συνή-  
 γαγον, ὡς περὶ τῶν ὅλων ἔσχατον τοῦτο βουλευόμε-  
 νοι. ῥηθέντων δὲ πολλῶν λόγων, πρῶτος ἐρωτηθεὶς  
 15 γνώμην Λεύκιος Κοίντιος, ὁ τῷ παρελθόντι γενό-  
 μενος ἔτι δικτάτωρ, ἀνὴρ οὐ μόνον τὰ πολέμια δει-  
 νότατος τῶν καθ' ἑαυτὸν, ἀλλὰ καὶ τὰ πολιτικά δοκῶν  
 εἶναι φρονιμώτατος, γνώμην ἀπεφῆματο ἱ . . . ἐν ἧ,  
 20 μάλιστα μὲν πείθειν τοὺς τε δημάρχους καὶ τοὺς 2061  
 ἄλλους πολίτας, τὴν μὲν ὑπὲρ τοῦ νόμου διαγνώσιν  
 οὐδὲν ἐν τῷ παρόντι κατεπεύγουσαν εἰς ἑτέρους ἀνα-  
 βαλέσθαι καιροῦς ἐπιτηθειότερους, τὸν δ' ἐν χερσίν  
 ὄντα καὶ ὅσον οὐπω τῇ πόλει πλησιάζοντα πόλεμον  
 ἀρασθαι πάσῃ προθυμίᾳ, καὶ μὴ περιδεῖν τὴν μετὰ  
 25 πολλῶν κτηθείσαν ἡγεμονίαν πόρων αἰσχροῦς καὶ  
 ἀνάνδρου ἀπολομένην. εἰ δὲ μὴ πείθεται ὁ δῆμος,  
 τοὺς πατρικίους ἅμα τοῖς πελάταις καθοπλισαμένους,  
 τῶν τ' ἄλλων πολιτῶν παραλαβόντας οἷς ἦν ἐκούσι  
 συνάρασθαι τοῦ καλλίστου ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνος,  
 30 χωρεῖν προθύμως ἐπὶ τὸν πόλεμον, θεοὺς ὅσοι φυλάτ-  
 τουσι τὴν Ῥωμαίων πόλιν ἡγεμόνας τῆς ἐξόδου ποιη-  
 σαμένους. συμβήσεσθαι γὰρ αὐτοῖς δεῖν καλῶν

ἔργων καὶ δικαίων θάτερον, ἢ νίκην ἐξενέγκασθαι  
 πασῶν ὧν αὐτοὶ ποτε ἢ οἱ πατέρες ἐξηνέγκαντο λαμ-  
 προτάτην, ἢ περὶ τῶν ἐν αὐτῇ καλῶν εὐψύχως ἀγα-  
 νιζομένοις ἀποθανεῖν. ταύτης μέντοι τῆς καλῆς πεί-  
 ρας οὐτ' αὐτὸς ἀπολείψεσθαι ἔφη, ἀλλ' ἐν ἴσῳ τοῖς 5  
 3002 κράτιστα ἐρωμένοις παρῶν ἀγωνιεῖσθαι, οὔτε τῶν  
 ἄλλων τιὰ πρεσβυτέρων οἷς ἐστὶν ἐλευθερίας τε καὶ  
 δόξης ἀγαθῆς λόγος.

XXVIII. Ὡς δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασι ταῦτ' ἐδό-  
 κει, καὶ οὐθὲς ἦν ὁ τάναντία ἐρῶν, οἱ μὲν ἕπατοι 10  
 τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν συνεκάλουν. συνελθόντος  
 δ' ὡς ἐπὶ καινοῖς ἀκούσμασι παντὸς τοῦ κατὰ τὴν  
 πόλιν ὄχλου, παρελθὼν ἄτερος τῶν ὑπάτων Γάιος  
 Ὀράτιος ἐπειρᾶτο πείθειν τοὺς δημοτικούς ἐκόντας  
 ὑπομεῖναι καὶ ταύτην τὴν στρατείαν. ἀντιλεγόντων 15  
 δὲ τῶν δημάρχων καὶ τοῦ δήμου προσέχοντος αὐτοῖς  
 τὸν νοῦν, παρελθὼν πάλιν ὁ ἕπατος εἶπε· Καλόν, ὦ  
 Οὐεργίνιε, καὶ θαυμαστὸν ἔργον ἐξεργάσασθε δια-  
 σπάσαντες ἀπὸ τῆς βουλῆς τὸν δῆμον· καὶ τὸ μὲν  
 ἐφ' ὑμῖν εἶναι μέρος πάντ' ἀπολωλέκαμεν, ὅσα παρὰ 20  
 τῶν προγόνων παραλαβόντες ἢ τοῖς ἑαυτῶν πόνοις  
 κτησάμενοι κατέσχομεν, τὰ γὰρ ἅ. οὐ μὲν ἡμεῖς γ' ἀκο-  
 3003 νιτὶ μεθησόμεθα αὐτῶν, ἀλλ' ἀναλαβόντες τὰ ὄπλα  
 μετὰ τῶν βουλομένων σώζεσθαι τὴν πατρίδα χωρή-  
 σομεν ἐπὶ τὸν ἀγῶνα, τὰς ἀγαθὰς προβαλλόμενοι τῶν 25  
 ἔργων ἐλπίδας· καὶ εἰ τις ἄρα θεὸς ἐπισκοπεῖ τοὺς  
 καλοὺς καὶ δικαίους ἀγῶνας, καὶ ἢ τὴν πόλιν τήνδε  
 αὐξήσει ἐκ πολλοῦ [χρόνου] τύχη εἰ μήπω προλέ-  
 λοιπεν αὐτήν, κρείττους τῶν ἐχθρῶν ἐσόμεθα· εἰ δὲ  
 τις ἄρα ἐνέστηκε δαίμων καὶ ἐναντιοῦται τῇ σωτηρίᾳ 30  
 τῆς πόλεως, οὗτοι τό γε ἐν ἡμῖν εὖνοον καὶ πρόθυ-  
 μον ἀπολείται, ἀλλὰ τὸν ἀπάντων κράτιστον θάνατον

αἰρησόμεθα περὶ τῆς πατρίδος. ὑμεῖς δὲ αὐτοῦ μέ-  
νοντες οἰκουρεῖτε ἅμα ταῖς γυναιξίν, ὧ καλοὶ καὶ  
γενναῖοι προστάται τῆς πόλεως, ἐγκαταλιπόντες μάλ-  
λον δὲ προδόντες ἡμᾶς, οἷς οὐτ' ἂν νικήσωμεν ἡμεῖς  
5 ὁ βίος ἔσται καλός, οὐτ' ἂν ἄλλως χωρήσῃ τὰ καθ'  
ἡμᾶς ἀσφαλῆς· εἰ μὴ ἄρα ἐκείνη τῇ ψυχρᾷ ἐλπίδι 2064  
ἐπαίρεσθε, ὡς διαφθαρέντων τῶν πατρικίων ὑμᾶς  
ἔασουσιν οἱ πολέμιοι ταύτην ὑπολογιζόμενοι τὴν εὐσε-  
ρσίαν, καὶ συγχωρήσουσιν ὑμῖν τὴν πατρίδα καὶ  
10 τὴν ἐλευθερίαν καὶ τὴν ἡγεμονίαν καὶ πάντα τὰλλα  
ἀγαθὰ, ὅσα νῦν ἔχετε, καρποῦσθαι, ὧν ὑμεῖς ὅτε τὰ  
ἄριστα ἐφρονεῖτε πολλὴν μὲν γῆν ἀπειτέμεσθε, πολ-  
λὰς δὲ πόλεις ἐξανδραποδισάμενοι κατεσκάψατε, πολλὰ  
δὲ καὶ μεγάλα καὶ οὐδ' ὑπὸ τοῦ παντὸς αἰῶνος ἀφα-  
15 νισθησόμενα τρόπαια καὶ μνημεῖα τῆς ἐχθρας ἀνε-  
στήσατε. ἀλλὰ τί τῷ δήμῳ ταῦτ' ἐπιτιμῶ, ὃς οὐδέ-  
ποτε πονηρὸς ἐκὼν ἐγένετο, μᾶλλον ἢ οὐχ ὑμῖν, ὧ  
Οὐεργίνιε, τοῖς τὰ καλὰ ταῦτα πολιτευομένοις; ἡμῖν  
μὲν οὖν, οἷς ἀνάγκη μηδὲν ταπεινὸν φρονεῖν, δέδο-  
20 κταιί τε καὶ οὐθὲν ἔσται τὸ κωλύσον ἄρασθαι τὸν  
ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνα· ὑμῖν δὲ τοῖς ἐγκαταλεί-  
πουσι καὶ προδιδοῦσι τὸ κοινὸν ἤξει δίκη τιμωρὸς οὐ  
μεμπτή παρὰ θεῶν, ἐὰν ἄρα διαφύγητε τὴν παρ'  
ἀνθρώπων κόλασιν. ἀλλ' οὐδὲ ταύτην διαφεύξεσθε· 2065  
25 καὶ μὴ με δεδίπτεσθαι ὑπολάβητε, ἀλλ' εὖ ἴστε, ὅτι  
οἱ καταλειφθέντες ἡμῶν ἐνθάδε φύλακες τῆς πόλεως,  
ἐὰν κρείττω τὰ τῶν ἐχθρῶν γένηται, φρονήσουσιν  
ἢ προσήκεν αὐτοῖς φρονεῖν. οὐ γὰρ ἤδη βαρβέροις  
μὲν τισι ἀλισκομένοις ὑπὸ τῶν πολεμίων εἰς νοῦν  
30 ἤλθε μήτε γυναικῶν αὐτοῖς παραχωρήσαι μήτε παί-  
δων μήτε πόλεων, ἀλλὰ τὰς μὲν ἐμπρῆσαι, τὰς δὲ  
κατασφάζαι· Ῥωμαίοις δ' ἄρα, οἷς ἐτέρων ἄρχειν

πάτριόν ἐστιν, οὐ παραστήσεται ταῦτα περὶ ἑαυτῶν  
φρονεῖν; οὐχ οὕτως ἀγεννεῖς ἔσονται, ἀλλ' ἀφ' ὑμῶν  
τῶν ἐχθίστων ἀρξάμενοι, τότε χωρήσουσι πρὸς τὰ  
φίλια. πρὸς ταῦτα ὀρῶντες ἐκκλησιάζεστε καὶ νόμους  
εἰσφέρετε καινοὺς. 5

XXVIII. Ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια εἰπὼν,  
παρεστήσατο τοὺς πρεσβυτάτους τῶν πατρικίων κλαί-  
οντας, οὓς ἰδόντες πολλοὶ τῶν δημοτικῶν οὐδ' αὐτοὶ  
κατέχειν τὰ δάκρυα ἐδύναντο. γενομένης δὲ πολλῆς  
2066 συμπαθείας πρὸς τε τὰς ἡλικίας τῶν ἀνδρῶν καὶ 10  
πρὸς τὰς ἀξίας, μικρὸν ἐπισχῶν ὁ ὕπατος· Οὐκ  
αἰσχύνεσθε, ἔφησεν, ὧ πολῖται, οὐδὲ κατὰ γῆς δύε-  
σθε, εἰ οἶδε οἱ γέροντες ὑπὲρ ὑμῶν τῶν νέων τὰ  
ὄπλα ἀναλήφονται, ἀλλ' ὑπομενεῖτε ἀπολειφθῆναι  
τούτων ἡγρουμένων, οὓς ἀεὶ πατέρας ἐκαλεῖτε; ὧ σχέ- 15  
τλιοι ὑμεῖς καὶ οὐδὲ πολῖται ταύτης ἀξιοὶ λέγεσθαι  
τῆς γῆς, ἣν ἐκτίσαν οἱ τοὺς πατέρας ἐπὶ τῶν ὤμων  
ἐνέγκαντες, οἷς καὶ δι' ὄπλων καὶ διὰ πυρὸς ὄδους  
ἀσφαλεῖς θεοὶ παρέσχον. Ὡς δὲ κατέμαθεν ὁ Οὐεσ-  
γίνιος ἀγόμενον τὸν δῆμον ὑπὸ τῶν λόγων, δεδοικῶς 20  
μὴ παρὰ τὴν ἑαυτοῦ γνώμην κοινωεῖν ὑπομείνη τοῦ  
πολέμου, παρελθὼν εἶπεν· Ἡμεῖς οὐτ' ἐγκαταλεί-  
2067 πομεν οὔτε προδίδομεν ὑμᾶς, ὧ πατέρες, οὐδ' ἂν  
ἀπολειφθείμεν ὑμῶν, ὥσπερ οὐδὲ πρότερον ἠξιώ-  
σαμεν οὐδεμιᾶς ἀπολειφθῆναι στρατείας, ἀλλὰ καὶ 25  
ξῆν αἰρούμεθα σὺν ὑμῖν καὶ πάσχειν, ὅ τι ἂν τῷ  
δαίμονι δοκῇ μεθ' ὑμῶν. πρόθυμοι δ' ἐν παντὶ  
καιρῷ περὶ ὑμᾶς γερονότες ἠξιοῦμεν μετρίας παρ'  
ὑμῶν τυχεῖν χάριτος, ὥσπερ τῶν κοινῶν κινδύνων  
ἰσομοιροῦμεν ὑμῖν, οὕτως καὶ τῶν δικαίων τὸ ἴσον 30  
ἔχειν, νόμους καταστησάμενοι φύλακας τῆς ἐλευθε-  
ρίας, οἷς ἅπαντες ἀεὶ χρῆσόμεθα. εἰ δὲ προσίσταται

τουθ' ὑμῖν, καὶ οὐκ ἀξιούτε τοῖς ἑαυτῶν πολίταις ταύτην συγχωρῆσαι τὴν χάριν, ἀλλὰ θανάτου τιμᾶσθε τὸ μεταδοῦναι τῷ δήμῳ τῆς ἰσηγορίας, οὐκέτι φιλονεικοῦμεν ὑμῖν· αἰτησόμεθα δ' ἑτέραν παρ' ὑμῶν 5 χάριν, ἧς τυχόντες ἴσως ἂν οὐδὲ καινῶν ἔτι δεηθήμεν νόμων. εἰσέρχεται δ' ἡμᾶς εὐλάβεια, μὴ ποτε οὐδὲ ταύτης τύχωμεν, ἐξ ἧς τῇ βουλῇ μὲν οὐδὲν ἔσται βλάβος, τῷ δὲ δήμῳ τιμὴ τις ὑπάρξει καὶ φιλανθρωπία.

10 XXX. Εἰπόντος δὲ τοῦ ὑπάτου, ὅτι τοῦτο τὸ 2069 πολίτευμα τῇ βουλῇ συγχωροῦντες οὐθενὸς ἄλλου ἀμαρτήσονται τῶν μετριῶν, καὶ κελεύοντος λέγειν ὅτου δέονται, ὀλίγα διαλεχθεῖς τοῖς συνάρχουσιν ὁ Οὐεργίνιος, ἐπὶ τῆς βουλῆς ἔφησεν ἔρχειν. καὶ μετὰ 15 ταῦτα συναγαρόντων τὸ συνέδριον τῶν ὑπάτων, παρελθῶν καὶ τὰ δίκαια τοῦ δήμου πρὸς τὴν βουλήν ἅπαντα εἰσενεγκάμενος, ἤτήσατο διπλασιασθῆναι τὴν ἀρχὴν τὴν προισταμένην τοῦ δήμου, καὶ ἀντὶ τῶν πέντε δημάρχων δέκα εἰς ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδεί- 20 κνυσθαι. τοῦτο οἱ μὲν ἄλλοι βλάβην οὐδεμίαν ᾤοντο τῷ κοινῷ φέρειν, ἀλλὰ δίδουαι καὶ μὴ ἀντιπράττειν παρήνουν, ἄρχοντος τῆς γνώμης Λευκίου Κοιτίου, τοῦ τότε μέγιστον ἔχοντος ἐν τῇ βουλῇ κράτος. εἰς δὲ μόνος ἀντέλεγε Γάιος Κλαύδιος, υἱὸς Ἀππίου 25 Κλαυδίου, τοῦ παρὰ πάντα τὸν χρόνον τοῖς εἰσηγήμασι τῶν δημοτικῶν, εἰ τινα μὴ νόμιμα ἦν, ἐναντιώ- 2069 θέντος, διαδεδεγμένος τὰ πολιτεύματα τοῦ πατρός, καὶ ὅτ' αὐτὸς εἶχε τὴν ὑπάτου ἀρχὴν πωλύσας δοθῆναι τοῖς δημάρχοις τὴν κατὰ τῶν ἱππέων τῶν ἐπὶ τῇ 30 συνωμοσίᾳ διαβαλλομένων ἐξέτασιν, καὶ μακρὸν διεξελθῶν λόγον ἐδίδασκεν, ὅτι μετριώτερος μὲν ὁ δῆμος οὐδὲν οὐδὲ χρηστότερος ἔσται διπλασιασθείσης

αὐτῷ τῆς ἀρχῆς, ἀνοητότερος δὲ καὶ βαρύτερος. οὐ γὰρ ἐπὶ ὅμοις τισὶ παραλήψεσθαι τὴν ἀρχὴν τοὺς ὑστερον ἀποδειχθησομένους, ὥστε μένειν ἐπὶ τοῖς καθεστηκόσιν, ἀλλὰ καὶ τὸν περὶ τῆς κληρουχίας ἀν- 5 θις προθήσειν λόγον καὶ τὸν ὑπὲρ τῆς ἰσοτιμίας, καὶ 5 πάντας ἐξῆς ζητήσειν, ὅ τι λέγοντες ἢ πρᾶττοντες τὸ μὲν τοῦ δήμου κράτος ἀυξήσουσι, τὰς δὲ τῆς βουλῆς τιμὰς καταλύσουσι. καὶ σφόδρα ἐκίνησε τοὺς πολλοὺς ὁ λόγος. ἔπειτα μετήγαγεν αὐτοὺς ὁ Κοίτιος διδά- 10 2070 σκων, ὅτι πρὸς τῆς βουλῆς ἔστι τὸ πολλοὺς εἶναι τοῦ 10 δήμου προστάτας. ἦττον γὰρ ὁμοιοῦσαι τοὺς πλείους τῶν ἐλαττόνων, μίαν δὲ βοήθειαν εἶναι τοῖς κοινοῖς, ἣν Ἀππίον Κλαύδιον τὸν Γαίου πατέρα πρῶτον ἰδεῖν, ἐὰν στασιάξῃ τὸ ἀρχεῖον καὶ μὴ πᾶσι τὸ αὐτὸ 15 δοκῇ. ἐδόκει τε δὴ ταῦτα καὶ γίνεται δόγμα βουλῆς· 15 ἐξεῖναι τῷ δήμῳ δέκα δημάρχους καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀποδεικνύειν, τῶν δὲ τότε ὄντων ἐν ἀρχῇ μηθένα. τοῦτο τὸ προβούλευμα οἱ περὶ τὸν Οὐεργίνιου λαβόντες ἐξήνεγκαν, καὶ κνρῶσαντες τὸν ἐπ' αὐτῷ 20 γραφέντα νόμον δέκα δημάρχους εἰς τὸν ἐπιόντα 20 ἐνιαυτὸν ἀπέδειξαν. παυσαρμένης δὲ τῆς στάσεως καταγράψαντες τὰς δυνάμεις οἱ ὑπάτοι διεκληρώσαντο 2071 τὰς ἐξόδους· Μηνυκίῳ μὲν οὖν ὁ κατὰ Σαβίνων πό- 15 λεμος ἐδόθη, Ὁρατίῳ δὲ ὁ κατ' Αἰκανῶν, καὶ κατὰ σπουδῆν ἐξήεσαν ἀμφοτέροι. Σαβίνοι μὲν οὖν τὰς 25 πόλεις διὰ φυλακῆς ἔχοντες ὑπερεῖδον ἀγομένῳ τε καὶ φερομένῳ ἀπάντων τῶν κατὰ τοὺς ἀγρούς· Αἰκανοὶ δὲ τὴν ἐναντιωσομένην Ῥωμαίοις δύναμιν ἀπέ- 30 στείλαν. ἀγωνισάμενοι δὲ λαμπρῶς οὐχ οἰοί τε ἐγένοντο τὴν Ῥωμαίων ὑπερβαλέσθαι δύναμιν, ἀλλ' 30 ἠναγκάσθησαν εἰς τὰς πόλεις ἀπελθεῖν ἀποβαλόντες τὸ πολέμιον, ὑπὲρ οὗ τὸν ἀγῶνα ἐποιούντο. Ὁρατίος

δὲ τρεψάμενος τοὺς πολεμίους καὶ πολλὰ τῆς χώρας αὐτῶν κακώσας τοῦ τε Κορβιῶνος τὰ τεύχη κατασπάσας καὶ τὰς οἰκίσεις ἐκ θεμελίων ἀνελών ἀπήγε τὴν δύναμιν ἐπ' οἴκου.

- 5 XXXI. Τῷ δ' ἐξῆς ἔτει Μάρκου Οὐαλερίου καὶ Σπορίου Οὐεργινίου τὴν ὑπατείαν ἐχόντων, στρατιὰ μὲν ὑπερόριος οὐδεμία ἐξῆλθε Ῥωμαίων, πολιτικά δέ τινα προσκρούσματα τοῖς δημάρχοις πρὸς τοὺς ὑπάτους συνέστη πάλιν, ἐξ ὧν πλέον ἔσχον οἱ δημάρχοι 10 παρασπάσαντες τι τῆς ὑπατικῆς δυναστείας. τὸν μὲν γὰρ ἐμπροσθεν χρόνον ἐκκλησίας μόνον ἦσαν οἱ δημάρχοι κύριοι, βουλὴν δὲ συνάγειν ἢ γνώμην ἀγορεύειν οὐκ ἔξην αὐτοῖς, ἀλλ' ἦν τῶν ὑπάτων τοῦτο 20 τὸ γέρας. οἱ δὲ τότε δημάρχοι πρῶτοι συγκαλεῖν ἐπέβαλον τὴν βουλὴν, Ἰκίλλιον τὴν πείραν εἰσηγήσαντον, ὃς ἠγεῖτο μὲν τοῦ ἀρχείου, δραστήριος δὲ τις ἦν ἀνὴρ καὶ ὡς Ῥωμαῖος εἰπεῖν οὐκ ἀδύνατος. εἰσέφερε γὰρ τι καὶ οὗτος πολίτευμα καινόν, ἀξιῶν ἀπομερισθῆναι τοῖς δημοταῖς τόπον εἰς οἰκίων κατασκευάσ 15 τὸν καλούμενον Ἀνεντῖνον. ἔστι δὲ λόφος ὑψηλὸς ἐπιεικῶς, οὐκ ἐλάττων ἢ δώδεκα σταδίων τὴν περιμετρον, ἐμπεριεχόμενος τῇ πόλει, ὃς οὐχ ἅπας τότε ᾤκειτο, ἀλλ' ἦν δημοσίος τε καὶ ὕλης ἀνάπλεως. τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰσάγων ὁ δημάρχος τοῖς τότε 20 ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ προσῆει δεόμενος τὸν ἐπ' αὐτῷ γραφέντα νόμον προβουλεύσαι τε καὶ εἰς τὸν δῆμον ἐξευεργεῖν. ἀναβαλλομένων δὲ καὶ παρελκόντων τῶν ὑπάτων τὸν χρόνον, πέμψας τὸν ὑπηρέτην ὡς ἀν- 207 τούς, ἐκέλευσεν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ἀκολουθεῖν καὶ τὴν βουλὴν συγκαλεῖν. ἐπεὶ δὲ τῶν σαβδούχων τις ἀπήλασε, τὸν ὑπηρέτην κελευσθεὶς ὑπὸ τῶν ὑπάτων, ἀγανακτήσας ὁ Ἰκίλλιος καὶ οἱ συνάρχοντες αὐτοῦ,

συνέλαβον τὸν σαβδούχον καὶ ἀπήγον, ὡς εἶποντες κατὰ τῆς πέτρας. οἱ δὲ ὑπατοὶ βιάσασθαι μὲν ἢ τὸν ἀγόμενον ἀφελῆσθαι, καίτοι δεινὰ δοκοῦντες ὑβρίζεσθαι, ἀδύνατοι ἦσαν, ἐπεκαλοῦντο δὲ τὴν ἐκ τῶν ἄλλων δημάρχων βοήθειαν. οὐθέν γὰρ τῶν 5 πραττομένων ὑπὸ τῆς ἀρχῆς ἐκείνης ἐπισχεῖν ἢ κωλύσαι τῶν ἄλλων τι ἐξεστίν, ἀλλ' ἑτέρου δημάρχου τοῦτ' ἔστι τὸ κράτος. τοῖς δ' ἄρα πᾶσιν ἦν ταῦτα κατ' ἀρχὰς δεδογμένα, μὴτ' εἰσηγήσασθαι τινα καινὸν πολίτευμα μὴδὲν ἐφ' ἑαυτῷ ἐπιβαλλόμενον, ἐὰν 10 μὴ πᾶσι τὸ αὐτὸ δοκῇ, μῆτε ἐναντιωθῆναι τινα τοῖς πραττομένοις, [ἀλλ'] ὅπερ ἂν αἱ πλείους γνώμῃ δοκιμάσωσι [τοῦτ' εἶναι κύριον], καὶ περὶ τούτων εὐθύς ἅμα τῷ παραλαβεῖν τὴν ἀρχὴν ἰερά θύσαντες ὄρκους ἔδοσαν ἀλλήλοις· οὕτως οἰόμενοι μάλιστα τὸ τῆς δη- 15 μαρχίας ἀκατάλυτον ἔσεσθαι κράτος, ἐὰν τὸ στασιάζον ἐξ αὐτῆς ἀναιρεθῇ. τοῦτο δὲ φυλάττοντες τὸ συνωμόσιον εἶπον ἀπάγεσθαι τὸν φύλακα τῆς ἀρχῆς τῶν ὑπάτων, κοινὴν ἀπάντων εἶναι λέγοντες τὴν γνώμην, οὐ μὴν διέμεινάν γ' ἐπὶ τῆς ὀργῆς, ἀλλὰ 20 τοῖς πρεσβυτάτοις τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου παραιτουμένοις τὸν ἄνδρα ἀφήκαν, τὸν τε φθόνου ὑφορώμενοι τοῦ πράγματος, ὅτι πρῶτοι ἐμελλον θανάτῳ ζημιῶσαι [τὸν] ἄνδρα τὸ κελευσθέν ὑπὸ τῶν ἀρχόντων ποιήσαντα, καὶ δεδοικότες, μὴ ἀπὸ ταύτης τῆς προ- 25 φάσεως εἰς ἀπόνοιαν ἀναγκασθῶσιν οἱ πατρίκιοι τραπίσθαι.

XXXII. Μετὰ τοῦτο τὸ ἔργον συναχθείσης τῆς βουλῆς, οἱ μὲν ὑπατοὶ κατηγορίαν πολλὴν τῶν δημάρχων ἐποίησαντο· παραλαβὼν δὲ τὸν λόγον ὁ Ἰκίλλιος περὶ τε τῆς εἰς τὸν ὑπηρέτην ὀργῆς ἀπελογεῖτο, τοὺς ἱερούς προφασόμενος νόμους, καθ' οὓς οὔτε 30

ἄρχοντι οὐτ' ἰδιώτῃ συνεχωρεῖτο πράττειν οὐδὲν ἐναν-  
 τίου δημάρχῳ, καὶ περὶ τοῦ συγκαλεῖν τὴν βουλήν  
 ἐδίδασκεν, ὡς οὐθὲν εἴη πεποιηκῶς ἄτοπον, πολλοὺς  
 καὶ παντοδαποὺς εἰς τοῦτο παρασκευασάμενος λόγους.  
 5 ὡς δ' ἀπελύσατο ταύτας τὰς κατηγορίας, τὸν ὑπερ  
 τοῦ λόφου νόμον εἰσέφερεν. ἦν δὲ τοιούδε· Ὅσα μὲν  
 ἰδιῶται τινες εἶχον ἐκ δικαίου κτησάμενοι, ταῦτα  
 τοὺς κυρίους κατέχειν· ὅσα δὲ βιασάμενοι τινες ἢ  
 κλοπῇ λαβόντες ᾤκοδομήσαντο, κομισαμένους τὰς δα-  
 10 πᾶνας ἄς ἂν οἱ διαιτηταὶ γινῶσι τῷ δήμῳ παραδιδό-  
 ναι· τὰ δὲ ἄλλα, ὅσα [ἂν] ἦν δημοσία, χωρὶς ὠνῆς  
 τὸν δῆμον παραλαβόντα διελέσθαι. ἐδίδασκέ τε, ὅτι  
 τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰς πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα συνοίσει  
 τῇ πόλει, μάλιστα δὲ εἰς τὸ μὴ στασιάζειν ἔτι περὶ  
 15 τῆς δημοσίας χώρας τοὺς πένητας, ἦν οἱ πατρίοιοι  
 κατεῖχον. ἀγαπήσειν γὰρ αὐτοὺς τῆς πόλεως λαχόν-  
 τας μέρος, ἐπειδὴ τῆς χώρας οὐκ ἔξεστι διὰ τοὺς  
 ἐσφτερισμένους αὐτὴν πολλοὺς ὄντας καὶ δυνατοὺς. 2070  
 τοιούτων ὀρθέντων ὑπ' αὐτοῦ λόγων, ὁ μὲν ἀντιλέ-  
 20 γων Γάιος Κλαύδιος ἦν μόνος, οἱ δὲ συναγορευόντες  
 πολλοί, καὶ ἔδοξε δίδόναι τῷ δήμῳ τὸν τόπον. μετὰ  
 τοῦτο ἱεροφαντῶν τε παρόντων καὶ οἰωνοσκόπων καὶ  
 ἱεροποιῶν δνεῖν, καὶ ποιησαμένων τὰς νομίμους εὐχὰς  
 τε καὶ ἀράς, ἐν τῇ λοχίτιδι ἐκκλησίᾳ συναχθεῖσθαι ὑπὸ  
 25 τῶν ὑπάτων ὁ νόμος ἐκυρώθη, ὃς ἐστὶν ἐν στήλῃ  
 χαλκῇ γεγραμμένος, ἦν ἀνέθεσαν ἐν τῷ Ἀνεντίνῳ,  
 κομίσαντες εἰς τὸ τῆς Ἀρτέμιδος ἱερόν. κυρωθέντος  
 δὲ τοῦ νόμου, συνελθόντες οἱ δημοτικοὶ τὰ τε οἰκό-  
 πεδα διελάχσανον καὶ κατακοδόμον ὅσον ἕκαστοι  
 30 τόπον δυνήθειεν ἀπολαμβάνοντες. εἰσὶ δ' οἱ σύνδυο  
 καὶ σύντρεις καὶ ἔτι πλείους συνιόντες οἰκίαν κατε-  
 σκευάζοντο μίαν, ἐτέρων μὲν τὰ κατάγεια λαχχανόν- 2077

των, ἐτέρων δὲ τὰ ὑπερῶα. ὁ μὲν οὖν ἐνιαυτὸς ἐκεῖ-  
 νος εἰς τὰς κατασκευὰς τῶν οἰκήσεων ἔδαπανήθη.

XXXIII. Ὁ δὲ μετὰ τοῦτον, ἐν ᾧ τὴν ὑπατον  
 ἀρχὴν παρελήφεσαν Τίτος Ῥωμίλιος καὶ Γάιος Οὐε-  
 5 τούριος, δημάρχοι δ' ἦσαν οἱ περὶ Λεύκιον Ἰαίλλιον 5  
 τὸ δεύτερον ἄρχειν ἐξῆς αἰρεθέντες, οὐκ ἀπλοῦς,  
 ἀλλὰ ποικίλος τις ἐγένετο καὶ μεγάλων μεστὸς πρα-  
 γμάτων. ἦ τε γὰρ πολιτικὴ στάσις ἤδη μεμαράνθαι  
 δοκοῦσα ὑπὸ τῶν δημάρχων πάλιν ἀνεκινεῖτο, καὶ  
 πόλεμοι τινες ἐκ τῶν ἄλλοεθνῶν ἀνέστησαν, οἱ κακὸν 10  
 μὲν οὐθὲν διαθεῖναι τὴν πόλιν ἠδυνήθησαν, οὐ μι-  
 κρὰν δὲ ὠφέλειαν, τὸ στασιάζον ἀνελόντες ἐξ αὐτῆς.  
 ἐγκύκλιον γὰρ δὴ τοῦτο καὶ ἐν ἔθει ἦν ἤδη τῇ πόλει,  
 πολεμουμένη μὲν ὁμοοεῖν, εἰρήνην δὲ ἀγούση στα-  
 15 σιάζειν. τοῦτο συνιδόντες ἅπαντες οἱ τὰς ὑπάτους 15  
 2078 ἀρχὰς παραλαβόντες κατ' εὐχὰς μὲν εἰ τις ἐξῶθεν  
 ἐπαναστατῆς πόλεμος ἐλάμβανον· ἡσυχάζοντων δὲ τῶν  
 ἀντιπάλων αὐτοὶ κατεσκεύαζον ἐγκλήματα καὶ προφά-  
 σεις πολέμων, ἅτε ὀρθῶντες διὰ μὲν τοὺς πολέμους  
 μεγάλην καὶ εὐδαίμονα γινομένην τὴν πόλιν, διὰ δὲ 20  
 τὰς στάσεις ταπεινὴν καὶ ἀσθενῆ. οἷς ὅμοια γρόντες  
 οἱ τότε ὑπατοὶ στρατιᾶν ἐξάγειν ἐκριναν ἐπὶ τοὺς  
 πολεμίους, δεδοικότες μή τι διὰ τὴν εἰρήνην ἄρξων-  
 ται ταράττειν ἀργοὶ καὶ πένητες ἄνθρωποι, τοῦτο  
 μὲν ὀρθῶς εἰδότες, ὅτι δεῖ περισπᾶσαι τὸν ὄχλον ἐπὶ 25  
 τοὺς ἐξῶ πολέμους, τὸ δὲ μετὰ τοῦτο οὐκ ὀρθῶς. δεῖον  
 γὰρ αὐτοὺς ὡς ἐν νοσοῦσῃ πόλει μετρίαις χρῆσθαι  
 ταῖς στρατολογίαις, ἐπὶ τὸ βία προσαναγκάζειν τοὺς  
 ἀπειθοῦντας ἐτράποντο, οὔτε παραίτησιν οὔτε συγ-  
 30 γνώμην οὐδεὶ διδόντες οὐδεμίαν, ἀλλὰ ταῖς ἐκ τῶν 30  
 νόμων τιμωρίαις εἰς τε τὰ σώματα καὶ τὰς οὐσίας  
 αὐτῶν πικρῶς χρώμενοι. ταῦτα ποιούντων αὐτῶν

ἀφορμὴν αὐθις εἰλήφεσαν οἱ δῆμαρχοι τοῦ δημαγω- 2070  
 γεῖν τὰ πλήθη· καὶ συναγαγόντες εἰς ἐκκλησίαν τὰ  
 τ' ἄλλα τῶν ὑπάτων κατεβόων, καὶ ὅτι πολλοὺς τῶν  
 πολιτῶν ἐκέλευσαν εἰς τὸ δεσποτήριον ἀπάγειν τὴν  
 5 δημαρχικὴν ἐξουσίαν ἐπικαλεσαμένους, τῆς τε στρα-  
 τολογίας ἀπολύειν ἔφασαν αὐτοὶ δὴ μόνοι ἐξουσίαν  
 ἐκ τῶν νόμων ἔχοντες. ὡς δ' οὐδὲν ἐπέφαινον, ἀλλ'  
 ἐπιστρεφαστέρως ἔτι τὰς καταγραφὰς ἐώρων γινομέ-  
 νας, ἔργοις καλύειν ἐπεβάλλοντο. ἀμυνομένων δὲ τῶν  
 10 ὑπάτων καὶ τῷ κράτει τῆς ἀρχῆς . . . , ἐρεθισμοὶ τέτινες  
 ἐγίνοντο καὶ χειρῶν ἐπιβολαί. συνηγωνίζετο δὲ τοῖς  
 μὲν ὑπάτοις ἢ τῷ πατρικίῳ νεότης, τοῖς δὲ δημάρ-  
 χοις ὁ πένης καὶ ἀργὸς ὄχλος. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν 2080  
 ἡμέραν παρὰ πολὺ κρείττους ἐγένοντο τῶν δημάρχων  
 15 οἱ ὑπατοί· ταῖς δ' ἐξῆς ἡμέραις πλείονος ὄχλου συρ-  
 ρέοντος εἰς τὴν πόλιν ἐκ τῶν ἀργῶν, δόξαντες οἱ δῆμ-  
 αρχοὶ προσειληφέναι χεῖρα ἀξιόμαχον ἐκκλησίας τε  
 συνεχεῖς ἐποιοῦντο καὶ τοὺς ὑπηρέτας κακῶς διακει-  
 μένους ἐκ τῶν πληγῶν ἐπεδείκνυσαν καὶ τὴν ἀρχὴν  
 20 ἔλεγον ἀποθήσεσθαι, εἰ μὴ τις αὐτοῖς ἔσται παρὰ  
 τοῦ δήμου βοήθεια.

XXXIII. Συναγανακτοῦντος δ' αὐτοῖς τοῦ πλή-  
 θους ἐκάλουν τοὺς ὑπάτους ἐπὶ τὸν δῆμον ὡς τῶν  
 πεπραγμένων ὑφέξοντας λόγον. ὡς δ' οὐ προσεῖχον  
 25 αὐτοῖς ἐκεῖνοι τὸν νοῦν, ἐπὶ τὴν βουλήν παρῆσαν·  
 ἔτυχον γὰρ ὑπὲρ αὐτῶν τούτων συνεδρευούτες· καὶ  
 παρελθόντες ἐδέοντο, μὴθ' αὐτοὺς τὰ αἰσχίστα πε-  
 πονητάς ὑπεριδεῖν μῆτε τὸν δῆμον ἀφαιρεθέντα  
 τὴν ἐξ αὐτῶν βοήθειαν, διεξιόντες ὅσα ἦσαν πεπον-  
 30 θότες ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ τῆς περὶ αὐτοὺς συνω- 2081  
 μοσίας οὐ μόνον εἰς τὴν ἐξουσίαν ἀλλὰ καὶ εἰς τὰ  
 σώματα προπηλακισθέντες. ἤξιουν τε δυεῖν θάτερον

ποιεῖν τοὺς ὑπάτους· εἰ μὲν ἀρνοῦνται μηδὲν ὦν οἱ  
 νόμοι κεκαλύκασιν εἰς τὰ τῶν δημάρχων πλημμελή-  
 σαι σώματα, παραγενομένους εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἀπο-  
 μόσαι· εἰ δ' οὐχ ὑπομένουσι τὸν ὄρκον, ἦκειν ἐπὶ  
 τοὺς δημότας λόγον ὑφέξοντας· ἀναδώσειν γὰρ ὑπὲρ 5  
 αὐτῶν ταῖς φυλαῖς τὴν ψῆφον. οἱ δ' ὑπατοὶ πρὸς  
 ταῦτ' ἀπελογοῦντο, διδάσκοντες ὅτι τῆς γε ὕβρεως  
 οἱ δῆμαρχοὶ ἄρξειαν ἀνθαδεία χρησάμενοι καὶ τολ-  
 μήσαντες εἰς ὑπάτων σώματα παρανομεῖν, τὸ μὲν  
 πρῶτον ὑπηρέταις τε καὶ ἀγορανόμοις ἐπιτάττοντες 10  
 ἄγειν εἰς τὸ δεσποτήριον ἄρχοντας, οἷς τὸ πάντων  
 ἀποδέδοται κράτος, ἐπειτ' αὐτοὶ τολμήσαντες ὁμοίως  
 χωρεῖν σὺν τοῖς ἰταμοτάτοις τῶν δημοτικῶν· τὰς τε  
 ἀρχὰς διδάσκοντες ὅσον ἀλλήλων διαφέρουσιν, ἢ μὲν  
 ὑπατικὴ τὸ τῶν βασιλέων ἔχουσα κράτος, ἢ δὲ δη- 15  
 2082 μαρχικὴ τῆς βοηθείας ἕνεκα παρεληλυθυῖα τῶν κατ-  
 ισχυρομένων, ἢ τοσοῦτου δεῖν ἐξεῖναι κατὰ τῶν ὑπά-  
 των τινὸς ψῆφον ἀναδιδόναί τοις ὄχλοις, ὥστε μηδὲ  
 κατὰ τῶν ἄλλων πατρικίῳ τοῦ φανλοτάτου ταύτην  
 ἀποδεδοῦσθαι τὴν ἐξουσίαν, ἂν μὴ ἡ βουλή ψηφίση- 20  
 ται. ἠπείλουν τε, ὅταν ἐκεῖνοι ψῆφον ἀναδώσι τοῖς  
 δημόταις, αὐτοὶ τὰ ὄπλα περιθήσειν τοῖς πατρικίοις.  
 τοιούτων δὲ ῥηθέντων λόγων δι' ὅλης ἡμέρας, οὐδὲν  
 ἐξήνεγκεν ἡ βουλή τέλος, ἵνα μῆτε τὴν τῶν ὑπάτων  
 ἀρχὴν μειώσῃε, μῆτε τὴν τῶν δημάρχων, ἐκότερον 25  
 ὄρωσα μεγάλων κινδύνων αἴτιον ἐσόμενον.

XXXV. Ἐπεὶ δὲ κἀκεῖθεν ἀπηλάθησαν οἱ δῆμ-  
 αρχοὶ βοήθειαν οὐδεμίαν εὐρόμενοι, ἐσκόπουν αὐ-  
 θις ὅ τι χρὴ ποιεῖν εἰς τὸν δῆμον ἀφικόμενοι. ἐνίοις  
 μὲν οὖν ἰδόκει, καὶ μάλιστα τοῖς ταραχωδεστάτοις, 30  
 ἀπιῖναι πάλιν ἐκ τῆς πόλεως τοὺς δημοτικούς τὰ ὄπλα  
 ἀναλαμβάνοντας εἰς τὸ ἱερὸν ὄρος, ἔνθα καὶ τὸ πρῶτον

ἑστρατοπεδεύσαντο, καὶ τὸν πόλεμον ἐκεῖθεν ὀρμα-  
 μένους ποιεῖν πρὸς τοὺς πατρικίους, ἐπειδὴ τὰς συν-  
 θήκας ἔλυσαν ἐκεῖνοι τὰς γενομένας αὐτοῖς πρὸς τὸν  
 δῆμον, καταλύοντες τὴν δημοαρχικὴν ἐξουσίαν ἐκ τοῦ  
 5 φανεροῦ. τοῖς δὲ πλείοσιν ἐδόκει μὴ παραχωρεῖν τῆς  
 πόλεως, μηδὲ κοινὰ πάντων ἐγκλήματα ποιεῖν ὑπὲρ  
 ὧν ἴδια τινὲς εἰς τοὺς δημάρχους παρηγόρησαν, εἰάν  
 τὰ συγκεχωρημένα τοῖς νόμοις λαμβάνωσιν, οἳ κελεύ-  
 οῦσι νηπιῶν τεθνήσκειν τοὺς ὑβρίζοντας τὰ τῶν δημ-  
 10 ἀρχῶν σώματα. τοῖς δὲ χαριστέροις οὐδέτερον τού-  
 των ἐφαίνετο καλῶς ἔχειν, οὔτε τὴν πόλιν ἐκλιπεῖν  
 οὔτε φόνον ἄκριτον ἐπιτελεῖν, καὶ ταῦτα ὑπάτων,  
 οἷς ἢ μερίστη ὑπέκειτο ἀρχή, ἀλλ' εἰς τοὺς συναγα- 2084  
 νιζομένους αὐτοῖς μεταφέρειν τὴν ὄργην, καὶ τὰς ἐκ  
 15 τῶν νόμων τιμωρίας παρ' ἐκείνων λαμβάνειν. εἰ μὲν  
 οὖν ἐκείνην τὴν ἡμέραν θυμῷ φερόμενοι δραῶσαι τι  
 οἱ δημαρχοὶ κατὰ τῶν ὑπάτων ἢ τῆς βουλῆς προή-  
 χθησαν, οὐθὲν ἂν ἦν τὸ κωλύσον αὐτὴν ὑφ' αὐτῆς  
 ἀποκαλέναι τὴν πόλιν· οὕτως ἔτοιμοι πάντες ἦσαν  
 20 ἐπὶ τὰ ὄπλα καὶ τὸν κατ' ἀλλήλων πόλεμον. νῦν δ'  
 ἀναβαλόμενοι τὰ πράγματα καὶ δόντες ἑαυτοῖς χρό-  
 νον εἰς ἀμείνω λογισμόν, αὐτοὶ τε μετριώτεροι ἐρέ-  
 νοντο καὶ τὰς τῶν πολλῶν ὄργας ἐπράνναν. ἔπειτα  
 τῇ ἑξῆς ἡμέρᾳ τὴν τρίτην ἀπ' ἐκείνης ἐσομένην ἀγο-  
 25 ρὰν προσιπόντες, ἐν ἣ τὸν δῆμον συνάξουσι καὶ ζη-  
 μίαν ἐπιβαλοῦσι τοῖς ὑπάτοις ἀργυρικὴν, διέλυσαν  
 τὴν ἐκκλησίαν. ἐπεὶ δὲ πλησίον ἦν ὁ χρόνος, ἀπέ-  
 στησαν καὶ ταύτης τῆς ἐπιβολῆς τῇ δεήσει τῶν προ-  
 σβυτάτων τε καὶ ἐντιμοτάτων τὴν χάριν ἀνατιθέναι  
 30 λέγοντες. καὶ μετὰ ταῦτα συναγαγόντες τὸν δῆμον  
 ἔλεγον, ὅτι τὰς μὲν εἰς ἑαυτοὺς ὑβρεῖς ἀφείκασι  
 χαρισάμενοι πολλοῖς καὶ ἀγαθοῖς ἀνδράσι δεομένοις,

οἷς οὐκ ἦν ὄσιον ἀντιλέγειν· ὧν δὲ ὁ δῆμος ἠδίκητο  
 κωλυταί τε καὶ τιμωροὶ ἔσεισθαι. προθήσειν γὰρ αὐ-  
 3086 θις τὸν τε περὶ τῆς κληρουχίας νόμον ἔτη τριάκοντα  
 παρελκυσμένον, καὶ τὸν περὶ τῆς ἰσονομίας, ὃν οἱ  
 πρὸ αὐτῶν δημαρχοὶ προθέντες οὐκ ἐπεψήφισαν. 5  
 XXXVI. Ταῦθ' ὑποσχόμενοι καὶ ὁμοσάντες ἀπέ-  
 δειξαν ἡμέρας, ἐν αἷς ἀγορὰν ποιήσονται τοῦ δήμου  
 καὶ τὰς ψήφους ἀναδώσουσι περὶ τῶν νόμων· ἐπι-  
 στάντος δὲ τοῦ χρόνου πρῶτον εἰσέφερον τὸν χωρο-  
 νομικὸν νόμον, καὶ πολλοὺς διελθόντες λόγους ἐκά- 10  
 λουν εἰ τις τῶ νόμῳ συναγορεύειν βούλεται τῶν  
 δημοτικῶν. πολλῶν δὲ παριόντων καὶ τὰς ἑαυτῶν  
 πράξεις, ἃς ἐν τοῖς πόλεμοις ἀπεδείξαντο, προφερο-  
 μένων καὶ ἀγανακτούντων ὅτι πολλὴν ἀφειλόμενοι  
 γῆν τοὺς πολεμίους αὐτοὶ μὲν οὐδεμίαν εἰλήφασιν 15  
 μοῖραν, τοὺς δὲ χρήμασι καὶ φίλοις δυνατοὺς ἐσφε-  
 3088 τερισμένους ὄρωσι τὰ κοινὰ καὶ καρπουμένους ἐκ τοῦ  
 βιαιοτάτου, ἀξιούντων τε μὴ μόνον τοὺς κινδύνους  
 εἶναι τῷ δήμῳ τοὺς ὑπὲρ τῶν κοινῶν ἀγαθῶν κοι-  
 νούς, ἀλλὰ καὶ τὰς ἀπ' αὐτῶν ἡδονὰς τε καὶ ὠφε- 20  
 λείας, καὶ τοῦ πλήθους ἀσμένως ἀκούοντος τοὺς λό-  
 γους, ὁ μάλιστα ἐπιρρώσας τὸν δῆμον καὶ μηδὲ  
 φωνὴν ὑπομένειν τῶν ἀντιλεγόντων διαπραξάμενος  
 ἦν Λεύκιος Σίκκιος, Λευτάτος ἐπιμαλούμενος, πολ-  
 λὰς πάνυ καὶ μεγάλας ἑαυτοῦ πράξεις διεξελθών. ἦν 25  
 δ' ὀφθῆναι τε θανμαστός ὁ ἀνὴρ καὶ ἡλικίας ἐν τῷ  
 κρατίστῳ δεῖν δέοντα ἐξήκοντα γεγονώς ἔτη, καὶ  
 φρονῆσαι τὰ δέοντα ἱκανὸς εἶπεν τε ὡς στρατιώτης  
 οὐκ ἀδύνατος. ἔφη δ' οὖν παρελθόν· Ἐγώ, ὦ δη-  
 μόται, καθ' ἕκαστον ἔργον τῶν ἐμοὶ πεπραγμένων εἰ 30  
 βουλοίμην λέγειν ἐπιλίποι ἂν με ὁ τῆς ἡμέρας χρό-  
 νος. αὐτὰ δὲ τὰ κεφάλαια δι' ἐλαχίστων ὡς ἐμὴ

δύναμις ἐρῶ. τετταρακοστὸν μὲν ἔτος ἐστὶ μοι τοῦτο 2087  
 ἐξ οὗ στρατεύομαι ὑπὲρ τῆς πατρίδος, τριακοστὸν  
 δ' ἐξ οὗ στρατιωτικῆς ἀεὶ τινος ἡγεμονίας τυγχάνω,  
 τοτὲ μὲν σπείρας ἡγούμενος, τοτὲ δ' ὄλου τάγματος,  
 5 ἀρξάμενος ἀπὸ ὑπάτων Γαίου Ἀκυλλίου καὶ Τίτου  
 Σικκίου, οἷς ἐψηφίσατο ἡ βουλή τὸν κατὰ Οὐλολύ-  
 σκων πόλεμον. ἡμῖν γὰρ τότε ἐπτακαικοσέτης, ἐτατ-  
 τόμην δ' ἔτι ὑπὸ λοχαγῶ. γενομένης δὲ μάχης καρ-  
 τεράς καὶ τροπῆς, καὶ τοῦ μὲν ἡγεμόνος τῆς σπείρας  
 10 πεπρωκότος, τῶν δὲ σημείων κρατουμένων ὑπὸ τῶν  
 ἐχθρῶν, μόνος ἔγῳ τὸν ὑπὲρ ἀπάντων κίνδυνον ἀρά-  
 μενος τὰ τε σημεία διέσωσα τῆς σπείρας καὶ τοὺς  
 πολεμίους ἀνέστειλα καὶ τοῦ μὴ περιπεσεῖν αἰσχύνῃ 2088  
 τοὺς λοχαγούς αἰώνῳ, δι' ἣν θανάτου κακίαν ὁ λοι-  
 πὸς ἂν αὐτοῖς βίος ἦν, αἷτιος ἐγενόμην φανερώς, ὡς  
 αὐτοὶ τε ὁμολογοῦν χρυσῶ με ἀναδήσαντες στεφάνῳ,  
 καὶ ὁ ὑπάτος Σίκιος ἐμαρτύρησεν ἡγεμόνα τῆς σπεί-  
 ρας ἀποδείξας. ἐτέρου τε πάλιν ἡμῖν ἀγῶνος ἐνστάν-  
 15 τος, ἐν ᾧ τὸν τε στρατοπεδάρχην τοῦ τάγματος ἡμῶν  
 συνέβη πεσεῖν καὶ τὸν αἰετὸν ὑπὸ τοῖς πολεμίους γε-  
 νέσθαι, τὸν αὐτὸν τρόπον ὑπὲρ ὄλου τοῦ τάγματος  
 ἀγωνισάμενος τὸν τ' αἰετὸν ἀνεκομισάμην καὶ τὸν  
 στρατοπεδάρχην ἔσωσα· ὅς ἐμοὶ τῆς τότε βοηθείας χά-  
 ριν ἀποδίδους, τῆς ἡγεμονίας τοῦ τάγματος ἀφίστατό  
 20 μοι καὶ τὸν αἰετὸν ἐδίδον· ἐγὼ δ' οὐκ ἔλαβον, οὐκ ἀξιῶν  
 ᾧ τὸν βίον ἐχαρισάμην τούτου παρελέσθαι τὰς τιμὰς  
 ἃς εἶχε καὶ τὰς ἐπὶ ταύταις εὐφροσύνας. ἐφ' οἷς ἀγα-  
 σθεῖς με ὁ ὑπάτος τοῦ πρώτου τάγματος ἀπέδωκε τὴν  
 στρατοπεδαρχίαν ἀπολωλεκτός ἐν τῇ μάχῃ τὸν ἡγεμόνα.  
 30 XXXVII. Ταῦτ' ἐστίν, ᾧ δημόται, τὰ φανερώ-  
 σαντά με καὶ εἰς ἡγεμονίας προαγαρόντα γενναῖα 2089  
 ἔργα. ἐπεὶ δ' οὐκ ἔλαβον τῆς ἡγεμονίας ἡδὴ λαμπροῦ τυγχάνων φα-

νερός ἡμῖν, ἅπαντας ὑπέμενον τοὺς λοιποὺς ἀγῶνας,  
 αἰδούμενος τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις ἔργοις τιμὰς καὶ  
 χάριτας ἀφανίσαι. καὶ διετέλεσα πάντα τὸν μεταξὺ  
 χρόνον στρατευόμενος καὶ ταλαιπωρῶν καὶ οὐδένα  
 κίνδυνον δεδιώς οὐδὲ ὑπολογιζόμενος· ἐξ ὧν ἀπάν- 5  
 των ἀριστεία καὶ σκῦλα καὶ στεφάνους καὶ τὰς ἄλλας  
 τιμὰς παρὰ τῶν ὑπάτων ἔλαβον· ἵνα δὲ συνδῶν  
 εἶπω, μάχας μὲν ἐν τοῖς τετταράκοντα ἔτεσιν ἐν οἷς  
 διατελώ στρατευόμενος ἀμφὶ τὰς ἑκατὸν εἴκοσι μεμα-  
 10 χημαί, τραύματα δὲ πέντε καὶ τετταράκοντα εἴληφα  
 καὶ πάντα ἐμπρόσθια, κατὰ νότου δ' οὐθέν. καὶ τού-  
 των δώδεκά ἐστιν, ἃ συνέβη μοι λαβεῖν ἐν ἡμέρα  
 μιᾷ, ὅτε Σαβίνος Ἐρδώνιος τὴν ἄκραν καὶ τὸ Καπι-  
 τώλιον κατελάβετο. ἀριστεία δ' ἐκ τῶν ἀγῶνων ἐξε-  
 15 νήνεγμαί τεσσαρεσκαίδεκα μὲν στεφάνους πολιτικούς, 15  
 οἷς ἀνέδησάν με οἱ σωθέντες ἐν ταῖς μάχαις ὑπ'  
 2000 ἐμοῦ, τρεῖς δὲ πολιορκητικούς πρώτος ἐπιβάς πολε-  
 μίων τείχεσι καὶ κατασχών, ὀκτώ δὲ τοὺς ἐκ παρα-  
 τάξεως, οἷς ὑπὸ τῶν αυτοκρατόρων ἐτιμήθη· πρὸς  
 δὲ τούτοις ὀγδοήκοντα μὲν καὶ τρεῖς χρυσοὺς στρε- 20  
 πτοὺς περιανυχεῖν, ἐξήκοντα δὲ καὶ ἑκατὸν περι-  
 βραζιόνια χρύσεια, δόρατα δ' ὀκτωκαίδεκα, φάλαρα  
 δ' ἐπίσημα πέντε πρὸς τοῖς εἴκοσιν, ὧν ἑννέα ἦσαν,  
 οὓς μονομαχήσαι τινα ἡμῶν προκαλεσαμένους ἐκού-  
 25 σιος ὑποστάς ἐνίκησα. οὗτος μέντοι Σίκιος, ᾧ πολι- 25  
 ται, ὁ τοσαῦτα μὲν ἔτη στρατευσάμενος ὑπὲρ ὑμῶν,  
 τοσαύτας δὲ μάχας ἀγωνισάμενος, τοσοῦτοις δὲ τιτι-  
 μημένος ἀριστείοις, ὁ μηδένα κίνδυνον ὀκνήσας πά-  
 ποτε, μηδ' ἀπειπάμενος, ἀλλὰ . . . καὶ ἐν παρατά-  
 30 ξεσι καὶ ἐν τειχομαχίαις καὶ ἐν πεζοῖς καὶ ἐν ἱπ- 30  
 2001 πῦσι καὶ μετὰ πάντων καὶ σὺν ὀλίγοις καὶ μόνος,  
 καὶ κατατετριωμένος ὄλον τὸ σῶμα, ὁ συγκατακτη-



σάμενος τῇ πατρίδι πολλὴν καὶ ἀγαθὴν γῆν, τοῦτο  
 μὲν ἦν Τυρρηνοῦς τε καὶ Σαβίνου ἀφείλεσθε, τοῦτο  
 δὲ ἦν Αἰκωνῶν καὶ Οὐολούσκων καὶ Πωμεντίνων  
 κρατήσαντες ἔσχετε [καὶ ἄλλων τινῶν], οὐδὲ τὴν ἐλα-  
 5 χίστην ἔχω μοῖραν ἐξ αὐτῆς λαβῶν, οὐδ' ὑμῶν, εἰ  
 δημόται, τῶν τὰ ὅμοια ταλαιπωρησάντων οὐδεὶς· οἱ  
 δὲ βιαιότατοι τῶν ἐν τῇ πόλει καὶ ἀναιδέστατοι τὴν  
 καλλίστην κατέχουσιν ἐξ αὐτῆς καὶ πολλὰ ἔτη κεκάρ-  
 10 πονται, οὔτε δωρεὰν παρ' ὑμῶν λαβόντες οὔτε χρη-  
 μίων ἀποδείξαι δυνάμενοι. καὶ εἰ μὲν ἴσα τοῖς  
 ἄλλοις ἡμῖν ταλαιπωρήσαντες, ὅτ' αὐτὴν ἐκτόμεθα,  
 πλεῖον ἡξίουν ἡμῶν ἔχειν, ἢ μὲν οὐδ' οὕτω δίκαιον  
 οὐδὲ πολιτικὸν ὀλίγους σφετερίζασθαι τὰ κοινά, οὐ  
 15 μὴν ἄλλ' εἶχέ γέ τινα λόγον ἢ πλεονεξία τῶν ἀνθρώ-  
 πων· ὁπότε δ' οὐδὲν ἔχοντες ἐπιδείξασθαι μέγα καὶ 2092  
 νεανικὸν ἔργον, ἀνθ' οὗ τὰ ἡμέτερα βία κατέσχον,  
 ἀναισχυνοῦσι καὶ οὐδ' ἐξελεγχόμενοι μεθίενται αὐ-  
 τῶν, τίς ἂν ἀνάσχοιτο;  
 20 XXXVIII. Ἐπεὶ φέρε πρὸς Διὸς, εἴ τι τούτων  
 ἐγὼ ψεύδομαι, δείξάτω τις ὑμῖν τῶν σεμνῶν τούτων  
 παρελθῶν, τίνας ἐπιφανεῖς καὶ καλὰς πράξεις προε-  
 χόμενος ἐμοῦ πλεον ἔχειν ἀξιοῖ· πότερον ἔτη πλείω  
 στρατευσάμενος ἢ μάχας πλείους ἀγωνισάμενος ἢ τραύ-  
 25 ματα πλείω λαβῶν ἢ στεφάνοις καὶ φαλάροις καὶ σκύ-  
 λοις καὶ τοῖς ἄλλοις ἐπιμικίοις κόσμοις ὑπερβαλόμενος,  
 δι' ὃν ἀσθενέστεροι μὲν οἱ πολέμιοι γερόνασιν, ἐπιφα-  
 νεστέρα δὲ καὶ μελίων ἢ πατρίδι; μᾶλλον δὲ τὸ δέκατον  
 ἐπιδείξάτω μέρος, ὃν ὑμῖν ὑπέδειξα ἐγώ. ἀλλὰ τούτων  
 30 γ' οἱ πλείους οὐδ' ἂν πολλοστὴν ἔχοιεν προενέργασθαι  
 μοῖραν τῶν ἐμῶν· ἔνιοι δὲ οὐδ' ἂν τῷ φανλοτάτῳ τῶν  
 ἐκ τοῦ δήμου φανεῖεν τὰ ἴσα κακοπαθήσαντες. οὐ γάρ 2093

ἐστὶν αὐτῶν ἐν τοῖς ὅπλοις ἢ λαμπρότης, ἀλλ' ἐν τοῖς  
 λόγοις, οὐδὲ κατὰ τῶν ἐχθρῶν τὸ δυνάμενον, ἀλλὰ  
 κατὰ τῶν φίλων· οὐδ' ἠγοῦνται κοινὴν οἰκεῖν πόλιν,  
 σφῶν δ' αὐτῶν ἴδιαν, ὥσπερ οὐ συνελευθερωθέντες  
 ἀπὸ τῆς τυραννίδος ὑφ' ἡμῶν, ἀλλὰ κατὰ κληρονο- 5  
 μίαν παρὰ τῶν τυράννων παραλαβόντες ἡμᾶς· οἱ γε  
 — τὰ μὲν ἄλλα, ὅσα ὑβρίζοντες ἡμᾶς μικρὰ καὶ μελῖω  
 διατελοῦσιν, ὡς ἅπαντες ἐπίστασθε, σιωπῶ· ἀλλ' εἰς  
 τοῦτο προεληλύθασιν ὑπερηφανίας, ὥστ' οὐδὲ φω-  
 νὴν ἀξιοῦσίν τινα ἡμῶν ἀφιέναι περὶ τῆς πατρίδος 10  
 ἐλευθέραν οὐδὲ διαῖραι τὸ στόμα, ἀλλὰ τὸν μὲν πρῶ-  
 2004 τον εἰπόντα περὶ τῆς κληρουχίας Σπόριον Κάσσιον,  
 τρισὶ μὲν ὑπατεῖαις κεκοσμημένον, δυσὶ δὲ θριάμ-  
 βοις λαμπροτάτοις, τοσαύτην δὲ δεινότητα περὶ τε  
 τὰς στρατηγικὰς πράξεις καὶ περὶ τὰ πολιτικὰ βου- 15  
 λύματα ἀποδειξάμενον, ὅσην οὐδεὶς τῶν τότε γενο-  
 μένων, τοῦτον τὸν ἄνδρα αἰτιασάμενοι τυραννίδι ἐπι-  
 χειροῖν καὶ ψευδέσι καταγωνισάμενοι μαρτυρίαις δι'  
 οὐδὲν ἕτερον, ἀλλ' ὅτι φιλόπολις ἦν καὶ φιλόδημος,  
 ὥσαντες ἀπὸ τοῦ κρημνοῦ διέφθειραν. Γναῖον δὲ Γενύ- 20  
 κιον δῆμαρχον ὄντα ἡμέτερον, ἐπεὶ τὸ αὐτὸ τοῦτο  
 πολίτευμα μετὰ ἔτος ἐνδέκατον ἀνενεοῦτο, καὶ τοὺς  
 ὑπατεύσαντας ἐν τῷ πρότερον ἐνιαυτῷ κατέστησεν  
 ὑπὸ δίκην ἀμελήσαντας τῶν ψηφισμάτων τῆς βουλῆς,  
 ἃ περὶ τῶν γεωμόρων ἐψηφίσατο, ἐπεὶ φανερῶς οὐχ 25  
 οἳοί τ' ἦσαν ἀνελεῖν, μᾶ πρότερον ἡμέρα τῆς δίκης  
 ἀφανῶς ἀνήρπασαν. τοιγάρτοι πολὺς ἐπέπεσε τοῖς  
 2006 μετὰ ταῦτα φόβος, καὶ οὐδεὶς ἔτι τὸ κινδύνεμα  
 τοῦτο ὑπέδν, ἀλλὰ τριακοστὸν ἔτος τοῦτο ἀνεχόμεθα  
 ὥσπερ ἐν τυραννίδι τὴν ἐξουσίαν ἀπολωλεκότες. 30  
 XXXVIII. Ἐὼ τᾶλλα· ἀλλ' οἱ νῦν ἄρχοντες  
 ὑμῶν, ὅτι τοῖς κατισχυομένοις τῶν δημοτικῶν ἡξίουν

βοηθεῖν, οὓς ὑμεῖς ἱερούς καὶ ἀσύλους ἐποιήσατε τῷ νόμῳ, τί οὐ πεπόνθασι τῶν δεινῶν; οὐχὶ τυπτόμενοι καὶ λακτιζόμενοι καὶ πᾶσαν αἰκίαν ὑπομεινάντες ἀπηλέθησαν ἐκ τῆς ἀγορᾶς; καὶ ὑμεῖς ταῦτα πάσχοντες ἀνέχεσθε καὶ οὐ ζητεῖτε, ὅπως παρ' αὐτῶν ληψέσθε δίκας, ταῖς γοῦν ψήφοις, ἐν αἷς μόναις ἔξεστιν ὑμῖν ἀποδείξασθαι τὴν ἐλευθερίαν. ἀλλ' ἔτι καὶ νῦν, ὧ δημοῦται, φρόνημα λαβόντες ἐλεύθερον, καὶ τὸν γεωμορικὸν νόμον εἰσφερόντων τῶν δημάρχων ἐπικυρώσατε, μηδὲ φωνῆν ἀνασχόμενοι τῶν τὰ ἐναντία ἄξιούτων. ὑμεῖς δ', ὧ δήμαρχοι, παρακλήσεως μὲν εἰς τοῦτο τὸ ἔργον οὐ δεῖσθε· καὶ γὰρ ἤρξατε αὐτοῦ καὶ οὐχ ὑποκατακλίνεσθε, καλῶς ποιούντες· ἐὰν δ' ἐκ τῶν νέων ἀνθάδεια καὶ ἀναΐδεια ὑμῖν ἐμποδῶν γένηται τοὺς καδίσκουσ ἀνατρεπόντων ἢ τὰς ψήφους ἀρπαζόντων ἢ ἄλλο τι περὶ τὴν ψηφοφορίαν ἀκοσμοῦντων, δεῖξατε αὐτοῖς ἣν ἔχει τὸ ἀρχεῖον ἰσχύν. καὶ ἐπειδὴ οὐ τοὺς ὑπάτους ἔξεστι παῦσαι τῆς ἐξουσίας, τοὺς ἰδιώτας οἷς πρὸς τὰ βίβια ὑπηρέταις ἐκεῖνοι χροῶνται καταστήσαντες ὑπὸ δίκην, ἀνάδοτε τῷ δήμῳ τὰς περὶ αὐτῶν ψήφους, αἰτιασάμενοι παρὰ τοὺς ἱερούς νόμους βιάζεσθαι καὶ καταλύειν ὑμῶν τὴν ἀρχήν.

XXXX. Τοιαῦτ' εἰπόντος αὐτοῦ τὸ μὲν πλῆθος οὕτως οἰκείως διετέθη πρὸς τοὺς λόγους καὶ τοσαύτην ἀπεδέξατο ἀγανάκτησιν πρὸς τὸ ἀντίπαλον, ὥσθ', ὅπερ ἔφη καὶ κατ' ἀρχάς, μηδὲ λόγον ἔτι βούλεσθαι τῶν ἀντιλεξόντων ὑπομένειν. ὁ μέντοι δήμαρχος Ἰκίλλιος ἀναστὰς τὰ μὲν ἄλλα ἔφη πάντα ὀρθῶς εἰπεῖν Σίκκιον, καὶ μακρὸν ἔπαινον τοῦ ἀνδρός διεξῆλθε· τὸ δὲ μὴ μεταδιδόναι λόγον τοῖς ἀντιλέξει βουλομένοις οὔτε δίκαιον ἀπέφαινε οὔτε πολιτικόν,

ἄλλως τε καὶ περὶ νόμου τῆς ζητήσεως γινουμένης, ὃς ἔμελλε κρείττονα ποιήσειν τὴν δίκην τῆς βίας. ταύτη γὰρ ἀφορμὴ χρῆσεσθαι τοὺς μηδὲν ἴσως καὶ δικαίως τοῖς πολλοῖς φρονούντας τοῦ ταράττειν πάλιν καὶ διστάναι τὰ συμφέροντα τῆς πόλεως. ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὴν ἐπιούσαν ἀποδείξας ἡμέραν τοῖς κατηγοροῖς τοῦ νόμου διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν. οἱ δὲ ὑπατοὶ συναγαγόντες ἰδιωτικὸν συνέδριον πατρικίων τῶν ἀνδρειοτάτων τε καὶ μάλιστα ἐν τῇ πόλει τότε ἀνθούτων, ἐδίδασκον αὐτοὺς ὡς κωλυτέος εἴη σφίσι τὸ νόμος, λόγοις μὲν πρώτου, ἐὰν δὲ μὴ πεῖθῳσι τὸν δῆμον, ἔργοις. ἐκέλευόν τε ἅπασιν ἦκειν ἔσθην εἰς τὴν ἀγορὰν ἅμα τοῖς ἐταίροις τε καὶ πελάταις ὅσοις ἂν ἕκαστοι πλείστοις δύνωνται. ἔπειτα τοὺς μὲν περὶ αὐτὸ τὸ βῆμα καὶ τὸ ἐκκλησιαστήριον ἐστῶτας ὑπομένειν, τοὺς δὲ κατὰ πολλὰ τῆς ἀγορᾶς μέρη συστρέφοντας ἑαυτοὺς διαστῆναι, ὥστε διειληφθαι τὸ δημοτικὸν διεσπασμένον καὶ κωλύεσθαι πρὸς αὐτῶν εἰς ἐν συνελθεῖν. ἐδόκει ταῦτα κράτιστα εἶναι, καὶ πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν γενέσθαι τὰ πολλὰ τῆς ἀγορᾶς κατείχετο ὑπὸ τῶν πατρικίων.

XXXXI. Μετὰ ταῦτα οἱ τε δήμαρχοι καὶ οἱ ὑπατοὶ παρήσαν, καὶ λέγειν ὁ κῆρυξ ἐκέλευσε τὸν βουλόμενον τοῦ νόμου κατηγορεῖν. πολλῶν δὲ καὶ ἀγαθῶν ἀνδρῶν παριόντων, οὐδενὸς ἐξᾴκουστος ἦν ὁ λόγος ὑπὸ τοῦ θορύβου τε καὶ τῆς ἀκοσμίας τῶν ἐκκλησιαζόντων. οἱ μὲν γὰρ ἐπεκέλευόν τε καὶ ἐπεθάρον τοὺς λέγοντας, οἱ δ' ἐξέβαλλον τε καὶ κατέβωον. ἐκράτει δὲ οὔτε ὁ τῶν συλλαμβανόντων ἔπαινος, οὔτε ὁ τῶν ἀντιπραττόντων θόρυβος. ἀγανακτούτων δὲ τῶν ὑπάτων καὶ μαρτυραμένων, ὅτι τῆς βίας ὁ δῆμος ἄρχει λόγον οὐκ ἄξιῶν ὑπομένειν,

ἀπελογοῦντο οἱ δῆμαρχοι πρὸς ταῦτα, ὅτι ἤδη πέμπτον  
 ἔτος τῶν αὐτῶν ἀκούοντες λόγον οὐθὲν ποιοῦσι θαυ-  
 μαστόν, εἰ μὴ ἀξιοῦσιν ὑπομένειν ἐώλους καὶ καθη-  
 μαξενμένας ἀντιλογίας. ὡς δὲ τὸ πλεῖον τῆς ἡμέρας  
 5 εἰς ταῦτα ἔδαπανήθη, καὶ ὁ δῆμος ἀπῆτει τὰς ψήφους,  
 οὐκέτ' ἀνασχετὸν ἠγγασάμενοι τὸ πρᾶγμα οἱ νεώτατοι  
 τῶν πατρικίων διίστασθαι τε βουλομένοις κατὰ φυλὰς  
 τοῖς δημόταις ἐμποδῶν ἐγίνοντο καὶ τὰ ἀγγεῖα τῶν  
 10 ψήφων τοὺς ἔχοντας ἀφηροῦντο καὶ τῶν ὑπηρετοῦν-  
 ταν τοὺς μὴ βουλομένους ταῦτα ἀφιέναι τύπτουτές  
 τε καὶ ᾠθοῦντες ἐξέβαλλον. κεκραγότεν δὲ τῶν δημ-  
 άρχων καὶ εἰς μέσους αὐτοὺς ᾠθουμένων, ἐκείνοις  
 μὲν ὑπεχώρουν καὶ παρεῖχον ὅποι βούλουντο χωρεῖν  
 ἀδεῶς, τοῦ δ' ἄλλου δήμου τοὺς ἐπομένους αὐτοῖς [καὶ 210  
 15 τὸ κατ' ἄλλα καὶ ἄλλα μέρη τῆς ἀγορᾶς ὑπὸ θορύβου  
 καὶ ἀταξίας κινούμενοι ἐπ' αὐτοὺς] οὐ παρέσαν,  
 ὥστ' ἀνωφελῆς ἦν [τῷ δήμῳ] ἢ τῶν ἀρχόντων βοή-  
 θεια. τέλος δ' οὖν ἐπεκράτησαν οἱ πατριῖοι, καὶ  
 οὐκ εἶασαν ἐπικυρωθῆναι τὸν νόμον. οἱ δὲ προθυμό-  
 20 τατα συλλαβέσθαι δόξαντες τοῖς ὑπάτοις ἐν τριῶν  
 οἰκίῳν ἦσαν, Ποστόμοιο καὶ Σεμπρώνιου καὶ τρίτου  
 Κλοίλιου, γένους τε ἀξιώσει λαμπρότατοι καὶ εται-  
 ρίαις μεγάλα δυνάμενοι πλούτῳ τε καὶ δόξῃ καὶ τοῖς  
 κατὰ πόλεμον ἔργοις ἐπιφανεῖς· καὶ τοῦ μὴ κυρω-  
 25 θῆναι τὸν νόμον οὗτοι ἀμολογοῦντο αἰτιώτατοι γε-  
 νέσθαι.

XXXXII. Τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ παραλαβόντες οἱ  
 δῆμαρχοι τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν δημοτικῶν ἐσκό-  
 πουν, ὅ τι χρῆσονται τοῖς πράγμασι, κοινὸν μὲν τοῦτο  
 30 καὶ παρὰ πάντων ὁμολογούμενον εὐληφότες, τὸ μὴ 2101  
 τοὺς ὑπάτους ἄγειν ὑπὸ τὴν δίκην, ἀλλὰ τοὺς ὑπη-  
 ρετοῦντας αὐτοῖς ἰδιώτας· ὧν κολαζομένων ἐμελλε

τοῖς πολλοῖς τῶν πολιτῶν ἐλάττων ἔσεσθαι λόγος,  
 ὥσπερ ὁ Σίκκιος ὑπειπίθετο· περὶ δὲ τοῦ πλήθους  
 τῶν ὑπὸ τὰς αἰτίας ἀχθισομένων ὅσον εἶναι χρή, καὶ  
 περὶ τοῦ ὀνόματος ὃ θήσονται τῇ δίκῃ, καὶ μάλιστα  
 περὶ τοῦ τιμήματος πηλίκον ἔσται τὸ μέγεθος, ἐπι- 5  
 μελῆ ποιούμενοι ζήτησιν. οἱ μὲν οὖν χαλεπώτεροι τὰς  
 φύσεις ἐπὶ τὸ μείζον τε καὶ φοβερώτερον ἅπαντα  
 ταῦτα προάγειν παρήνουν, οἱ δ' ἐπιεικέστεροι τοῦ-  
 ναυτίου ἐπὶ τὸ μετριώτερον καὶ φιλανθρωπότερον· ὃ  
 δὲ ταύτης ἠγούμενος τῆς γνώμης καὶ πείσας αὐτοὺς 10  
 ἦν Σίκκιος, ὃ τοὺς ἐν τῷ δήμῳ περὶ τῆς κληρουχίας  
 διεληθῶν λόγους. ἔδοξε δ' οὖν αὐτοῖς τὸ μὲν ἄλλο  
 πλήθος τῶν πατρικίων εἶσαι, Κλοίλιους δὲ καὶ  
 Ποστομίους καὶ Σεμπρώνιους ἐπὶ τὸν δῆμον ἄγειν,  
 15 ὧν ἔπραξαν ὑφέχοντας δίκας· ἐγκαλεῖν δ' αὐτοῖς, 15  
 1102 ὅτι τῶν ἱερῶν νόμων, οὓς περὶ τῶν δημάρχων ἐκυ-  
 ρωσεν ἢ βουλή καὶ ὁ δῆμος, οὐθενὶ δεδωκότων ἔξου-  
 σίαν ἀναγκάζειν τοὺς δημάρχους ὑπομένειν τι τῶν  
 ἀβουλήτων ὥσπερ τοὺς ἄλλους πολίτας, ἐκείνοι κα-  
 τασχόντες αὐτοὺς ἐκόλωσαν ἐπὶ τέλος ἄγειν τὴν περὶ 20  
 τοῦ νόμου διάγνωσιν. τίμημα δ' ἐφάνη ταῖς δίκαις  
 ὀρίσαι μῆτε θάνατον μῆτε φυγὴν μῆτ' ἄλλο ἐπίφθο-  
 ρον μηδέν, ἵνα μὴ τοῦτ' αὐτοῖς γένηται σωτηρίας αἰ-  
 τιον, ἀλλὰ τὰς οὐσίας αὐτῶν ἱερὰς εἶναι Δῆμητρος,  
 τὸ μετριώτατον ἐκλεξαμένοις τοῦ νόμου μέρος. ἐγί- 25  
 νετο ταῦτα, καὶ παρῆν ὁ χρόνος, ἐν ᾧ τὰς κατὰ τῶν  
 ἀνδρῶν ἔδει συντελεῖσθαι δίκας. τοῖς δ' ὑπάτοις  
 καὶ τῶν ἄλλων πατρικίων τοῖς παραληφθεῖσιν εἰς  
 τὸ συνέδριον· ἔτυχον δ' οἱ κράτιστοι παρακληθέν-  
 30 τες· ἐδόκει συγχωρεῖν τοῖς δημάρχοις ἐπιτελέσαι τὰς 30  
 1103 δίκας, ἵνα μὴ τι μείζον κωλυθέντες ἔξεργάσονται  
 κακόν, καὶ τοῖς δημόταις ἐπιτρέπειν ἀργαῖνομένοις

εἰς τὰ χρήματα τῶν ἀνδρῶν ἐκχέαι τὴν χολήν, ἵνα  
τιθασώτεροι γένωνται τὸ λοιπόν, λαβόντες ὁποσηνοῦν  
παρὰ τῶν ἐχθρῶν δίκην, ἄλλως τε καὶ τῆς εἰς χρή-  
ματα ζημίας εὐδιόρθωτον ἐχοῦσης τοῖς πεποιθόσι  
5 τὴν συμφορὰν ὅπερ καὶ συνέβη. ἀλότων γὰρ τῶν  
ἀνδρῶν ἐρήμους τὰς δίκας, ὃ τε δῆμος ἀγριανόμενος  
ἐπαύσατο, καὶ τοῖς δημάρχοις ἐδόκει τις ἀποδεδοσθαι  
μετρία [ροῦν] καὶ πολιτικὴ [δύναμις καὶ] βοήθεια  
τοῖς τε ἀνδράσι τὰς οὐσίας οἱ πατρίοιοι παρὰ τῶν  
10 ὠνησαμένων ἐκ τοῦ δημοσίου τῆς ἰσῆς λυσάμενοι τι-  
μῆς ἀνέδοσαν. καὶ τὰ μὲν κατεπείγοντα δευῖν αὐτοῦ-  
τον τὸν τρόπον χρησαμένων τοῖς πράγμασιν αὐτῶν  
διετέλετο.

XXXXIII. Μετ' οὐ πολὺ δὲ πάλιν τῶν δημάρχων  
15 τὸν ὑπὲρ τοῦ νόμου εἰσφερόντων λόγον, αἰφνιδίως  
τις ἀγγελθεῖσα πολεμίων ἐφοδος ἐπὶ τὴν [τῶν] Τυ- 2104  
σκλάνων πόλιν, αἰτία κωλύσεως ἀποχωρῶσα ἐγένετο.  
τῶν γὰρ Τυσκλάνων κατὰ πλῆθος εἰς τὴν Ῥώμην  
ἀφικομένων καὶ λεγόντων, ὅτι δυνάμει πολλῇ πά-  
20 εἰσιν ἐπ' αὐτοὺς Αἰκανοὶ καὶ τὴν μὲν χώραν αὐτῶν  
ἤδη διηροπάκασι, τὴν δὲ πόλιν ἐὰν μὴ τις γένηται  
ταχεῖα ἐπικουρία φθάσουσιν ἐντὸς ὀλίγων ἡμερῶν  
ἀράμενοι, ἢ μὲν [οὖν] βουλὴ τοὺς ὑπάτους αὐτοῖς  
ἐψηφίσατο βοηθεῖν ἀμφοτέροισι· οἱ δ' ὑπατοὶ στρα-  
25 τολογίαν προθέντες ἐκάλουον τοὺς πολίτας ἅπαντας  
ἐπὶ τὰ ὄπλα. ἐγένετο μὲν οὖν τις καὶ τότε στάσις,  
ἐναντιομένων τῇ καταγραφῇ τῶν δημάρχων καὶ τὰς  
ἐκ τῶν νόμων τιμωρίας οὐ συγχωρούντων ποιεῖσθαι  
κατὰ τῶν ἀπειθούντων· ἐπράξαν δ' οὐθέν. συνελ-  
30 θούσα γὰρ ἡ βουλὴ γνώμην ἀπεδέξατο, τοὺς πατρι-  
κίους ἐπὶ τὸν πόλεμον ἐξιέναι σὺν τοῖς ἐαντιῶν πελά-  
ταις, τῶν δ' ἄλλων πολιτῶν τοῖς μὲν βουλομένοις

μετέχειν τῆς στρατείας ἐπὶ σωτηρίᾳ τῆς πατρίδος  
γινομένης ὅσα εἶναι τὰ πρὸς θεοὺς, τοῖς δ' ἐγκατα-  
2105 λείπουσι τοὺς ὑπάτους τάναντία. ὡς δ' ἀνεγνώσθη  
τὸ δόγμα τῆς βουλῆς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, πολλοὶ καὶ τοῦ  
δήμου τὸν ἀγῶνα ἐκόντες ὑπέμειναν· οἱ μὲν ἐπιει- 5  
κέστατοι δι' αἰσχύνην, εἰ μηδὲν ἐπικουρήσουσι πόλει  
συμμάχῳ διὰ τὴν πρὸς αὐτοὺς εὐνοίαν αἰεὶ τι πρὸς  
τῶν ἐχθρῶν βλαπτομένη· ἐν οἷς ἦν καὶ ὁ Σίκκιος  
ἐκεῖνος ὁ κατηγορήσας ἐν τῷ δήμῳ τῶν σφετερισα-  
μένων τὴν δημοσίαν γῆν, σπεῖραν ἐπαγόμενος ὅκα- 10  
κοσίων ἀνδρῶν, οἱ στρατεύεσθαι μὲν οὐκέτι ὄραν  
εἶχον, ὥσπερ οὐδ' ἐκεῖνος, οὐδ' ἐπιπτιον ὑπὸ τὰς  
ἀνάγκας τῶν νόμων, τιμῶντες δὲ τὸν ἄνδρα διὰ πολ-  
λὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας, ἐξιόντος ἐπὶ τὸν πόλε- 15  
μον οὐκ ἐδικαίωσαν ἀπολείπεσθαι. καὶ ἦν τοῦτο τὸ  
μέρος τῆς ἐξελεύσεως τότε δυνάμει ἐμπειρίᾳ τε  
ἀγάνων καὶ τῇ παρὰ τὰ δευῖν εὐτολμῖα μακροῦ τοῦ  
ἄλλον ἄμεινον. οἱ δὲ πολλοὶ χάριτι καὶ παρακλήσει  
τῶν πρεσβυτάτων ὑπαχθέντες εἶποντο. ἦν δὲ τι  
2106 μέρος, ὃ τῶν ὠφελειῶν ἕνεκα τῶν ἐν ταῖς στρατείαις 20  
γινομένων πάντα κίνδυνον ἔτοιμον ἦν ὑπομένειν. καὶ  
δι' ὀλίγου χρόνου δύναμις ἐξῆλθε πλήθει τε ἀποχωρῶσα  
καὶ παρασκευαῖς κεχηρημένη λαμπροτάταις. οἱ μὲν οὖν  
πολέμιοι προακούσαντες, ὅτι μέλλουσιν ἐπ' αὐτοὺς  
25 ἐξάγειν Ῥωμαῖοι στρατιάν, ἀπήγον ἐπ' οἴκου τὰς δυ-  
νάμεις. οἱ δ' ὑπατοὶ κατὰ σπουδὴν ἐλαύνοντες κατα-  
λαμβάνουσιν ἐστρατοπεδευκότας αὐτοὺς πόλεως Ἀν-  
τίου πλησίον ἐν ὑψηλῷ καὶ ἀποτόμῳ χωρίῳ, καὶ  
τίθενται τὴν παρεμβολὴν τῆς ἐκείνων οὐ πρόσω.  
τέως μὲν οὖν ἐν ταῖς ἐαντιῶν ἐπέμενον ἀμφοτέροι 30  
παρεμβολαῖς· ἔπειτα καταφρονήσαντες τῶν Ῥωμαίων  
Αἰκανοὶ τῆς οὐ προεπιχειρήσεως καὶ πλῆθος οὐχ

λικανούς εἶναι νομίσαντες ἀγοράς τ' αὐτῶν περιέ- 210  
κοπτον ἐξιόντες καὶ τοὺς ἐπὶ προνομήν ἀποστελλομέ-  
νους ἢ χόρτον ἵππεις ἀνεκρούοντο, καὶ τοῖς πρὸς  
ὑδρῆϊαν καταβαίνουσιν αἰφνιδίως ἐπειθύντο, προὔ-  
5 καλοῦντό τ' αὐτοὺς πολλάκις εἰς μάχην.

XXXXIII. Ταῦθ' ὁρῶσι τοῖς ὑπάτοις ἐδόκει  
μηκέτι διατρίβειν τὸν πόλεμον. ἦν δ' ἐν ἐκείναις ταῖς  
ἡμέραις ἢ τοῦ πολεμεῖν ἐξουσία Πρωμίλω προσήκου-  
σα, καὶ ὁ τὸ σύνθημα διδοὺς καὶ εἰς τάξιν καθιστᾶς  
10 τοῦ ἄρχειν τε καὶ παύεσθαι μάχης τὸν καιρὸν τα-  
μιεύων ἐκείνος ἦν ὅς ἐπειδὴ τὰ σημεῖα ἐκέλευσεν 2108  
ἄρθῆναι [ἐκ] τῆς μάχης καὶ προῆγεν ἐκ τοῦ χάρακος  
τὸν στρατόν, τοὺς μὲν ἄλλους ἔτασεν ἵππεις τε καὶ  
τοὺς πεζοὺς κατὰ σπείρας ἐν τοῖς ἐπιτηδεύουσιν ἐκάστους  
15 τόποις, τὸν δὲ Σίκκιον καλέσας λέγει· Ἡμεῖς μὲν,  
ὦ Σίκκιε, μαχοῦμεθα τοῖς πολεμίοις ἐνθάδε· σὺ δὲ  
ἐν ὅσῳ μέλλομεν εἶτι καὶ παρασκευαζόμεθα τὰ πρὸς  
τὸν ἀγῶνα ἀμφοτέροι, χώρει τὴν πλαγίαν ἐκείνην  
20 βολή, καὶ μάχην τίθεσο πρὸς τοὺς ἐν τῷ χάρακι, ἵν'  
ἢ περὶ τῷ φρουρίῳ δεισαντες οἱ πρὸς ἡμᾶς μαχόμενοι  
καὶ βοηθεῖν προθυμούμενοι νῶτά τε δείξωσι καὶ εὐ-  
κατέγραστοι γένωνται, καθάπερ εἰκὸς ἐν ἀναχωρήσει  
ταχῆα, καὶ εἰς μίαν ὁδὸν ἅπαντες βιαζόμενοι, ἢ μέ-  
25 νοντες ἀντόθι τὸν χάρακα ἀποβάλωσιν. οὔτε γὰρ ἢ  
φυλάττουσα αὐτὸν δύναμις ἀξιόμαχος ἐστίν, ὡς εἰκά- 2109  
σειεν ἂν τις, ἐπὶ τῷ ἐρμυνῷ τοῦ τόπου δοκοῦσα  
εἶναι πᾶν τὸ ἀσφαλές· ἢ τε ἅμα σοι δύναμις ἀπο-  
χρῶσα γένουτ' ἂν, ἄνδρες ὀκτακόσιοι πολλῶν ἀθλη-  
30 ται πολέμων, τεταραγμένους σκηνοφύλακας ἀπροσ-  
δόκητοι προσπεσόντες τῷ τολμηρῷ ἔλεϊν. καὶ ὁ  
Σίκκιος ἐφησεν· Ἄλλ' ἐργαζε ἅπαντα μὲν ἔτοιμος

ὑπηρετεῖν· τὸ μέντοι ἔργον οὐ θάδιον ὥσπερ σοι  
δοκεῖ. ὑψηλὴ τε γὰρ ἢ πέτρα καὶ ἀπότομος ἐφ' ἧς ὁ  
χάραξ, ὁδὸν τε οὐδεμίαν ὁρῶ φέρουσαν ἐπ' αὐτὴν  
ἔξω τῆς μιᾶς, ἢ καταβήσονται οἱ πολέμιοι πρὸς ἡμᾶς,  
φυλακὴν τ' εἰκὸς ἀξιόμαχον εἶναι ἐν αὐτῇ· κἄν ὀλίγη 5  
δὲ πᾶν καὶ φάυλη τις οὔσα τύχη, πρὸς πολλῷ  
πλείονα ἢ τὴν σὺν ἐμοὶ δύναμιν ἀντέχειν οἷα τε  
ἔσται, τὸ τε χωρίον αὐτὸ παρῆξει τῇ φυλακῇ τοῦ μὴ  
ἀλώσεσθαι τὸ ἀσφαλές. ἀλλὰ μάλιστα μὲν ἀνάθου  
1110 τὴν γνώμην· ἢ πείρα γὰρ ἐπιφαλῆς· εἰ δὲ πάντως 10  
ἐγνωσταί σοι δύο τίθεσθαι μάχας ἐν ἐνὶ καιρῷ, δύ-  
ναμιν ἀξιόχρεων ἀνδρῶν ἐπιλέκτων τάξον ἀκολουθεῖν  
μοι σὺν τοῖς πρεσβυτέροις. οὐ γὰρ κλέψοντες τὸ  
χωρίον, ἀλλὰ βίᾳ καὶ φανερώς ἐξελοῦντες ἄνιμεν.

XXXXV. Ἐτι δ' αὐτοῦ βουλομένου λέγειν τάκό- 15  
λουθα ὑπολαβὼν ὁ ὑπάτος εἶπεν· Οὐ πολλῶν δεῖ  
λόγων· ἀλλ' εἰ μὲν ὑπομένεις πρᾶττειν τὰ προστα-  
τόμενα, χώρει διὰ ταχέων καὶ μὴ παραστρατήγει· εἰ δὲ  
ἀφίστασαι καὶ ἀποδιδοῖσθαι τὸν κίνδυνον, ἑτέροις  
εἰς τὸ ἔργον χρήσομαι. σὺ δὲ τὰς ἑκατὸν εἰκοσι μάχας 20  
ἀγωνισάμενος καὶ τὰ τετραράκοντα ἔτη στρατευσά-  
μενος καὶ κατατετραωμένος ὄλον τὸ σῶμα, ἐπειδὴ  
ἐκῶν ἤλθες, ἔπιθι μῆτε ὀμιλήσας πολεμίοις μῆτ'  
ἰδῶν, καὶ ἀντὶ τῶν ὄπλων ἀκόνα πάλιν τοὺς λόγους,  
οἷς χρῆση κατὰ τοῦ φθόνου τῶν πατρικίων. ποῦ νῦν 25  
ἐκείνά σου τὰ πολλὰ ἀριστεία, οἱ στρεπτοὶ καὶ τὰ  
φέλλια καὶ τὰ δόρατα καὶ τὰ φάλαρα καὶ οἱ τῶν ὑπά-  
1111 των στέφανοι καὶ τὰ ἐκ τῶν μονομαχιῶν λάφυρα καὶ  
πᾶσα ἢ ἄλλη βαρύτης, ἦν τότε ἠνεσχόμεθά σου λέ-  
γοντος; ἐν ἐνὶ γὰρ δὴ τῷδε τῷ ἔργῳ βασανιζόμενος, 30  
ἔνθα κίνδυνος ἦν ἀληθινός, ἐξητάσθης οἷος ἦσθα, ὡς  
ἀλαζῶν καὶ δόξῃ τὸ ἀνδρεῖον ἐπιτηδεύων, οὐκ ἀλη-  
5\*

θεία. καὶ ὁ Σίκκιος δυσανασχετῶν ἐπὶ τοῖς ὀνειδέ-  
 σιν· Οἶδα, φησὶν, ὧ Ῥωμαῖε, ὅτι δυσὲν πρόκειταιί  
 μοι θάτερον, ἢ ζῶντα διειργάσθαι καὶ τὸ μηδὲν  
 † ἀποδοῦναι δόξαν αἰσχίστην ενεργάμενον δειλίας, ἢ  
 5 κακῶς καὶ ἀδῆλως κατακοπέντα ὑπὸ τῶν πολεμίων  
 ἀποθανεῖν, ἐπειδὴ καὶ γὰρ τις ἔδοξα εἶναι τῶν ἀξιού-  
 των ἐλεύθερα φρονεῖν, οὐ γὰρ εἰς ἀδῆλον, ἀλλ' εἰς 2111  
 ἐγνωσμένον ἀποστέλλεις με θάνατον· πλὴν ὑπομενῶ  
 καὶ τοῦτο τὸ ἔργον, καὶ πειράσομαι φανεῖς ψυχὴν οὐ  
 10 κακός, ἢ κρατῆσαι τοῦ χάρακος, ἢ μὴ τυχῶν τῆς ἐλ-  
 πίδος εὐγενῶς ἀποθανεῖν. ὑμᾶς δ', ὧ συστρατιῶται,  
 μάρτυρας ἀξιώ γενέσθαι μοι πρὸς τοὺς ἄλλους πολ-  
 τας, ἐὰν πύθῃσθε τὸν ἐμὸν μόρον, ὅτι με ἀπώλεσεν  
 ἡ ἀρετὴ καὶ ἡ πολλὴ τῶν λόγων ἐλευθερία. Ταῦτα  
 15 πρὸς τὸν ὑπατον ἀποκρινάμενος καὶ δακρύσας τοὺς  
 τε συνῆθεις ἅπαντας ἀσπασάμενος, ὄχητο τοὺς ὀκτα-  
 κοσίους ἄνδρας ἄγων κατηφείς καὶ δεδακρυμένους,  
 ὡς τὴν ἐπὶ θανάτῳ πορευομένους· καὶ ἡ ἄλλη δὲ  
 πᾶσα στρατιὰ δι' οἴκτου τὸ πρᾶγμα ἔλαβεν ὡς οὐκέτ'  
 20 ὀψομένη τοὺς ἄνδρας.

XXXVI. Ὁ δὲ Σίκκιος ἐτέραν ἀποστραφεῖς,  
 οὐχ ἦν ὁ Ῥωμαῖος ὑπελάμβανε, παρὰ τὴν λαγόνα τοῦ  
 ὄρους ἦγεν. ἔπειτα ἦν γὰρ τις θρυμὸς ὕλην βαθεῖ-  
 αν ἔχων· εἰς τοῦτον ἄγων τοὺς ἄνδρας, ἵσταται τε καὶ  
 25 φησιν· Ὑπὸ μὲν τοῦ ἡγεμόνος ἀπεστάλμεθα, ὥσπερ  
 ὄρατε, ἀπολούμενοι. ἔδοκει γὰρ ἡμᾶς τὴν πλαγίαν 2113  
 χωρῆσειν ὁδόν, ἢν ἀναβαίνοντας ἀμήχανον ἦν μὴ οὐ  
 φανεροὺς τοῖς πολεμίοις γενέσθαι. ἐγὼ δ' ὑμᾶς ἄξω  
 καὶ ἀδῆλον τοῖς ἐχθροῖς ὁδόν, καὶ πολλὰς ἐλπίδας  
 30 ἔχω τρίβων ἐπιληψέσθαι τινων, αἱ κατὰ κορυφῆς  
 ἄξουσιν ἡμᾶς ἐπὶ τὸν χάρακα· καὶ ἐλπίδας χρηστὰς  
 ἔχετε. Ταῦτ' εἰπὼν ἦγε διὰ τοῦ θρυμοῦ, καὶ πολὺν

ἤδη διεληλυθὼς τόπον εὐρίσκει κατὰ δαίμονα ἄνδρα  
 ἐξ ἄγρου ποθὲν ἀπιόντα, ὃν τοῖς νεωτάτοις συλλα-  
 βεῖν κελεύσας ἡγεμόνα ποιεῖται τῆς ὁδοῦ. κακῆτος  
 αὐτοὺς ἄγων περὶ τὸ ὄρος σὺν πολλῷ χρόνῳ καθίστη-  
 σιν ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον τῷ χάρακι λόφον, ὅθεν ἦν 5  
 ταχεῖα καὶ εὐεπίφορος ἐπ' αὐτὸν ὁδός. ἐν ᾧ δὲ ταῦτ'  
 ἐγένετο χρόνῳ, συνῆσαν αἱ τε τῶν Ῥωμαίων καὶ  
 αἱ τῶν Αἰκανῶν δυνάμεις ὁμοῦσε καὶ καταστᾶσαι ἐμά-  
 χοντο, πλήθει τ' ἀγχώμαλοι οὕσαι καὶ ὀπλισμοῖς καὶ  
 προθυμίαν παρεχόμεναι τὴν αὐτήν· καὶ διέμειναν 10  
 ἐπὶ πολὺν χρόνον ἰσόρροποι, τοτὲ μὲν ἐπιβαίνοντες  
 ἀλλήλοις, τοτὲ δ' ὑποχωροῦντες, ἰππεῖς τε ἰππεῦσι  
 1114 καὶ πεζοὶ πεζοῖς, καὶ ἔπεσον ἐξ ἑκατέρων ἄνδρες ἐπι-  
 φανείς. ἔπειτα κρῖσιν λαμβάνει ὁ πόλεμος ἐπιτελῆ.  
 ὁ γὰρ Σίκκιος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ, ἐπειδὴ πλησίον ἐγέ- 15  
 νοντο τῆς παρεμβολῆς τῶν Αἰκανῶν, ἀφύλακτον εὐ-  
 ρόντες ἐκείνο τὸ μέρος τοῦ χάρακος· ἐπὶ γὰρ θάτερα  
 τὰ πρὸς τοὺς μαχομένους ἐστραμμένα μέρη πᾶσα ἡ  
 φυλάττουσα αὐτὸν δύναμις ἐτράπετο κατὰ θεῖον τοῦ  
 ἀγῶνος· ἐπεισπεσόντες κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν κατὰ 20  
 κορυφῆς γίνονται τῶν φυλάκων. ἔπειτα ἀλαλάξαντες  
 ἔθειον ἐπ' αὐτούς· οἱ δ' ὑπὸ τοῦ παρ' ἐλπίδα δεινοῦ  
 ἐκταραχθέντες καὶ οὐ τοσοῦτους εἶναι δόξαντες, ἀλλὰ  
 τὸν ἕτερον ἦκειν ὑπατον ἄγοντα τὴν σὺν αὐτῷ δύνα-  
 μιν, ἐρρίπτουν ἔξω τοῦ χάρακος ἑαυτούς, οὐδὲ τὰ 25  
 ὄπλα οἱ πολλοὶ φυλάξαντες. οἱ δὲ περὶ τὸν Σίκκιον  
 τοὺς καταλαμβανομένους αὐτῶν φονεύοντες καὶ τοῦ  
 χάρακος κρατήσαντες ἐχώρουν ἐπὶ τοὺς ἐν τῷ πεδίῳ.  
 οἱ δὲ Αἰκανοὶ τοῦ χάρακος τὴν ἄλωσιν ἀπὸ τε τῆς  
 φυγῆς καὶ τῆς κραυγῆς τῶν σφετέρων αἰσθόμενοι, 30  
 καὶ μετ' οὐ πολὺ κατὰ νότον σφίσι τοὺς πολεμίους  
 ἐπιόντας ὁρῶντες, οὐκέτι γενναῖον οὐδὲν ἀπεδείξαντο,

ἀλλὰ διασπάρσαντες τὰς τάξεις ἔσωζον ἑαυτοὺς ἄλλοι 2115  
 κατ' ἄλλας ὁδοὺς· ἐνθα ὁ πλείστος αὐτῶν ἐγίνετο  
 φόνος. οὐ γὰρ ἀνέεσαν οἱ Ῥωμαῖοι μέχρι νυκτὸς διώ-  
 5 κωντές τε καὶ κτείνοντες τοὺς ἀλισκομένους. ὁ δὲ  
 πλείστους τ' αὐτῶν διαφθείρας καὶ λαμπρότατα ἔργα  
 ἀποδειξάμενος Σίκκιος ἦν, ὃς ἐπειδὴ τέλος ἑώρα τὰ  
 τῶν πολεμίων ἔχοντα σκότους ὄντος ἤδη, τὴν σπεύ-  
 ραν ἄγων ἐπὶ τὸν κρατηθέντα ὑπὸ σφῶν χάρακα  
 ἀνέστρεφε, μεγάλης χαρᾶς καὶ πολλοῦ μεστός ὢν  
 10 ἀυχήματος. οἱ τε περὶ αὐτὸν ἀθῶοι καὶ ἀβλαβεῖς  
 ἄπαντες, οὐ μόνον οὐδὲν παθόντες ὢν προσεδόκησαν,  
 ἀλλὰ καὶ δοῖξαν ἐπιφανεστάτην ἐξευεργάμενοι, πατέρα  
 καὶ σωτήρα καὶ θεὸν καὶ πάντα τὰ τιμιώτατα ὀνομά-  
 ζοντες, ἀπλήστως εἶχον ἀσπασμῶν τε τοῦ ἀνδρός καὶ 2116  
 15 τῆς ἐκ τῶν ἄλλων φιλοφρονήσεων ἠδονῆς. ἐν δὲ τούτῳ  
 καὶ ἡ ἄλλη τῶν Ῥωμαίων φάλαγξ ἄμει τοῖς ὑπάτοις  
 ἀπὸ τῆς διώξεως ἀνέστρεφεν ἐπὶ τὸν ἑαυτῆς χάρακα.

XXXXVII. Μέσαι τ' ἤδη νύκτες ἦσαν, καὶ ὁ  
 Σίκκιος μνησικακῶν τοῖς ὑπάτοις τῆς ἐπὶ τὸν θάνα-  
 20 του ἀποστολῆς, εἰς νοῦν βάλλεται τὴν δοῖξαν ἀφε-  
 λῆσθαι τοῦ κατορθώματος. κοινωσάμενος δὲ τοῖς ἀμφ'  
 αὐτὸν ἦν εἶχε διάνοιαν, ἐπειδὴ πᾶσιν [ὀρθῶς] ἐφαί-  
 νετο, καὶ οὐθίς ἦν ὃς οὐκ ἐθαύμαζε τῆς τε φρονή-  
 25 σεως καὶ τῆς τόλμης τὸν ἄνδρα, λαβὼν τὰ ὄπλα καὶ  
 τοὺς ἄλλους κελύσας ἀναλαβεῖν, πρῶτον μὲν ἀνθρώ-  
 πους ὄσους ἐν τῷ χάρακι κατέλαβε τῶν Αἰκανῶν καὶ  
 ἵππους καὶ τὰλλα ὑποζύγια κατέκοψεν· ἔπειτα ὑψήψε  
 τὰς σκηρὰς ὀπλων τε καὶ σίτου καὶ ἐσθῆτος καὶ τῶν  
 30 χρημάτων, ὢν ἐκ τῆς Τυσκλάνων λείας ἐπήγοντο  
 πολλῶν πάνυ ὄντων. ὡς δὲ πάντα ὑπὸ τοῦ πυρός  
 ἠφάνιστο, περὶ τὸν ὀρθρον ἀπήει φέρων οὐθέν ὅτι

μὴ τὰ ὄπλα, καὶ διανύσας σπουδῇ τὴν ὁδὸν εἰς Ῥώ-  
 1117 μιν παρῆν. ὡς δ' ὤφθησαν ἄνθρωποι καθωπλισμένοι  
 παιανίζοντές τε καὶ σπουδῇ χωροῦντες καὶ αἵματι  
 πολλῷ πεφυρμένοι, δρόμος ἐγίνετο καὶ πολλή προ-  
 θυμία τῶν βουλομένων ἰδεῖν τ' αὐτοὺς καὶ τὰ πρα- 5  
 χθέντα ἀκοῦσαι. οἱ δὲ μέχρις ἀγορᾶς ἐλθόντες ἐδή-  
 λωσαν τοῖς δημάρχοις τὰ γενόμενα, κάκεινοι συνα-  
 γαγόντες ἐκκλησίαν ἐκέλευον αὐτοὺς πρὸς ἅπαντας  
 λέγειν. ὄχλον δὲ πολλοῦ συναχθέντος, παρελθὼν ὁ  
 Σίκκιος τὴν τε νίκην αὐτοῖς ἐδήλωσε, καὶ τὸν τρόπον 10  
 τοῦ ἀγῶνος ἐνεφάνισε, καὶ ὅτι παρὰ τὴν ἰδίαν ἀρετὴν  
 καὶ τῶν σὺν αὐτῷ προσβυτέρων ἀνδρῶν ὀυτακοσίων,  
 οὓς ἀποθανομένους ἀπέστειλαν οἱ ὑπατοί, ὃ τε χάραξ  
 ὁ τῶν Αἰκανῶν ἐλήφθη καὶ ἡ δύναμις ἡ παραταξα- 15  
 μένη τοῖς ὑπάτοις ἠναγκάσθη φυγεῖν· ἠξίου τε αὐ-  
 τοὺς μηδενὶ τῆς νίκης ἐτέρῳ τὴν χάριν εἰδέσθαι, καὶ  
 20 τελευτῶν ἐτι προσέθηκεν ἐκείνῳ τὸν λόγον, ὅτι τὰς  
 1118 ψυχὰς καὶ τὰ ὄπλα σώζοντες ἤκομεν, ἄλλο δὲ οὐθέν  
 τῶν κεκρατημένων οὔτε μείζον οὔτ' ἔλαττον ἐξευεργ-  
 κάμενοι. ὁ δὲ δῆμος ἀκούσας τὸν λόγον εἰς οἰκτόν 20  
 τε καὶ δάκρυα προῦπεσεν, ὁρῶν μὲν τὰς ἡλικίας τῶν  
 ἀνδρῶν, ἐνθυμούμενος δὲ τὰς ἀρετὰς, ἀγανακτῶν  
 δὲ καὶ νεμεσῶν τοῖς ἐπιβαλομένοις τοιούτων ἀνδρῶν  
 ἐρημῶσαι τὴν πόλιν. ἐργόνει δέ, ὃ προῦλαβεν ὁ  
 Σίκκιος, μῖσος εἰς τοὺς ὑπάτους ἐξ ἀπάντων τῶν 25  
 πολιτῶν. οὐδὲ γὰρ ἡ βουλὴ τὸ πρᾶγμα μετρίως  
 ἠνεργεν, ἢ οὔτ' ἐψηφίσατο αὐτοῖς πομπὴν θριάμβων  
 οὔτε ἄλλο τι τῶν ἐπὶ καλοῖς ἀγῶσι γινομένων. τὸν  
 μάλιστα Σίκκιον ὁ δῆμος, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχ-  
 30 αιεσίων καιρός, δημάρχον ἀπέδειξεν, ἧς κύριος ἦν  
 τιμῆς ἀποδιδούς. καὶ τὰ μὲν ἐπιφανέστατα τῶν τότε  
 πραχθέντων τοιάδ' ἦν.

XXXXVIII. Ἐν δὲ τῷ μετὰ τούτους τοὺς ὑπάτους ἔτει Σπόριος Ταρπήμιος καὶ Ἄυλος Τερμήμιος παραλαμβάνουσι τὴν ἀρχήν· οἱ τὰ τ' ἄλλα θεραπέυοντες τὸν δῆμον διετέλεσαν, καὶ τὸ περὶ τῶν δημ- 2110  
 5 ἀρχῶν δόγμα προεβούλευσαν, ἐπειδὴ πλέον μὲν οὐδὲν ἑώρων τοῖς πατρικίοις γινόμενον ἐκ τοῦ κωλύειν, ἀλλὰ καὶ φθόνου καὶ μίσος, καὶ βλάβας δὲ ἰδίας καὶ συμφορὰς τοῖς προθυμώτατα ὑπὲρ αὐτῶν ἀγωνιζόμενοις. μάλιστα δ' αὐτοὺς εἰς δέος ἤγαγεν ἡ τῶν ὑπα-  
 10 τευσάντων τὸν παρελθόντα ἐναντὶν συμφορὰ νειωστὶ γενομένη, δεινὰ μὲν ὑπὸ τοῦ δήμου παθόντων, οὐδεμίαν δὲ παρὰ τῆς βουλῆς εὐρομένων βοήθειαν. Σίκκιος μὲν γάρ ὁ τὸν Αἰκανῶν στρατὸν αὐτῷ χάρακι ἀράμενος δήμαρχος τότε ἀποδείχθεις, ὥσπερ ἔφην,  
 15 τῇ πρώτῃ τῆς ἀρχῆς ἡμέρᾳ θύσας σωτήρια κατὰ 2120 νόμον, πρὶν ὅτι οὐν ἄλλο διαπράξασθαι τῶν κοινῶν, προεῖπεν ἐν ἐκκλησίᾳ Τίτου Ῥωμίλιον ἦκειν ἀπολογησόμενον ἀδικήματος δημοσίου δίκην ἐπὶ δικαστῇ τῷ δήμῳ, τὸν χρόνον ἀποδείξας τοῦ ἀγῶνος. Δεύκιος δὲ τότε ἀγορανομῶν, δήμαρχος δὲ τῷ παρελθόντι ἔτει γεγονώς, τὸν ἕτερον τῶν περυσινῶν ὑπάτων Γάιον Οὐετούριον εἰς ὁμοίαν δίκην προεκαλέσατο. πολλῆς δὲ γενομένης ἐν τῷ μεταξὺ τοῦ ἀγῶνος χρόνῳ σπουδῆς τε καὶ παρακλήσεως ἀμφοτέρων, οἱ μὲν 25 ὑπόδικοι πολλὰς ἐλπίδας εἶχον ἐπὶ τῇ βουλῇ καὶ τὸ κινδύνημα ἐν ἑλαφρῷ ἐποιούντο, ὑπισχνουμένων αὐτοῖς πρεσβυτέρων τε καὶ νέων οὐκ εἶσεν τὸν ἀγῶνα ἐπιτελεσθῆναι. οἱ δὲ δήμαρχοι πάντα ἐκ πολλοῦ φυλαττόμενοι, καὶ οὔτε δεήσεις οὔτε ἀπειλὰς 30 οὔτε κίνδυνον οὐδένα ὑπολογιζόμενοι, ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ τοῦ ἀγῶνος καιρὸς, ἐκάλουν τὸν δῆμον· ἦν δὲ παλαιότερον ἔτι συνηθηκώς ἐκ τῶν ἀγῶν ὁ χερνή- 2121

της καὶ αὐτουργὸς ὄχλος, καὶ προσνεμηθεὶς τῷ κατὰ πόλιν τὴν τε ἀγορὰν ἐνέπλησε καὶ τοὺς φέροντας εἰς αὐτὴν στενωπούς.

XXXXVIII. Πρώτη μὲν οὖν εἰσῆλθεν ἡ κατὰ Ῥωμίλιου δίκη. καὶ παρελθὼν ὁ Σίκκιος τὰ τε ἄλλα 5 κατηγόρει τοῦ ἀνδρός, ὅσα ὑπατεύων βία εἰς τοὺς δημάρχους ἔδοξε διαπράξασθαι, καὶ τελευτῶν τὴν ἐπιβουλὴν διεξῆει τὴν ἐφ' ἑαυτῷ τε καὶ τῇ σπείρᾳ γενομένην ὑπὸ τοῦ στρατηγῶ· καὶ παρείχετο αὐτῶν μάρτυρας τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν συστρατευσαμέ- 10 νων οὐ δημοτικούς ἀλλὰ καὶ πατρικίους· ἐν οἷς ἦν νεανίας οὐκ ἀφανῆς οὔτε κατὰ γένους ἀξίωσιν οὔτε κατὰ τὴν ἰδίαν ἀρετὴν καὶ τὰ πολέμια πάνν ἀγαθός· Σπόριος Οὐεργίνιος ἦν ὄνομα αὐτῷ. οὗτος ἔφη, Μάρκον Ἰάλλιον, ἐνὸς τῶν ἐκ τῆς Σικκίου σπείρας 15 νίων, ἠλικιωτὴν αὐτοῦ καὶ φίλον ἀπολυθῆναι τῆς ἐξόδου βουληθεὶς, ὡς ἐπὶ θάνατον ἐξιόντα μετὰ τοῦ 2122 πατρός, Ἄυλου Οὐεργίνιον τὸν ἑαυτοῦ θεῖον, πρεσβευτὴν τότε συστρατευόμενον, παρακαλέσας ἐλθεῖν ἐπὶ τοὺς ὑπάτους, ἀξίων σφίσι ταύτην δοθῆναι τὴν 20 χάριν· ἀντιλεγόντων δὲ τῶν ὑπάτων, ἑαυτῷ μὲν ἐπελθεῖν δάκρυα τὴν συμφορὰν τοῦ ἐταίρου προανακλαιόμενῳ, τὸν δὲ νεανίαν, ὑπὲρ οὗ τὰς δεήσεις ἐποιεῖτο, πεπυσμένον ταῦτα ἐλθεῖν καὶ λόγον αἰτησάμενον εἰπεῖν, ὅτι τοῖς μὲν δεομένοις πολλὴν οἶδε 25 χάριν, αὐτὸς δ' οὐκ ἂν ἀγαπήσειεν τυχῶν χάριτος, ἦτις αὐτὸν ἀφελείται τὸ πρὸς τὸ γένος εὐσεβές, οὐδ' ἂν ἀπολειφθεῖν τοῦ πατρός, τοσῶδε μᾶλλον, ὅσῳ γ' ἀποθανούμενος οἴχεται, καὶ πάντες τοῦτο ἴσασιν· ἀλλὰ συνηθῶν ἐπαμνεῖται ὅσα δύναται, καὶ τῆς 30 αὐτῆς ἐκεῖνῳ κοινῶνός ἔσται τύχης. ταῦτα τοῦ μειρακίου μάρτυρῆσαντος, οὐδεὶς ἦν ὃς οὐκ ἐπασχέτι



πρὸς τὴν τύχην τῶν ἀνθρώπων. ὡς δὲ καὶ αὐτοὶ  
 κληθέντες ἐπὶ τὴν μαρτυρίαν παρῆλθον ὃ τε πατήρ 2123  
 Ἰάλλιος καὶ τὸ μειράκιον καὶ τὸ καθ' ἑαυτοὺς ἔλεξαν,  
 οἱ κέτι κατέχειν τὰ δάκρυα οἱ πλείους ἐδύναντο τῶν  
 5 δημοτικῶν. ἀπολογηθέντος δὲ τοῦ Ῥωμιλίου, καὶ  
 διελθόντος λόγου οὗτε θεραπευτικὸν οὔτε ἀρμότιοντα  
 τοῖς καιροῖς, ἀλλ' ὑψηλόν, καὶ ἐπὶ τῷ ἀνυπευδύνῳ  
 τῆς ἀρχῆς μέγα φρονούντος, διπλάσιως ἔτι ἐπερρώ-  
 σθησαν εἰς τὴν κατ' αὐτοῦ ὁργὴν οἱ πολῖται. καὶ  
 10 γενόμενοι τῶν ψήφων κύριοι κατέγνωσαν ἀδικεῖν  
 οὕτως, ὥστε πάσαις ταῖς ψήφοις τῶν φυλῶν ἀλῶναι  
 τὸν ἄνδρα. ἦν δὲ τὸ τίμημα τῆς δίκης ἀργυρικόν,  
 ἀσάβρια μυρία. καὶ τοῦτο οὐκ ἄνευ προνοίας τινὸς  
 ὁ Σίγκιος ποιῆσαι μοι δοκεῖ, ἀλλ' ἵνα τοῖς τε πατρι-  
 15 κίοις ἐλάττων ἢ περὶ τοῦ ἀνδρὸς σπουδὴ γένηται,  
 καὶ μηδὲν ἐξαμάρτασι περὶ τὴν ψηφοφορίαν ἐνθυ-  
 μηθέντες, ὅτι εἰς ἀργύριον ζημιώσεται ὁ ἄλοος καὶ  
 εἰς οὐδὲν ἕτερον, καὶ τοῖς δημοτικοῖς ἢ πρὸς τὴν  
 τιμωρίαν ὁρμὴ προθυμότερα μῆτε ψυχῆς ἄνδρα  
 20 ὑπατικὸν μῆτε πατρίδος ἀποστεροῦσιν. Ῥωμιλίου  
 δὲ καταδικασθέντος οὐ πολλὰς ὕστερον ἡμέρας  
 καὶ Οὐτετύριος ἐάλω· τίμημα δὲ καὶ ἐκεῖνῳ ἐπερέ- 2124  
 γραπτο ἀργυρικόν, ἡμιόλιον θατέρον.

Λ. Ταῦτα δὴ λογιζομένοις τοῖς ἐν ἀρχῇ ὑπάτοις  
 25 πολὺ παρέστη δέος καὶ τοῦ μὴ ταῦτά παθεῖν ὑπὸ  
 τοῦ δήμου μετὰ τὴν ὑπατείαν πρόνοια, ὥστ' οὐκέτι  
 ἀποκρυπτόμενοι τὰς γνώμας, ἀλλὰ φανερώς τὰ τοῦ  
 δήμου πολιτευόμενοι διετέλουν. πρῶτον μὲν οὖν ἐπὶ  
 τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας νόμον ἐκύρωσαν, ἵνα ταῖς  
 30 ἀρχαῖς ἐξῆ πάσαις τοὺς ἀκοσμοῦντας ἢ παρανομοῦν-  
 τας εἰς τὴν ἑαυτῶν ἐξουσίαν ζημιοῦν. τέως γὰρ οὐχ  
 ἄπασι ἐξῆν, ἀλλὰ τοῖς ὑπάτοις μόνοις. τὸ μέντοι

τίμημα οὐκ ἐπὶ τοῖς ζημιούσιν ὅπόσον εἶναι δεῖ  
 κατέλιπον, ἀλλ' αὐτοὶ τὴν ἀξίαν ἄρισαν, μέριστον  
 ἀποδείξαντες ὅρον ζημίας δύο βόας καὶ τριάκοντα  
 10 πρόβατα. καὶ οὗτος ὁ νόμος ἄχρι πολλοῦ διέμεινε  
 ὑπὸ Ῥωμαίων φυλαττόμενος. ἔπειτα περὶ τῶν νόμων, 5  
 οὓς ἐσπούδαζον οἱ δήμαρχοι κοινοὺς ἐπὶ πᾶσι Ῥω-  
 μαίοις γραφῆναι καὶ εἰς ἅπαντα χρόνον φυλαχθησο-  
 μένους, διάγνωσιν ἀπέδωκαν τῇ βουλή. ἐλέχθησαν  
 μὲν οὖν πολλοὶ τε καὶ ὑπὸ τῶν κρατίστων ἀνδρῶν  
 εἰς ἀμφοτέρα καὶ τὸ συγχωρεῖν καὶ τὸ καλύειν φέ- 10  
 ρουτες λόγοι, ἐνίκα δ' ἢ τὰ δημοτικώτερα πρὸ τῶν  
 ὀλιγαρχικῶν εἰσάγουσα Τίτου Ῥωμιλίου γνώμη, παρὰ  
 τὴν ἀπάντων δόξαν τῶν τε πατρικίων καὶ τῶν δημο-  
 τικῶν γενομένη. οἱ μὲν γὰρ ὑπελάμβανον πάντα τὰ  
 ἐναντία τοῖς δημοτικοῖς φρονήσειν τε καὶ λέξειν τὸν 15  
 ἄνδρα νεωστὶ τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην ἐαλωκότα· ὁ  
 δ' ἀναστάς ἐπειδὴ προσῆκεν αὐτῷ γνώμην ἐρωτη-  
 θέντι κατὰ τὴν ἑαυτοῦ τάξιν ἀποκρίνασθαι· ἦν δὲ  
 ἐν τοῖς διὰ μέσου κατὰ τε ἀξίωσιν καὶ ἡλικίαν· 20  
 ἔλεξεν·

ΛΙ. Ἄ μὲν ὑπὸ τοῦ δήμου πέπονθα, ὡ βουλή,  
 2126 καὶ ὅτι οὐδὲν ἀδικῶν, ἀλλὰ τῆς πρὸς ὑμᾶς εὐνοίας  
 ἔνεκα, φορτικὸς ἂν εἴην [ἔγωγε] ἐν εἰδόσιν ὑμῖν  
 ἀκριβῶς λέγων· μνήμην δὲ αὐτῶν ποιῶμαι τοῦ  
 ἀναγκαίου ἔνεκεν, ἵν' εἰδῆτε ὅτι οὐ κολακεία τοῦ δη- 25  
 μοτικοῦ ἐπιτρέψας ἐχθροῦ μοι ὄντος, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ  
 βελτίστου τὰ συμφέροντα ἐρῶ. θαυμάση δὲ μηθεῖς,  
 εἰ πρότερόν τε πολλάκις καὶ ἡνίκα ὑπάτος ἦν τῆς  
 ἐτέρας προαιρέσεως γενόμενος, νῦν ἐξαίφνης μετα-  
 βέβλημαι· μὴδὲ ὑπολάβητε θυεῖν θατέρον, ἢ τότε 30  
 βεβουλευῆσθαι με κακῶς, ἢ νῦν ἀνατίθεσθαι τὰ δόξαντα  
 οὐκ ὁρθῶς. ἐγὼ γάρ, ὡ βουλή, ὅσον μὲν χρόνον τὰ

ὑμέτερα ἰσχυρὰ ἠγούμην, ὥσπερ ἐχρῆν ἀριστοκρατίαν  
 αὐξῶν περιεφρόνουν τὸ δημοτικόν· ἐπεὶ δὲ τοῖς  
 ἑμαυτοῦ σφραγισθεῖς κακοῖς μετὰ μεγάλων μισθῶν  
 ἔμαθον, ὅτι ἔλαττον ὑμῶν ἐστὶ τοῦ βουλομένου τὸ  
 5 δυνάμενον, καὶ πολλοὺς ἤδη τὸν ὑπὲρ ὑμῶν ἀγῶνα 2127  
 αἰρουμένους περιεΐδετε ἀναρπασθέντας ὑπὸ τοῦ δή-  
 μου τοῖς ἀναγκαίοις εἰξαντες, οὐκ ἐθ' ὅμοια ἐγνωκα.  
 ἐβουλόμην δ' ἂν μάλιστα μήτ' ἑμαυτῷ συμβῆναι  
 μήτε τῷ συνάρχοντι μου ταῦτα, ἐφ' οἷς ἅπαντες  
 10 ἡμῖν συμπαθεῖτε. ἐπειδὴ δὲ τὰ μὲν καθ' ἡμᾶς τέλος  
 ἔχει, τὰ δὲ λοιπὰ ἐξεστὶν ἐπαρορθώσασθαι καὶ τοῦ  
 μὴ παθεῖν ταῦτα ἐτέρους προιδέσθαι, καὶ κοινῇ καὶ  
 καθ' ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ τὰ παρόντα εὖ τίθεσθαι παρα-  
 15 ματα μεθαρμοιτομένη, καὶ συμβούλων ἀριστος ὁ  
 μὴ πρὸς τὴν ἰδίαν ἐχθρῶν ἢ χάριν, ἀλλὰ πρὸς τὸ  
 κοινῇ συμφέρον ἀποδεικνύμενος γνώμην· βουλευου-  
 ταί τ' ἀρίστα περὶ τῶν μελλόντων οἱ παραδείγματα  
 20 ποιούμενοι τὰ γεγυῖα τῶν ἰσομένων. ὑμῖν δ', ὧ  
 βουλῇ, ὅσάκις ἐνέστη τις ἀμφισβήτησις καὶ φιλονει-  
 κία πρὸς τὸν δῆμον, αἰεὶ τι μειουεκεῖν ἐξεγένετο,  
 καὶ εἰς ἀνδρῶν ἐπιφανῶν θανάτους τε καὶ ὕβρεις  
 καὶ ἐκβολὰς ζημιωθῆναι. καίτοι τί γένοιτ' ἂν αὐτῶν 2128  
 χημα πόλει μείζον ἢ τοὺς κρατίστους τῶν ἀνδρῶν  
 25 περικόπτεσθαι, καὶ ταῦτα οὐ σὺν δίκῃ; ὧν ὑμῖν φεί-  
 δεσθαι παραινῶ, καὶ μήτε τοὺς νῦν ἀρχοντας προ-  
 βαλόντας εἰς κίνδυνον πρόδηλον, ἔπειτα ἐγκαταλι-  
 πόντας ἐν τοῖς δεινοῖς μετανοεῖν, μήτε τῶν ἄλλων  
 τινά, οὐ τι καὶ μικρὸν ὄφελος τῷ κοινῷ. κεφάλαιον  
 30 δ' ἐστὶν ὧν ὑμῖν παραινῶ, πρέσβεις ἐλέσθαι, τοὺς  
 μὲν εἰς τὰς Ἑλληνίδας πόλεις τὰς ἐν Ἰταλίᾳ, τοὺς δ'  
 εἰς Ἀθήνας· οὔτινες αἰτησάμενοι παρὰ τῶν Ἑλλήνων

τοὺς κρατίστους νόμους καὶ μάλιστα τοῖς ἡμετέροις  
 ἀρμόττοντας βίοις οἴσουσι δεῦρο. ἀφικομένων δ' αὐ-  
 τῶν τοὺς τότε ὑπάτους προθεῖναι τῇ βουλῇ σκοπεῖν,  
 τίνες ἐλέσθαι δεήσει νομοθέτας καὶ ἥτινα ἔχοντας  
 5 ἀρχὴν καὶ χρόνον ὅσον καὶ τάλλα, ὅπως ἂν αὐτῇ φαί- 5  
 νηται συνοῖσειν· στασιάζειν δὲ μηκέτι πρὸς τὸ δημο-  
 τικόν, μηδ' ἄλλας ἐπ' ἄλλαις ἀναιρεῖσθαι συμφορὰς,  
 ἄλλως τε καὶ περὶ νόμων φιλονεικοῦντας, οἳ κἂν εἰ  
 10 μῆθ' ἄλλο τὴν γέ τοι δόξαν τῆς ἀξιώσεως ἔχουσιν  
 εὐπρεπῆ.

LII. Τοιαῦτ' εἰπόντος τοῦ Ῥωμιλίου, οἳ τε ὑπα-  
 τοι συνελαμβάνοντο τῆς γνώμης ἀμφοτέρωι πολλὰ καὶ  
 ἐκ παρασκευῆς συγκείμενα διεξιόντες, καὶ τῶν ἄλλων  
 βουλευτῶν συχνοί, καὶ ἐγένοντο πλείους οἱ ταύτῃ  
 προστιθέμενοι τῇ γνώμῃ. μέλλοντος δὲ γράφεσθαι 15  
 τοῦ προβουλευμάτος, ἀναστὰς ὁ δήμαρχος Σίκκιος ὁ  
 τῷ Ῥωμιλίῳ προθεῖς τὴν δίκην πολὺν ὑπὲρ τοῦ ἀν-  
 δρός διῆλθε λόγον, ἐπαινῶν τὴν μεταβολὴν τῆς γνώ-  
 μης καὶ τὸ μὴ τὰ ἰδία ἐχθρῶν κρείττονα ἠγεῖσθαι τῶν  
 20 κοινῇ χρησίμων, ἀλλ' ἀπ' ὀρθῆς γνώμης τὰ συμφέ- 20  
 ροντα ἀποδείξασθαι· Ἄνθ' ὧν, ἔφη, ταύτην αὐτῷ  
 2130 ἀποδίδωμι τιμὴν καὶ χάριν· ἀφήμι τῶν ἐπισημάτων  
 ἐπὶ τῇ δίκῃ καὶ εἰς τὸ λοιπὸν διαλλάττομαι· νικᾷ  
 γὰρ ἡμᾶς χρηστὸς ὧν. τὸ δ' αὐτὸ καὶ οἱ ἄλλοι δή-  
 25 αργοὶ παριόντες ὁμολόγουν. οὐ μὲν ὅ γε Ῥωμίλιος 25  
 ὑπέμεινε ταύτην λαβεῖν τὴν χάριν· ἀλλ' ἐπαινέσας  
 τοὺς δημάρχους τῆς προθυμίας, ἀποδώσειν ἔφη τὴν  
 καταδίκεν. ἰερῶν γὰρ ἤδη τῶν θεῶν εἶναι, καὶ οὔτε  
 δίκαια οὔτε ὅσια ποιεῖν ἀποστερῶν τοὺς θεοὺς ἃ δί-  
 30 δωσιν αὐτοῖς ὁ νόμος· καὶ ἐποίησεν οὕτως. γραφέν- 30  
 τος δὲ τοῦ προβουλευμάτος, καὶ μετὰ ταῦτ' ἐπικυ-  
 ρώσαντος τοῦ δήμου, πρέσβεις ἀπεδείχθησαν οἱ τοὺς

παρὰ τῶν Ἑλλήνων νόμους ληψόμενοι, Σπόριος  
Ποστόμιος καὶ Σερούιος Σολπίκιος καὶ Ἀύλος Μάλ-  
λιος· οἷς τριήρεις τε παρεσκευάσθησαν ἐκ τοῦ δημο- 211  
σίου καὶ ἄλλος κόσμος εἰς ἐπίδειξιν τῆς ἡγεμονίας  
ἀποχωρῶν. καὶ τὸ ἔτος ἐτελεύτα.

LIII. Ἐπὶ δὲ τῆς ὀγδοηκοστῆς καὶ δευτέρας  
Ὀλυμπιάδος, ἦν ἐνίκα στάδιον Λύκος Θεσσαλὸς ἀπὸ  
Λαρίσης, ἄρχοντας Ἀθήνησι Χαιρεφάνους, ἐτῶν  
τριακοσίων ἐκπεληρωμένων ἀπὸ τοῦ Ῥώμης συννο-  
κισμοῦ, Ποπλίου Ὀρατίου καὶ Σεξτου Κοιντίλιου  
10 διαδεδερμένων τὴν ὑπατοῦ ἀρχήν, λοιμικὴ νόσος εἰς  
τὴν Ῥώμην κατέσκηψε μεγίστη τῶν ἐκ τοῦ προτέ-  
ρου χρόνου μνημονευομένων· ὑφ' ἧς οἱ μὲν θερά-  
ποντες ὀλίγου ἐδέησαν ἅπαντες ἀπολέσθαι, τῶν δ'  
15 ἄλλων πολιτῶν ἀμφὶ τοὺς ἡμίσεις μάλιστα διεφθά-  
ρησαν, οὔτε τῶν ἰατρῶν ἀρκούντων εἰς τὸ βοηθεῖν  
τοῖς καμῆτοις, οὔτ' οἰκείων ἢ φίλων τέναγκαῖα  
ὑπηρετοῦντων. οἱ γὰρ ἐπικουρεῖν ταῖς ἐτέρον βου-  
λόμενοι συμφοραῖς ἀπτόμενοί τε καματηρῶν σωμα-  
20 των καὶ συνδιαιωόμενοι τὰς αὐτὰς ἐκείνοις νόσους  
μετελάμβανον, ὥστε πολλὰς οἰκίας ἐξερημωθῆναι δι'  
ἀπορίαν τῶν ἐπιμελησομένων. ἦν τε οὐκ ἐλάχιστον  
τῶν κακῶν τῇ πόλει καὶ τοῦ μὴ ταχέως λωφῆσαι τὴν 2132  
νόσου αἴτιον τὸ περὶ τὰς ἐκβολὰς τῶν νεκρῶν γινό-  
25 μενον. κατ' ἀρχὰς μὲν γὰρ ὑπὸ τε αἰσχύνης καὶ  
εὐπορίας τῶν πρὸς τὰς ταφὰς ἐπιτηδεῖων ἔκαιόν  
τε καὶ γῆ παρεδίδοσαν τοὺς νεκρούς· τελευτῶντες δὲ  
οἱ μὲν ἀπ' ὀλιγορίας τοῦ καλοῦ, οἱ δὲ τάπιτήδεια  
οὐκ ἔχοντες, πολλοὺς μὲν ἐν τοῖς ὑπονόμοις τῶν στε-  
30 νωπῶν φέροντες ἐρρίπτουν τῶν ἀπογενομένων, πολλῶ  
δ' ἔτι πλείους εἰς τὸν ποταμὸν ἐνέβαλλον· ἀφ' ὧν  
τὰ μέγιστα ἐκακοῦντο. πρὸς τὰς ἀκτὰς καὶ τὰς ἡτόνας

ἐκκυμαιομένων γὰρ τῶν σωμάτων βαρεῖα καὶ δυσ-  
ώδης προσπίπτουσα καὶ τοῖς ἔτι ἐρρωμένοις ἢ τοῦ  
πνεύματος ἀποφορὰ ταχείας ἔφερε τοῖς σώμασι τὰς  
τροπὰς, πίνεσθαι τε οὐκέτι χρηστὸν ἦν τὸ ἐν τοῦ  
1133 ποταμοῦ κομισθῆν ὕδωρ, τὰ μὲν ἀτοπία τῆς ὁσμῆς, 5  
τὰ δὲ τῷ πονηρὰς τὰς ἀναδόσεις ποιεῖν τῆς τροφῆς.  
καὶ οὐ μόνον ἐν τῇ πόλει τὰ δεινὰ ἦν, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ  
τῶν ἀγρῶν· καὶ οὐχ ἥμισυ ὁ γεωργὸς ἐπόνησεν  
ὄχλος ἀναπιμπλάμενος, καὶ προβάτων καὶ τῶν ἄλλων  
τετραπόδων ἅμα διαιωμένων, τῆς νόσου. ὅσον μὲν 10  
οὖν χρόνον τοῖς πολλοῖς ἐλπίδος τι ὑπῆν ὡς τοῦ  
θεοῦ σφίσι ἐπικουρήσοντας, ἅπαντες ἐπὶ τε θυσίας  
καὶ καθαρισμοῦς ἐτρόποντο· καὶ πολλὰ ἐνεωτερίσθη  
Ῥωμαίοις οὐκ ὄντα ἐν ἔθει περὶ τὰς τιμὰς τῶν θεῶν  
ἐπιτηδεύματα οὐκ εὐπρεπῆ. ἐπεὶ δὲ ἐπέγνωσαν οὐ- 15  
δεινὰ αὐτῶν ἐπιστροφῆν ἐκ τοῦ δαιμονίου γινόμε-  
νην οὐδ' ἔλεον, καὶ τῆς περὶ τὰ θεῖα λειτουργίας  
ἀπέστησαν. ἐν ταύτῃ τῇ συμφορᾷ τῶν τε ὑπάτων  
ἄτερος ἀποθνήσκει Σεξτος Κοιντίλιος, καὶ ὁ μετὰ  
20 τοῦτον ἀποδειχθεὶς ὑπατοῦ Σπόριος Φούριος, καὶ 20  
1134 τῶν δημόρων τέτταρες, τῶν τε βουλευτῶν πολλοὶ  
καὶ ἀγαθοί. ἐπαβάλοντο μὲν οὖν ἐν τῇ νόσῳ τῆς  
πόλεως οὔσης στρατὸν ἐξάγειν ἐπ' αὐτοὺς Αἰκανοί,  
καὶ διεπρεσβεύοντο πρὸς τὰ ἄλλα ἔθνη, ὅσα Ῥω-  
μαίοις πολέμια ἦν, παρακαλοῦντες ἐπὶ τὸν πόλεμον. 25  
οὐ μὴν ἔφθασάν γε προαγαγεῖν τὴν δύναμιν ἐκ τῶν  
πόλεων. ἔτι γὰρ αὐτῶν παρασκευαζομένων ἢ αὐτῇ  
νόσος κατέσκηψε εἰς τὰς πόλεις. διήλθε δ' οὐ μόν-  
ον τὴν Αἰκανῶν, ἀλλὰ καὶ τὴν Οὐολούσκων καὶ τὴν  
Σαβίνων γῆν, καὶ σφόδρα ἐκάκωσε τοὺς ἀνθρώπους. 30  
ἐκ δὲ τούτου συνέβη καὶ τὴν χώραν ἀγεώργητον  
ἀφθεῖσθαι λιμὸν ἐπὶ τῷ λοιμῷ συνάψαι. ἐπὶ μὲν δὴ

τούτων τῶν ὑπάτων οὐδὲν ἐπράχθη Ῥωμαίοις διὰ τὰς νόσους οὔτε πολεμικὸν οὔτε πολιτικὸν εἰς ἱστορίας ἀφήγησιν ἔλθειν ἄξιον.

LIII. Εἰς δὲ τοῦτιον ἔτος ὑπάτοι μὲν ἀπέδει-  
 5 χθησαν Λεύκιος Μενήμιος καὶ Πόπλιος Σήστιος· ἡ δὲ νόσος εἰς τέλος ἐλώφησε. καὶ μετὰ τοῦτο θυσίαι 211  
 τε χαριστήριοι θεοῖς ἐπετελοῦντο δημοσίαι, καὶ ἀγῶ-  
 νες ἐπιφανεῖς λαμπραῖς πάνυ χρηροῦμενοι δα-  
 πάταις, ἐν εὐπαθείαις τε καὶ θαλάαις ἡ πόλις ἦν  
 10 ὡσπερ εἰκός· καὶ πᾶς ὁ χειμέριος χρόνος ἀμφὶ ταῦτα  
 ἐδαπανήθη. ἀρχομένου δ' ἔαρος σίτος τε πολὺς [καὶ]  
 ἐκ πολλῶν κατήχθη χωρίων, ὁ μὲν πλείων δημοσία  
 συνωνηθεῖς, ὁ δὲ τις καὶ ὑπὸ ἰδιωτῶν ἐμπόρων κομι-  
 ζόμενος. ἔκαμνε γάρ οὐχ ἡμισία ἐπὶ τῇ σπάνει τῆς  
 15 τροφῆς ὁ λαός, χέρσου τῆς γῆς ἀφαιμένης διὰ τὰς  
 νόσους καὶ τὸν ὄλεθρον τῶν γεωργῶν. ἐν δὲ τῷ  
 αὐτῷ καιρῷ παρεγέροντο ἀπὸ τ' Ἀθηρῶν καὶ τῶν ἐν  
 Ἰταλοῖς Ἑλληνίδων πόλεον οἱ πρέσβεις φέροντες τοὺς  
 νόμους. καὶ μετὰ τοῦτο προσήεσαν οἱ δήμαρχοι τοῖς  
 20 ὑπάτοις, ἀξιούντες ἀποδείξαι κατὰ τὸ ψήφισμα τῆς  
 βουλῆς τοὺς νομοθέτας. οἱ δ' οὐκ ἔχοντες, ὅτῳ ἂν  
 αὐτοὺς ἀπαλλάξειαν τρόπῳ προσκαθημένους καὶ λι-  
 παροῦντας, ἀχθόμενοι τῷ πράγματι καὶ οὐκ ἀξιούν- 2130  
 25 τες ἐπὶ τῆς αὐτῶν ἀρχῆς καταλύσαι τὴν ἀριστοκρα-  
 τίαν, πρόφασιν εὐπρεπῆ προῦβάλλοντο, λέγοντες ἐν  
 χερσὶν εἶναι τὸν τῶν ἀρχαιρεσιῶν καιρὸν, καὶ δεῖν  
 αὐτοὺς ὑπάτους πρώτον ἀποδείξαι· ποιήσῃν δὲ τοῦτ'  
 οὐκ εἰς μακρὰν. ἀποδειχθέντων δὲ τῶν ὑπάτων μετ'  
 30 ἐκείνων ἔλεγον ἀνοίσειν τῷ συνεδρίῳ τὴν περὶ τῶν  
 νομοθετῶν διάγνωσιν. συγχωρούμενων δὲ τῶν δημ-  
 ἀρχων, προθέντες ἀρχαιρεσία πολλῷ τάχιον ἢ τοῖς  
 προτέροις ἔθος ἦν, ὑπάτους ἀπέδειξαν Ἄππιον Κλαύ-

διον καὶ Τίτον Γενύμιον, καὶ μετὰ τοῦτο πᾶσαν ἀπο-  
 θέμενοι τὴν περὶ τῶν κοινῶν φροντίδα, ὡς ἑτέροις  
 ἤδη δέον ὑπὲρ αὐτῶν σκοπεῖν, οὐδὲν ἐτι τοῖς δημ-  
 ἀρχοῖς προσεῖχον, ἀλλὰ διακλέψαι τὸν λοιπὸν χρό-  
 νον τῆς ὑπατείας διενουῶντο. ἔτυχε δὲ τὸν ἕτερον 5  
 1187 αὐτῶν Μενήμιον ἀρρωστία τις καταλαβοῦσα χρόνιος.  
 ἤδη δὲ τινες ἔφασαν ὑπὸ λύπης καὶ ἀθυμίας ἐμπε-  
 σοῦσαν τῷ ἀνδρὶ τηκεδῶνα δυσπαλάλλαντον ἐργάσα-  
 σθαι νόσον. ταύτην δὲ προσλαβὼν τὴν πρόφασιν ὁ  
 Σήστιος, ὡς οὐδὲν οἴος τ' ὦν πράττειν μόνος, ἀπεα- 10  
 θεῖτο τὰς τῶν δημάρχων δεήσεις καὶ πρὸς τοὺς νέους  
 ἄρχοντας ἠξίου τρέπεσθαι. οἱ δ' οὐκ ἔχοντες ὅ τι  
 πράττουσιν ἕτερον ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Ἄππιον οὐπω  
 τὴν ἐξουσίαν παρελιηφότας ἠναγκαζέοντο καταφεύγειν,  
 τὰ μὲν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις δεόμενοι, τὰ δὲ καταμόνας 15  
 συντυγχάνοντες· καὶ τέλος ἐξεργάσαντο τοὺς ἀνδρας,  
 μεγάλας ὑποτείνοντες ἐλπίδας αὐτοῖς εἰ τὰ τοῦ δή-  
 μου πράγματα ἔλαιντο τιμῆς καὶ δυναστείας. εἰσῆλθε  
 γάρ τις τὸν Ἄππιον ἐπιθυμία ξένη νέαν ἀρχὴν περι-  
 βάλεσθαι, καὶ εὐρήνης, καὶ τοῦ μίαν ἅπαντας ἡγεῖ-  
 20 σθαι τὴν πόλιν ἄρξει τοῖς συμπολιτενομένοις. οὐ μὲν-  
 1188 τοι καὶ διέμεινέ γε χρηστὸς ἀρχῇ κοσμηθεὶς μεγάλη,  
 ἀλλ' ἐξέπεσε τελευτῶν εἰς φιλαρχίαν ἀπαραχώρητον  
 ὑπὸ μεγέθους ἐξουσίας διαφθαρεῖς, καὶ ὀλίγου ἐδέη- 25  
 σαν ἐπὶ τυραννίδα ἐλάσαι. περὶ ὧν κατὰ τὸν οἰκείον  
 διαλέξομαι καιρὸν.

LV. Τότε δ' οὐν ἀπὸ τοῦ κρατίστου ταῦτα βου-  
 λευσάμενος καὶ τὸν συνάρχοντα πείσας, ἐπειδὴ πολ-  
 λάκις αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν ἐκάλεσαν οἱ δήμαρ- 30  
 χοι, παρελθὼν πολλοὺς καὶ φιλανθρώπους διεξῆλθε  
 λόγους· κεφάλαια δ' αὐτοῦ τῆς δημηγορίας τοιάδε

ἦν, ὅτι τὸ μὲν ἀποδειχθῆναι τοὺς νόμους καὶ παύ-  
 σασθαι στασιάζοντας τοὺς πολίτας ὑπὲρ τῶν ἴσων  
 αὐτῶ τε καὶ τῷ συνάροχοντι παντὸς μάλιστα δοκεῖ,  
 καὶ ἀποφαίνονται γνώμην φανεράν· τοῦ δ' ἀπο-  
 5 δεῖξαι τοὺς νομοθέτας αὐτοὶ μὲν οὐδεμίαν ἔχουσιν  
 ἐξουσίαν οὐπω παρεληφότες τὴν ἀρχήν, τοῖς δὲ περὶ  
 Μενήμιον ὑπάτοις οὐχ ὅπως ἐναντιώσονται πρῶ-  
 τουσι τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ, ἀλλὰ καὶ συνερογήσουσι  
 καὶ πολλὴν εἰσονται χάριν. ἐὰν δ' ἀναδύωνται σκῆ-  
 10 ψιν προβαλλόμενοι τὴν νέαν ἀρχήν, ὡς οὐκ ἐξὸν αὐ- 2130  
 τοῖς ἑτέροις ἀρχοντας ὑπατικὴν ἐξουσίαν παραλη-  
 ψομένους ἀποδεικνύειν ἡμῶν ἤδη κενυρωμένων  
 ὑπᾶτων, οὐδὲν ἐμποδῶν αὐτοῖς τὸ καθ' ἑαυτοὺς  
 ἔσεσθαι. ἐκόντες γὰρ ἀποστήσεσθαι τῆς ὑπατείας  
 15 τοῖς ἀνθ' αὐτῶν αἰρεθησομένοις, ἐὰν καὶ τῇ βουλῇ  
 ταῦτα δοκῇ. ἐπαινοῦντος δὲ τοῦ δήμου τὴν προθυ-  
 μίαν τῶν ἀνδρῶν, καὶ πάντων κατὰ πλήθος ἐπὶ  
 τὸ συνέδριον ὄσαμένων, ἀναγκασθεὶς ὁ Σήστιος  
 τὴν βουλήν συναγαγεῖν μόνος, ἐπειδὴ ὁ Μενήμιος  
 20 ἀδύνατος ἦν παρῆναι διὰ τὴν νόσον, προὔθηκεν  
 ὑπὲρ τῶν νόμων λέγειν. ἐλέχθησαν μὲν οὖν καὶ  
 τότε πολλοὶ ὑπ' ἀμφοτέρων λόγοι, τῶν τε παραι-  
 νούντων κατὰ νόμους πολιτεύεσθαι, καὶ τῶν ἀξιούν-  
 των τοὺς πατέρας φυλάττειν ἐθισμούς. ἐνίκα δὲ ἢ  
 25 τῶν εἰς νέωτα μελλόντων ὑπατεύειν γνώμη, ἦν Ἄπ-  
 πιος Κλαύδιος πρῶτος ἐρωτηθεὶς ἀπεφῆκετο, ἀνδρας 2140  
 αἰρεθῆναι δέκα τοὺς ἐπιφανεστάτους ἐκ τῆς βουλῆς.  
 τούτους δ' ἄρχειν εἰς ἐνιαυτὸν ἀφ' ἧς ἂν ἀποδειχθῶ-  
 σιν ἡμέρας, ἐξουσίαν ἔχοντας ὑπὲρ πάντων τῶν  
 30 κατὰ τὴν πόλιν ἦν εἶχον οἷ τε ὑπατοὶ καὶ ἐτι πρό-  
 τερον οἱ βασιλεῖς, τὰς τ' ἄλλας ἀρχὰς ἀπάσας κατα-  
 λελύσθαι, ἕως ἂν οἱ δέκα τύχωσι τῆς ἀρχῆς. τούτους

δὲ τοὺς ἀνδρας ἐκ τε τῶν πατρίων ἐθῶν καὶ ἐκ τῶν  
 Ἑλληνικῶν νόμων, οὓς ἐκόμισαν οἱ πρόεσβεις, ἐκλε-  
 ξαμένους τὰ κράτιστα καὶ τῇ Ῥωμαίων πόλει πρόσ-  
 φορα νομοθετήσεσθαι. τὰ δὲ γραφέντα ὑπὸ τῶν  
 δέκα ἀνδρῶν, ἐὰν ἢ τε βουλή δοκιμάσῃ καὶ ὁ δῆμος 5  
 ἐπιψηφίσῃ, κύρια εἰς τὸν ἅπαντα εἶναι χρόνον, καὶ  
 τὰς ἀρχὰς, ὅσαι ἂν ὑστερον ἀποδειχθῶσι, κατὰ τού-  
 τους τοὺς νόμους τὰ τε ἰδιωτικὰ συμβόλαια διαιρεῖν  
 καὶ τὰ δημόσια ἐπιτροπεύειν.

2141 LVI. Τοῦτο τὸ δόγμα λαβόντες οἱ δῆμαρχοι 10  
 προῆλθον εἰς τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ἀναγνόντες ἐν τῷ  
 δήμῳ πολλοὺς ἐπαίνους τῆς βουλῆς καὶ τοῦ προθέν-  
 τος τὴν γνώμην Ἀππίου διεξῆλθον. ἐπεὶ δὲ κατέλα-  
 βεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν καιρὸς, ἐκκλησίαν συναγαγόν-  
 τες οἱ δῆμαρχοὶ τοὺς τ' ἀποδειχθέντας ὑπάτους ἤκειν 15  
 ἤξιον ἐμπεδώσοντας τῷ δήμῳ τὰς ὑποσχέσεις, κα-  
 κείνοι παρελθόντες ἐξωμόσαντο τὰς ὑπατείας. τού-  
 τους ὁ δῆμος ἐπαινῶν τε καὶ θαυμάζων διετελεῖ, καὶ  
 ἐπειδὴ τοὺς νομοθέτας ψηφοφορεῖν ἔδει πρῶτους  
 εἴλετο τῶν ἄλλων· καὶ ἀπεδείχθησαν ἐν ἀρχαιρε- 20  
 σίαις ὑπὸ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας Ἀππίος μὲν Κλαύ-  
 διος καὶ Τίτος Γενύκιος, οὓς ἔδει τοῦπιόν ἄρχειν  
 ὑπατεύων, τρεῖς δὲ οἱ κομίσαντες παρὰ τῶν Ἑλλή-  
 νων τοὺς νόμους, Σπόριος Ποστόμιος καὶ Σερούσιος 25  
 Σολπίμιος καὶ Ἀύλος Μάλλιος, εἰς δὲ τῶν ὑπατευ-  
 2142 σάντων τὸν παρελθόντα ἐνιαυτὸν Τίτος Ῥωμίλιος, ὁ  
 τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην Σικκίου κατηγορήσαντος  
 ἀλούς, ἐπειδὴ γνώμης ἐδόκει ἄρξαι δημοτικῆς· ἐκ  
 δὲ τῶν ἄλλων βουλευτῶν Γάιος Ἰούλιος καὶ Τίτος 30  
 Οὐετούριος καὶ Πόπλιος Ὀράτιος, ἅπαντες ὑπατικοί·  
 αἱ δὲ τῶν δημάρχων τε καὶ ἀγορανόμων καὶ ταμιῶν  
 6\*

καὶ εἰ τινες ἦσαν ἄλλαι πατέριοι Ῥωμαίοις ἀρχαὶ κατελύθησαν.

LVII. Τῷ δ' ἐξῆς ἔτει παραλαβόντες οἱ νομοθέται τὰ πράγματα πολιτείας κόσμον τοιούδε τινα καθίστανται· εἰς μὲν αὐτῶν τὰς τε ῥάβδους καὶ τὰ λοιπὰ παράσημα τῆς ὑπατικῆς εἶχεν ἐξουσίας, ὅς βουλήν τε συνεκάλει καὶ δόγματα ἐπεκύρου καὶ τὰλλα ἐπραττεν ὅσα ἡγεμόνι προσῆκεν· οἱ δ' ἄλλοι συστήλλοντες ἐπὶ τὸ δημοτικώτερον τὸ τῆς ἐξουσίας ἐπίφθορον ὀλίγω τινὶ διήλλαττον ὀφθῆναι τῶν πολλῶν· εἴτ' αὐθις ἕτερος αὐτῶν ἐπὶ τὴν ἐξουσίαν καθίστατο, καὶ τοῦτ' ἐκ περινομῆς ἐγένετο παραλλάξ, ἐκάστου τὴν ἡγεμονίαν παραλαμβάνοντος εἰς συγκείμενόν τινα ἡμερῶν ἀριθμόν. ἅπαντες δ' ἐξ ἑωθινοῦ καθεζόμενοι διήτων τὰ τ' ἰδιωτικὰ συμβόλαια καὶ τὰ δημόσια, ὅποσα πρὸς τε ὑπηκόους καὶ συμμαχούς καὶ τοὺς ἐνδοιαστῶς ἀκρωμένους τῆς πόλεως ἐγκλήματα τυγχάνοι γινόμενα, μετὰ πάσης ἀνασκοποῦντες ἕκαστα ἐπιεικειᾶς τε καὶ δικαιοσύνης. ἐδόκει δὲ ἄριστα τὸν ἐνιαυτὸν ἐκείνον ἢ Ῥωμαίων πόλις ὑπὸ τῆς δεκαδαρχίας ἐπιτροπευθῆναι. μάλιστα δ' αὐτῶν ἐπηνεῖτο ἢ τοῦ δημοτικοῦ πρόνοια καὶ πρὸς ἅπαν τὸ βίαιον ὑπὲρ τῶν ἀσθενεστέρων ἀντίταξις· ἐλέχθη τε ὑπὸ πολλῶν, ὡς οὐδὲν ἔτι δεῆσοι δῆμου προστατῶν οὐδὲ τῶν ἄλλων ἀρχείων τῇ πόλει, μιᾶς διοικουμένης ἅπαντα ἡγεμονίας σωφρόνως, ἧς ἀρχηγὸς Ἄππιος εἶναι ἐδόκει. καὶ τὸν ὑπὲρ ὅλης τῆς δεκαδαρχίας ἔπαινον ἐκείνος ἐφέρετο πρὸς τοῦ δήμου. οὐ γὰρ μόνον ἂ μετὰ τῶν ἄλλων ἐπραττεν ἀπὸ τοῦ κρατίστου χρηστότης ἐφερον αὐτῷ δόκησιν, ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον ἂ κατ' ἰδίαν ἐπιτηδεύων διετέλει, κατὰ τ' ἀσπασμούς καὶ προσαγορεύσεις φιλανθρωπῶπως καὶ τὰς ἄλλας

τῶν πενήτων φιλοφρονήσεις. οὗτοι οἱ δέκα ἄνδρες συγγράμψαντες νόμους ἐκ τε τῶν Ἑλληνικῶν νόμων καὶ τῶν παρὰ σφίσι αὐτοῖς ἀρχαίων ἐθισμῶν προὔθηκαν ἐν δέκα δέλτοις τῷ βουλομένῳ σκοπεῖν, δεχόμενοι πᾶσαν ἐπανόρθωσιν ἰδιωτῶν καὶ πρὸς τὴν κοινὴν εὐαρέστησιν ἀπευθύνοντες τὰ γραφέντα. καὶ μέχρι πολλοῦ διετέλεσαν ἐν κοινῷ μετὰ τῶν ἀρίστων ἀνδρῶν συνεδρεύοντες καὶ τὴν ἀκριβεστάτην ποιούμενοι τῆς νομοθεσίας ἐξέτασιν. ἐπειδὴ δ' ἀποχρώντως ἐφαίνετο αὐτοῖς τὰ γραφέντα ἔχειν, πρῶτον μὲν τὴν βουλήν συναγαγόντες, οὐθενὸς ἔτι μεμφομένου τοῖς νόμοις, προβούλευμα περὶ αὐτῶν ἐκύρωσαν. ἔπειτα τὸν δῆμον καλέσαντες εἰς τὴν λοχίτιν ἐκκλησίαν, ἱερομνημόνων τε καὶ οἰωνιστῶν καὶ τῶν ἄλλων ἱερέων παρόντων καὶ τὰ θεῖα ὡς νόμος ἐξηγησάμενων, ἀνέδωκαν τοῖς λόχοις τὰς ψήφους. ἐπικυρώσαντος δὲ καὶ τοῦ δήμου τοὺς νόμους, στήλαις χαλκαῖς ἐγχαράξαντες αὐτοὺς ἐφέξῃς ἔθεσαν ἐν ἀγορᾷ, τὸν ἐπιφανέστατον ἐκλεξάμενοι τόπον. καὶ ἐπειδὴ βραχὺς ὁ τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς χρόνος ὁ λειπόμενος ἦν, συναγαγόντες τοὺς βουλευτὰς προὔθεσαν ὑπὲρ ἀρχαιροεσίων οἷα χρὴ γενέσθαι σκοπεῖν.

LVIII. Πολλῶν δὲ λεχθέντων ἐνίκησεν ἡ γνώμη τῶν παραινούτων δεκαδαρχίαν αὐθις ἀποδείξει τῶν κοινῶν κυρίαν. ἀτελής τε γὰρ ἡ νομοθεσία ἐφαίνετο, ὡς ἂν ἐξ ὀλίγου συντεθεῖσα χρόνον, καὶ ἐπὶ τοῖς ἤδη κικυρωμένοις, ἵνα ἐκόντες τε καὶ ἄκοντες ἐν αὐτοῖς μένοιεν, ἐδόκει δεῖν τινος ἀρχῆς αὐτοκράτορος. τὸ δὲ μάλιστα πείσαν αὐτοὺς προελέσθαι τὴν δεκαδαρχίαν ἦν ἢ τῶν δημάρχων κατάλυσις, ὃ παντὸς μάλιστα ἐβούλοντο. ταῦτα μὲν ἐν κοινῷ σκοποῦμένοις αὐτοῖς ἐδόκει· ἰδίᾳ δὲ οἱ πρωτεύοντες τοῦ συνεδρίου

γνώμην ἐποιοῦντο μεταπορεύεσθαι τὴν ἀρχὴν, δεδιό-  
 τες μὴ ταραχώδεις τινὲς ἄνθρωποι τηλικαύτης ἐξου-  
 σίας λαβόμενοι κακόν τι μέγα ἐργάσονται. ἀγαπητῶς  
 δὲ τοῦ δήμου τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ δεξαμένου καὶ  
 5 μετὰ πλείστης προθυμίας ἐπιψηφίσαντος, αὐτοὶ μὲν  
 οἱ δέκα ἄνδρες προεῖπον τὸν τῶν ἀρχαιρεσίων και-  
 ρόν, μετήεσαν δὲ τὴν ἀρχὴν οἱ ἐντιμώτατοί τε καὶ  
 πρεσβύτατοί τῶν πατρικίων. ἐνθα δὴ πολὺς ὑπὸ 2147  
 πάντων ἐπαινούμενος ἦν ὁ τῆς τότε δεκαδαρχίας ἡγε-  
 10 μῶν Ἀππίος, καὶ πᾶς ὁ δημοτικὸς ὄχλος ἐκείνῳ ἐπὶ  
 τῆς ἀρχῆς ἡξίου κατέχειν, ὡς οὐκ ἄλλου τινὸς ἄμι-  
 νον ἡγησομένου. ὁ δ' ἀναίνεσθαι μὲν προσεποιεῖτο  
 κατ' ἀρχάς, καὶ ἀπολύειν αὐτὸν ἡξίου λειτουργίας  
 καὶ ὀχληρᾶς καὶ ἐπιφθόνου. τελευτῶν δ' ὡς ἐλιπά-  
 15 ρουν αὐτὸν ἅπαντες αὐτὸς τε ὑπέμενε μετιέναι τὴν  
 ἀρχὴν, καὶ τῶν συμπαραγγελλόντων τοὺς ἀρίστους  
 αἰτιασάμενος οὐχ ἡδέως πρὸς ἑαυτὸν ἔχειν διὰ τὸν  
 φθόνον τοῖς ἑαυτοῦ φίλοις συνηγωνίζετο φανερώς.  
 ἀποδείκνυται τε πάλιν ἐν ἀρχαιρεσίαις λοχίτισι νο-  
 20 μοθέτης τὸ δεύτερον· σὺν δ' αὐτῷ Κόιντος μὲν Φά-  
 βιος ὁ καλούμενος Οὐίβολανὸς ὁ τρις ὑπατεύσας,  
 ἀνὴρ ἀνεπίληπτος εἰς τόδε χρόνον γενόμενος περὶ  
 πᾶσαν ἀρετὴν· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων πατρικίων, οὓς  
 ἐκείνος ἠσπάζετο, Μάρκος Κορνήλιος καὶ Μάρκος 2148  
 25 Σέργιος καὶ Λεύκιος Μηνύκιος καὶ Τίτος Ἀντώνιος  
 καὶ Μάνιος Ραβολήιος, ἄνδρες οὐ πάνυ ἐπιφανεῖς·  
 ἐκ δὲ τῶν δημοτικῶν Κόιντος Ποιτέλλιος καὶ Καίσιον  
 Δουέλλιος καὶ Σπόριος Ὀππίος· προσελήφθησαν γὰρ  
 καὶ οὗτοι πρὸς τοῦ Ἀππίου κολακείας ἕνεκα τῶν δη-  
 30 μοτικῶν, διδάσκοντες ὅτι δίκαιόν ἐστι, μίᾳς ἀρχῆς  
 κατὰ πάντων ἀποδεικνυμένης, εἶναι τι καὶ τοῦ δή-  
 μου μέρος ἐν αὐτῇ. εὐδοκιμῶν δ' ἐφ' ἅπασι τού-

τοῖς καὶ δοκῶν κράτιστος εἶναι βασιλέων τε καὶ τῶν  
 2149 κατ' ἐναντιὸν ἡγησαμένων τῆς πόλεως παραλαμβάνει  
 πάλιν τὴν ἀρχὴν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτόν. ταῦτα  
 κατ' ἐκείνην ἐπράχθη τὴν δεκαδαρχίαν ὑπὸ Ῥωμαίων,  
 ἄλλο δ' οὐδὲν ὅ τι καὶ λόγου ἄξιον. 5

LVIII. Ἐν δὲ τῷ κατόπιν ἔτει παραλαβόντες  
 τὴν ὑπατικὴν ἐξουσίαν οἱ σὺν Ἀππίῳ Κλαυδίῳ δέκα  
 ἄνδρες εἰδοῖς ματαῖς ἤγον δὲ τοὺς μῆνας κατὰ σε-  
 λήνην, καὶ συνέπιπτεν εἰς τὰς εἰδοὺς ἡ πανσέληνος·  
 10 πρῶτα μὲν ὄρκια τεμόντες ἀπόρρητα τῷ πλήθει συν-  
 θήκας σφίσιν αὐτοῖς ἔθεντο περὶ μηδενὸς ἀλλήλοις  
 ἐναντιοῦσθαι, ὅ τι δ' ἂν εἰς ἕξ αὐτῶν δικαιοσύνη,  
 τοῦθ' ἅπαντες ἡγείσθαι κύριον, τὴν τ' ἀρχὴν κατέ-  
 ξειν διὰ βίου καὶ μηδένα παρήσειν ἕτερον ἐπὶ τὰ  
 15 πράγματα, ἰσότιμοί τε ἅπαντες ἔσεσθαι καὶ τὴν αὐ-  
 τῶν ἐξείν δυναστείαν, βουλῆς μὲν ἡ δήμου ψηφίσμασι  
 2150 σπανίως καὶ εἰς αὐτὰ τὰναγκαῖα χρῶμενοι, τὰ δὲ  
 πλείστα ἐπὶ τῆς ἑαυτῶν ἐξουσίας ποιούντες. ἐνστά-  
 σης δὲ τῆς ἡμέρας, ἐν ἣ παραλαβεῖν αὐτοὺς ἔδει τὴν  
 ἀρχὴν, τοῖς θεοῖς προθύσαντες ἅ νόμος· ἱερὰν δὲ 20  
 ταύτην ἄγουσι Ῥωμαῖοι τὴν ἡμέραν, καὶ παντὸς μά-  
 λιστα ὀπτεῖνται μὴτ' ἀκούσαι μηδὲν ἀηδὲς ἐν αὐτῇ  
 μὴτ' ἰδεῖν· ἔωθεν εὐθύς ἐξήεσαν οἱ δέκα τὰ παρὰ-  
 σημα τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας ἅπαντες ἐπαγόμενοι. ὁ  
 25 δὲ δήμος, ὡς ἔμαθεν αὐτοὺς οὐκέτι φυλάττοντας τὸ  
 δημοτικὸν ἐκείνο καὶ μέτριον σχῆμα τῆς ἡγεμονίας,  
 οὐδὲ διαμειβομένους τὰ παρὰσημα τῆς βασιλικῆς ἀρ-  
 χῆς ὡς πρότερον, εἰς πολλὴν ἤλθε δυσθυμίαν καὶ  
 κατῆφειαν. ἐφόβουν θ' οἱ προσηρημένοι ταῖς δέ-  
 30 σμαῖς τῶν θάβδων πελέκεις, οὓς ἔφερον οἱ προηγού-  
 μενοι τῶν ἀνδρῶν ἐκάστου δώδεκα ὄντες ἀναστέλ-  
 λοντες ἐκ τῶν στενωπῶν πληγαῖς τὸν ὄχλον, ὃ καὶ

ἐπὶ τῶν βασιλείων ἐγένετο πρότερον. κατελύθη γὰρ  
 εὐθύς τὸ ἔθος τοῦτο μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν μονάρ-  
 χων ὑπ' ἀνδρὸς δημοτικοῦ Ποπλίου Οὐαλερίου τὴν  
 ἐκείνων ἐξουσίαν μεταλαβόντος, ᾧ πάντες οἱ μετ'  
 5 ἐκεῖνον ὑπατοὶ καλοῦ πράγματος δόξαντι ἄρξαι τὰ  
 ὅμοια πράττοντες οὐκέτι ταῖς δέσμασι τῶν ῥάβδων  
 προσήρτων τοὺς πελέκεις, ὅτι μὴ κατὰ τὰς στρατείας  
 καὶ τὰς ἄλλας ἐξόδους τὰς ἐκ τῆς πόλεως. πόλεμον  
 δ' ἐξάγοντες ὑπερόριον ἢ τῶν ὑπηκόων πράγματα  
 10 ἐπισκεπτομένοι, τότε καὶ τοὺς πελέκεις ταῖς ῥάβδοις  
 προσελάμβανον, ἵνα τὸ τῆς ὄψεως φοβερὸν, ὡς κατ'  
 ἐχθρῶν ἢ δούλων γινόμενον, ἥμισυ γένηται τοῖς πο-  
 λίταις ἐπαχθεῖς.

LX. Τοῦτο δὴ θεασαμένοι ἅπασιν, ὃ τῆς βα-  
 15 σιλικῆς ἐξουσίας σημεῖον ἐνομίζετο εἶναι, πολὺ παρ-  
 ευστήκει δέος, ὥσπερ ἔφη, ἀπολωλέκεναι νομίζουσι  
 τὴν ἐλευθερίαν καὶ δέκα βασιλεῖς ἐλομένοις ἀνθ'  
 ἐνός. τοῦτον δὲ τὸν τρόπον καταπληξάμενοι τοὺς 2152  
 ὄχλους οἱ δέκα ἄνδρες, καὶ γινόντες ὅτι δεῖ φόβον τὸ  
 20 λοιπὸν αὐτῶν ἄρχειν, ἐταιρίαν ἕκαστοι συνῆγον ἐπι-  
 λεγόμενοι τοὺς θρασυτάτους τῶν νέων καὶ σφίσι  
 αὐτοῖς ἐπιτηδειοτάτους. τὸ μὲν οὖν ἐκ τῶν ἀπόρων καὶ  
 τῶν ταπεινῶν ταῖς τύχαις τοὺς πλείους φανῆναι τυ-  
 ραννικῆς κόλακας ἐξουσίας, τοῦ κοινοῦ συμφέροντος  
 25 ἀλλάξαμένους τὰς αὐτῶν ὠφελείας, οὔτε παράδοξον  
 οὔτ' ἀνέλπιστον ἦν· τὸ δὲ καὶ ἐκ τῶν πατρικίων  
 εὐρεθῆναι συχνοὺς ἔχοντας τι καὶ ἐπὶ πλούτῳ καὶ  
 ἐπ' εὐγενείᾳ μέγα φρονεῖν τοὺς ὑπομένοντας συγ-  
 καταλύειν τοῖς δεκαδόχοις τὴν τῆς πατρίδος ἐλευ-  
 30 θερίαν, τοῦτο θαυμαστόν ἅπασιν εἶναι ἐδόκει· οὗς  
 ἐκεῖνοι πάσαις κολακεύοντες ἠδοναῖς, ὁπόσαι πε-  
 φύκασιν ἀνθρώπων κρατεῖν, κατὰ πολλὴν ἄδειαν

ἤρχον τῆς πόλεως, βουλὴν μὲν ἢ δῆμον ἐν οὐδεμίᾳ  
 μερίδι τιθέμενοι, πάντων δὲ αὐτοὶ νομοθέται τε καὶ  
 1160 δικασταὶ γινόμενοι, καὶ πολλοὺς μὲν ἀποκτινύντες  
 τῶν πολιτῶν, πολλοὺς δ' ἀφαιρούμενοι τὰς ο' σίας  
 ἀδίκως. ἵνα δ' αὐτοῖς εὐπρεπῶς τὰ γινόμενα ἔχη 5  
 παράνομα καὶ δεινὰ ὄντα, ὡς δὴ σὺν τῷ δικαίῳ  
 πραττόμενα, δικαστήρια ἐφ' ἕκαστῳ χρῆματι ἀπεδί-  
 δosan· ἦσαν δὲ οἱ τε κατηγοροὶ ὑπ' αὐτῶν ἐκείνων  
 ἐκ τῶν συγκατασκευαζόντων τὴν τυραννίδα ὑποπεμ-  
 10 πόμενοι, καὶ τὰ δικαστήρια ἐκ τῶν ἐταίρων ἀποδει-  
 κνύμενα, οἱ διημείβοντο ἀλλήλοις καταχαριζόμενοι  
 τὰς δίκας. πολλὰ δὲ τῶν ἐγκλημάτων καὶ οὐ τὰ ἐλα-  
 χίστου ἄξια ἐφ' ἑαυτῶν οἱ δέκα ἔκρινον, ὥστ' ἠναγ-  
 κάζοντο οἱ μειονεκτοῦντες τῷ δικαίῳ προσνέμειν  
 ἑαυτοὺς ταῖς ἐταιρίαις, ἐπειδὴ τὸ ἀσφαλὲς οὐκ ἐνῆν 15  
 ἄλλως αὐτοῖς ἔχειν, καὶ ἐγένετο σὺν χρόνῳ πλείον  
 τοῦ ὑγιαίνοντος ἐν τῇ πόλει τὸ διεφθαρμένον καὶ  
 νοσοῦν. οὐδὲ γὰρ ἠξίου ἐτι μένειν ἐντὸς τείχους, οἷς  
 1164 τὰ πραττόμενα ὑπὸ τῶν δεκαδόρχων ἀνιαρὰ ἦν, ἀλλὰ  
 ἀνεχώρου ἐῖς τοὺς ἀγροὺς τὸν τῶν ἀρχαιρεσίων 20  
 σκοποῦντες χρόνον, ὡς ἀποθησομένων τῶν δέκα ἀν-  
 δρῶν τὰς δυναστείας, ὅταν τὸν ἐνιαύσιον ἐκτελέσωσι  
 χρόνον, καὶ ἀποδειξόντων ἑτέρας ἀρχάς. οἱ δὲ περὶ  
 τὸν Ἄππιον τοὺς λοιποὺς συγγράψαντες νόμους ἐν  
 25 δέλτοις δυσί, καὶ ταύτας ταῖς πρότερον ἐξενεχθεῖ-  
 σαις προσέθηκαν· ἐν αἷς καὶ ὅδε ὁ νόμος ἦν, μὴ  
 ἐξεῖναι τοῖς πατρικίοις πρὸς τοὺς δημοτικούς ἐπιγα-  
 μίας συνάψαι· δι' οὐδὲν ὡς ἐμοὶ δοκεῖν ἕτερον, ἢ τὸ  
 μὴ συνελθεῖν εἰς ὁμόνοιαν τὰ ἔθνη γάμων ἐπαλλα-  
 γαῖς καὶ οἰκειότητων κοινωνίαις συγκερασθέντα. ὡς 30  
 δὲ καὶ ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπέστη χρόνος, πολλὰ χαί-  
 ριν φράσαντες τοῖς τε πατρίοις ἐθισμοῖς καὶ τοῖς



νεωστὶ γραφείσι νόμοις, οὔτε βουλῆς ψήφισμα ποιήσαντες οὔτε δήμου διέμειναν ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀρχῆς.

[LXI. Μετὰ δὲ τοῦτου τὸν ἐνιαυτὸν Ὀλυμπίας μὲν ἦν ὀγδοηκοστὴ καὶ τρίτη, ἦν ἐνίκα στάδιον Κρί- 2100  
5 σων Ἰμεραῖος, ἄρχοντας Ἀθήνησι Φιλίσκου, τὴν δὲ ὑπατικὴν ἐξουσίαν ἐν Ῥώμῃ κατεῖχεν Ἄππιος μὲν Κλαύδιος τρίτον ἔτος ἡγούμενος τῆς δεκαδαρχίας κατὰ τὸ ἐξῆς, οἱ δὲ σὺν αὐτῷ τὸν παρελθόντα ἐνιαυτὸν ἄρχαντες δεύτερον ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἐξουσίας  
10 μένοντες.]

## ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΛΑΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΝΔΕΚΑΤΟΣ.

1156 Ἐπὶ δὲ τῆς ὀγδοηκοστῆς καὶ τρίτης Ὀλυμπιάδος, 5 ἦν ἐνίκα στάδιον Κρίσων Ἰμεραῖος, ἄρχοντας Ἀθήνησι Φιλίσκου καταλύουσι Ῥωμαῖοι τὴν τῶν δέκα ἀρχὴν ἔτη τρία τῶν κοινῶν ἐπιμεληθεῖσαν. ὃν δὲ τρόπον ἐπεχείρησαν ἐξοριζομένην ἤδη τὴν δυναστείαν ἐξελεῖν, καὶ τίνων ἀνδρῶν ἡγησαμένων τῆς ἐλευθε- 10 ρίας, καὶ διὰ ποίας αἰτίας καὶ προφάσεις, ἐξ ἀρχῆς ἀναλαβὼν πειράσομαι διελεῖν, ἀναγκαίας ὑπολαμβάνων εἶναι καὶ καλὰς τὰς τοιαύτας μαθήσεις ἅπασιν μὲν ὡς εἶπεῖν ἀνθρώποις, μάλιστα δὲ ὅσοι περὶ τὴν φιλόσοφον θεωρίαν καὶ περὶ τὰς πολιτικὰς διατρο- 15 βουσι πράξεις. τοῖς τε γὰρ πολλοῖς οὐκ ἀπαρκεῖ τούτο μόνον ἐκ τῆς ἱστορίας παραλαβεῖν, ὅτι τὸν Περσικὸν πόλεμον ἔν' ἐπὶ τούτου ποιήσωμαι τὸν λόγον· ἐνίκησαν Ἀθηναῖοι τε καὶ Λακεδαιμόνιοι δυσὶ ναυμαχίαις καὶ πεζομαχίᾳ μίᾳ καταγωνισάμενοι τὸν 20 βάσβαρον τριακοσίας ἄγοντα μυριάδας αὐτοὶ σὺν τοῖς συμμάχοις οὐ πλείους ὄντες ἑνδεκα μυριάδων· ἀλλὰ καὶ τοὺς τόπους, ἐν οἷς αἱ πράξεις ἐγένοντο, βούλονται παρὰ τῆς ἱστορίας μαθεῖν, καὶ τὰς αἰτίας

ἀκούσῃ, δι' ἧς τὰ θαυμαστά καὶ παράδοξα ἔργα ἐπέ-  
τέλεσαν, καὶ τίνες ἦσαν οἱ τῶν στρατοπέδων ἡγεμό-  
νες τῶν τε βαρβαρικῶν καὶ τῶν Ἑλληνικῶν ἱστορη-  
σαι, καὶ μηδενὸς ὡς εἰπεῖν ἀνήκοοι γενέσθαι τῶν  
5 συντελεσθέντων περὶ τοὺς ἀγῶνας. ἦδεται γὰρ ἡ  
διάνοια παντὸς ἀνθρώπου χειραγωγομένη διὰ τῶν  
λόγων ἐπὶ τὰ ἔργα, καὶ μὴ μόνον ἀκούουσα τῶν λε-  
γομένων, ἀλλὰ καὶ τὰ πραττόμενα ὁρῶσα. οὐδέ γε  
ὅταν πολιτικὰς ἀκούσῃσι πράξεις ἀκούονται τὸ κε-  
10 φάλαιον αὐτὸ καὶ τὸ πέρας τῶν πραγμάτων μαθόντες,  
ὅτι συνεχώρησαν Ἀθηναῖοι Λακεδαιμονίοις τελεῖν τε  
καθελεῖν τῆς πόλεως αὐτῶν καὶ ναῦς διατεμεῖν καὶ  
φρουρὰν εἰς τὴν ἀκρόπολιν εἰσαγαγεῖν, καὶ ἀντὶ τῆς  
πατρίου δημοκρατίας ὀλιγαρχίαν τῶν κοινῶν ἀπο-  
15 δεῖξαι κυρίαν . . . οὔτε πρὸς αὐτοὺς ἀγῶνα ἀρά-  
μενοι, ἀλλ' εὐθύς ἀξιούσι καὶ τίνες ἦσαν αἱ κατα-  
σχοῦσαι τὴν πόλιν ἀνάγκαι, δι' ἧς ταῦτα τὰ δεινὰ καὶ  
σχέτλια ὑπέμεινε, καὶ τίνες οἱ πείσαντες αὐτοὺς λό-  
γοι καὶ ὑπὸ τίνων φηθέντες ἀνδρῶν, καὶ πάντα ὅσα  
20 παρακολουθεῖ τοῖς πράγμασι, διδαχθῆναι. τοῖς δὲ  
πολιτικοῖς ἀνδράσιν, ἐν οἷς ἔργωγε τίθεμαι καὶ τοὺς  
φιλοσόφους, ὅσοι μὴ λόγων ἀλλ' ἔργων καλῶν ἄσκη-  
σιν ἡγοῦνται τὴν φιλοσοφίαν, τὸ μὲν ἦδεδῆσαι τῇ  
παντελεῖ θεωρίᾳ τῶν παρακολουθούτων τοῖς πράγ-  
25 μασι κοινὸν ὥσπερ καὶ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ὑπάρχει·  
χωρὶς δὲ τῆς ἡδονῆς περιγίγνεται τὸ περὶ τοὺς ἀναγ-  
καίους καιροὺς μεγάλα τὰς πόλεις ἐκ τῆς τοιαύτης  
ἐμπειρίας ὠφελεῖν, καὶ ἄγειν αὐτὰς ἐκούσας ἐπὶ τὰ  
30 συμφέροντα διὰ τοῦ λόγου. ἤραστα γὰρ οἱ ἄνθρωποι  
τά τε ὠφελοῦντα καὶ βλάπτοντα καταμανθάνουσιν,  
ὅταν ἐπὶ παραδειγμάτων ταῦτα πολλῶν ὁρῶσι, καὶ  
τοῖς ἐπὶ ταῦτα παρακαλοῦσιν αὐτοὺς φρόνησιν

μαρτυροῦσι καὶ πολλὴν σοφίαν. διὰ ταύτας δὲ μοι  
τὰς αἰτίας ἐδοξεν ἅπαντα ἀκριβῶς διελθεῖν τὰ γενό-  
μενα περὶ τὴν κατάλυσιν τῆς ὀλιγαρχίας, ὅσα δὲ καὶ  
λόγου τυχεῖν ἄξια ἡγοῦμαι. ποιήσομαι δὲ τὸν περὶ  
αὐτῶν λόγον οὐκ ἀπὸ τῶν τελευταίων ἀρχάμενος, ἀ  
5 δοκεῖ τοῖς πολλοῖς αἰτία γενέσθαι μόνη τῆς ἐλευθε-  
ρίας, λέγω δὲ τῶν περὶ τὴν παρθένου ἀμαρτηθέντων  
Ἀππίω διὰ τὸν ἔρωτα· προσθήκη γὰρ αὕτη γε καὶ  
τελευταία τῆς ὀργῆς τῶν δημοτῶν αἰτία, μυρίων  
ἄλλων προηγησαμένων· ἀλλ' ἀφ' ὧν ἤρξατο πρῶτον  
10 ἡ πόλις ὑπὸ τῆς δεκαδαρχίας ὑβρίζεσθαι. ταῦτα  
πρῶτον ἔρω καὶ διεξιμι πάσας ἐφεξῆς τὰς ἐν τῇ  
τότε καταστάσει γενηθείσας παρανομίας.

110 II. Πρώτη μὲν οὖν ἦν ἡ δόξα γενέσθαι τοῦ  
κατὰ τῆς ὀλιγαρχίας μίσους πρόφασις, ὅτι συνήφηναν  
15 τὴν δευτέραν ἀρχὴν τῇ προτέρᾳ δήμου τε ὑπεριδόντες  
καὶ βουλῆς καταφρονήσαντες· ἔπειθ' ὅτι τοὺς χαριε-  
στάτους Ῥωμαίων, οἷς οὐ κατὰ γνώμην τὰ πραττό-  
μενα ὑπ' αὐτῶν ἦν, οὓς μὲν ἐξήλανον ἐκ τῆς πό-  
λεως αἰτίας ἐπιφέροντες ψευδεῖς καὶ δεινὰς, οὓς δὲ  
20 ἀπεκτίλνυσαν, κατηγοροῦς τ' αὐτοῖς ὑποπέμποντες  
ἐκ τῶν ἰδίων ἐταίρων καὶ τὰς δίκας ταύτας αὐτοὶ  
δικάζοντες· μάλιστα δ' ὅτι τοῖς θρασυτάτοις τῶν  
νέων, οὓς εἶχον ἕκαστοι περὶ αὐτοὺς, ἐφῆκαν ἄγειν  
καὶ φέρειν τὰ τῶν ἐναντιουμένων τῇ πολιτείᾳ. οἱ δ'  
25 ὥσπερ ἀλούσης πολέμῳ κατὰ κράτος τῆς πατρίδος οὐ  
τὰ χρήματα μόνον ἀφηροῦντο τοὺς νόμους κτησαμέ-  
νους, ἀλλὰ καὶ εἰς τὰς γαμετὰς αὐτῶν τὰς εὐμόρ-  
φους παρηγόμουν, καὶ εἰς θυγατέρας ἐπιγάμους καθ-  
30 ὕβριζον, καὶ πληγὰς τοῖς ἀγανακτοῦσιν ὥσπερ  
ἀνδραπόδοις ἐδίδοσαν· καὶ παρεσκεύασαν ὅσοις ἀπό-  
ρητα εἶναι τὰ γινόμενα ἐδόκει καταλιπόντας τὴν πα-

τριῖδα γυναιξίν ὁμοῦ καὶ τέκνοις εἰς τὰς πλησίον ἐξο-  
 κίεσθαι πόλεις, ὑποδεχομένους αὐτοὺς Λατινῶν μὲν  
 διὰ τὸ συγγενές, Ἑρνίκων δὲ διὰ τὴν ἔναγχος γενο-  
 μένην αὐτοῖς ὑπὸ Ῥωμαίων ἰσοπολιτείαν. ὧσθ' ὅπερ  
 5 εἰκὸς ἦν, τελευτῶντες αὐτοὶ κατελείφθησαν οἱ φιλο-  
 τύρανοι, καὶ οἷς μηδεμίαν κοινῶν φροντίς ἦν. οὔτε  
 γὰρ οἱ γε πατρῷοι διέμενον ἐν τῇ πόλει, θωπεύειν  
 μὲν οὐκ ἀξιοῦντες τοὺς ἡγεμόνας, ἐναντιοῦσθαι δὲ  
 τοῖς πραιτομένοις ἀδυνατοῦντες· οὐθ' οἱ καταγρα-  
 10 φέντες εἰς τὸ βουλευτικὸν συνέδριον, οὓς ἐπάναγκες  
 ἔδει παρεῖναι ταῖς ἀρχαῖς· ἀλλὰ καὶ τούτων οἱ  
 πλείους ἀνασκευασάμενοι πανοικεσία καὶ τὰς οἰκίας  
 ἐρήμους ἀφέντες ἐν τοῖς ἀγροῖς διέτριβον. τοῖς δὲ  
 ὀλιγαρχικοῖς καθ' ἡδονὴν αἱ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀν-  
 15 δρῶν ἐγίνοντο φυγαί, πολλῶν μὲν καὶ ἄλλων ἕνεκα, 21  
 μάλιστα δὲ ὅτι τοῖς ἀκολάστοις τῶν νέων πολὺ τὸ  
 αὐθάδες προσεγίνετο μηδ' ὄψει δυναμένοις ἰδεῖν,  
 οὓς ἐμελλον ἀσελγές τι πράττοντες αἰσχύνεσθαι.

III. Ἐρημουμένης δὲ τοῦ κρείττουτος ἔθρους τῆς  
 20 πόλεως καὶ τὸ ἐλεύθερον ἅπαν ἀπολωλενίας, ἀφορ-  
 μὴν κρατίστην ὑπολαβόντες Αἰκανοὶ πολέμῳ κρατη-  
 θέντες ὑπ' αὐτῆς τάς τε ὕβρεις ἄς ὑβρίσθησαν ἀπο-  
 τίσασθαι καὶ τὰ ἀπολωλότα ἀναλαβεῖν, ὡς νοσοῦσης  
 διὰ τὴν ὀλιγαρχίαν τῆς πόλεως καὶ οὔτε συστῆναι  
 25 οὐθ' ὁμονοῆσαι οὐτ' ἀντιλαβέσθαι τῶν κοινῶν ἐπι-  
 δυννησομένης, παρασκευασάμενοι τὰ πρὸς τὸν πόλε-  
 μον ἐλαύνουσιν ἐπ' αὐτὴν στρατεύμασι μεγάλοις. καὶ  
 κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον Σαβίνοι ἐμβαλόντες εἰς τὴν  
 ὁμοτέρονα καὶ πολλῆς γενόμενοι λείας ἐγκρατεῖς  
 30 φρόναν τε πολὺν ἐργασάμενοι τοῦ γεωργικοῦ πλήθους,  
 ἐν Ἡρήτῳ κατεστρατοπέδευσαν· διέστηκε δ' ἀπὸ τῆς 216  
 Ῥώμης ἡ πόλις αὕτη τετρακόοντα καὶ ἑκατὸν στα-

δίους πλησίον οὔσα Τιβέρεως ποταμοῦ. Αἰκανοὶ δ'  
 εἰς τὴν Τυσκλάνων γῆν ἐμβαλόντες ὁμορον οὔσαν  
 σφίσι, καὶ πολλὰ δηώσαντες αὐτῆς ἐν Ἀλγίδα πόλει  
 τίνονται τὸν χέρακα. ὡς δ' ἤκουσαν οἱ δέκα τὴν  
 τῶν πολεμίων ἐφοδον, τεταραγμένοι συνεκάλου τὰς 5  
 ἑταιρείας, καὶ μετὰ τούτων ὅ τι χρῆ πράττειν ἐσκό-  
 πουν. τὸ μὲν οὖν ὑπερόριον ἀποστέλλειν στρατιάν,  
 καὶ μὴ περιμένειν ἕως ἐπ' αὐτὴν ἔλθῃσι τὴν πόλιν  
 αἱ τῶν πολεμίων δυνάμεις, ἄσασιν ἐδόκει· παρεῖχε  
 δ' αὐτοῖς πολλὴν ἀπορίαν, πρῶτον μὲν εἰ πάντας 10  
 Ῥωμαίους ἐπὶ τὰ ὄπλα ἀκτέον καὶ τοὺς ἀπεχθόμενους  
 τῇ πολιτείᾳ· ἐπειθ' ὁποῖαν τινὰ δεήσει τὴν καταγρα-  
 φὴν τῶν στρατιωτῶν ποιήσασθαι, πότερον ἀνθάδη  
 104 καὶ μισοπόνηρον οἷας ἔθος ἦν ποιεῖσθαι τοῖς τε βασι-  
 λεῦσι καὶ τοῖς ὑπάτοις, ἢ φιλάνθρωπον καὶ μέτριον. 15  
 ἐδόκει τ' αὐτοῖς οὐδ' ἐκεῖνο μικρᾶς εἶναι ζητήσεως  
 ἄξιον, τί τὸ κερῶσον ἔσται τὴν περὶ τοῦ πολέμου  
 γνώμην καὶ τὴν στρατολογίαν ψηφιοῦμενον, πότερα  
 τὸ συνέδριον τῆς βουλῆς, ἢ τὸ δημοτικὸν πλήθος, ἢ  
 τούτων μὲν οὐδέτερον, ἐπεὶ δι' ὑποψίας ἦν αὐτοῖς 20  
 ἐκότερον, αὐτοὶ δὲ σφίσιν αὐτοῖς οἱ δέκα. τέλος δ'  
 ἐκατέρω, καὶ ποιεῖν ὅπως τὸν τε πόλεμον αὐτοῖς ἐκείνη  
 ψηφιεῖται καὶ τὴν τοῦ στρατοῦ καταγραφὴν ἐπιτρέψει  
 ποιήσασθαι. εἰ γὰρ ὑπὸ τοῦ συνεδρίου κερῶθει 25  
 τούτων ἐκότερον, πρῶτον μὲν εὐπειθεῖς ἔσεσθαι  
 πάντας ὑπελάμβανον, ἄλλως τε καὶ τῆς δημορχικῆς  
 ἔξουσίας καταλελυμένης, ἢ μόνῃ κατὰ νόμους ἐξῆν  
 ἐναντιοῦσθαι τοῖς ὑπὸ τῶν δυναστῶν ἐπιταττομένοις·  
 30 ἐπει' αὐτοὶ [εἰ τι] δόξειν ὑπηρετοῦντες τῇ βουλῇ, 30  
 καὶ τὰ κερῶθέντα ὑπ' ἐκείνης πράττοντες κατὰ νό-  
 μους ἀκείληφέναι τὴν ἐξουσίαν τοῦ πολέμου.

III. Ταῦτα βουλευσάμενοι, καὶ παρασκευάσαν- 210  
 τες ἐκ τῶν ἰδίων ἐταίρων καὶ συγγενῶν τοὺς ἀγορευ-  
 σοντας ἐν τῷ συνεδρίῳ τὰς συμφερούσας αὐτοῖς γνώ-  
 5 μαις καὶ τοῖς μὴ ταῦτ' ἀποφαινομένοις ἐναντιωσομέ-  
 νους, προῆλθον εἰς τὴν ἀγορὰν, καὶ παραστησάμενοι  
 τὸν κήρυκα τοὺς βουλευσοντας ἐξ ὀνόματος καλεῖν  
 ἐκέλευον. ὑπήκουε δ' αὐτοῖς τῶν μετρίων οὐδείς.  
 10 πολλὰ μὲν δὲ τοῦ κήρυκος βοᾶντος καὶ παριόντος οὐ-  
 δένος, εἰ μὴ τῶν κολακευόντων τὴν ὀλιγαρχίαν, ἐν  
 οἷς ἦν τὸ κάκιστον τῆς ὀλιγαρχίας μέρος, οἱ μὲν τὸτ'  
 οὔτε κατὰ τὴν ἀγορὰν ἐθαύμαζον, εἰ περὶ μηδενὸς  
 πώποτε συγκαλέσαντες τὴν βουλήν, τότε πρῶτον  
 ἐγνώσαν ὅτι καὶ συνέδριον ἦν τι παρὰ Ῥωμαίους ἀγα-  
 15 θῶν ἀνδρῶν, οὓς εἶδε περὶ τῶν κοινῶν σκοπεῖν. οἱ  
 δὲ αὖτ' ὁρῶντες ἐπεχείρησαν μὲν ἐκ τῶν οἰ-  
 κίων τοὺς βουλευτὰς ἄγειν· πυθόμενοι δὲ τὰς πλείους  
 ἐρήμους ἀφαιμένας εἰς τὴν ὑστεραίαν ἀνεβάλλοντο. ἐν 2160  
 δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ πέμποντες ἐπὶ τοὺς ἀγρούς, ἐκεῖ-  
 θεν αὐτοὺς ἐκάλουν. πληρωθέντος δὲ τοῦ συνεδρίου  
 20 προελθὼν Ἄππιος, ὁ τῆς δεκαδαρχίας ἡγεμῶν, ἀπήγ-  
 γειλεν ὅτι διχόθεν ἀπὸ τε Αἰκανῶν καὶ Σαβίνων  
 ἐπάγεται τῇ Ῥώμῃ πόλεμος· καὶ διεξῆλθε λόγον ἐκ  
 πολλῆς συγκείμενον ἐπιμελείας, οὗ τέλος ἦν, ψηφίσα-  
 25 σθαι στρατοῦ καταγραφὴν καὶ διὰ τάχους ποιῆσαι τὴν  
 ἔξοδον, ὡς οὐ διδόντος ἀναστροφὴν τοῦ καιροῦ. ταῦτα  
 δὲ αὐτοῦ λέγοντος ἀνίσταται Λεύκιος Οὐαλέριος  
 ἐπανυμίαν Ποῦτος, ἀνὴρ μέγα φρονῶν ἐπὶ τοῖς προ-  
 γόνοις· πατήρ μὲν γὰρ αὐτῷ Οὐαλέριος ἦν ὁ τὸν Σα-  
 30 βίνον Ἐρδῶμιον ἐκπολιορκήσας κατέχοντα τὸ Καπε-  
 τῶλιον, καὶ τὸ μὲν φρούριον ἀνακτησάμενος, αὐτὸς  
 δ' ἐκ τῆς μάχης ἀποθανών· πάππος δὲ πρὸς πατρός  
 Ποπλικόλας ὁ τοὺς βασιλεῖς ἐμβελῶν καὶ τὴν ἀριστο-

κρατίαν καταστησάμενος. παριόντα δ' αὐτὸν ἐτι  
 καταμαθὼν Ἄππιος καὶ καθ' ἑαυτὸν τι λέγειν ἐλπί-  
 1107 σας· οὐχ οὗτος ὁ τόπος, εἶπεν, ὦ Οὐαλέριε, σὸς,  
 οὐδὲ πρόσῃ σοι νῦν λέγειν· ἀλλ' ὅταν οἶδε οἱ  
 πρεσβύτεροι καὶ τιμιάτεροί σου γνώμην ἀγορεύσωσι, 5  
 τότε καὶ σὺ κληθεὶς ἔρεῖς ὅ τι σοι δοκεῖ· νῦν δὲ  
 σιωπά καὶ κάθησο. Ἄλλ' οὐχ ὑπὲρ τούτων, ἔφησεν  
 ὁ Οὐαλέριος, ἀνέστηκα ἔρῶν, ἀλλ' ὑπὲρ ἄλλων μει-  
 ζόνων τε καὶ ἀναγκαιοτέρων, ὑπὲρ ὧν οἶμαι δεῖν  
 πρῶτον ἀκούσαι τὴν βουλήν. εἰδονται δ' ἐξ ἂν ἂν 10  
 ἀκούσωσιν οὗτοι, πότρεα ταῦτ' ἐστὶν ἀναγκαιότερα  
 τοῖς κοινοῖς, ὑπὲρ ὧν ὑμεῖς αὐτοὺς συγκεκλήκατε, ἢ  
 τὰ ὑπ' ἐμοῦ λεχθησόμενα. ἀλλὰ μὴ μ' ἀποστέρει  
 λόγου βουλευτὴν ὄντα καὶ Οὐαλέριον καὶ περὶ σωτη-  
 15 ρίας τῆς πόλεως λέγειν βουλόμενον. ἐάν δὲ φυλάττης  
 τὴν συνήθη πρὸς ἅπαντας ἀνθάδειαν, δημάρχους μὲν  
 πόλους ἐπικαλέσομαι, καταλέλνται γὰρ ἢ τῶν κατι-  
 σχομένων πολιτῶν βοήθεια ὑφ' ὑμῶν. καίτοι τίνας  
 ἔλαττον τοῦτο κακόν, ὅτι Οὐαλέριος ὦν Ποῦτος ὡς  
 20 εἰς τῶν ἐλαχίστων οὐκ ἔχω τὸ ἴσον, ἀλλὰ δημαρχί-  
 1108 κῆς ἔξουσίας δέομαι, οὐ μὴν ἀλλ' ἐπεὶ τῆς ἀρχῆς  
 ἐκεῖνης ἀπεστερήμεθα, ὑμᾶς τοὺς ἅμα τούτῳ παρει-  
 ληφότες καὶ τὴν ἐκεῖνης ἔξουσίαν τῆς ἀρχῆς καὶ δυ-  
 ναστεύοντας τῆς πόλεως ἅπαντας καλῶ· καὶ οὐκ  
 ἀγνοῶ μὲν, ὅτι διὰ κενῆς τοῦτο ποιῶ, φανερὰν δὲ 25  
 βούλομαι πᾶσι γενέσθαι τὴν συνωμοσίαν ὑμῶν, ὅτι  
 συγκεκλήκατε τὰ τῆς πόλεως καὶ μίαν ἅπαντες γνώ-  
 μην ἔχετε· μᾶλλον δὲ σὲ μόνον ἐπικαλοῦμαι, Κόιντε  
 Φάβιε Οὐίβολανέ, τὸν ἐπὶ ταῖς τρισὶν ὑπατείαις κο-  
 σμούμενον, εἰ τὸν αὐτὸν νοῦν ἐτι ἔχεις. ἀλλ' ἀνίστασο 30  
 καὶ βοήθει τοῖς κατισχομένοις· εἰς σὲ γὰρ ἀποβλέ-  
 πει τὸ συνέδριον.

V. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπεν [Λεύκιος Οὐαλέριος,] ὁ Φάβιος ἐκάθητο ὑπ' αἰσχύνῃς οὐδὲν ἀποκρινόμενος, Ἄππιος δὲ καὶ οἱ λοιποὶ δέκα πάντες ἀναπηδήσαντες ἐκάλουν αὐτὸν λέγειν. Θορύβου δὲ πολλοῦ κατα-  
 5 σχύοντος τὸ συνέδριον, καὶ τῶν μὲν πλείστων ἀγανα-  
 κούτων, τῶν δ' ἐκ τῆς ἑταιρείας αὐτοὺς λέγειν ὀρθῶς ἠγουμένων, ἀνίσταται Μάρκος Ὀρατίος ὁ Βαρ-  
 βάτος ἐπικληθεὶς ἀπόγονος Ὀρατίου τοῦ συνυπατεύ-  
 10 λην τῶν βασιλέων, ἀνῆρ καὶ τὰ πολεμικὰ δεινὸς καὶ  
 λέγειν οὐκ ἀδύνατος, Οὐαλερίῳ δ' ἐκ παλαιοῦ φίλος·  
 ὅς οὐκέτι κατασχῶν τὴν χολὴν ἔφησε· Θάττον μ'  
 ἀναγκάσετε, Ἄππιε, τοὺς χαλινοὺς διαρρήξαι, οὐκέτι  
 15 νοί, οἳ γ' οὐδὲ λόγου τυχεῖν ἔατε τοὺς περὶ σωτηρίας  
 τῶν κοινῶν βουλομένους λέγειν. πότερον ὑμῶν ἔξε-  
 λήλυθεν ἐκ τῆς διανοίας, ὅτι σώζονται μὲν οἱ Οὐαλε-  
 ρίαν ἀπόγονοι τῶν ἐξελασάντων τὴν τυραννίδα, λεί-  
 20 πεται δὲ διαδοχὴ τῆς Ὀρατίων οἰκίας, οἷς πατριῶν  
 ἔστιν ὁμοίε χωρεῖν τοῖς καταδουλουμένοις τὴν πα-  
 τριδα καὶ μετὰ τῶν ἄλλων καὶ μόνοις; ἢ τοσαύτην  
 κατεγνώκατε καὶ ἡμῶν καὶ τῶν ἄλλων Ῥωμαίων  
 ἀναστροφῆν, ὥστ' ἀγαπήσειν ἕάν τις ἐᾷ ξὴν ἡμᾶς  
 25 ὁπωσδήποτε, ὑπὲρ ἐλευθερίας δὲ καὶ παροησίας μὴτ'  
 ἐρεῖν μῆτε πράξειν μηθέν; ἢ μεθύετε τῷ μεγέθει  
 τῆς ἐξουσίας; ὑμεῖς Οὐαλερίου λόγον ἀφελείσθε ἢ  
 τῶν ἄλλων τινὸς βουλευτῶν, τίνες ὄντες ἢ ποίαν  
 ἀρχὴν ἔχοντες νόμιμοι; οὐκ εἰς ἐνιαυτὸν ἀπεδείχθητε  
 30 τῶν κοινῶν προστάται; οὐ παρώχηκεν ὁ τῆς ἀρχῆς  
 ὑμῶν χρόνος; οὐκ ἰδιῶται τῷ νόμῳ γερόνατε; ταῦτ'  
 εἰς τὸν δῆμον βουλευέσθε ἐξευγκεῖν. τί γὰρ δὴ καὶ  
 τὸ κωλύον ἔσται τὸν βουλούμενον ἡμῶν τὴν ἐκκλησίαν

συγκαλεῖν, καὶ τῆς ἐξουσίας ὑμῶν, ἣν παρὰ τοὺς  
 νόμους ἔχετε, κατηγορεῖν; ἀνάδοτε τοῖς πολλταῖς ψῆ-  
 φον ὑπὲρ αὐτοῦ τούτου, πότερα δεῖ μένειν τὴν δε-  
 κιδιοκρασίαν ὑμῶν, ἢ τὰς πατρίους πάλιν ἀποδείκνυ-  
 σθαι ἀρχάς· [καὶ εἰ τούτο] μανεῖς ὁ δῆμος ὑπομείνη,  
 5 πάλιν τὴν αὐτὴν κατάστασιν ἔχετε [καὶ εἰ] κωλύετε  
 2171 λέγειν, ὅποσα βούλεται τις ὑπὲρ τῆς πατρίδος, [καὶ  
 εἰ δίκαια ταῦτα δόξωσιν]. ἄξιοι γὰρ ἂν εἴημεν καὶ  
 ταῦτα καὶ εἶ χεῖρονα τούτων πάσχειν ἐφ' ὑμῶν γε-  
 νόμενοι καὶ θυπαίνοντες αἰσχρῶ βίῳ τὰς ἑαυτῶν τε 10  
 καὶ τῶν προγόνων ἀρετάς.

VI. Ἐτι δ' αὐτοῦ λέγοντος οἱ δέκα περιίστανται  
 κειραρότες καὶ τὴν δημαρχικὴν ἐπανασείοντες ἐξου-  
 σίαν, καὶ ῥίψειν αὐτὸν ἀπειλοῦντες κατὰ τῆς πέτρας  
 εἰ μὴ σιωπήσει. ἐφ' ᾧ πάντες ἀνέκραγον, ὡς κατα- 15  
 λυομένης σφῶν τῆς ἐλευθερίας, καὶ μεστὸν ἦν ἀγα-  
 νακτικῆσός τε καὶ θορύβου τὸ συνέδριον. τοῖς μέν-  
 2172 τοι δέκα μετέμελεν εὐθέως τῆς τε κωλύσεως τοῦ  
 λέγειν καὶ τῆς ἀπειλῆς, ὡς ἠρεθισμένην εἶδον ἐπὶ  
 τῷ πράγματι τὴν βουλήν· ἔπειτα προσελθὼν ἐξ αὐ- 20  
 τῶν Ἄππιος καὶ δεηθεὶς τῶν θορυβούντων βραχύν  
 ἐπισχεῖν χρόνον, ἐπειδὴ κατέστειλε τὸ ταραττόμε-  
 νον αὐτῶν· Οὐδένα ὑμῶν, εἶπεν, ἀποστεροῦμεν, ὃ  
 ἄνδρες βουλευταί, λόγου, ὃς ἂν ἐν τῷ προσήκοντι  
 καιρῷ λέγη· τοὺς δ' ἐπιπολέζοντας καὶ πρὶν ἢ κλη- 25  
 θῆναι προεξανισταμένους εἴργομεν. μηδὲν οὖν ἀγα-  
 νακτεῖτε, καὶ γὰρ Ὀρατίῳ καὶ Οὐαλερίῳ καὶ παντὶ  
 ἄλλῳ γνώμην ἀγορεύειν ἐν τῷ ἑαυτοῦ τόπῳ κατὰ τὸν  
 ἀρχαῖον ἐθισμόν καὶ κόσμον ἀποδάσομεν, ἕάν γε  
 30 περὶ ὧν βουλευσόμενοι συνελήλυθατε, περὶ τούτων  
 λέγωσι, καὶ μηδὲν ἔξω. ἕάν δὲ δημαγωγῶσιν ὑμᾶς  
 καὶ διαστασιάζωσι τὴν πόλιν, τὰ μὴ πρὸς τὸ πρᾶγμα  
 7\*

δημηγορούντες οὐδὲν . . . τότε τὴν δ' ἐξουσίαν τοῦ  
 κλύειν τοὺς ἀκοσμοῦντας, ὧς Μάρκε Ὀράτιε, παρὰ  
 τοῦ δήμου λαβόντες ἔχομεν, ὅτε ἡμῖν καὶ τὴν τῶν  
 ὑπάτων καὶ τὴν τῶν δημάρχων ἀρχὴν ἐψηφίσαντο,  
 5 καὶ ὁ χρόνος αὐτῆς οὕτω παρελήλυθεν, ὥσπερ σοὶ 2173  
 δοκεῖ. οὐ γὰρ εἰς ἐνιαυτὸν ἀπεδείχθημεν, οὐδ' εἰς  
 ἄλλον τινὰ χρόνον ὠρισμένον, ἀλλ' ἕως ἂν καταστη-  
 σόμεθα πᾶσαν τὴν νομοθεσίαν. συντελέσαντες οὖν ὅσα  
 κατὰ νοῦν ἔχομεν, καὶ κυρώσαντες τοὺς λοιποὺς νό-  
 10 μους, τότε ἀποθησόμεθα τὴν ἀρχὴν καὶ λόγον τῶν  
 πεπραγμένων τοῖς βουλομένοις ὑμῶν ὑφέξομεν. τέως  
 δ' οὐδὲν ἐλαττώσομεν οὐδὲ τῆς ὑπατικῆς ἐξουσίας  
 οὐδὲ τῆς δημαρχικῆς. περὶ δὲ τοῦ πολέμου, τίνα  
 15 χρὴ τρόπον ὡς τάχιστα καὶ κάλλιστα τοὺς ἐχθροὺς  
 ἀμύνεσθαι, γνώμας ἀξιῶ παριόντας ὑμᾶς λέγειν,  
 πρῶτους μὲν, ὥσπερ ἐστὶ σύνηθες καὶ πρέπον ὑμῖν,  
 τοὺς πρεσβυτέρους· ἔπειτα τοὺς μέσους, τελευταίους  
 δὲ τοὺς νεωτάτους.

VII. Ταῦτ' εἰπὼν πρῶτον μὲν ἐκάλεε τὸν ἑαυ-  
 20 τοῦ θεῖον Γάιον Κλαύδιον. ὁ δ' ἀναστὰς τοιαύτην  
 διέθετο δημηγορίαν· Ἐπειδὴ με πρῶτον γνώμην  
 ἀποφαίνεσθαι ἀξιῶ Ἄππιος, ὧς βουλή, τιμῶν διὰ τὸ  
 συγγενές, ὥσπερ αὐτῷ προσήμει, καὶ δεῖ με ἄφρονῶ  
 περὶ τοῦ πολέμου τοῦ πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους  
 25 εἰπεῖν, πρὶν ἀποδείξασθαι τὴν ἑμαυτοῦ διάνοιαν, 2174  
 ἐκεῖνο βουλόμην ἂν ὑμᾶς ἐξετάσαι, τίσιν ἐπαρθέν-  
 τες ἐλπίζουσι Αἰκανοὶ καὶ Σαβίνοι πόλεμον ἐπενεργεῖν  
 ἐτόλμησαν ἡμῖν καὶ τὴν χώραν ἐπιόντες λεηλατεῖν,  
 οἱ τέως ἀγαπῶντες καὶ τοῖς θεοῖς πολλὴν χάριν εἰδό-  
 30 τες, εἴ τις αὐτοὺς εἶα τὴν ἑαυτῶν ἔχειν ἀσφαλῶς.  
 ἐὰν γὰρ τοῦτο μάθῃτε, καὶ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολέ-  
 μου τοῦ πρὸς αὐτοὺς ἥτις ἐστὶ κρατίστη μαθήσεσθε.

ἐκεῖνοι τοίνυν ἀκούσαντες, ὅτι σεσάλευται καὶ νοσεῖ  
 τὸ πάτριον ἡμῶν πολίτευμα ἐκ πολλοῦ, καὶ τοῖς  
 προσετηκόσι τῶν κοινῶν οὔτε ὁ δῆμος εὖνους ἐστὶν  
 οὔτε οἱ πατρίοιοι, καὶ οὐ μᾶτην ἀκούσαντες· τὸ γὰρ  
 ἀληθές οὕτως ἔχει, τὰς δ' αἰτίας ἐπισταμένοις ὑμῖν 5  
 οὐδὲν δέομαι λέγειν· ὑπέλαβον, εἴ τις ἐξώθεν ἡμᾶς  
 κατάσχοι πόλεμος ἅμα τοῖς ἐντὸς τείχευς κακοῖς, καὶ  
 δόξειε ταῖς ἀρχαῖς δύναμιν ἐξάγειν τὴν προπολεμῆ-  
 σουσαν τῆς γῆς, οὔτε τοὺς πολίτας ἐπὶ τὸν στρατιω-  
 10 τικὸν ὄρκον ἅπαντας ἤξειν ἐκ προθυμίας ὡς πρότε-  
 2175 ρον, ἀπεχθῶς διακειμένους πρὸς τὰς ἀρχάς· οὔτε  
 τοὺς ἡγεμόνας ταῖς ἐκ τῶν νόμων τιμωρίαις χρήσε-  
 σθαι κατὰ τῶν μὴ παραγενομένων, δεδοικότας μὴ τι  
 μείζον ἐργάσονται κακόν· τοὺς τε ὑπακούσαντας καὶ  
 15 τὰ ὄπλα λαβόντας ἢ καταλείψειν τὰ σημεῖα, ἢ παρα-  
 μένοντας ἐθελοκακήσειν ἐν τοῖς ἀγῶσιν. ὧν οὐδὲν  
 ἔξω τοῦ εἰκότος ἤλπισαν· ὅταν μὲν γὰρ ὁμονοοῦσα  
 πόλις ἄπτηται πολέμου, καὶ τὸ αὐτὸ συμφέρον ἅπασι  
 φαίνεται τοῖς τ' ἀρχουσι καὶ τοῖς ἀρχομένοις, μετὰ  
 20 προθυμίας ἅπαντες ἐπὶ τὰ δεινὰ χωροῦσι καὶ οὔτε  
 πόνον οὔτε κίνδυνον οὐδένα ὀκνοῦσιν. ὅταν δὲ νο-  
 σοῦσα ἐν αὐτῇ πρὶν ἢ τὰ ἐνδον καταστήσασθαι τοῖς  
 ὑπαιθροῖς ὁμόσε χωρῇ πολεμίοις, καὶ παραστῆ τῷ  
 μὲν πλήθει λογισμός, ὅτι οὐχ ὑπὲρ οἰκείων ἀγαθῶν  
 25 κακοπαθοῦσιν, ἀλλ' ἵνα βεβαιότερον αὐτῶν ἕτεροι 25  
 ἄρχωσι, τοῖς δ' ἡγεμόσιν, ὅτι πολέμιον ἔχουσιν οὐχ  
 ἦτρον τοῦ ἀντιπάλου τὸ οἰκείον, νοσεῖ τὰ ὅλα καὶ  
 πᾶσα ἰκανὴ δύναμις τὰ τοιαῦτα στρατεύματα κατα-  
 γωνίσασθαι καὶ φθεῖραι.

VIII. Ταῦτ' ἐστὶν, ὧς βουλή, τὰ Σαβίνων τε καὶ 30  
 Αἰκανῶν ἐνθυμήματα, οἷς πεπιστευκότες ἐμβεβλή-  
 κᾶσιν ἡμῶν εἰς τὴν γῆν. ἐὰν μὲν οὖν ἀγανακτήσαν-

τες τῶ καταφρονεῖσθαι πρὸς αὐτῶν ἐπαρθέντων ὡς ἔχομεν ὀργῆς δύναμιν ἐξαγαγεῖν ἐπ' αὐτοὺς ψηφισώμεθα, δέδοικα μὴ ταῦθ' ἡμῖν ἄπροὔλαβον ἐκείνοι συμβῆ, μᾶλλον δ' εὐοῖδα συμβησόμενα. ἐάν δὲ τὰ πρῶτα καὶ ἀναγκαιότατα καταστησώμεθα· ταῦτα δ' ἐστὶν ἢ τ' εὐκοσμία τοῦ πλήθους καὶ τὸ πᾶσι ταῦτά συμφέροντα φαίνεσθαι· ἐξελάσαντες μὲν ἐκ τῆς πόλεως τὴν νῦν ἐπιχωριάζουσαν ὕβριν καὶ πλεονεξίαν, ἀποδόντες δὲ τὸ ἀρχαῖον σχῆμα τῇ πολιτείᾳ, πτῆξαντες οἱ νῦν θρασεῖς καὶ τὰ ὄπλα θίψαντες ἐκ τῶν χειρῶν ἤξουσιν ὡς ἡμᾶς οὐκ εἰς μακρὰν, τὰς τε βλάβας ἐπανορθούμενοι καὶ περὶ διαλλαγῶν διαλεγόμενοι, ὑπάρξει τε ἡμῖν ὁ πάντες ἂν εὐξαιντο οἱ νῦν ἔχοντες, χωρὶς ὄπλων διαπεπολεμημένοι τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον. ταῦτα δὴ λογισαμένους ἡμᾶς οἴομαι δεῖν τὴν μὲν ὑπὲρ τοῦ πολέμου βουλήν, ἐπειδὴ ταραχιδῶς ἡμῖν ἔχει τὰ ἐντὸς τείχους, εἶσαι κατὰ τὸ παρόν, ὑπὲρ ὁμονοίας δὲ καὶ κόσμου πολιτικοῦ προθεῖναι τῶ βουλομένῳ λέγειν. οὐ γὰρ ἐξεγένετο ἡμῖν, πρὶν εἰς τοῦτον καταστῆναι τὸν πόλεμον, ὑπὸ τῆσδε τῆς ἀρχῆς κληθεῖσι [σκοπεῖν] περὶ τῶν ἐν τῇ πόλει πραγμάτων [οὕτως ἐχόντων, καὶ] εἰ τι μὴ καλῶς ἔχει τῶν γιγνομένων διαγινῶναι. πολλῆς γὰρ ἂν ἐπιτιμήσεως ἄξιός ἦν, εἰ τις τοῦτον ἀφείς τὸν καιρὸν, ἐν ἐκείνῳ λέγειν ὑπὲρ αὐτῶν ἤξιον· οὐδ' ἂν ἔχοι τις εἰπεῖν βεβαίως, ὅτι τοῦτον ὑπερβαλλόμενοι τὸν καιρὸν ὡς οὐκ ἐπιτηδειον ἐτέρου δυνησόμεθα τυχεῖν ἐπιτηδειότερου. εἰ γὰρ ἐκ τῶν γεγονότων τὰ μέλλοντα ἔσεσθαι βούλεται τις εἰκάξειν, πολὺς ὁ μετὰ τοῦτον ἔσται χρόνος, ἐν ᾧ περὶ οὐδενὸς τῶν κοινῶν συνελευσόμεθα βουλευσόμενοι.

VIII. Ἄξιῳ δ' ὑμᾶς, Ἀππιε, τοὺς προεστηκότας

τῆς πόλεως, καὶ τὸ κοινὸν ἀπάντων συμφέρον, οὐχὶ τὸ ὑμῖν αὐτοῖς ἰδίᾳ λυσιτελοῦν, ὀφείλοντας σκοπεῖν, ἐάν τι τῶν ἀληθῶν μετὰ παρρησίας ἀλλὰ μὴ καθ' ἡδονὰς τὰς ὑμετέρας λέγω, μὴ μοι διὰ τοῦτ' ἀπέχθεσθαι; ἐνθυμουμένους, ὅτι οὐκ ἐπὶ λοιδορίᾳ καὶ προσηλακισμῷ τῆς ἀρχῆς ὑμῶν ποιήσομαι τοὺς λόγους, ἀλλ' ἵνα δείξας ἐν οἷῳ κλύδωνι τὰ πράγματα σαλεύει τῆς πόλεως τὴν σατηρίαν καὶ ἐπανόρθωσιν αὐτῶν ἧτις ἔσται φράσω. ἅπασιν μὲν γὰρ ἴσως, ὅσοις τῇ πατρίδι ..... δῶσιν, ἀναγκαῖός ἐστιν ὁ περὶ τῶν κοινῆ συμφερόντων λόγος, μάλιστα δ' ἐμοί. πρῶτον μὲν γὰρ, ὅτι γνώμης ἄρχειν ἤξιωμα, διὰ τιμῆν· αἰσχύνῃ δὲ καὶ μωρία πολλῇ πρῶτον ἀναστάντα μὴ οὐχ ἄ δεῖ πρῶτον ἐπανορθώσασθαι λέγειν. ἐπειδ' ὅτι συμβέβηκεν ὄντι θείῳ πρὸς πατρὸς Ἀππίου τοῦ προεστηκότος τῆς δεκαδαρχίας ἤδεσθαι τε πάντων μάλιστα, ὅταν εὐ τὰ κοινὰ ὑπ' αὐτῶν ἐπιτροπεύηται, καὶ ἀνιάσθαι παντὸς ὀτουδήτινος μᾶλλον, ὅταν μὴ καλῶς. πρὸς δὲ τούτοις, ὅτι τοιαύτην πολιτείας διαδέδεγμαι προαίρεσιν ἐκ προγόνων, τὰ κοινὰ συμφέροντα πρὸ τῶν οἰκείων λυσιτελιῶν αἰρεῖσθαι, καὶ μηδένα κίνδυνον ἰδίων ὑπολογίξασθαι· ἦν οὐκ ἂν προδοίην ἐκῶν εἶναι. .... δέ μοι ταύτην τοῦ βίου προαίρεσιν, καὶ οὐκ ἂν καταισχύνομαι τὰς ἐκείνων τῶν ἀνδρῶν ἀρετὰς. περὶ μὲν οὖν τῆς καθεστῶσης πολιτείας, ὅτι πονηρῶς ἡμῖν ἔχει, καὶ δυσχεραίνουσιν ὀλίγου δεῖν πάντες οἱ τὰ κοινὰ διοικούντες αὐτῇ, μέγιστον ὑμῖν γενέσθω τεκμηρίον, ὃ μόνου οὐδ' ἄγνοεῖν ἔξεστιν ὑμῖν, ὅτι φεύγουσιν ἐκ τῆς πόλεως ὀσημέραι καταλιπόντες τὰς πατρώας ἐστίας οἱ χαριεστάτοι τῶν δημοτικῶν, οἱ μὲν εἰς τὰς πλησιοχώρους πόλεις ἅμα γυναῖξιν καὶ τέκνοις

μετατιθέμενοι τὰς οἰκήσεις, οἱ δ' εἰς τοὺς πλείστον ἀπέχοντας τῆς πόλεως ἀγρούς· καὶ οὐδὲ τῶν πατρι- κίων πολλοὶ τὰς κατ' ἄστυ ποιοῦνται διατριβάς, ὡς πρότερον, ἀλλὰ καὶ τούτων οἱ πλείους τὸν βίον ἔχου- 5 σιν ἐν τοῖς ἀγροῖς. καὶ τί δεῖ περὶ τῶν ἄλλων λέγειν, ὅτε καὶ τῶν βουλευτῶν ὀλίγοι μὲν τινες οἱ κατὰ συγ- γένειαν ἢ φιλίαν προσήκοντες ὑμῖν ὑπομένουσιν ἐντὸς τείχους, οἱ δ' ἄλλοι τὴν ἐρημίαν ποθεινότεραν ἠγοῦνται τῆς πατρίδος; ὅτε γοῦν ἐδέησεν ὑμῖν κα- 10 λέσαι τὴν βουλήν, ἐκ τῶν ἀγρῶν καθ' ἓνα καλούμε- νοι συνῆλθον, οἷς πατριῶν ἢ ἅμα ταῖς ἀρχαῖς διὰ φυλακῆς ἔχειν τὴν πατρίδα, καὶ μηδεὶς ἀπολείπε- σθαι τῶν κοιναῶν. ἂν οὖν τὰ γεθὰ φεύγοντας ὑπο- 2181 λαμβάνετε ἀνθρώπους καταλιπεῖν τὰς ἐαυτῶν πατρι- 15 δας, ἢ τὰ κακὰ; ἐγὼ μὲν γὰρ οἶμαι τὰ κακὰ. καίτοι τίνοσ ἔλαττον οἶεσθ' εἶναι κακοῦ πόλει, καὶ ταῦτα τῇ Ῥωμαίων, ἢ πολλῶν οἰκείων δεῖ σωμαίων, εἰ μέ- λει βεβαίως καθέξειν τὴν τῶν προσοίκων ἀρχήν, τὸ καταλείπεσθαι μὲν ὑπὸ τῶν δημοτικῶν, ἐρημοῦσθαι 20 δ' ὑπὸ τῶν πατρικίων, οὔτε πολέμου κατασχόντος αὐτὴν οὔτε νόσου λοιμικῆς οὔτ' ἄλλης θεηλάτου συμ- φορᾶς οὐδεμιᾶς;

X. Βούλεσθε οὖν ἀκοῦσαι τίνες εἰσὶν αἱ βια- ζόμεναι τοὺς ἀνθρώπους καταλιπεῖν αἰτίαι ἱερὰ καὶ 25 τάφους προγόνων καὶ ἐξερημοῦν ἐφύσσια καὶ κτήσεις πατέρων καὶ πᾶσαν ἠγεῖσθαι γῆν ἀναγκαιότεραν τῆς πατρίδος; οὐ γὰρ ἄταρ αἰτίας ταῦθ' οὕτως ἔχει. ἐγὼ δὴ φράσω πρὸς ὑμᾶς καὶ οὐκ ἀποκρούσομαι. κατηγορίαὶ γίνονται τῆς ἀρχῆς ὑμῶν, Ἄππια, πολλαὶ 30 καὶ παρὰ πολλῶν· εἰ μὲν ἀληθεῖς ἢ ψευδεῖς οὐδὲν δέδομαι ζητεῖν ἐν τῷ παρόντι, γίνονται δ' οὖν ὅμοι. οὐδεῖς, ὡς εἶπεν, ἔξω τῶν ὑμετέρων ἐταίρων οἰκείως 2182

τοῖς παροῦσιν ἔχει πράγμασιν. οἱ μὲν γ' ἀγαθοὶ καὶ 5 ἐξ ἀγαθῶν, οἷς προσήκειν ἱερᾶσθαι τε καὶ ἀρχεῖν καὶ τὰς ἄλλας καρποῦσθαι τιμὰς, ὡς οἱ πατέρες αὐτῶν ἐκαρποῦντο, ἄχθονται τούτων ἀπελαννόμενοι καὶ δι' ὑμᾶς τὰς προγονικὰς ἀξιώσεις ἀπολωλεκότες. οἱ δὲ 5 τὴν διὰ μέσου τάξιν ἔχοντες ἐν τῇ πόλει καὶ τὴν ἀπράγμονα διώκοντες ἡσυχίαν, χρημάτων τ' ἀδίκους ἀρπαγὰς ἐγκαλοῦσιν ὑμῖν καὶ προπηλακισμοὺς εἰς γαμετὰς ὀδύρονται γυναῖκας καὶ παροιίας εἰς θυγα- 10 τέρας ἐπιγάμους καὶ ἄλλας ὕβρεις πολλὰς καὶ χαλε- πάς. τὸ δὲ πενέστατον τοῦ δημοτικοῦ μέρος οὔτ' ἀρχαιρεσιῶν ἔτι κύριον γινόμενον οὔτε ψηφοφοριῶν οὔτ' εἰς ἐκκλησίας καλούμενον οὔτ' ἄλλης πολιτικῆς 1183 φιλανθρωπίας μεταλαμβάνον οὐδεμιᾶς, διὰ ταῦτα πάνθ' ὑμᾶς μισεῖ καὶ τυραννίδα καλεῖ τὴν ἀρχήν. 15

XI. Πῶς οὖν ἐπανορθώσετε ταῦτα, καὶ παύσεσθε δι' αἰτίας παρὰ τοῖς πολίταις ὄντες; τοῦτο γὰρ ἔσθ' ὑπόλοιπον εἰπεῖν. εἰ προβούλεμα τοῦ συνεδρίου ποιήσαντες ἀποδοίητε τῷ δήμῳ διαγνώσθαι, πότερον αὐτῷ δοκεῖ πάλιν ὑπάτους τ' ἀποδεικνύναι καὶ δημ- 20 ἀρχους καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς τὰς πατρίους, ἢ μένειν ἐπὶ τῆς αὐτῆς πολιτείας. εἴαν τε γὰρ ἀγαπῶσι Ῥωμαῖοι πάντες ὀλιγαρχούμενοι, καὶ μένειν ὑμᾶς ἐπὶ τῆς αὐ- τῆς ἐξουσίας ψηφίσωνται, κατὰ νόμον ἔξετε καὶ οὐ βία τὴν ἀρχήν· εἴαν τε ὑπάτους πάλιν αἰρεῖσθαι βου- 25 ληθῶσι καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς ὡς πρότερον, ἀποθή- σεσθε νόμῳ τὴν ἐξουσίαν, καὶ οὐ δόξετε ἀκόντων ἄρχεῖν τῶν ἴσων· τοῦτο μὲν γὰρ τυραννικόν, τὸ δὲ παρ' ἐκόντων τὰς ἀρχὰς λαμβάνειν ἀριστοκρατικόν. τοῦ δὲ πολιτεύματος τούτου πρῶτον οἶμαι δεῖν ἀρξαι 30 σί, καὶ παῦσαι τὴν ὑπὸ σοῦ κατασταθεῖσαν ὀλιγαρ- 2184 χίαν, Ἄππια, λυσιτελῆ γέ ποθ' ἡμῖν γενομένην, νῦν



δ' ἐπαχθῆ. ἂ δ' ἐκ τοῦ πεισθῆναί μοι καὶ ἀποθέσθαι τὴν ἐπίφθορον ἐξουσίαν ταύτην κερδανεῖς ἄκουσον. ἔαν μὲν ὅλον ὑμῶν τὸ ἀρχεῖον ἐπὶ τῆς αὐτῆς γένηται προαιρέσεως, διὰ σὲ πάντες ὑπολήφονται τὸν ἀρξάντα  
 5 καὶ τούτους γεγενῆσθαι χρηστούς· ἔαν δ' οὗτοι φιλοχωρῶσιν ἐπὶ τῇ παρανομῶν δυναστείᾳ, σοὶ μὲν ἅπαντες εἰσονται τὴν χάριν, ὅτι μόνος ἐβουλήθης δίκαια ποιεῖν, τοὺς δὲ μὴ θέλουσας σὺν αἰσχύνῃ καὶ μεγάλῃ βλάβῃ παύσουσι τῆς ἀρχῆς. ὁμολογίας δὲ καὶ πίστεις  
 10 ἀπορητόους, εἰ τινὰς ἀλλήλους δεδώκατε θεοὺς ἐγγνητὰς ποιησάμενοι· τάχα γὰρ τι καὶ τοιοῦτον ὑμῖν πέπρακται· φυλαττομένας ἀνοσίους εἶναι νόμιζε, ὡς κατὰ πολιτῶν καὶ πατρίδος, καταλυμένας δ' εὐσεβεῖς. θεοὶ γὰρ ἐπὶ καλαῖς καὶ δικαίαις παραλαμ-  
 15 βάνεσθαι φιλοῦσιν ὁμολογίαις, οὐκ ἐπ' αἰσχροῖς καὶ ἀδίκαις.

XII. Εἰ δὲ διὰ φόβον ἐχθρῶν ὀκνεῖς ἀποθέσθαι τὴν ἀρχήν, μὴ σοὶ κίνδυνοὶ τινες ἐξ αὐτῶν ἐπαχθῶσι, 2180 καὶ δίκας ἀναγκασθῆς ὑπέχειν τῶν πεπραγμένων, οὐκ ὀρθῶς δέδοικας. οὐ γὰρ οὕτω μικρόθυμος οὐδ' ἀχάριστος ἔσται ὁ Ῥωμαίων δῆμος, ὥστε τῶν μὲν ἀμαρτημάτων σου μεμνησθαι, τῶν δ' εὐεργεσιῶν ἐπιλησθαι, ἀλλ' ἀντιπαρεξείτῳ τὰ νῦν ἀγαθὰ τοῖς πάλοι κακοῖς, ἐκεῖνα μὲν ἠγήσεται συγγνώμης  
 25 ἄξια, ταῦτα δ' ἐπαίνων. ὑπάρξει δὲ σοὶ καὶ τῶν πρὸ τῆς ὀλιγαρχίας ἔργων πολλῶν καὶ καλῶν ὄντων ὑπομιμνήσκειν τὸν δῆμον, καὶ τὴν ὑπὲρ ἐκείνων χάριν εἰς βοήθειαν καὶ σωτηρίαν ἀπαιτεῖν, ἀπολογίαις τε χρῆσθαι πρὸς τὰ κατηγορήματα πολλαῖς·  
 30 τοῦτο μὲν, ὡς οὐκ αὐτὸς ἤμαρτες, ἀλλὰ τῶν ἄλλων τις ἀγνοοῦντός σου· τοῦτο δ', ὡς οὐκ ἱκανὸς ἦσθα τὸν πράττοντα κωλύειν ἰσότημον ὄντα· τοῦτο δ', ὡς

(τίρου τινὸς ἔργου χρησίμου χάριν ἠναγκάσθης ἀβούλητόν τι ὑπομῆναι. πολὺς γὰρ ἂν εἴη ὁ λόγος, εἰ πάσας ἐξαριθμεῖσθαι βουλοίμην τὰς ἀπολογίας. καὶ οἷς μηδὲν ἀπολόγημα ὑπάρχει μήτε δίκαιον μήτ' ἐπεικῆς, ὁμολογοῦντες καὶ παραιτούμενοι προἴνουσι  
 5 τὰς τῶν ἠδικημένων ὀργάς, οἱ μὲν εἰς ἀνοιαν ἡλικίας καταφεύγοντες, οἱ δ' εἰς πονηρῶν ἀνθρώπων ὁμιλίας, οἱ δ' εἰς μέγεθος ἀρχῆς, οἱ δ' εἰς τὴν ἅπαντας πλανῶσαν τοὺς ἀνθρωπίνους λογισμοὺς τύχην. ἐγὼ σοὶ τῆς ἀρχῆς ἀποστάντι ὑπισχυοῦμαι πάντων ἀμνη-  
 10 στίαν ὑπάρξειν τῶν ἡμαρτημένων καὶ διαλλαγὰς πρὸς τὸν δῆμον ὡς ἐν κακοῖς εὐπρεπεῖς.

XIII. Ἀλλὰ δέδοικα, μὴ πρόφασις μὲν οὐκ ἀληθῆς ὁ κίνδυνος ἢ τοῦ μὴ παραχωρεῖν τῆς ἀρχῆς· μυρίοις γοῦν ὑπῆρξε τυραννίδας ἀποθεμένους, μηδὲν 15 δεινὸν ὑπὸ τῶν πολιτῶν παθεῖν· αἱ δ' ἀληθεῖς ὡσιν αἰτίαι, φιλοτιμία κενὴ τὴν εἰκόνα τοῦ καλοῦ τῆς δόξης διώκουσα καὶ πόθος ἡδονῶν ὀλεθρίων, ἃς οἱ τυραννικοὶ φέρουσι βίοι. εἰ δὲ βούλει μὴ τὰ εἰδωλα  
 20 καὶ τὰς σκιὰς τῶν τιμῶν καὶ τῶν εὐπαθειῶν διώκειν, ἀλλ' αὐτὰς καρποῦσθαι τὰς ἀληθεῖς τιμὰς, ἀπόδος τὴν ἀριστοκρατίαν τῇ πατρίδι καὶ τιμὰς λάμβανε παρὰ τῶν Ἰσῶν καὶ ζήλον τύγχανε παρὰ τῶν ἐπιγυ-  
 25 γνομένων καὶ κλέος ἀθάνατον ἀντὶ τοῦ θνητοῦ σώματος κατάλιπε τοῖς ἐγγόνους. αὐταὶ γὰρ εἰσι βέβαιοι καὶ ἀληθεῖς τιμαὶ καὶ ἀναφαίρετοι χάριτες τε καὶ ἀμεταμέλητοι. τρέφε τὴν ψυχὴν ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς τῆς πατρίδος ἠδόμενος, ὧν οὐκ ἐλαχίστη μοῖρα δόξεις  
 30 ποιῆσαι δὲ τούτων παραδείγματα τοὺς προγόνους, ἐνθυμηθεῖς, ὅτι τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων οὐδεὶς ἐπεθύμησεν ἐξουσίας δεσποτικῆς, οὐδὲ ταῖς ἐπονειδίστοις

τοῦ σώματος ἐδούλευσεν ἡδοναῖς. τοιγάρτοι καὶ  
 ζῶσιν αὐτοῖς ὑπῆρχε τιμᾶσθαι, καὶ τελευτήσασιν  
 ὑπὸ τῶν ἐπιγενομένων ἐπαινείσθαι. μαρτυρεῖται γὰρ  
 5 τοὶ παρὰ πάντων αὐτοῖς, ὅτι τῆς ἀριστοκρατίας, ἢ  
 ἐκβαλοῦσα τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν ἢ πόλις κατεστήσατο,  
 βεβαίωτατοι φύλακες ἐγένοντο. καὶ μηδὲν τῶν σεαυ-  
 τοῦ λαμπροτάτων λόγων τε καὶ πράξεων ἐπιλανθάνου.  
 10 καλαὶ γὰρ αἱ προῶται σου τῶν πολιτικῶν ἔργων  
 ὑποθέσεις ἐγένοντο, καὶ μεγάλας ὑπέγραψαν ἡμῖν  
 ἀρετῆς ἐλπίδας· αἷς ἀκολούθως καὶ τὰ λοιπὰ πράτ-  
 τειν σε πάντες ἀξιούμεν. ἀναχώρει δὴ πάλιν εἰς τὴν  
 σεαυτοῦ φύσιν, Ἄππιε τέκνον, καὶ γίνου τῇ προαι-  
 ρέσει τῶν πολιτευμάτων μὴ τυραννικός, ἀλλ' ἀριστο-  
 15 κρατικός· καὶ φεύγε τοὺς πρὸς ἡδονὴν ὀμιλοῦντας,  
 δι' οὓς ἐξέβης τῶν χρηστῶν ἐπιτηδευμάτων καὶ  
 παρεπλήγῃς τῆς ὀρθῆς ὁδοῦ. οὐ γὰρ ἔχει λόγον,  
 ὑφ' ὧν ἂν γένηται τις ἐξ ἀγαθοῦ κακός, ὑπὸ τούτων  
 πάλιν αὐτὸν ἐκ πονηροῦ γενέσθαι χρηστόν.

XIII. Ταῦτά σοι πολλάκις ἐβουλήθην ὑποθέσθαι  
 20 μόνῳ μόνος εἰς λόγους παραγεγόμενος, καὶ τὰ μὲν  
 ὡς ἀγνοοῦντα διδάξαι, τὰ δ' ὡς ἁμαρτάνοντα νου-  
 θετῆσαι· καὶ παρεγεγόμεν ἰσχυρῶς οὐκ ἄπαξ,  
 ἀπήλασαν δέ με οἱ σοὶ παῖδες ἀπὸ τῶν οἰκείων οὐ  
 σχολὴν ἄγειν σε λέγοντες, ἀλλ' ἕτερά τινα πράττειν  
 25 ἀναγκαιότερα, εἰ δὴ τί σοι τῆς πρὸς τὸ γένος εὐσε-  
 βείας ἀναγκαιότερον ἦν. τάχα δ' οὐχ ὑπὸ σοῦ κε-  
 λευσθέντες οἱ παῖδες, ἀλλ' ἐφ' ἑαυτῶν γνόντες διέ-  
 κλεισάν με τῆς εἰσόδου, καὶ βουλομένη οὕτως τάλι-  
 θεὸς ἔχειν. τὸ πρᾶγμα δὴ με ἠνάγκασε τοῦτο δια-  
 30 λεχθῆναι ἐν τῷ συνεδρίῳ πρὸς σὲ περὶ ὧν ἐβουλό-  
 μην, ἐπειδὴ μόνῳ πρὸς μόνον οὐκ ἐξεγένετο. καιρὸν  
 δ' ἔχει πάντη λέγεσθαι τὰ καλὰ καὶ συμφέροντα

καρ' ἀνθρώποις μᾶλλον, Ἄππιε, ἢ μηδαμῇ. ἀποδε-  
 δοκῶς δὴ σοὶ τὰ τοῦ γένους ὀφειλήματα, μαρτύρο-  
 5 μαι θεοὺς, ὧν ἱερὰ καὶ βωμοὺς κοινὰς θυσίαις γε-  
 ραίρομεν οἱ τῆς Ἀππίου γενεᾶς διάδοχοι, καὶ προγό-  
 νων δαίμονας, οἷς μετὰ θεοῦς δευτέρας τιμᾶς καὶ  
 χάριτας ἀποδίδομεν κοινὰς, ὑπὲρ ἅπαντας δὲ τού-  
 10 τούς γῆν, ἢ κατέχει τὸν σὸν μὲν πατέρα, ἐμὸν δ'  
 ἀδελφόν, ὅτι σοὶ παρέσχρημαι ψυχὴν τε καὶ φωνὴν  
 τὴν ἐμαντοῦ τὰ κράτιστα βουλευομένην, καὶ ἐπανορ-  
 θῶν τὰς ἀγνοίας σου κατὰ δύνάμιν τὴν ἐμὴν ἀξιῶ  
 15 σε μὴ τοῖς κακοῖς ἰᾶσθαι τὰ κακὰ, μηδὲ τῶν πλειόνων  
 ὀρεγόμενον καὶ τὰ παρόντα ἀπολέσαι, μηδ' ἵνα τῶν  
 ἴσων τε καὶ κρείττονων ἄρχῃς ὑπὸ τῶν ἡττόνων τε  
 καὶ κακίωνων ἄρχεσθαι. πολλὰ καὶ περὶ πολλῶν ἔτι  
 σοὶ λέγειν βουλόμενος ὄκνω. εἰ μὲν γὰρ ἐπὶ τὰ  
 20 κρείττω βουλευόμενα ὁ θεὸς ἄγει σε, καὶ ταῦτα πλείω  
 τῶν ἱκανῶν εἴρηκα· εἰ δ' ἐπὶ τὰ χεῖρα, διακενής  
 καὶ τὰ λοιπὰ ἐρῶ. ἔχετε, ὦ βουλή, καὶ ὑμεῖς οἱ  
 25 προσετιηρότερες τῆς πόλεως, τὴν ἐμὴν γνώμην καὶ  
 περὶ τοῦ πολέμου τῆς καταλύσεως καὶ περὶ τῶν ἐν  
 τῇ πόλει θορύβων τῆς ἐπανορθώσεως. εἰ δέ τις  
 ἕτερον τούτων κρείττω ἐρεῖ, τὰ βέλτιστα νικάτω.

XV. Τοιαῦτ' εἰπόντος Κλαυδίου καὶ πολλὴν ἐλ-  
 30 πίδα τῷ συνεδρίῳ παρασχόντος, ὡς ἀποθησομένων  
 τῶν δέκα τῆν ἀρχὴν, Ἄππιος μὲν πρὸς ταῦτα οὐδὲν  
 ἠξίωσεν εἰπεῖν· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων ὀλιγαρχικῶν προ-  
 35 ειλθῶν Κορινθίλιος Μάρκος· Ἡμεῖς μὲν, ἔφησεν, ὦ  
 Κλαύδιε, περὶ τῶν ἰδίων συμφερόντων αὐτοὶ διαγνω-  
 σόμεθα τῆς σῆς οὐδὲν δεόμενοι βουλῆς. καὶ γὰρ  
 ἡλικίας ἐν τῷ φρονιμωτάτῳ ἐσμέν, ὥστε μηδὲν τῶν  
 40 διαφερόντων ἀγνοεῖν, καὶ φίλων οὐ σπανίζομεν, οἷς  
 ἐάν τι δέη συμβούλοις χρῆσόμεθα. παῦσαι δὴ πρᾶγμα

ποιῶν ἄωρον, ἀνδράσι πρεσβυτέροις οὐ δεομένοις  
 συμβουλῆς γνώμας ἀποδεικνύμενος. τῷ Ἀππίῳ δ'  
 εἴ τι βούλει παραινεῖν ἢ λοιδορεῖσθαι· τοῦτο γὰρ  
 ἀληθέστερον· ὅταν ἐξέλθῃς ἐκ τοῦ συνεδρίου λοιδο-  
 5 ρήσῃ. νῦν δ' ὑπὲρ τοῦ πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους  
 πόλεμον, περὶ οὗ κέκλησαι γνώμην ἀποδειξόμενος,  
 ὅ τι σοι φαίνεται λέγε καὶ παῦσαι τὰ ἔξω τοῦ πρά-  
 γματος φλυαρῶν. Μετὰ τοῦτον ἀνίσταται πάλιν ὁ  
 Κλαύδιος κατηφῆς καὶ μεστοὺς ἔχων τοὺς ὀφθαλμοὺς  
 10 δακρύων καὶ φησὶν· Ἀππίος μὲν οὐδ' ἀποκρισέως  
 ἄξιον ἡγρεῖται με, ὡς βουλή, τὸν ἑαυτοῦ θεοῦ ἐναντίον  
 ὑμῶν· ἀλλ' ὥσπερ τὴν οἰκίαν τὴν ἰδίαν ἀπέκλεισέ  
 μοι, καὶ τοῦτ' ἐπὶ τὸ συνέδριον ἄβατον ὄσοντες ἐφ'  
 ἑαυτῶ ποιεῖ. εἰ δὲ χρὴ τάληθες λέγειν καὶ ἐκ τῆς  
 15 πόλεως ἐξελαύνομαι. οὐκέτι γὰρ αὐτὸν ὀρθοῖς ὁμ-  
 μασι δυναίμην ὄραν, ἀνάξιον γεγενησὶ τῶν προγόνων  
 καὶ τυραννικῆν ἐξηλωκότα παραιομίαν, ἀλλ' ἀνα-  
 σκευασάμενος ἅπαντα τὰ ἐμὰ καὶ τοὺς ἐμοὺς εἰς  
 Σαβίνους ἄπειμι, πόλιν οἰκήσω Ῥήγιλλον, ἐξ ἧς τὸ  
 20 γένος ἡμῶν ἐστὶ, καὶ μετὰ τὸν λοιπὸν ἐκεῖ χρόνον,  
 ἕως ἂν οὗτοι κατέχωσι τὴν καλὴν ταύτην ἀρχήν.  
 ἐπειδὴν δ' οἷα μαντεύομαι περὶ τὴν δεκαδαρχίαν γέ-  
 νηται· γενήσεται δ' οὐκ εἰς μακρὰν· τότε παρέσομαι.  
 καὶ τὰ μὲν ὑπὲρ ἐμοῦ τοσαῦτα· περὶ δὲ τοῦ πολέμου  
 25 ταύτην ὑμῖν, ὡς βουλή, γνώμην ἀποδείκνυμαι, μη-  
 δὲν ψηφίζεσθαι περὶ μηδενὸς πράγματος, ἕως [ἂν]  
 ἀποδειχθῶσιν αἱ ἀρχαί. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ πολὺν  
 ἐκ τοῦ συνεδρίου κινήσας ἔπαινον ἐπὶ τῷ γενναίῳ  
 καὶ φιλελευθέρῳ τῆς γνώμης ἐκάθισε. μετὰ δὲ  
 30 τοῦτον ἀναστὰς Λεύκιος Κοίντιος ὁ καλούμενος Κι-  
 κινιάτος καὶ Τίτος Κοίντιος Καπετωλῖνος καὶ Λεύ-  
 κιος Δουκρητίος καὶ πάντες ἐξῆς οἱ πρωτεύοντες

δέκα τοῦ συνεδρίου τῇ Κλαυδίου γνώμῃ προσετί-  
 θεντο.

XVI. Ἐφ' ᾧ διαταραχθέντες οἱ περὶ τὸν Ἀππίον  
 ἐβουλεύσαντο μηκέτι καθ' ἡλικίαν καὶ βουλῆς ἀξίω-  
 σιν συμβούλους καλεῖν, ἀλλὰ κατ' οἰκειότητα καὶ τὴν  
 5 πρὸς αὐτοὺς ἐταιρίαν. καὶ παρελθὼν Μάρκος Κορ-  
 νήλιος ἀνίστησι Λεύκιον Κορνήλιον τὸν ἀδελφόν, ὃς  
 Κοίντω Φαβίῳ Οὐβουλαῳ συνυπάτευσε τὸ τρίτον  
 ὑπάτεύοντι, δραστήριον ἄνδρα καὶ πολιτικούς διεξελ-  
 θεῖν λόγους οὐκ ἀδύνατον. οὗτος ἀναστὰς ἐλέξε τοιαύδε·  
 10 Θανμαστὸν μὲν ἦν καὶ τοῦτ', ὡς βουλή, εἰ ταύτην  
 ἔχοντες ἄνθρωποι τὴν ἡλικίαν, οἷαν ἔχουσιν οἱ πρὸ ἐμοῦ  
 γνώμην ἀποφηνάμενοι, καὶ πρωτεύειν ἀξιοῦντες τῶν  
 συνεδρῶν, τὴν ἐκ τῶν πολιτικῶν προσκρουσμάτων  
 ἀπέχθειαν ἀδιάλλακτον ἔχουσι πρὸς τοὺς προεστηκό-  
 15 τας τῆς πόλεως, οὓς ἐχορῆν† οἷόν τε δεῖ φυλάττειν, καὶ  
 τοῖς νέοις παραινεῖν ἀπὸ τοῦ κρατίστου ποιεῖσθαι  
 τοὺς ὑπὲρ τῶν καλῶν ἀγῶνας, καὶ μὴ πολεμίους  
 ἀλλὰ φίλους ἡγρεῖσθαι τοὺς περὶ τῶν κοινῶν ἀγαθῶν  
 ἀντιπάλους. πολλῶ δ' ἔτι τούτου θανμασιώτερόν  
 20 ἐστίν, εἰ τὰς ἰδίας ἀπεχθείας ἐπὶ τὰ κοινὰ τῆς πό-  
 λεως πράγματα μεταφέρουσι, καὶ συναπολέσθαι τοῖς  
 2105 ἑαυτῶν ἐχθροῖς βούλονται μᾶλλον ἢ σωθῆναι μετὰ  
 πάντων τῶν φίλων. ὑπερβολὴ γὰρ ἀνοίας τοῦτό γε  
 καὶ οὐ πόρρω θεοβλαβείας πεποιήκασιν οἱ πρόεδροι  
 25 τῆς βουλῆς ἡμῶν. οὗτοι γὰρ ἀγανακτοῦντες, ὅτι μετ-  
 ιώνας αὐτοὺς τὴν τῶν δέκα ἀρχήν, ἧς αὐτοὶ νῦν  
 κατηγοροῦσιν, ἐνίκησαν ἐν ἀρχαιρεσίαις ἐπιτηδειό-  
 τεροι φανέντες, αἰεὶ πολεμοῦσιν αὐτοῖς πόλεμον ἀδι-  
 30 ἄλλακτον, καὶ εἰς τοῦθ' ἤμουν εὐηθείας, μᾶλλον  
 δὲ ματίας, ὥσθ' ἵνα τούτους διαβάλλωσι πρὸς ὑμᾶς,  
 ὅλην ὑπομένουσιν ἀνατρέψαι τὴν πατρίδα· οἱ γ'

ὀρῶντες μὲν ἀνάστατον τὴν χώραν ἡμῶν ὑπὸ τῶν  
πολεμίων γενόμενῃν, ὀρῶντες δὲ ὅσον οὐπω καὶ ἐπὶ  
τὴν πόλιν αὐτοὺς ἐλεύσεσθαι· τὸ γὰρ διὰ μέσου χω-  
ρίον οὐ πολὺ· ἀντὶ τοῦ παρακαλεῖν καὶ παρορμᾶν  
5 τοὺς νέους ἐπὶ τὸν ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνα, καὶ  
αὐτοὶ πάσῃ προθυμίᾳ καὶ σπουδῇ βοηθεῖν, ὅση γούν  
ἐν τοῖς τηλικούτοις ἐστὶν ἰσχὺς, περὶ πολιτείας κό- 2100  
σμου νῦν ἀξιοῦσιν ἡμᾶς σκοπεῖν καὶ νέας ἀρχὰς ἀπο-  
δεικνύειν καὶ πάντα μᾶλλον ἢ τοὺς ἐχθροὺς κακῶς  
10 ποιεῖν· καὶ οὐδ' αὐτὸ τοῦτο δύναται συνιδεῖν, ὅτι  
γνώμας πονηρὰς εἰσφέρουσι, μᾶλλον δ' εὐχὰς ἀδυ-  
νάτους λέγουσιν.

XVII. Σκοπεῖτε γὰρ οὕτως· προβούλευμα  
γενήσεται τῆς βουλῆς ὑπὲρ ἀρχαιρεσιῶν· ἔπειτ' ἐξοί-  
15 σουσιν οἱ δέκα τὰ βουλευθέντα εἰς τὸν δῆμον, ὀρί-  
σαντες ἀγορᾶν τὴν ἀπὸ ταύτης τρίτην. πῶς γὰρ ἂν  
ἄλλως γένοιτό τι τῶν ὑπὸ τοῦ δήμου ψηφιομένων  
κρίσιον, ἂν μὴ κατὰ νόμους γένηται; ἔπειθ' ὅταν  
αἱ φυλαὶ διενέγκωσι τὴν ψήφον, τότε αἱ νέαι παρα-  
20 λήφονται τὴν πόλιν ἀρχαί, καὶ προθήσουσιν ὑμῖν  
ὑπὲρ πολέμου σκοπεῖν. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ τῶν ἀρχαι-  
ρεσιῶν χρόνοις τοσούτοις οὖσιν, ἂν ἐπὶ τὴν πόλιν  
ἡμῶν ἔλθωσιν οἱ πολέμιοι καὶ προσαγάγωσι τοῖς  
τείχεσι, τί ποιήσομεν, Κλαύδιε; ἐροῦμεν αὐτοῖς νῆ 2197  
25 Δία· Μείνανθ', ἕως ἂν ἀποδείξωμεν ἑτέρας ἀρχὰς.  
Κλαύδιος γὰρ ἡμᾶς ἐπεισε περὶ μηδενὸς ἄλλου πρά-  
γματος μῆτε προβουλεύειν μῆτ' εἰς τὸν δῆμον ἐκ-  
φέρειν μῆτε δυνάμεις καταγράφειν, ἂν μὴ τὰ περὶ  
τὰς ἀρχὰς καταστήσωμεν ὡς βουλόμεθα. ἅπιτ' οὖν,  
30 καὶ ὅταν ἀκούσητε ὑπάτους καὶ τὰς ἄλλας ἀρχὰς  
ἀποδειχθείσας ὑπὸ τῆς πόλεως, καὶ τὰ πρὸς τὸν  
ἀγῶνα πάντα γεγονότα ἡμῖν εὐτρεπῆ, τόθ' ἤκετε

περὶ διαλλαγῶν ποιησόμενοι τοὺς λόγους, ἐπειδὴ κα-  
κῶς ἤρξασθε ἡμᾶς ποιεῖν οὐδὲν προπεπονθότες ὑφ'  
ἡμῶν· καὶ ὅσα ἡμᾶς ἐβλάβητε κατὰ τὰς ἐμβολὰς εἰς  
χορημάτων λόγον, ἅπαντα ἐκ τοῦ δικαίου διαλύσατε.  
τὸν δὲ τῶν γεωργῶν ὄλεθρον οὐχ ὑπολογούμεθα 5  
ὑμῖν, οὐδ' εἴ τινα γύναια ἐλεύθερα ὕβρεως καὶ παρ-  
ουσίας ἐπειράθη στρατιωτικῆς οὐδ' ἄλλο τῶν ἀνη-  
κέστων οὐδέν. κἀκεῖνοι ταῦτα προκαλουμένων ἡμῶν  
1198 μετριάσουσι, καὶ συγχωρήσαντες τῇ πόλει νέας ἀρ-  
χὰς ἀποδείξει καὶ τὰ πρὸς τὸν πόλεμον εὐτρεπῆ ποι- 10  
ήσασθαι, τότε ἤξουσιν ἰκετηρίας φέροντες ἀντὶ τῶν  
ὀπλων καὶ παραδιδόντες ἡμῖν ἑαυτούς.

XVIII. Ὡ πολλῆς μὲν εὐηθείας τούτων, οἷς ἐπὶ  
νοῦν ἐρχεται τοιαῦτα ληθεῖν, πολλῆς δ' ἀναλγησίας  
ἡμῶν, εἴ τοιαῦτα λεγόντων αὐτῶν οὐκ ἀγανακτοῦ- 15  
μεν, ἀλλ' ὑπομένομεν ἀκούειν, ὥσπερ ὑπὲρ τῶν  
πολεμίων ἀλλ' οὐχ ὑπὲρ ἡμῶν αὐτῶν καὶ τῆς πατρί-  
δος βουλευόμενοι. οὐκ ἀνελοῦμεν ἐκ μέσου τοὺς  
φλυάρους; οὐ ταχεῖαν ψηφιοῦμεθα τῇ προνομιεμένη  
χώρα τὴν βοήθειαν; οὐ καθοπλιούμεν ἅπασαν τὴν 20  
ἀκμὴν τῆς πόλεως; οὐκ ἐπὶ τὰς ἐκείνων πόλεις αὐτοὶ  
στρατευσόμεθα; ἀλλ' οἴκοι μένοντες καὶ τοῖς δέκα  
λοιδορούμενοι καὶ νέας ἀρχὰς καθιστάντες καὶ περὶ  
κόσμον πολιτικοῦ σκοποῦντες, ὥσπερ ἐν εἰρήνῃ  
πάντ' ἐάσομεν ὑπὸ τοῖς πολεμίοις τὰ ἐν τῇ χώρᾳ γε- 25  
νέσθαι, καὶ τελευτῶντες ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ κινδύ-  
νεύσομεν καὶ κατασκαφῆς τῆς πόλεως, [ὡς] ἐάσαντες  
τὸν πόλεμον τοῖς τέχεσι προσελθεῖν; οὐκ ἔστιν ὑμια-  
1199 νόντων ἀνθρώπων τὰ τοιαῦτα βουλευόμενα, ὃ πατέ-  
ρες, οὐδὲ προνοίας πολιτικῆς τὰ κοινὰ συμφέροντα 30  
τῶν ἰδίων ἀπεχθειῶν ἡγουμένης ἀναγκαιότερα, ἀλλὰ

φιλονεικίας ἀκαίρου καὶ δυσμενείας ἀβούλου καὶ φθόνου κακοδαίμονος, ὅς οὐκ ἔα τοὺς ἔχοντας αὐτὸν σωφρονεῖν. ἀλλὰ τὰς μὲν τούτων φιλονεικίας ἐάσατε χαίρειν· ἃ δὲ ψηφισάμενοι τῇ πόλει σωτήρια καὶ ὑμῖν αὐτοῖς προσήκοντα ἐσεσθε βεβουλευμένοι καὶ τοῖς ἐχθροῖς φοβερά, ἐγὼ πειράσομαι λέγειν. νῦν μὲν τὸν πρὸς Αἰκανοὺς καὶ Σαβίνους πόλεμον ἐπικυρῶσατε, καὶ τὰς δυνάμεις μετὰ πλείστης προθυμίας καὶ σπουδῆς καταγράφετε τὰς ἐπ' ἀμφοτέρους ἐξελευσομένας. ὅταν δὲ τὰ τοῦ πολέμου τέλος ἡμῖν τὸ κράτιστον λάβῃ, καὶ ἀναστρέψωσιν εἰς τὴν πόλιν αἱ δυνάμεις εἰρήνης γενομένης, τότε καὶ περὶ τοῦ κόσμου τῆς πολιτείας σκοπεῖτε, καὶ λόγον ἀπαιτεῖτε τοῖς δέκα περὶ πάντων, ὧν ἐπὶ τῆς ἀρχῆς ἔπραξαν, καὶ 2200  
15 νέας ἀρχὰς ψηφοφορεῖτε καὶ δικαστήρια καθίζετε καὶ τιμωρεῖσθε καὶ τιμᾶτε τοὺς ἑκατέρου τούτων ἀξίους, ὅταν ἐφ' ὑμῖν γένηται ταῦτ' ἀμφοτέρω, μαθόντες ὅτι οὐ τοῖς πράγμασιν οἱ καιροὶ δουλεύουσιν, ἀλλὰ τοῖς καιροῖς τὰ πράγματα. Ταύτην ἀποδειξαμένου 20 Κορνηλίου τὴν γνώμην, οἱ μετ' ἐκείνου ἀνιστάμενοι χωρὶς ὀλίγων τῆς αὐτῆς ἐγένοντο προαιρέσεως· οἱ μὲν ἀναγκαῖα καὶ τῷ παρόντι καιρῷ ταῦτα προσήκοντα ὑπολαμβάνοντες εἶναι, οἱ δ' ὑποκατακλινομένοι καὶ θεραπεύοντες τοὺς δέκα τῷ φόβῳ τῆς ἀρχῆς. ἦν γὰρ τι καὶ κατεπτηχὸς τὴν ἐξουσίαν οὐκ ἐλάχιστον μέρος ἐκ τῶν συνέδρων.

XVIII. Ὡς δ' αἱ πλείους γνώμαι διηγορεύθησαν, καὶ παρὰ πολὺ κρατεῖν ἐδόκουν οἱ τὸν πόλεμον ἐπικυροῦντες τῶν ἑτέρων, τότε Δεύκιον Οὐαλέριον ἐν 30 τοῖς ἐσχάτοις ἐκάλουν, ὃν ἔφην εὐθύς ἐν ἀρχαῖς βουλόμενόν τι λέγειν κωκωλῦσθαι πρὸς αὐτῶν. ὁ δὲ ἀναστὰς τοιούτους διεξῆλθε λόγους· Τὴν μὲν ἐπι- 2201

βουλὴν τῶν δέκα ὁρᾶτε, ὧ πατέρες, οἱ κατ' ἀρχὰς τ' οὐκ ἐπέτρεψάν μοι λέγειν ὅσα προηρούμην πρὸς ὑμᾶς, καὶ νῦν ἐν τοῖς ὑστάτοις ἀποδεδώκασιν λόγον, ἐνθυμηθέντες ὅπερ εἰκὸς ὅτι τῇ τε Κλαυδίου γνώμῃ προσδθέμενος οὐδὲν ὠφελήσω τὸ κοινὸν ὀλίγων αὐτῇ 5 συνειρηκότων· ἑτέραν τε γνώμην παρὰ τὰς εἰρημίνας αὐτὸς ἀποφηνάμενος κἂν τὰ κράτιστα ὑποθῶμαι διακενῆς ἐρραψωδικῶς ἔσομαι. εὐαρίθμητοι γὰρ τινὲς εἰσιν οἱ μετ' ἐμὲ ἀναστησόμενοι, οὓς ἐὰν ἅπαντας ὁμογνώμονας λάβω, τί γενήσεται μοι πλέον οὐδὲ 10 πολλοστήν· ἔξουσι μοῖραν τῶν Κορνηλίων συναγορευόντων; οὐ μὴν ἐγὼ ταῦθ' ὑφορώμενος ὀκνήσω τὴν ἑμαυτοῦ γνώμην εἰπεῖν. ὅταν γὰρ ἀκούσητε [τὰ] ἅπαντων, ἐφ' ὑμῖν ἔσται τὰ κράτιστα ἐλῆσθαι. περὶ μὲν οὖν τῆς δεκαδοχίας, ὃν τρόπον ἐπιμελεῖται τῶν 15 κοινῶν, ὅσα Κλαύδιος ὁ βέλτιστος εἶπε καὶ ἐμοὶ νομίσσατε εἰρησθαι, καὶ ὅτι δεῖ νέας ἀρχὰς ἀποδειχθῆναι, πρὶν ἢ τὸ περὶ τοῦ πολέμου γενέσθαι ψήφισμα· καὶ γὰρ ταῦτα εἰρηται τῷ ἀνδρὶ κατὰ τὸ βέλτιστον. ἐπεὶ δὲ Κορνήλιος εἰς τὸ ἀδύνατον ἀπάγειν ἐπειράτο 20 τὴν γνώμην, πολλοὺς τοὺς μεταξὺ χρόνους ἀποφαίνων ταῖς πολιτικαῖς οἰκονομίαις γενησομένους ἐν χερσίν ὄντος τοῦ πολέμου, καὶ χλευάζειν ἐπεχείρει πράγματα οὐκ ἐπιτήδεια χλευασμῶν, οἷς παρακρουσάμενος ὑμᾶς τοὺς πολλοὺς ᾤχετο φέρων, ἐγὼ καὶ 25 περὶ τοῦ μὴ ἀδύνατον εἶναι τὴν Κλαυδίον γνώμην διαλέξομαι πρὸς ὑμᾶς· ὡς μὲν γὰρ ἀσύμφορος, οὐδὲ τῶν διασυράντων αὐτὴν οὐδεὶς ἐτόλμησεν εἰπεῖν· καὶ δίκην δοῖεν οἱ τολμήσαντες αὐτὴν κακῶς ποιεῖν, 30 καὶ τὴν πάτριον ἀπολάβοιμεν ἀριστοκρατίαν, καὶ ταῦθ' ἅμα γένοιτο συναγωνιζομένων ἀπάντων τῶν 2202

ἐν τῇ πόλει καὶ μηδεὸς τάναντία πράττειν ἀξιούντος· σοφίαν οὐδεμίαν ἀποδεικνύμενος ὑμῖν, τὰ δὲ πραχθέντα ὑφ' ὑμῶν αὐτῶν παραδείγματα φέρων. ἔνθα γὰρ ἢ πείρα διδάσκει τὸ συμφέρον, τί δεῖ στοχα-  
5 σμῶν ἐκεῖ;

XX. Μέννησθε, ὅτι ἀπὸ τῶν αὐτῶν τούτων ἔθνων ὥσπερ νῦν δυνάμεις ἐνέβαλον, αἱ μὲν εἰς τὴν ἡμετέραν γῆν, αἱ δ' εἰς τὴν τῶν συμμάχων ἡμῶν, κατὰ τὸν αὐτοῦ ἀμφοτέραι χρόνον Γαίου  
10 Ναυτίου καὶ Δευκίου Μινυκίου τὴν ὑπατείαν ἐχόντων, ἑνατον ἢ δέκατον ἔτος οἶμαι τοῦτ'. τότε τοίνυν ἀποστειλέντων ὑμῶν νεότητα πολλὴν καὶ ἀγαθὴν ἐπ' ἀμφοτέρω τὰ ἔθνη, τῷ μὲν ἑτέρῳ τῶν ὑπάτων εἰς  
15 δυσχωρίας ἀναγκασθέντι κατακλεῖσαι τὸ στρατόπεδον πρᾶξαι μὲν οὐδὲν ἐξεγένετο, πολιορκεῖσθαι δ' ἐν τῷ χάρακι καὶ κινδυνεύειν σπάνει τῶν ἐπιτηδείων ἀλώ-  
20 ναι· Ναυτίῳ δ' ἀντικαθημένῳ Σαβίνοις μάχης ἀναγκαῖον εἶναι τίθεσθαι πρὸς τούτους συνεχεῖς καὶ μηδὲν ὦρο τ' εἶναι τοῖς κάμνουσι τῶν σφετέρων βοη-  
25 θεῖν. ἦν τ' οὐκ ἄδηλον, ὅτι τῆς ἐν Αἰκανοῖς στρατιᾶς ἀναρπασθείσης οὐδ' ἡ Σαβίνους πολεμουσα ἀνθέξει, συνελθόντων εἰς ταῦτ' ὁ πολέμιον ἀμφοτέρων. τοιούτων δὲ κινδύνων τὴν πόλιν περι-  
30 στάντων καὶ οὐδὲ τῶν ἐντὸς τείχους ὁμοιοούντων, τίνα βοήθειαν εὑρεσθε ὑμεῖς, ἢ περ ὧν ἦσεν ὁμολογουμένως πάντα τὰ πράγματα καὶ φερομένην τὴν πόλιν εἰς ἀτυχῆς πτώμα ὠρθώσεν; περὶ μέσας νύκτας εἰς τὸ βουλευτήριον συνελθόντες ἀρχὴν ἀπεδείξατε μίαν αὐτοκράτορα πολέμου καὶ εἰρήνης, ἀπάσας τὰς  
30 ἄλλας καταλύσαντες ἀρχάς, καὶ πρὶν ἡμέραν γενέσθαι δικτάτωρ ἀπεδέδεικτο Δεύκιος Κοίντιος ὁ βέλ-  
τιστος, οὐδ' ἐν τῇ πόλει τότε ὦν, ἀλλ' ἐν ἀργῷ. τὰ 2201

μετὰ ταῦτα ἴστε δήπου τοῦ ἀνδρὸς ἔργα, ὅτι καὶ δυνάμεις ἀξιοχρότους παρεσκευάσατο καὶ τὸ κινδυνεῦον στρατόπεδον ἐρρυσάτο καὶ τοὺς πολεμίους ἐτιμωρήσατο καὶ τὸν στρατηγὸν αὐτῶν αἰχμάλωτον ἔλαβε· καὶ ταῦτα ἐν ἡμέραις τεσσαρεσκαίδεκα μόναῖς  
5 ἅπαντα διαπραξάμενος, καὶ εἴτι [καὶ] ἄλλο σαθρὸν ἦν τῆς πολιτείας ἐπανορθωσάμενος, ἀπέθετο τὰς ῥάβδους· καὶ τὸ κωλύον οὐδὲν ἐγένετο νέαν ἀρχὴν ἐν ἡμέρᾳ κυρωθῆναι μιᾷ βουλομένον ὑμῶν. τοῦτο δὲ  
10 τὸ παράδειγμα μιμησαμένους ἡμᾶς οἶμαι δεῖν, ἐπειδὴ οὐδὲν ἄλλο ποιεῖν δυνάμεθα, δικτάτωρ ἐλέσθαι, πρὶν ἐντεῦθεν ἐξελθεῖν· εἴαν γὰρ ὑπερβαλώμεθα τοῦτον τὸν καιρὸν, οὐκέτι συνάξουσιν ἡμᾶς οἱ δέκα  
15 βουλευσομένους ὑπὲρ οὐδενός· ἵνα δὲ καὶ κατὰ νόμους ἢ τοῦ δικτάτορος ἀνάρρησις γένηται, τὴν μεσο-  
20 βασιλείου ἀρχὴν ἐλέσθαι, τὸν ἐπιτηδειότατον ἐκλέξαντας τῶν πολιτῶν· ὃ ποιεῖν σύνηθές ἐστιν ὑμῖν, ὅταν μῆτε βασιλεῖς ἔχητε μῆτε ὑπάτους μῆτ' ἄλλην νόμι-  
25 μον ἀρχὴν μηδεμίαν, ὥσπερ νῦν οὐκ ἔχετε. τοῖς γὰρ ἀνδράσι τούτοις παρελήλυθεν ὁ τῆς ἀρχῆς χρόνος, καὶ  
30 τὰς ῥάβδους αὐτῶν ὁ νόμος ἀφήρηται. ταῦτ' ἐστὶν ἢ παλαιῶν πράττειν, ὡ πατέρες, ὑμῖν, καὶ συμφέροντα καὶ δυνατά. ἦν δὲ Κορινθίος εἰσηγείται γνώμην κατά-  
35 λυσις ὁμολογουμένη τῆς ἀριστοκρατίας ὑμῶν ἐστίν. εἴαν γὰρ ἅπαξ ὄπλων οἱ δέκα γένωνται κύριοι τῆδε  
40 τῇ προφάσει τοῦ πολέμου, δέδοικα μὴ καθ' ἡμῶν αὐτοῖς χρησάνται. οἱ γὰρ οὐκ ἀξιούντες ἀποθέσθαι τὰς ῥάβδους, ἢ που γε τὰ ὄπλα ἀποθήσονται; λογιζόμενοι δὲ ταῦτα φυλάττεσθε τοὺς ἀνθρώπους, καὶ πᾶσαν  
45 ἀπάτην αὐτῶν προβλέπετε. κρείττων γὰρ ἢ πρόνοια  
50 τῆς μεταμελείας καὶ τὸ μὴ πιστεύειν τοῖς πονηροῖς σωφρονέστερον τοῦ προπιστεύσαντας κατηγορεῖν.

XXI. Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Οὐαλερίου κεχαρισμένην τοῖς πλείοσιν, ὡς ἐκ τῆς φωνῆς αὐτῶν εἰκάσαι ἴσθαι ἦν, καὶ τῶν μετ' ἐκείνου ἀνισταμένων ἦν δ' αὐτῶν τὸ νέον τῆς βουλῆς μέρος τὸ λει-  
 5 πόμενον· ταῦτα ἡγουμένων κράτιστα εἶναι πλὴν ὀλίγων, ἐπειδὴ πάντες ἀπεδείξαντο τὰς ἑαυτῶν γνώμας, καὶ τέλος ἔδει τὰ βουλευμάτα λαβεῖν, Οὐαλέριος μὲν ἤξιον διαδικασίαν τοὺς δέκα προθεῖναι ταῖς γνώμας, αὐτῆς ἐξ ἀρχῆς πάντας τοὺς βουλευτὰς καλοῦντας, καὶ  
 10 πολλοὺς τῶν συνέδρων ἀναθέσθαι βουλομένοις τὰς προτέρας ἀποφάσεις ταῦτα λέγων πιθανὸς ἦν· Κορνήλιος δ' ὁ συμβουλευὼν τοῖς δέκα τὴν ἡγεμονίαν ἐπιτρέψαι τοῦ πολέμου κατὰ τὸ καρτερόν ἀπεμάχετο, κεκρίσθαι τὸ πρῶγμα ἤδη λέγων καὶ τέλος ἔχειν νό-  
 15 μιμον ἀπάντων ἐψηφικόντων, ἤξιον τε διακριθῆναι τὰς γνώμας, καὶ μηδὲν ἔτι καινουργεῖν. τούτων δὲ λεγομένων ὑφ' ἑκατέρων μετὰ πολλῆς φιλοτιμίας τε καὶ κραυγῆς, καὶ τοῦ συνεδρίου διαστάντος πρὸς ἑκάτερον, τῶν μὲν ἐπανορθώσασθαι τὴν ἀκοσίαν  
 20 τοῦ πολιτεύματος βουλομένων τῷ Οὐαλερίῳ συλλαμβανόντων, τῶν δὲ τὰ χεῖρα προαιρουμένων καὶ ὅσοις κίνδυνός τις ὑπωπτεύετο ἐκ τῆς μεταβολῆς ἔσεσθαι τῷ Κορνηλίῳ συναγορευόντων· λαβόντες ἀφορμὴν οἱ δέκα τοῦ πράττειν ὃ τι δόξειεν αὐτοῖς τὴν τοῦ συνε-  
 25 δρίου ταραχήν, τῇ Κορνηλίου προστίθενται γνώμη· καὶ παρελθὼν εἰς ἐξ αὐτῶν, "Αππίος, ἔφη· Περὶ τοῦ πρὸς Αἰκανοῦς καὶ Σαβίνους πολέμου συνεκαλέσαμεν ὑμᾶς, ὃ βουλή, διαγνωσομένους, καὶ λόγον ἀπεδώκαμεν ἅπασιν τοῖς βουλομένοις ἀπὸ τῶν πρώ-  
 30 των ἄχρι τῶν νεωτάτων ἐν τῷ προσήκοντι καλοῦντες ἕκαστον τόπων. τριῶν δ' ἀποδειξαμένων γνώμας διαφόρους, Κλαυδίον τε καὶ Κορνηλίον καὶ Οὐαλερίον

τελευταίου, διέγνωτε περὶ αὐτῶν ὑμεῖς οἱ λοιποί, καὶ παριῶν ἕκαστος ἀπεφήματο πάντων ἀκούοντων ἢ προσετίθετο γνώμη. ἀπάντων δὲ γεγονότων κατὰ νόμον, ἐπειδὴ τοῖς πλείοσιν ὑμῶν Κορνήλιος ἐδόκει  
 5 τὰ κράτιστα ὑποθέσθαι, τοῦτον ἀπεφηνάμεθα νικᾶν καὶ τὴν ἀποδειχθεῖσαν ὑπὸ τούτου γνώμην γράψαντες ἐκφέρομεν. Οὐαλέριος δὲ καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ ἐστῶτες ὅταν αὐτοὶ τύχωσιν ἐξουσίας ὑπατικῆς, δίκας τ' ἤδη τέλος ἐχούσας ἀναδίκους ποιείτωσαν, ἐὰν αὐ-  
 10 τοῖς φίλον ἦ, καὶ βουλευμάτα διεγνωσμένα ὑπὸ πάντων ὑμῶν ἄκυρα καθιστάτωσαν. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὸν γραμματεῖα κελεύσας ἀναγνῶναι τὸ προβούλευμα, ἐν ᾧ τὴν καταγραφὴν τοῦ στρατοῦ καὶ τὴν ἡγεμονίαν  
 15 τοῦ πολέμου τοὺς δέκα παραλαβεῖν ἐτέτακτο, διέλυσε τὸν σύλλογον.

XXII. Μετὰ τοῦδ' οἱ μὲν τῆς ὀλιγαρχικῆς ἐταιρίας σοβαροὶ καὶ θρασεῖς περιήεσαν, ὡς δὴ κρείττους τῶν ἐτέρων γεγονότες καὶ διαπεπραγμένοι μηκέτι καταλυθῆναι σφῶν τὴν δυναστείαν, ἐπειδὴν  
 20 ἄπαξ ὄπλων καὶ στρατίας γένωνται κύριοι· οἱ δὲ τὰ βέλτεστα τῶ κοινῷ φρονούντες ἀνιαρῶς διακείμενοι καὶ περιφόβως, ὡς οὐδενὸς τῶν κοινῶν ἔτι γενησόμενοι κύριοι· καὶ διέστησαν εἰς μέρη πολλὰ, τῶν μὲν ἀγενεστέρων τὰς φύσεις ἅπαντα συγχωρεῖν τοῖς  
 25 κρατοῦσιν ἀναγκαζομένων καὶ κατανέμειν ἑαυτοὺς εἰς τὰς ὀλιγαρχικὰς ἐταιρίας· τῶν δ' ἦττον φοβόων ἀφισταμένων τῆς ὑπὲρ τῶν κοινῶν φροντίδος, καὶ τὸν ἀπράγμονα βίον μεθαρμοττομένων· ὅσοις δὲ πολὺ τὸ γενναῖον ἐν τοῖς τρόποις ἦν ἰδίας ἐταιρίας κατασκευαζομένων καὶ συμφρονούντων ἐπὶ φυλακῇ  
 30 τε ἀλλήλων καὶ μεταστάσει τῆς πολιτείας. τούτων δὲ τῶν ἐταιριῶν ἡγεμόνες ἦσαν οἱ πρώτοι τολμήσαντες

ἐν τῷ συνεδρίῳ περὶ καταλύσεως τῆς δεκαδαρχίας  
 εἶπεν, Λεύκιος Οὐαλέριος καὶ Μάρκος Ὀράτιος,  
 φραζάμενοι τε τὰς οἰκίας ὄπλοις καὶ φυλακὴν θερα-  
 πόντων καὶ πελατῶν καρτερὰν περὶ ἑαυτοὺς ἔχοντες,  
 5 ὡς μήτε τι ἐκ τοῦ βιαίου παθεῖν μηδὲν μήτ' ἐκ τοῦ  
 δολίου [μήτ' ἐκ τοῦ φανεροῦ δειλίαν καταγνωσθῆ-  
 ναι]. ὅσοις δ' οὔτε θεραπεύειν τὴν τῶν κρατούντων 2211  
 ἔξουσίαν βουλομένοις ἦν, οὔτε μηδενὸς ἐπιστρέφε-  
 σθαι τῶν κοινῶν, οὔτ' ἐν ἀπράκτῳ ζῆν ἡσυχία καλὸν  
 10 εἶδκει, πολεμεῖν τ' ἀνὰ κράτος ἀνόητον, ἐπεὶ καθ-  
 αιρεθῆναι δυναστείαν τηλικαύτην οὐ ῥάδιον ἐφαίνετο  
 εἶναι, κατέλιπον τὴν πόλιν. ἡγεμῶν δὲ τούτων ἀνήρ  
 ἦν ἐπιφανῆς Γάιος Κλαύδιος, ὁ τοῦ κορυφαιοτάτου  
 τῆς δεκαδαρχίας Ἀππίου θεῖος, ἐμπειδῶν τὰς ὑπο-  
 15 σχέςεις, ἃς ἐπὶ τῆς βουλῆς ἐποιήσατο πρὸς τὸν ἀδελ-  
 φιδούν, ὅτ' αὐτὸν ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν ἀξιῶν οὐκ  
 ἔπεισεν. ἡκολούθει δ' αὐτῷ πολὺς μὲν ἑταίρων  
 ὄχλος, πολὺς δὲ πελατῶν. τούτου δ' ἀρξαμένου καὶ  
 τὸ ἄλλο πολιτικὸν πλῆθος οὐκέτι λάθρα καὶ κατ'  
 20 ὀλίγους, ἀλλ' ἐκ τοῦ φανεροῦ καὶ ἀθρόον ἐξέλιπε τὴν  
 πατρίδα, τέκνα καὶ γυναῖκας ἐπαγόμενον. οἱ δὲ περὶ  
 τὸν Ἀππίον ἀγανακτοῦντες τοῖς γινομένοις, ἐπεβά- 2212  
 λοντο μὲν κωλύειν πύλας τ' ἀποκλείσαντες καὶ ἀν-  
 θρώπους τινας συναρπάσαντες, ἔπειτα· δεῖος γὰρ εἰς-  
 25 ἦλθεν αὐτοῖς μὴ πρὸς ἀλκὴν οἱ κωλυόμενοι τράπων-  
 ται, καὶ λογισμὸς ὀρθὸς ὡς κρείττον εἶη σφίσιν ἐκ-  
 ποδῶν εἶναι τοὺς ἐχθροὺς ἢ μένοντας ἐνοχλεῖν· ἀνοί-  
 ξαντες τὰς πύλας ἀφῆκαν τοὺς θέλοντας ἀπιεῖναι, οἰ-  
 κίας δ' αὐτῶν καὶ κλήρους καὶ ὅσα ἄλλα ὑπελείπετο  
 30 ἀδύνατα ὄντα ἐν φυγαῖς φέρεσθαι λειποστρατίαν  
 ἐπευεγκόντες ἐδήμευσαν τῷ λόγῳ, τὸ δ' ἀληθὲς τοῖς  
 ἑαυτῶν ἑταίροις ὥσανει παρὰ τοῦ δήμου πριαμένοις

ἐχαρίσαντο. ταῦτα δὲ τὰ ἐγκλήματα προστεθέντα  
 τοῖς προτέροις πολλῶ δυσμενεστέροις ἐποίησε πρὸς  
 τὴν δεκαδαρχίαν τοὺς πατρικίους καὶ τοὺς δημοτι-  
 κούς. εἰ μὲν οὖν μηδὲν ἐπεξήμαρτον ἔτι πρὸς τοῖς  
 εἰρημένους, δοκοῦσιν ἂν μοι πολὺν ἐπὶ τῆς αὐτῆς 5  
 ἔξουσίας διαμεῖναι χρόνον· ἡ γὰρ φυλάττουσα τὴν  
 1013 δυναστείαν αὐτῶν στάσις ἔτι διέμενεν ἐν τῇ πόλει,  
 διὰ πολλὰς αἰτίας καὶ ἐκ πολλῶν ἀνζηθεῖσα χρόνων,  
 δι' ἣν ἔχαιρον ἑκάτεροι τοῖς ἀλλήλων κακοῖς· οἱ μὲν  
 δημοτικοὶ τὸ φρόνημα τῶν πατρικίαν τεταπεινωμένου 10  
 ὄρωντες καὶ τὴν βουλὴν οὐδενὸς ἔτι τῶν κοινῶν  
 οὔσαν κυρίαν· οἱ δὲ πατρικίαι τὴν ἐλευθερίαν ἀπο-  
 λωλεκότα τὸν δῆμον καὶ μηδὲ τὴν ἐλαχίστην ἔχοντα  
 ἰσχύν, ἐξ οὗ τὴν δημοαρχικὴν ἔξουσίαν αὐτῶν οἱ δέκα  
 ἀφείλοντο· ἀνθαδεία δὲ πολλῇ πρὸς ἄμφω τὰ μέρη 15  
 χρώμενοι, καὶ οὔτ' ἐπὶ στρατοπέδου μετριάζοντες  
 οὔτ' ἐν τῇ πόλει σωφρονοῦντες, ὁμοιοῦσαι πάντας  
 ἠνάγκασαν καὶ καταλύσαι τὴν ἀρχὴν αὐτῶν, ὅπλων  
 γυνηθέντας κυρίους διὰ τὸν πόλεμον. τὰ δ' ἁμαρτή-  
 20 ματα αὐτῶν τὰ τελευταῖα καὶ δι' ἃ κατελύθησαν  
 ὑπὸ τοῦ δήμου· τούτου γὰρ δὴ μάλιστα προσηλακί-  
 ζοντες ἐξηγρίωσαν· τοιαῦδ' ἦν.

XXIII. Ὅτε τὸ περὶ τοῦ πολέμου ψήφισμα ἐκύ-  
 ρωσαν, καταγράφαντες ἐν τάχει τὰς δυνάμεις καὶ  
 2214 τριχῇ νεύσαντες, δύο μὲν τάγματα κατέλιπον ἐν τῇ 25  
 πόλει φυλακῆς τῶν ἐντὸς τείχους ἕνεκεν· ἡγεῖτο  
 δὲ τῶν δύο τούτων ταγματῶν Ἀππίος Κλαύδιος ὁ  
 προεστηκὸς τῆς ὀλιγαρχίας, καὶ σὺν αὐτῷ Σπό-  
 ριος Ὀππίος. τρία δὲ ἔχοντες ἐξῆγον ἐπὶ Σαβί-  
 νους Κόιντος Φάβιος καὶ Κόιντος Ποιτέλιος καὶ 30  
 Μάνιος Ραβολήιος. πέντε δὲ τὰ λοιπὰ τάγματα παρα-  
 λαβόντες Μάρκος τε Κορνήλιος καὶ Λεύκιος Μηνύ-



κιος καὶ Μάρκος Σέργιος καὶ Τίτος Ἀντώνιος καὶ  
 τελευταῖος Καίσιων Δουέλλιος ἐπὶ τὸν πρὸς Αἰκανοὺς  
 πόλεμον ἀφίκοντο· συνεστρατεύετο δ' αὐτοῖς Λατί-  
 5 των τε καὶ ἄλλων συμμαχῶν ἐπικουρικῶν οὐκ ἔλατ-  
 τον τοῦ πολιτικοῦ πλήθους. ἀλλ' οὐδὲν αὐτοῖς ἐχώ-  
 ρει κατὰ νοῦν τοσαύτην μὲν οἰκείαν δύναμιν ἐπαρο-  
 μένοις, τοσαύτην δὲ συμμαχίαν. οἱ γὰρ πολέμιοι  
 καταφρονήσαντες αὐτῶν, ὅτι νεοσύλλεκτοι ἦσαν οἱ  
 στρατεύομενοι, πλησίον ἀντεστρατοπεδεύσαντο καὶ  
 10 τὰς τ' ἀγορὰς ἀγομένους ἀφηροῦντο, λοχῶντες τὰς  
 ὁδοὺς, καὶ ἐπὶ προνομίᾳ ἐξιοῦσιν ἐπετίθεντο, καὶ εἰ  
 ποτε ἱππεῖς εἰς χεῖρας ἔλθοιεν ἱππεῦσι καὶ περὶ πε-  
 ζοῖς καὶ φάλαγγ' πρὸς φάλαγγα μαχόμενοι πανταχῇ  
 15 πλέον ἔχοντες ἀπῆσαν, ἐθελοκακούντων οὐκ ὀλίγων  
 ἐν ταῖς συμπλοκαῖς καὶ οὔτε τοῖς ἡγεμόσι πειθόμε-  
 νων οὔτε ὁμοσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις βουλομένων.  
 οἱ μὲν οὖν ἐπὶ Σαβίνους στρατεύσαντες ἐν τοῖς ἐλάτ-  
 20 τοσι κακοῖς σωφρονισθέντες ἐκόντες ἔγνωσαν ἐκλι-  
 πεῖν τὸν χάρακα· καὶ περὶ μέσας νύκτας ἀναστήσαν-  
 τες τὸν στρατὸν ἀπῆγον ἐκ τῆς πολεμίας εἰς τὴν  
 ἑαυτῶν φυγῇ παραπλησίαν ποιούμενοι τὴν ἀνάξουξιν,  
 ἕως ἐπὶ πόλιν Κρουστομέριαν, ἣ ἔστιν οὐ πρόσω τῆς  
 Ῥώμης, ἀφίκοντο. οἱ δ' ἐν Ἀλγιδῶ τῆς Αἰκανῶν  
 25 χώρας θέμενοι τὴν παρεμβολὴν πολλὰς καὶ αὐτοὶ  
 λαμβάνοντες παρὰ τῶν πολεμίων πληγὰς καὶ παρὰ  
 τὰ δεινὰ μένειν ἀξιούτες ὡς ἐπανορθωσόμενοι τὰς  
 ἐλαττώσεις οἰκτιστα πρᾶγματα ἔπαθον. ὡσάμενοι  
 γὰρ ἐπ' αὐτοὺς οἱ πολέμιοι καὶ τοὺς ὑποστάντας τοῦ  
 30 χάρακος καταβαλόντες ἐπέβησαν τῶν ἐρυμάτων· καὶ  
 καταλαβόμενοι τὸ στρατόπεδον ὀλίγους μὲν τινὰς ἀμυ-  
 νομένους ἀπέκτειναν, τοὺς δὲ πλείους ἐν τῷ διωγμῷ  
 διεφθειραν. οἱ δὲ διασωθέντες ἐκ τῆς φυγῆς τραυ-

ματῖαι τε οἱ πλείους καὶ τὰ ὄπλα μικροῦ δεῖν πάντες  
 ἀπολωλεκότες εἰς πόλιν Τύσκλου ἀφικνοῦντο· σκη-  
 νὰς δ' αὐτῶν καὶ ὑποζύγια καὶ χρήματα καὶ θερά-  
 5 ποντας καὶ τὴν ἄλλην τοῦ πολέμου παρασκευὴν οἱ  
 πολέμιοι διήρπασαν. ὡς δ' ἀπηγγέλη ταῦτα τοῖς  
 κατὰ τὴν πόλιν, ὅσοι περ ἦσαν ἐχθροὶ τῆς ὀλιγαρχίας  
 καὶ οἱ τέως ἀποκρυπτόμενοι τὸ μῖσος φανεροῦς  
 ἐποίουν ἑαυτοὺς τότε χαίροντες ἐπὶ ταῖς κακοπρα-  
 10 ρίαις τῶν στρατηγῶν· καὶ ἦν ἤδη καρτερὰ χεῖρ περὶ  
 τὸν Ὀράτιόν τε καὶ τὸν Οὐαλέριον, οὓς ἔφην ἡγεμό-  
 νας εἶναι τῶν ἀριστοκρατικῶν ἐταιρειῶν.

XXIII. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἄππιον τοῖς μὲν ἐπὶ  
 στρατοπέδου συνάρχουσι ὄπλα τε καὶ χρήματα καὶ  
 σίτον καὶ τᾶλλα ὧν ἐδέοντο ἐπεχορήγουν, τὰ τε δη-  
 15 μόσια καὶ ἰδιωτικά διὰ πολλῆς ὑποψίας λαμβάνον-  
 τες, καὶ ἀντὶ τῶν ἀπολωλότων ἀνδρῶν στρατολογή-  
 σαντες ἐξ ἀπάσης φυλῆς τοὺς ὄπλα φέρειν δυναμένους  
 ἀπέστειλαν, ὥστ' ἐκπληρωθῆναι τοὺς λόχους· τῶν  
 τε κατὰ πόλιν ἐπιμελῆ φυλακῆν ἐποίουντο φρουραῖς  
 20 τοὺς ἐπικαιροτάτους καταλαμβανόμενοι τόπους, μὴ  
 τι λάθωσι παρακινήσαντες οἱ μετὰ τοῦ Οὐαλερίου  
 συνεστῶτες. ἐπέσκηπτόν τε δι' ἀπορρήτων τοῖς ἐπὶ  
 τῶν στρατοπέδων συνάρχουσι τοὺς ἐναντιούμενους  
 σφίσι διαφθεῖρειν· τοὺς μὲν ἐπιφανεῖς ἀδήλως, ὧν  
 25 δ' ἐλάττων ὁ λόγος ἦν καὶ ἀπὸ τοῦ φανεροῦ, προφά-  
 σεις αἰετίνους ἐπιφέροντας, ἵνα δικαίως δόξωσιν ἀπο-  
 θανεῖν. καὶ ἐγένετο ταῦτα· οἱ μὲν γὰρ ἐπὶ προνομίᾳ  
 ἀποστελλόμενοι ὑπ' αὐτῶν, οἱ δ' ἀγορὰν παραπέμψαι  
 30 μικρὰς χρείας, ἔξω γενόμενοι τοῦ χάρακος οὐδαμῶ  
 ἔτι ὤφθησαν. οἱ δὲ ταπεινότατοι φυγῆς ἄρχειν κατη-  
 γορηθέντες ἢ τὰ ἀπόρρητα πρὸς τοὺς πολεμίους ἐκ-

φέρειν ἢ τάξιν μὴ φυλάττειν, ἐν τῷ φανερωῷ κατα-  
πλήξεως ἕνεκα τῶν ἄλλων ἀπώλλυντο. ἐγένετο δὲ  
διχόθεν τῶν στρατιωτῶν ὄλεθρος, τῶν μὲν οἰκείων  
τῆς ὀλιγαρχίας ἐν ταῖς πρὸς τοὺς πόλεμιους συμπλο-  
5 καῖς διαφθειρομένων, τῶν δὲ τὴν ἀριστοκρατικὴν  
ποθοῦντων κατάστασιν ὑπὸ τῶν στρατηγῶν ἀπολλυ-  
μένων.

XXV. Πολλὰ δὲ τοιαῦτα καὶ κατὰ τὴν πόλιν  
ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἄππιον ἐγένετο. τῶν μὲν οὖν ἄλ-  
10 λων καίτοι συχνῶν ἀναιρουμένων ἐλάττων τοῖς πλή-  
θεσι λόγος ἦν· ἐνδὸς δ' ἀνδρὸς ἐπιφανεστάτου τῶν  
δημοτικῶν καὶ πλείστας ἀρετὰς ἐν τοῖς κατὰ πόλεμον  
ἔργοις ἀποδειξαμένου θάνατος ὤμος καὶ ἀνόσιος,  
15 ἐπιτελεσθεὶς ἐν θατέρω τῶν στρατοπέδων, ἔνθα οἱ  
τρεις ἡγεμόνες ἦσαν, ἅπαντας ἐτοιμοὺς ἐποίησε πρὸς  
τὴν ἀπόστασιν τοὺς ἐκεῖ. ἦν δὲ ὁ φονευθεὶς Σίκκιος,  
ὁ τὰς ἑκατὸν εἴκοσι μάχας ἀγωνισάμενος καὶ ἐξ ἀπα-  
σῶν τὰριστιεῖα λαβῶν, ὃν ἔφη ἀπολελυμένον ἤδη  
στρατείας διὰ τὸν χρόνον ἐκούσιον τοῦ πρὸς Αἰκά- 2219  
20 νοὺς συνάρασθαι πολέμου, σπείραν ἀνδρῶν ὀκτακο-  
σίων ἐκπεληρωκότων ἤδη τὰς κατὰ νόμον στρατείας  
εὐνοία τῇ πρὸς αὐτὸν ἐπαρόμενον· μεθ' ὧν ἀποστα-  
λεῖς ὑπὸ θατέρου τῶν ὑπάτων ἐπὶ τὸ στρατόπεδον  
τῶν πολεμίων, εἰς πρόδηλον ὄλεθρον ὡς πᾶσιν ἐδό-  
25 κει, τοῦ τε χάρακος ἐκράτησε καὶ τῆς ὀλοσχεροῦς  
νίκης αἴτιος ἐγένετο τοῖς ὑπάτοις. τοῦτον δὲ τὸν  
ἄνδρα πολλοὺς ἐν τῇ πόλει διεξιόντα λόγους κατὰ  
τῶν ἐπὶ στρατοπέδου στρατηγῶν, ὡς ἀνάνδρων τε  
καὶ ἀπείρων πολέμου, ἐκποδῶν ποιῆσαι σπεύδοντες  
30 οἱ περὶ τὸν Ἄππιον, εἰς ὀμιλίαν προὐκαλοῦντο φιλαν-  
θρώπους καὶ συνδιαπορεῖν σφίσιν ἤξελον ὑπὲρ τῶν  
ἐπὶ στρατοπέδου, καὶ πῶς ἐπανορθωθεῖη τὰ τῶν

στρατηγῶν ἀμαρτήματα λέγειν παρεκάλουν, καὶ τε-  
λευτῶντες ἐπεισαν ἐξελθεῖν ἐπὶ τὸν ἐν Κρουστομε-  
ρεῖα χάρακα αὐτὸν ἐξουσίαν ἔχοντα πρεσβευτικὴν.  
9220 ἔστι δὲ πάντων ἱερώτατον τε καὶ τιμιώτατον ὁ πρε-  
σβευτὴς παρὰ Ῥωμαίοις, ἐξουσίαν μὲν ἄρχοντος ἔχων 5  
καὶ δύναμιν, ἀσυλίαν δὲ καὶ σεβασμὸν ἱερέως. ὡς  
δ' ἀφίκετο, φιλοφρονουμένων αὐτὸν ἐκεῖ τῶν ἡγε-  
μόνων καὶ δεομένων συστρατηγεῖν μένοντα, καὶ τινὰς  
καὶ δωρεὰς τὰς μὲν διδόντων ἤδη, τὰς δ' ὑπισχνου-  
μένων, ἐξαπατηθεὶς ὑπ' ἀνθρώπων πονηρῶν καὶ 10  
τὴν γοητείαν τῶν λόγων οὐ συνειδὼς ὡς ἐξ ἐπιβουλῆς  
ἐγένετο, στρατιωτικὸς ἀνὴρ καὶ τὸν τρόπον ἀπλοῦς,  
τὰ τ' ἄλλα ὑπέθετο αὐτοῖς, ὅσα συμφέροιεν ὑπελάμ-  
βανε, καὶ πρῶτον ἀπάντων παρήγει μετὰ τὴν  
παραβολὴν εἰς τὴν πολεμίαν ἐκ τῆς σφετέρως· τὰς 15  
τε βλάβας διεξιὼν τὰς τότε γινομένης, καὶ τὰς ὠφε-  
λείας ἐπιλογιζόμενος ὅσας ἔμελλον ἔξειν μεταστρα-  
τοπεδευσάμενοι.

XXVI. Οἱ δ' ἀσμένως δέχεσθαι τὰς παραινέσεις  
σκηψάμενοι· Τί οὖν, ἔφασαν, οὐκ αὐτὸς ἡγεμὼν 20  
9221 γίνῃ τῆς ἀναξεύξεως, τόπον ἐπιτήδειον προκατασκε-  
ψάμενος; ἐμπειρίαν δ' ἱκανὴν ἔχεις τῶν τόπων διὰ  
τὰς πολλὰς στρατείας. λόχον δὲ σοὶ δώσομεν ἐπιλέ-  
κτων νέων, εὐζώνων ἐσταλμένων ὀπίσει· σοὶ δὲ ἴπ-  
πος τε διὰ τὴν ἡλικίαν παρέστω, καὶ ὀπλισμὸς ὁ 25  
τοῖς τηλικούτοις πρόπων. ὑποδεξαμένου δὲ τοῦ  
Σιακίου καὶ φίλους αἰτήσαντος ἑκατὸν ἐπιλέκτους,  
οὐδένα χρόνον ἐπισχόντες ἐκπέμπουσιν αὐτὸν ἐτι-  
νυκτὸς οὔσης καὶ σὺν αὐτῷ τοὺς ἑκατὸν ἄνδρας,  
ἐκ τῶν ἰδίων ἐταίρων τοὺς ἰταμωτάτους ἐπιλεξάμε- 30  
νοι, οἷς ἐπέσκηψαν ἀποκτεῖναι τὸν ἄνδρα μεγάλους  
μισθοὺς τῆς ἀνδροφουίας ὑποσχόμενοι. ἐπεὶ δὲ πολὺ

προελθόντες ἀπὸ τοῦ χάρακος εἰς χωρίον ἤλθον ὄχθη-  
 ρὸν καὶ στενόπορον καὶ χαλεπὸν ἵππῳ διεξελθεῖν,  
 ὅτι μὴ βάρη ἀνιόντι, διὰ τὴν τραχύτητα τῶν ὄχθων,  
 σύνθημα δόντες ἀλλήλοις στίφος ἐποιοῦν, ὡς ἅμα <sup>2221</sup>  
 5 χωρήσοντες ἐπ' αὐτὸν ἀθρόοι. θεράπων δέ τις ὑπα-  
 σπιστῆς τοῦ Σικκίου τὰ πολεμικὰ ἀγαθὸς εἰκάσας τὴν  
 διάνοιαν αὐτῶν μηνυτὴς γίνεται τῷ δεσπότῃ. κα-  
 κείνος ὡς ἐγνω κατακλειόμενον αὐτὸν εἰς δυσχωρίας,  
 ἐνθα οὐκ ἦν δυνατὸν ἀνὰ κράτος ἐλάσαι τὸν ἵππον,  
 10 καθάλλεται τε καὶ σιὰς ἐπὶ τὸν ὄχθον, ἵνα μὴ κυκλω-  
 θεῖη πρὸς αὐτῶν, τὸν ὑπασπιστὴν μόνον ἔχων τοὺς  
 ἐπιόντας ὑπέμεινεν. ὀρμησάντων δὲ ἅμα πάντων  
 πολλῶν ὄντων ἐπ' αὐτόν, ἀποκτείνει μὲν περὶ πεν-  
 τεκαίδεκα, τραυματίζει δὲ καὶ διπλασίους. ἐδόκει δ'  
 15 ἂν καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας διαφθεῖραι μαχόμενος,  
 εἰ συνήεσαν ὁμοσε. οἱ δ' ἄρα συμφορησάντες, ὡς  
 ἅμαχον [τι] εἶη χρῆμα, καὶ οὐκ ἂν ἔλοιεν αὐτὸν συ-  
 στάδην, τῆς μὲν ἐκ χειρὸς ἀπέιχοντο μάχης, προσω-  
 τέρω δ' ἀποστάντες ἔβαλλον οἱ μὲν σαννίους, οἱ δὲ  
 20 χρομάσιον, οἱ δὲ ξύλοις· τινὲς δ' αὐτῶν προσελθόντες  
 ἐκ τῶν πλαγίων τὸν ὄχθον καὶ γενόμενοι κατὰ κε-  
 φαλῆς κατεκύλιον ὑπερμεγέθεις ἄνωθεν πέτρας, ἕως <sup>2223</sup>  
 ὑπὸ πλήθους τῶν ἐξ ἐναντίας βαλλομένων καὶ βάρ-  
 ρους τῶν ἄνωθεν ἐπικαταραττομένων διέφθειραν  
 25 αὐτόν. Σικκιος μὲν δὴ τοιαύτης καταστροφῆς ἐτυχευ.  
 XXVII. Οἱ δὲ διαπραξάμενοι τὸν φόνον ἦγον  
 ἐπὶ τὸ στρατόπεδον ἄγοντες τοὺς τραυματίας, καὶ  
 διέσπειραν λόγον, ὡς ἐπιφανεῖς αὐτοῖς πολεμίων λό-  
 χος τὸν τε Σικκιον ἀποκτείνεει καὶ τοὺς ἄλλους ἄν-  
 30 δρας, οἷς πρώτοις ἐνέτυχεν, αὐτοῖ τε πολλὰ τραυματα  
 λαβόντες μόλις αὐτοὺς ἀποφύγοιεν. καὶ ἐδόκουν  
 ἅπασι πιστὰ λέγειν. οὐ μὴν ἐλαθέ γ' αὐτῶν τὸ ἔργον,

ἀλλὰ καίπερ ἐν ἐρημίᾳ τοῦ φόνου γεγυότος καὶ μη-  
 δένα μηνυτὴν ἔχοντας, ὑπὸ τοῦ χρεῶν αὐτοῦ καὶ τῆς  
 ἅπαντα ἐπισκοπούσης τὰ θνητὰ πράγματα δίκης ἐξη-  
 λέγχθησαν τεκμηρίοις ἀναμφισβητήτοις. οἱ γάρ ἐν  
 τῷ στρατοπέδῳ ταφῆς τε δημοσίας ἄξιον ἠγούμενοι <sup>5</sup>  
 τὸν ἄνδρα καὶ τιμῆς παρὰ τοὺς ἄλλους διαφόρου,  
 διὰ πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα, μάλιστα δ' ὅτι προεσβύτης  
 10 ὢν καὶ ὑπὸ τῆς ἡλικίας πολεμικῶν ἀγώνων ἀπολυό-  
 μενος εἰς κίνδυνον ἐκούσιον ἔδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ τοῦ  
 κοινῆ συμφέροντος, ψηφίζονται συνελθόντες εἰς ἐν <sup>10</sup>  
 ἀπὸ τῶν τριῶν ταγματίων ἐξελεῖν ἐπὶ τὴν ἀνεύρεσιν  
 τοῦ σώματος, ἵνα μετὰ πολλῆς ἀσφαλείας τε καὶ τιμῆς  
 ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν παρακομισθεῖη. συγχωρησάντων  
 δὲ τῶν ἡγεμόνων δι' εὐλάβειαν, μὴ τινα παράσχοιεν  
 αὐτοῖς ὑποψίαν περὶ τὸ πρᾶγμα ἐπιβουλῆς καλῶ καὶ <sup>15</sup>  
 προσήκοντι ἔργῳ ἐπιστάμενοι, λαβόντες τὰ ὄπλα  
 ἐξήεσαν. ἐλθόντες δ' ἐπὶ τὸν τόπον, ὡς εἶδόν [τε  
 οὐδαμοῦ] οὔτε θρομους οὔτε φάραγγας οὔτ' ἄλλο  
 χωρίον, ἐνθα ὑποκαθίξειν ἔστι λόχοις ἔθος, ἀλλὰ  
 20 ψιλὸν καὶ περιφανῆ καὶ στενόπορον ὄχθον, δι' ὑπο-  
 ψίας ἔλαβον εὐθέως τὸ πρᾶξέν· ἔπειτα τοῖς νεκροῖς  
 προσελθόντες, ὡς ἐθεάσαντο τὸν τε Σικκιον αὐτὸν  
 ἀσκύλευτον ἐρριμμένον καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας, ἐν  
 25 θαύματι ἦσαν, εἰ πολέμοι κρατήσαντες ἐχθρῶν μήτε  
 ὄπλα περιείλοντο μήτ' ἐσθῆτα περιέδυσαν. διερευ- <sup>25</sup>  
 νώμενοί τε τὰ περίε ἅπαντα, ὡς οὔτε στίβον ἵππων  
 οὔτ' ἶχνος ἀνθρώπων οὐδὲν εὔρισκον, ἔξω τῶν διὰ  
 τῆς ὁδοῦ, πρᾶγμα ἀμήχανον ὑπελάμβανον εἶναι πο-  
 λεμίου ἐπιφανῆναι τοῖς σφαιτέροις ἀφανεῖς, ὥσπερ  
 30 πτηνοῦς τινος ἢ διοπετεῖς. ὑπὲρ ἅπαντα δὲ ταῦτα  
 καὶ τὰ ἄλλα μέγιστον αὐτοῖς ἐφάνη τεκμήριον τοῦ  
 μὴ πρὸς ἐχθρῶν, ἀλλ' ὑπὸ φίλων τὸν ἄνδρα ἀπολω-

λέναι, τὸ μηδένα τῶν πολεμίων εὐρεθῆναι νεκρόν. οὐ γὰρ ἀκουσί γ' ἂν ἐδόκουν ἀποθανεῖν Σίκκιον, ἄνδρα καὶ θάμην καὶ ψυχὴν ἀνυπόστατον, οὐδὲ τὸν ὑπασπιστήν, οὐδὲ τοὺς ἄλλους τοὺς σὺν αὐτῷ πεσόν-  
 5 τας, ἄλλως τε καὶ ἐκ χειρὸς γενομένης τῆς μάχης. ἐτεκμήρατο δὲ τοῦτο ἐκ τῶν τραυμάτων. αὐτὸς τε γὰρ ὁ Σίκκιος πολλὰς εἶχε πληγὰς, τὰς μὲν ὑπὸ χερ-  
 μάδων, τὰς δ' ὑπὸ σαννίων, τὰς δ' ὑπὸ μαχαιρῶν, καὶ ὁ ὑπασπιστής· οἱ δ' ὑπ' ἐκείνων ἀνηρημένοι  
 10 πάντες μαχαιρῶν ἢ χερμᾶδων ἢ σαννίων, βέλους δὲ οὐδεμίαν. ἀγανάκτησις δὴ μετὰ τοῦτ' ἐγίνετο πάντων καὶ βοή καὶ πολὺς ὀδυρμός· ὥς δὲ καταλοφύ-  
 ραντο τὴν συμφορὰν, ἀράμενοι καὶ κομίσαντες τὸν νεκρὸν ἐπὶ τὸν χάρακα, πολλὰ τῶν στρατηγῶν κατε-  
 15 βόων, καὶ μάλιστα μὲν ἠξίουσαν κατὰ τὸν στρατιωτικὸν ἀποκτεῖναι νόμον τοὺς ἀνδροφόνους· εἰ δὲ μή, δι-  
 καστήριον αὐτοῖς ἀποδοῦναι παραχοῆμα. καὶ πολλοὶ ἦσαν οἱ κατηγορεῖν μέλλοντες αὐτῶν. ὥς δ' οὐδὲν αὐτῶν εἰσήκουον ἐκείνοι, ἀλλὰ τοὺς τ' ἄνδρας ἀπε-  
 20 κρούσαντο καὶ τὰς δίκας ἀνεβάλλοντο, φήσαντες ἐν Ῥάμῃ λόγον ἀποδώσειν τοῖς βουλομένοις αὐτῶν κατ-  
 ηγορεῖν, μαθόντες ὅτι τῶν στρατηγῶν τὸ ἐπιβού-  
 λευμα ἦν, τὸν μὲν Σίκκιον ἐθαπτον, ἐκκομιδὴν τε ποιησάμενοι λαμπροτάτην καὶ πυρὰν νήσαντες ὑπερ-  
 25 μεγέθη καὶ τῶν ἄλλων ἀπαρχόμενοι κατὰ δύναμιν, ὧν νόμος ἐπ' ἀνδράσιν ἀγαθοῖς εἰς τὴν τελευταίαν τιμὴν φέρεσθαι· πρὸς δὲ τὴν δεκαδαρχίαν ἠλλο-  
 τριοῦντο πάντες καὶ γνώμην εἶχον ὥς ἀποστησόμε-  
 30 νοι. τὸ μὲν δὴ περὶ Κρουστομέρειαν καὶ Φιδήνην ἐχθρὸν τοῖς προεστηκόσι τῶν πραγμάτων ἦν.

XXVIII. Τὸ δ' ἐν Ἀλγιδῷ τῆς Αἰκωνῶν χώρας

καθιδουμένοι καὶ τὸ ἐν τῇ πόλει πλῆθος ἔπαν διὰ ταύτας ἐξεπολεμώθη τὰς αἰτίας πρὸς αὐτούς. ἀνὴρ ἐκ τῶν δημοτικῶν, Δεύκιος Οὐεργίνιος, οὐδενὸς χεί-  
 ρων τὰ πολεμικά, λόχου τιῶς ἡγεμονίαν ἔχων ἐν τοῖς πέντε τάγμασιν ἐτάχθη τοῖς ἐπ' Αἰκωνοὺς στρα-  
 5 τευσαμένοις. τούτῳ θυνγάτῳ ἔτυχεν οὔσα καλλίστη τῶν ἐν Ῥάμῃ παρθένων, τὸ πατρῶον ὄνομα φέρουσα, ἣν ἐνεργυρήσατο Δεύκιος εἰς ἐκ τῶν δεδημαρχηκότων  
 10 υἱὸς Ἰκίλιου τοῦ πρώτου τε καταστησαμένου τὴν δημο-  
 αρχικὴν ἐξουσίαν καὶ πρώτου λαβόντος. ταύτην τὴν κόρην ἐπίγαμον οὔσαν ἤδη θεασάμενος Ἄππιος Κλαύδιος ὁ τῆς δεκαδαρχίας ἡγεμὼν ἀναγινώσκου-  
 σαν ἐν γραμματιστοῦ· ἦν δὲ τὰ διδασκαλεῖα τότε τῶν παιδῶν περὶ τὴν ἀγορὰν· αὐτὸς τε ὑπὸ τοῦ κάλλους τῆς παιδὸς ἐάλω, καὶ ἔτι μᾶλλον ἔξω τῶν  
 15 φρεσῶν ἐγένετο πολλάκις ἀναγκαζόμενος παρῆναι τὸ διδασκαλεῖον ἤδη κρατούμενος ὑπὸ τοῦ πάθους. ὥς δ' οὐκ ἠδύνατο πρὸς γάμον αὐτὴν λαβεῖν, ἐκεί-  
 νην τε ὄρῳν ἐγγεγνημένην ἐτέρω καὶ αὐτὸς ἔχων γυναικὰ γαμετήν, καὶ ἅμα οὐδ' ἀξίων ἐκ δημοτικοῦ  
 20 γένους ἀρμόσασθαι γάμον, δι' ὑπεροψίαν τῆς τύχης καὶ παρὰ τὸν νόμον, ὃν αὐτὸς ἐν ταῖς δώδεκα δέλτοις ἀνέγραψε, τὸ μὲν πρῶτον ἐπειράθη διαφθεῖραι χρή-  
 25 μασι τὴν κόρην, καὶ προσέπεμπε τινας ἀεὶ πρὸς τὰς τροφούς αὐτῆς γυναικᾶς· ἦν γὰρ ὄρφανὴ μητρὸς ἢ πατρὸς διδούς τε πολλὰ καὶ ἔτι πλείονα τῶν δεδο-  
 μένων ὑπισχνούμενος. παρήγγελλτο δὲ τοῖς πειρωμέ-  
 νοις τὰς τροφούς μὴ λέγειν, τίς ὁ τῆς κόρης ἐστὶν ἐρῶν, ἀλλ' ὅτι τῶν δυναμένων τις εὖ ποιεῖν οὐς βουληθείη καὶ κακῶς. ὥς δ' οὐκ ἔπειθον αὐτάς,  
 30 ἀλλὰ καὶ φυλακῆς ἐώρα τὴν κόρην κρείττονος ἢ πρό-  
 τιρον ἀξιουμένην, φλεγόμενος ὑπὸ τοῦ πάθους τὴν

ἰταμωτέραν ἔγνω βαδίζειν ὁδόν. μεταπεμφόμενος  
 δὴ τινα τῶν ἑαυτοῦ πελατῶν, Μάρκον Κλαύδιον,  
 ἄνδρα τολμηρὸν καὶ πρὸς πᾶσαν ὑψηροσίαν ἑτοιμον,  
 τὸ τε πάθος αὐτῷ διηγείται καὶ διδάξας, ὅσα ποιεῖν  
 5 αὐτὸν ἐβούλετο καὶ λέγειν, ἀποστέλλει συχνοὺς τῶν  
 ἀναιδεστῶτων ἐπαγόμενον. ὁ δὲ παραγεγόμενος ἐπὶ  
 τὸ διδασκαλεῖον ἐπιλαμβάνεται τῆς παρθένου καὶ  
 φανερώς ἄγειν ἐβούλετο δι' ἀγορᾶς. κραυγῆς δὲ γε-  
 νομένης καὶ πολλοῦ συνθραμόντος ὄχλου, καλυόμε-  
 10 νος ὅποι προηρείτο τὴν κόρην ἄγειν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν  
 παραγίνεται. ἐκάθητο δ' ἐπὶ τοῦ βήματος τηνικαῦτα  
 μόνος Ἀππίος χρηματίζων τε καὶ δικάζων τοῖς δεο-  
 μένοις. βουλομένου δ' αὐτοῦ λέγειν, κραυγὴ τε καὶ  
 ἀγανάκτησις ἦν ἐκ τοῦ περιεστῶτος ὄχλου, πάντων  
 15 ἀξιούτων περιμένειν, ἕως ἔλθωσιν οἱ συγγενεῖς τῆς  
 κόρης· καὶ ὁ Ἀππίος οὕτως ἐκέλευσε ποιεῖν. ὡς δ'  
 ὀλίγος ὁ μεταξὺ χρόνος ἐγεγόνει, [καὶ] παρῆν ὁ πρὸς  
 μητρὸς θεῖος τῆς παρθένου Πόπλιος Νομιτώριος,  
 φίλος τε πολλοὺς ἐπαγόμενος καὶ συγγενεῖς, ἀνὴρ  
 20 ἐκ τῶν δημοτικῶν ἐμφανῆς, καὶ μετ' οὐ πολὺ Λεύ-  
 κιος, ὁ παρὰ τοῦ πατρὸς ἐνεγγνησάμενος τὴν κόρην,  
 χεῖρα περὶ αὐτὸν ἔχων νέων δημοτικῶν καρτερᾶν.  
 ὡς δὲ τῷ βήματι προσῆλθεν, ἀσθμαίνων ἔτι καὶ μετέω-  
 2231 ρος τ' πνεῦμα λέγειν ἠξίον, τίς ἐστὶν ὁ τολμήσας  
 25 ἀφασθαι παιδὸς ἀστῆς καὶ τί βουλούμενος.

XXVIII. Σιωπῆς δὲ γενομένης Μάρκος Κλαύ-  
 διος ὁ τῆς παιδὸς ἐπιλαβόμενος τοιοῦτον διεξῆλθε  
 λόγον· Οὐδὲν οὔτε προπετὲς οὔτε βίαιον πέπρακται  
 μοι περὶ τὴν κόρην, Ἀππίε Κλαύδιε· κύριος δ' αὐ-  
 30 τῆς ὦν κατὰ τοὺς νόμους ἄγω. ὄν δὲ τρόπον ἐστὶν  
 ἐμῇ, μάθε. ἔστι μοι θεράπαινα πατρικὴ πολλοὺς  
 πάνυ δουλεύουσα χρόνους. ταύτην κύουσεν ἡ Οὐεφ-

γνίου γυνῆ συνήθη καὶ εἰσοδίαν οὔσαν ἐπεισεν ἐὰν  
 τέκη, δοῦναι τὸ παιδίον αὐτῇ. κἀκεῖνη φυλάττουσα  
 τὰς ὑποσχέσεις, γενομένης αὐτῇ ταύτης θυγατρὸς,  
 πρὸς μὲν ἡμᾶς ἐσηψατο νεκρὸν τεκεῖν, τῇ δὲ Νομι-  
 τωρίᾳ δίδωσι τὸ παιδίον· ἡ δὲ λαβοῦσα ὑποβάλλεται 5  
 καὶ τρέφει, παῖδων οὔτ' ἀρρένων οὔτε θηλειῶν οὔσα  
 μήτηρ. πρότερον οὖν ἐλάνθανέ με ταῦτα· νῦν δὲ  
 1002 διὰ μηνύσεως ἐπιγνοὺς καὶ μάρτυρας ἔχων πολλοὺς  
 καὶ ἀγαθοὺς καὶ τὴν θεράπαιναν ἐξητακῶς ἐπὶ τὸν  
 κοινὸν ἀπάντων καταφύγω νόμον, ὃς οὐ τῶν ὑπο- 10  
 βαλλομένων, ἀλλὰ τῶν μητέρων εἶναι τὰ ἔκγονα  
 δικαιοί, ἐλευθέρων μὲν οὐσῶν ἐλεύθερα, δούλων δὲ  
 δοῦλα, τοὺς αὐτοὺς ἔχοντα κυρίους οὓς ἂν καὶ αἱ  
 μητέρες αὐτῶν ἔχωσι. κατὰ τοῦτον τὸν νόμον ἀξιώ-  
 τὴν θυγατέρα τῆς ἐμῆς θεραπαίνης ἄγειν, καὶ δίκας 15  
 ὑπέχειν βουλούμενος, ἐὰν ἀντιποιῆται τις, ἐγγνητὰς  
 καταστήσειν ἀξιοχρεῶς, ἄξειν αὐτὴν ἐπὶ τὴν δίκην·  
 εἰ δὲ ταχέϊαν βούλεται τις γενέσθαι τὴν διάγνωσιν,  
 ἕτοιμος ἐπὶ σοῦ λέγειν τὴν δίκην αὐτίκα μάλα, καὶ  
 μὴ διεγγυᾶν τὸ σῶμα μηδ' ἀναβολὰς τῷ πράγματι 20  
 προσάγειν· ὁποτέρων δ' ἂν οὗτοι βουληθῶσι τῶν  
 αἰρέσεων ἐλέσθωσαν.

XXX. Τοιαῦτ' εἰπόντος Κλαυδίου καὶ πολλὴν  
 1003 προσθέντος δέησιν ὑπὲρ τοῦ μηδὲν ἐλαττωθῆναι τῶν  
 ἀντιδίκων, ὅτι πελάτης ἦν καὶ ταπεινός, παραλαβὼν 25  
 τὸν λόγον ὁ τῆς κόρης θεῖος ὀλίγα καὶ αὐτὰ τὰ πρὸς τὸν  
 ἀρχοντα εἰρησθαι προσήκοντα εἶπε· πατέρα μὲν τοῦν ἦν  
 εἶναι τῆς κόρης λέγων Οὐεργίνιον ἐκ τῶν δημοτικῶν,  
 ὃν ἀποδημεῖν στρατευόμενον ὑπὲρ τῆς πόλεως· μητέρα  
 δὲ γενέσθαι Νομιτωρίαν τὴν ἀδελφὴν τὴν ἑαυτοῦ, 30  
 σώφρονα καὶ ἀγαθὴν γυναικα, ἦν οὐ πολλοῖς πρό-  
 τερον ἑναιυτοῖς ἀποθανεῖν· τραφεῖσαν δὲ τὴν παρ-  
 9\*

θένον, ὡς ἐλευθέρα καὶ ἀστῆ προσήκειν, ἀρμοσθῆναι  
κατὰ νόμον Ἰκίλιω, καὶ τέλος ἂν ἐσχηκέναι τὸν γάμον,  
εἰ μὴ θάπτετο ὁ πρὸς Αἰκανοὺς συνέστη πόλεμος. ἐν  
δὲ τοῖς μεταξὺ χρόνοις οὐκ ἐλαττόνων ἢ πεντεκαί-  
5 δεκα διεληλυθότων ἐτῶν οὐδὲ τοιοῦτον ἐπιχειρή-  
σαντα πρὸς αὐτοὺς εἰπεῖν Κλαύδιον, ἐπειδὴ δὲ γάμων  
ἢ παῖς ἔσχευ ὦραν καὶ διαφέρειν δοκεῖ τὴν ὄψιν,  
ἐρῶντα ἦκειν ἀναίσχυτον σνκοφάντημα πλάσαντα,  
οὐκ ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γνώμης, ἀλλὰ κατεσκευασμένον 2214  
10 ὑπ' ἀνδρὸς ἀπάσαις οἰομένου δεῖν ταῖς ἐπιθυμίαις  
ἐκ παντὸς τρόπου χαρίζεσθαι. τὴν μὲν οὖν δίκην  
αὐτὸν ἔφη τὸν πατέρα περὶ τῆς θυγατρὸς ἀπολο-  
γῆσεσθαι παραγενόμενον ἀπὸ τῆς στρατιᾶς· τὴν δὲ  
τοῦ σώματος ἀντιποίησιν, ἣν ἔδει γενέσθαι κατὰ  
15 τοὺς νόμους, αὐτὸς ποιῆσθαι θεῖος ὢν τῆς κόρης  
καὶ τὰ δίκαια ὑπέχειν, οὐδὲν ἀξίων οὔτε ξένον οὔτε  
ὃ μὴ καὶ τοῖς ἄλλοις ἀποδέδοται Ῥωμαίοις δίκαιον,  
εἰ καὶ μὴ πᾶσιν ἀνθρώποις, σώματος εἰς δουλείαν  
ἐξ ἐλευθερίας ἀγομένου μὴ τὸν ἀφαιρούμενον  
20 τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλὰ τὸν φυλάττοντα κύριον εἶναι  
μέχρι δίκης. ἔφη τε διὰ πολλὰς αἰτίας προσήκειν τῷ  
Ἄππιω φυλάττειν τοῦτο τὸ δίκαιον· πρῶτον μὲν  
ὅτι τὸν νόμον τοῦτον ἅμα τοῖς ἄλλοις ἐν ταῖς δώδεκα 2236  
δέλοισ ἀνέγραψεν· ἐπειθ' ὅτι τῆς δεκαδραχμίας ἡγε-  
25 μῶν· πρὸς δὲ τούτοις ὅτι μετὰ τῆς ὑπατικῆς ἐξου-  
σίας καὶ τὴν δημαρχίαν προσεληφει, ἣς εἶναι κρά-  
τιστον ἔργον τοῖς ἀσθενέσι καὶ ἐρήμοις τῶν πολιτῶν  
βοηθεῖν. ἤξιον τε τὴν καταπεφευγυῖαν ἐπ' αὐτὸν  
ἐλεῆσαι παρθένον, μητρὸς μὲν ὀρφανὴν οὖσαν ἐτι  
30 πάλαι, πατρὸς δ' ἔρημον ἐν τῷ τότε χρόνῳ, κινδύ-  
νεύουσαν οὐ χρημάτων ἀποστερηθῆναι προγονικῶν,  
ἀλλὰ καὶ ἀνδρὸς καὶ πατρίδος καὶ ὃ πάντων μέγι-

στον εἶναι δοκεῖ τῶν ἀνθρωπίνων ἀγαθῶν, τῆς τοῦ  
σώματος ἐλευθερίας. ἀνακλαυσάμενος δὲ τὴν ὕβριν,  
εἰς ἣν ἐμελλεν ἢ παῖς παραδοθῆσεσθαι, καὶ πολὺν  
ἐκ τῶν παρόντων κινήσας ἔλεον περὶ τοῦ χρόνου  
τῆς δίκης ἔφη τελευτῶν· Ἐπειδὴ ταχέαν αὐτῆς βού- 5  
λεται γενέσθαι τὴν κρίσιν Κλαύδιος, ὃ μὴδὲν ἠδι-  
κῆσθαι φάμενος ἐν τοῖς πεντεκαίδεκα ἔτεσιν, ἕτερος  
2236 μὲν ἂν τις ὑπὲρ τηλικούτων ἀγωνιζόμενος δεινὰ  
πάσχειν ἔλεξε καὶ ἠγανάκτει κατὰ τὸ εἰκός, ὅταν εἰ-  
ρήνη γένηται καὶ πάντες ἔλθωσιν οἱ νῦν ὄντες ἐπὶ 10  
στρατοπέδου, τότε τὴν δίκην ἀξίων ἀπολογεῖσθαι,  
ὅτε καὶ μαρτύρων εὐπορία καὶ φίλων καὶ δικαστῶν  
ἀμφοτέροις ἔσται τοῖς δικαζομένοις, πολιτικὰ καὶ  
μέτρια πράγματα προσέρων καὶ τῇ Ῥωμαίαν συνήθη  
πολιτείᾳ· ἡμεῖς δ', ἔφη, λόγων οὐδὲν δεόμεθα οὔτ' 15  
εἰρήνης οὔτ' ὄχλου φίλων καὶ δικαστῶν οὔτ' εἰς τοὺς  
δικασίμους χρόνους τὸ πρᾶγμα ἀναβαλλόμεθα, ἀλλὰ  
καὶ ἐν πολέμῳ καὶ ἐν σπάνει φίλων καὶ οὐκ ἐν ἴσοις  
δικασταῖς καὶ παραχρημα ὑπομένομεν ἀπολογεῖσθαι,  
τοσοῦτον αἰτησάμενοι παρὰ σοῦ χρόνον, Ἄππιε, 20  
ἰκανὸς ἔσται τῷ πατρὶ τῆς κόρης ἀπὸ στρατοπέδου  
παραγενηθέντι τὰς ἰδίας ἀποδύρασθαι τύχας, καὶ δι'  
ἑαυτοῦ τὴν δίκην ἀπολογήσασθαι.

XXXI. Τοιαῦτα τοῦ Νομιτωρίου λέξαντος, καὶ  
2237 τοῦ περιεστηκότος ὄχλου μεγάλη βοή διασημήναντος 25  
ὡς δίκαια ἀξιοί, μικρὸν ἐπισχὼν χρόνον Ἄππιος·  
Ἐγὼ τὸν μὲν νόμον, εἶπεν, οὐκ ἀγνοῶ τὸν ὑπὲρ τῆς  
ἐγγυήσεως τῶν εἰς δουλείαν ἀγομένων κείμενον, ὃς  
οὐκ ἐγὼ παρὰ τοῖς ἀφαιρουμένοις εἶναι τὸ σῶμα μέχρι  
δίκης, οὐδὲ καταλύσαιμι ἂν ὃν αὐτὸς ἔγραψα ἐκῶν· 30  
ἐκεῖνο μέντοι δίκαιον ἠγοῦμαι, δεῖν ὄντων τῶν ἀν-  
τιποιουμένων, κυρίου καὶ πατρὸς, εἰ μὲν ἀμφοτέροι

παρήσαν, τὸν πατέρα κρατεῖν τοῦ σώματος μέχρι  
δικῆς. ἐπεὶ δ' ἐκεῖνος ἄπεισι, τὸν κύριον ἀπαγαγεῖν  
ἐγγυητὰς ἀξιόχρεως δόντα καταστήσειν ἐπὶ τὴν  
ἀρχήν, ὅταν ὁ πατὴρ αὐτῆς παραγένηται. περὶ δὲ  
5 τῶν ἐγγυητῶν καὶ τοῦ τιμηματος καὶ τοῦ μηδὲν ὑμᾶς  
ἐλαττωθῆναι περὶ τὴν δίκην, πολλὴν ποιήσομαι πρό-  
νοιαν, ὡς Νομιτώριε. νῦν δὲ παράδος τὴν κόρην.  
Τοῦτο τὸ τέλος ἐξενέγκαντος Ἀππίου, πολὺς μὲν  
ὀδυρμὸς ὑπὸ τῆς παρθένου καὶ τῶν περὶ αὐτὴν γυ- 2230  
10 ναικῶν ἐγένετο καὶ κοπετός, πολλὴ δὲ κραυγὴ καὶ  
ἀγανάκτησις ἐκ τοῦ περιεστηκότος ὄχλου τὸ βῆμα. ὁ  
δὲ μέλλων ἀγεσθαι τὴν κόρην Ἰκίλιος ἐμφύεται τε αὐ-  
τῆς καὶ φησιν· Οὐκ ἐμοῦ γε ζῶντος, Ἀππιε, ταύτην  
ἀπάξεταί τις. ἀλλ' εἰ σοι δέδοκται τοὺς νόμους κα-  
15 ταλύσειν, τὰ δὲ δίκαια συγγεῖν καὶ τὴν ἐλευθερίαν  
ἡμῶν ἀφαιρῆσθαι, μηκέτι τὴν ὀνειδιζομένην ὑμῖν  
ἀρνού τυραννίδα, ἀλλὰ τὸν ἐμὸν κέλευε ἀποκόψαι  
τροάχηλον ταύτην τε ἀπαγαγεῖν, ὅπου σοι δοκεῖ, καὶ  
τὰς ἄλλας παρθένους καὶ γυναῖκας· ἵνα δὴ μάθωσιν  
20 ἤδη ποτὲ Ῥωμαῖοι δούλοι γεγονότες ἀντ' ἐλευθέρων,  
καὶ μηδὲν ἔτι μείζον φρονῶσι τῆς τύχης. τί οὖν ἔτι  
μέλλεις, ἀλλ' οὐ τοῦμὸν ἐκχεῖς αἷμα πρὸ τοῦ βήμα-  
τος ἐν τοῖς ἀπάντων ὀφθαλμοῖς; ἴσθι μέντοι σαφῶς, 2230  
ἤτοι μεγάλων κακῶν ἄρξει Ῥωμαίοις ὁ θάνατος οὐμός,  
25 ἢ μεγάλων ἀγαθῶν.

XXXII. Ἐτι δ' αὐτοῦ βουλομένου λέγειν, οἱ μὲν  
ῥαβδουχοὶ κελυσθέντες ὑπὸ τῆς ἐξουσίας ἀνεῖργον  
αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ βήματος καὶ πειθαρχεῖν τοῖς κερρι-  
μένοις ἐκέλευον· ὁ δὲ Κλαύδιος ἐπιλαβόμενος τῆς  
30 παιδὸς ἀπάγειν ἐβούλετο τοῦ θείου καὶ τοῦ μνηστῆ-  
ρος ἀντεχομένην. ἰδόντες δὲ πάθος ἐλλεινὸν οἱ περὶ  
τὸ βῆμα πάντες ἀνέκραγον αἶμα, καὶ παρ' οὐδὲν ἤγη-

σάμενοι τὴν τοῦ κρατοῦντος ἐξουσίαν ὠθοῦνται τοῖς  
βιαζομένοις ὁμόσε, ὥστε δεῖσαντα τὴν ἐπιφορὰν αὐ-  
τῶν τὸν Κλαύδιον τὴν τε κόρην ἀφείναι καὶ ὑπὸ  
τοὺς πόδας τοῦ στρατηγοῦ καταφυγεῖν. ὁ δ' Ἀππίος  
καταρχὰς μὲν εἰς πολλὴν ταραχὴν κατέστη ἡγριωμέ- 5  
νους ἅπαντας ὄρων, καὶ πολὺν ἠπόρει χρόνον ὅ τι  
χρὴ ποιεῖν· ἔπειτα τὸν Κλαύδιον καλέσας ἐπὶ τὸ  
βῆμα, καὶ μικρὰ διαλεχθεὶς πρὸς αὐτὸν ὡς ἐδόκει,  
τοῖς τε περιεστῶσι διασημίνας ἡσυχίαν παρασχεῖν,  
3040 λέγει τοιάδε· Ἐγὼ τὸ μὲν ἀκριβές, ὡς δημόται, περὶ 10  
τῆς διεγγυήσεως τοῦ σώματος, ἐπειδὴ τραχυνομένους  
ὑμᾶς πρὸς τὴν ἀπόφασιν ὄρω, παρήμι· χαρίζεσθαι  
δ' ὑμῖν βουλόμενος πέπεικα τὸν ἐμαντοῦ πελάτην  
εἶδαι μὲν τοῖς συγγενέσι τῆς παρθένου δοῦναι τὴν δι-  
εγγυήσιν, ἕως ὁ πατὴρ αὐτῆς παραγένηται. ἀπάγεσθε 15  
οὖν, ὡς Νομιτώριε, τὴν κόρην, καὶ τὴν ἐγγύην ὁμο-  
λογεῖτε περὶ αὐτῆς εἰς τὴν αὔριον ἡμέραν. ἀπόχρη  
γὰρ ὁ χρόνος ὑμῖν οὗτος ἀπαγγεῖλαι τε Οὐεργινίῳ  
τῆμερον, καὶ τριῶν ἢ τεττάρων ὥρων αὐτὸν ἐκ τοῦ  
χάρακος δεῦρο ἀγαγεῖν. πλείονα δ' αὐτῶν χρόνον 20  
αἰτουμένων, οὐδὲν ἔτι ἀποκρινάμενος ἀνέστη καὶ τὸν  
δίφρον ἐκέλευσεν ἄραι.

XXXIII. Ὡς δ' ἀπῆλθεν ἐκ τῆς ἀγορᾶς ἀδημο-  
νῶν καὶ μαινόμενος ὑπὸ τοῦ πάθους, ἔγνω μηκέτι  
μεθέσθαι τῆς παρθένου τοῖς συγγενέσι, ἀλλ' ὅταν 25  
3241 ἐπὶ τὴν ἐγγύην προαχθῆ, μετὰ βίας αὐτὴν ἀπάγειν,  
ἑαυτῷ τε πλείονα φυλακὴν περιστησάμενος, ὡς μηδὲν  
ὑπὸ τῶν ὄχλων βιασθεῖη, καὶ τὰ περὶ τοῦ βήματος  
ἐταίρων τε καὶ πελατῶν ὄχλῳ προκαταλαβών. ἵνα  
δὲ σὺν εὐσχήμονι δοκῇ τοῦτο πράττειν προφάσει, μὴ 30  
παραγενηθέντος ἐπὶ τὴν ἐγγύην τοῦ πατρὸς, ἐπιστο-  
λὰς δούς τοῖς πιστοτάτοις Ἰππεῦσιν ἐπέμψεν ἐπὶ τὸν

χάρακα καὶ πρὸς Ἀντώνιον τὸν ἡγεμόνα τοῦ τάγματος,  
 ὑφ' οὗ ἦν Οὐεργίνιος, ἀξιῶν αὐτὸν κατέχειν τὸν  
 ἄνδρα ἐν ἐπιμελείᾳ φυλακῆ, μὴ λάθῃ πυθόμενος τὰ  
 περὶ τὴν θυγατέρα καὶ διαδράς ἐκ τοῦ χάρακος.  
 5 ἔφθησαν δ' αὐτὸν οἱ τῆς κόρης προσήκοντες, Νομιτω-  
 ρίου τε υἱὸς καὶ ἀδελφὸς Ἰμιλλίου, προαποσταλέντες  
 ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀρχομένης ἐτι τῆς καταστάσεως, νεα-  
 νιαὶ λήματος πλήρεις ἀπὸ ἑυτηρίας καὶ μετὰ μάστι-  
 γος ἐλαθεῖσι τοῖς ἵπποις πρότερον διανύσαντες τὴν  
 10 ὁδὸν καὶ τῷ Οὐεργίνιῳ τὰ πεπραγμένα διασαφηνί-  
 σαντες. ὁ δὲ τὴν μὲν ἀληθῆ πρὸς Ἀντώνιον αἰτίαν  
 ἀποκρυψάμενος, ἀναγκαίου δέ τινος συγγενοῦς ση- 2243  
 ψάμενος πεπύσθαι θάνατον, οὗ τὴν ἐκκομιδὴν τε  
 καὶ ταφήν αὐτὸν ἔδει ποιήσασθαι κατὰ τὸν νόμον,  
 15 ἀφίεται καὶ περὶ λύχνων ἀφὰς ἤλαυνε μετὰ τῶν  
 μειρακίων κατ' ἄλλας ὁδοὺς, διαγυμὸν ἐκ τε τοῦ στρα-  
 τοπέδου καὶ ἀπὸ τῆς πόλεως δεδοικώς· ὅπερ καὶ συν-  
 ἔβη. ὁ τε γὰρ Ἀντώνιος τὰς ἐπιστολάς δεξάμενος  
 περὶ πρῶτην μάλιστα φυλακὴν, ἴλην ἀπέστειλεν ἱπ-  
 20 πέων ἐπ' αὐτόν, ἐκ τε τῆς πόλεως ἕτεροι πεμφθέντες  
 ἱππεῖς δι' ὅλης νυκτὸς ἐφρουροῦν τὴν ἀπὸ στρατο-  
 πέδου φέρονσαν ὁδόν. ὡς δὲ ἀπήγγειλεν Ἀπίλις τις  
 τὸν Οὐεργίνιον ἐληλυθότα παρὰ τὴν ὑπόληψιν, ἔξω  
 τῶν φρευῶν γενόμενος παρῆν μετὰ πολλοῦ στίφους  
 25 ἐπὶ τὸ βῆμα, καὶ προσάγειν ἐκέλευσε τοὺς τῆς κόρης  
 συγγενεῖς. προσελθόντων δ' αὐτῶν, ὁ μὲν Κλαύδιος  
 τοὺς αὐτοὺς πάλιν διεξελθῶν λόγους ἤξιόν τὸν Ἀππιον  
 γενέσθαι δικαστὴν τοῦ πράγματος μηδεμίαν ἀναβο-  
 λὴν ποιησάμενον, τὸν τε μηνυτὴν παρεῖναι λέγων  
 30 καὶ τοὺς μάρτυρας καὶ τὴν θεράπαιναν αὐτὴν παρα-  
 δούς· ἐφ' οἷς ἅπασι πολὺς ὁ προσποιητός σχετι- 2243  
 ασμὸς ἦν, εἰ μὴ τεύξεται τῶν ἴσων τοῖς ἄλλοις, ὡς

πρότερον, ὅτι πελάτης ἦν αὐτοῦ· καὶ παράκλησις,  
 [ἴνα] μὴ τοῖς ἑλεεινότερα λέγουσιν, ἀλλὰ τοῖς δικαιο-  
 τερα ἀξιούσι βοηθεῖν.

XXXIII. Ὁ δὲ τῆς κόρης πατήρ καὶ οἱ λοιποὶ  
 συγγενεῖς ἀπελογοῦντο περὶ τῆς ὑποβολῆς, πολλὰ 5  
 καὶ δίκαια καὶ ἀληθῆ λέγοντες, ὡς οὐτ' αἰτίαν οὐ-  
 δεμίαν εἶχεν ὑποβολῆς εὐλόγου ἢ Νομιτωρίου μὲν  
 ἀδελφῆ, Οὐεργίνιου δὲ γυνῆ, παρθένος γαμηθεῖσα  
 νέῳ ἀνδρὶ καὶ οὐ μετὰ πολλοὺς τοῦ γάμου τεκοῦσα  
 χρόνους· οὐτ' εἰ τὰ μάλιστα ἐβούλετο γένος ἀλλότριον 10  
 εἰς τὸν ἴδιον οἶκον εἰσαγαγεῖν, δούλης ἀλλοτρίας ἂν  
 ἐλάμβανε παιδίον μᾶλλον, ἢ οὐ γυναικὸς ἐλευθέρως  
 κατὰ γένος ἢ φιλίαν αὐτῆ προσηκούσης, παρ' ἧς  
 πιστῶς τε ἅμα καὶ βεβαίως ἔξει τὸ ληφθέν. ἐξουσίαν  
 τε ἔχουσαν ὅποσον ἐβούλετο λαβεῖν, ἄρρεν ἂν ἐλέσθαι 15  
 2244 παιδίον μᾶλλον ἢ θῆλυ. τεκοῦσαν μὲν γὰρ ἀνάγκη  
 τῶν τέκνων δεομένην στέργειν καὶ τρέφειν, ὅ τι ἂν  
 ἢ φύσις ἐξενέγκῃ· ὑποβαλλομένην δὲ τὸ κρεῖττον  
 ἀντὶ τοῦ χειρόνος εἰκὸς εἶναι λαβεῖν. πρὸς τε τὸν  
 μηνυτὴν καὶ τοὺς μάρτυρας, οὓς ὁ Κλαύδιος ἔφη 20  
 πολλοὺς καὶ ἀξιόχρεως παρεῖσθαι, τὸν ἐκ τῶν εἰκό-  
 των παρείχοντο λόγον, ὡς οὐκ ἂν ποτε ἢ Νομιτωρία  
 πράγμα σιγῆς δεόμενον καὶ δι' ἐνὸς ὑπηρετηθῆναι  
 προσώπου δυνάμενον, φανερώς ἔπραττε καὶ μετὰ  
 μαρτύρων ἐλευθέρων, ἴν' ἐτραφεῖσαν τὴν κόρην 25  
 ὑπὸ τῶν κυρίων τῆς μητρὸς ἀφαιρεθεῖη. τὸν τε χρό-  
 νου οὐ μικρὸν ἔλεγον εἶναι τεκμήριον τοῦ μηδὲν  
 ὑγίης λέγειν τὸν κατηγοροῦν· οὔτε γὰρ ἂν τὸν μηνυ-  
 τὴν οὔτε τοὺς μάρτυρας κατασχεῖν ἐν πεντεκαίδεκα  
 ἔτεσιν ἀπόρητον τὴν ὑποβολὴν, ἀλλ' ἐτι πρότερον 30  
 εἰπεῖν. διαβάλλοντες δὲ τὰς τῶν κατηγορῶν πίστεις,  
 ὡς οὐτ' ἀληθεῖς οὔτε πιθανάς, ἀντιπαρεξετάξαι ταύ-



ταῖς ἡξίουν τὰς ἑαυτῶν, πολλὰς καὶ οὐκ ἀσήμους γυναικάς ὀνομάζοντες, ἃς ἔφρασαν εἰδέναι Νομιτωρίαν ἐγκύμονα γενομένην ἐκ τοῦ περὶ τὴν ραστέρια ὄγκου. χωρὶς δὲ τούτων τὰς ἐπὶ τοῦ τόκου καὶ τῆς λοχείας παραγενομένας διὰ τὸ συγγενὲς καὶ τιμώμενον τὸ παιδίον ἰδοῦσας ἐπεδείκνυντο καὶ ἀνακρίνειν ἡξίουν. ὃ δὲ πάντων τεκμήριον ἦν περιφανέστατον, ἐκ τε τῶν ἀνδρῶν πολλοῖς καὶ γυναικῶν μαρτυρούμενον οὐ μόνον ἐλευθέρων, ἀλλὰ καὶ δούλων, τοῦτ' ἔλεγον τελευταῖντες, ὅτι τῷ γάλακτι τῆς μητρὸς ἐτράφη τὸ παιδίον· ἀμήχανον δ' εἶναι γάλακτος πληρωθῆναι μαστοὺς γυναικὶ μὴ τεκούσῃ.

XXXV. Ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια παρεχομένων αὐτῶν ἰσχυρὰ καὶ οὐδένα λόγον ἐναντίον δέξασθαι δυνάμενα, καὶ πολὺν ἐπὶ ταῖς συμφοραῖς τῆς κόρης ἔλεον καταχεομένων, οἱ μὲν ἄλλοι πάντες, ὅσοι συνήκουον τῶν λόγων, τῆς τε μορφῆς οἴκτου ἐλάμβανον, ὅπότε εἰς τὴν παρθένον ἴδοιεν· καὶ γὰρ ἐν ἐσθῆτι οὔσα πιναρὰ καὶ κατηφὲς ὄρωσα καὶ τὸ καλὸν τῶν ὀμμάτων ἐκτίκουσα τὰς ἀπάντων ἤρπαξεν ὄψεις, οὕτως ὑπερένθροπός τις ὦρα περὶ αὐτήν καὶ χάρις ἦν· καὶ τὸ τῆς τύχης ἀνεκλαίοντο παράλογον, εἰς οἷας ὕβρεις καὶ προσηλακισμοὺς ἐλεύσοιτο ἐξ οἷων ἀγαθῶν. εἰσῆει τ' αὐτοὺς λογισμὸς, ὅτι τοῦ περὶ τῆς ἐλευθερίας νόμου καταλυθέντος οὐδὲν ἔσται τὸ κωλύον καὶ τὰς αὐτῶν γυναῖκας καὶ θυγατέρας τὰ αὐτὰ ἐκείνη παθεῖν. ταῦτά τε δὴ καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια ἐπιλογιζόμενοι καὶ πρὸς ἀλλήλους διαλαλοῦντες ἐκκλαιον. ὃ δὲ Ἄππιος, οἷα δὴ φύσει τε οὐ φρενήρης ἀνὴρ καὶ ὑπὸ μεγέθους ἐξουσίας διεφθαρμένος, οἰδῶν τε τὴν ψυχὴν καὶ ζέων τὰ σπλάγχνα διὰ τὸν ἔρωτα τῆς παιδός, οὔτε τοῖς λόγοις τῶν ἀπο-

λογομένων προσεῖχεν οὔτε τοῖς δάκρυσιν αὐτῆς ἐπεκλάτο τῆς κόρης, τὴν τε συμπάθειαν τῶν παρόντων δι' ὀργῆς ἐλάμβανεν, ὡς αὐτὸς δὴ πλεόνος ὢν ἀξίος ἔλεον καὶ δεινότερα ὑπὸ τῆς δεδουλωμένης αὐτὸν εὐμορφίας πεπονθῶς. διὰ δὴ ταῦτα πάντα οἰστρῶν λόγον τε ὑπέμεινεν εἰπεῖν ἀναίσχυντον, ἐξ οὗ καταφανὲς ἐγένετο τοῖς ὑπονοοῦσιν, ὅτι τὸ συκοφάνημα κατὰ τῆς κόρης αὐτὸς ἔγραψε, καὶ ἔργον ἐτόλμησε τυραννικὸν πράξαι καὶ ὤμον.

XXXVI. Ἔτι γὰρ αὐτῶν λεγόντων ἡσυχίαν γενέσθαι κελεύσας, ἐπειδὴ σιωπὴ τ' ἐγένετο, καὶ πᾶς ὁ κατὰ τὴν ἀγορὰν ὄχλος τὴν ὀρμὴν ἐπελάμβανεν ἐπιθυμία γνώσεως τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεχθησομένων προαχθεῖς, πολλάκις ἐπιστρέψας τὸ πρόσωπον τῆδε καὶ τῆδε καὶ τὰ στίφη τῶν ἐταίρων οἷς διειλῆφει τὴν ἀγορὰν τοῖς ὄμμασι διαριθμησάμενος τοιάδ' εἶπεν· Ἐγὼ δὲ περὶ τοῦδε τοῦ πράγματος, ὦ Οὐεργίνε, καὶ ὑμεῖς οἱ σὺν τούτῳ παρόντες, οὐ νῦν πρῶτον ἀκήκοα, ἀλλὰ παλαιότερον ἔτι πρὶν ἢ τῆδε τὴν ἀρχὴν παραλαβεῖν. ὃν τρόπον δ' ἔγνω, ἀκούσατε. ὁ πατήρ ὁ Μάρκου Κλαυδίου τουδὲ τελευταῖον βίον ἡξίωσε με τὸν υἱὸν αὐτοῦ νήπιον καταλείπομενον ἐπιτροπεῦσαι· πελάται δ' εἰσὶ τῆς οἰκίας ἡμῶν ἐκ προγόνων. ἐν δὲ τῷ χρόνῳ τῆς ἐπιτροπείας μὴνυσις ἐγένετό μοι περὶ τῆς παιδός, ὡς ὑποβάλοιτο αὐτὴν Νομιτωρία λαβούσα παρὰ τῆς Κλαυδίου δούλης, καὶ τὸ πρᾶγμα ἐξετάσας ἔμαθον οὕτως ἔχον. ἐφάπτεσθαι μὲν οὖν ἑμαυτὸν οὐ προσῆκέ μοι· βέλτιον δὲ ἡγησάμην τούτῳ τὴν ἐξουσίαν καταλιπεῖν, ὅποτε γένοιτο ἀνὴρ, εἴτε βουληθεῖη τὴν παιδίσκην ἀπάγειν, εἴτε διαλύσασθαι πρὸς τοὺς τρέφοντας αὐτὴν τὴν χρήμασι πεισθεῖς ἢ χαρισάμενος. ἐν δὲ τοῖς μεταξὺ

χρονοῖς ἐγὼ μὲν εἰς τὰς πολιτικὰς πράξεις ἐγκλισθεῖς οὐδὲν ἔτι τῶν Κλαυδίου πραγμάτων εἶχον ἐν φροντίδι. τούτῳ δ', ὡς εἴκει, τὸν ἰδίῳ ἐξετάζοντι βίον καὶ περὶ τῆς παιδείκης ἢ μῆνυσις ἀπεδόθη καθάπερ ἐμοὶ πρότερον, καὶ οὐδὲν ἄδικον ἄξιοι τὴν ἐκ τῆς ἐαυτοῦ θεραπεΐνης γενοῦσαν ἀπάγειν βουλόμενος. εἰ μὲν οὖν ἀλλήλους ἐπέισαν αὐτοί, καλῶς ἂν εἶχεν· ἐπεὶ δ' εἰς ἀμφισβήτησιν ἦλθε τὸ πρᾶγμα, μαρτυροῦν τ' αὐτῷ ταῦτα καὶ κρίνω εἶναι τοῦτου τῆς παιδείκης κύριον.

XXXVII. Ὡς δὲ ταῦτ' ἤκουσαν, ὅσοι μὲν ἦσαν ἀκέραιοί τε καὶ τῶν τὰ δίκαια λεγόντων παράκλητοι τὰς χεῖρας ἄραντες εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνέκραγον ὀδυρμῶ καὶ ἀγανακτήσει μεμιγμένην κραυγὴν· οἱ δὲ τῆς ὀλιγαρχίας κόλακες τὴν ἐπικελεύουσάν τε καὶ θάρσος ἐμποῦνται δυναμένην τοῖς κρατοῦσι φωνῆν. ἡρεθισμένης δὲ τῆς ἀγοῆς καὶ παντοδαπῶν γεμούσης λόγων τε καὶ παθῶν, σιωπὴν γενέσθαι κελεύσας Ἄππιος ἔλεξεν· Εἰ μὴ πάνσεσθε διαστασιάζοντες τὴν πόλιν καὶ ἀντιστρατηγοῦντες ἡμῖν οἱ ταραχώδεις, μηδαμῆ χρήσιμοι μὴτ' ἐν εἰρήνῃ μῆτε κατὰ πολέμους, ὑπὸ τῆς ἀνάγκης σωφρονισθέντες εἴξετε. μὴ τούτους οἴεσθε τοὺς ἐπὶ τοῦ Καπετωλίου καὶ τῆς ἄκρας φρουρῶν ἐπὶ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους ἡμῖν παρεσκευάσθαι μόνον, ὑμᾶς δὲ τοὺς ἐνδοῦ ὑποκαθήμενους καὶ πάντα σήποντας τὰ τῆς πόλεως πράγματα εἰσέναι. γνώμην δὲ λαβόντες κρείττονα ἢς ἔχετε νῦν ἄπιτε, οἷς μὴ τι πρᾶγμα, καὶ πράσσετε τὰ ἐαυτῶν, εἰ σωφρονεῖτε· σὺ δ' ἄγον τὴν παιδείκην ἔχων, Κλαύδιε, μηδένα δεδοικῶς δι' ἀγοῆς· οἱ γὰρ Ἄππιον σε προπέμψουσι δώδεκα πελέκεις. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπεν, οἱ μὲν ἄλλοι στένοντες καὶ τὰ μέτωπα

παίοντες καὶ τὰ δάκρυα κατέχειν οὐ δυνάμενοι, παρεχόρουσαν ἐκ τῆς ἀγοῆς· ὁ δὲ Κλαύδιος ἀπῆγε τὴν παῖδα τῷ πατρὶ περιπεπλεγμένην καὶ καταφιλοῦσαν καὶ ταῖς ἡδίσταις φωναῖς ἀνακαλοῦσαν. ἐν τοιούτοις δὲ κακοῖς Οὐεργίνιος ὦν ἔργον εἰς νοῦν βάλλεται πατρὶ μὲν ταλαίπωρον καὶ πικρὸν, ἐλευθέρω δ' ἀνδρὶ καὶ μεγαλόφρονι πρέπον. αἰτησάμενος γὰρ ἐξουσίαν ἀσπάσασθαι τὴν θυγατέρα τοὺς τελευταίους ἀσπασμοὺς ἐπ' ἐξουσίας καὶ διαλεχθῆναι μόνῃ μόνος ὅπου βούλεται, πρὶν ἐκ τῆς ἀγοῆς αὐτὴν ἀπαχθῆναι, συγχωρήσαντος τοῦ στρατηγοῦ καὶ τῶν ἐχθρῶν μικρὸν ἀναχωρησάντων, ὑπολαβὼν αὐτὴν ἐκλυομένην τε καὶ καταρρέουσάν τε κατέχων, τέως μὲν ἀνεκαλεῖτό τε καὶ κατεφίλει καὶ τὰς λιβάδας ἐξέματτε τῶν δακρυῶν· ἔπειτα κατὰ μικρὸν ὑπάγων, ὡς ἦν ἐγγὺς ἐργαστηρίου μαγειρικοῦ, μάχαιραν ἐξαργάσας ἀπὸ τῆς τραπέζης παῖει τὴν θυγατέρα διὰ τῶν σπλάγχων τοσοῦτον εἰπὼν· Ἐλευθέραν σε καὶ εὐσχήμονα, τέκνον, ἀποστέλλω τοῖς κατὰ γῆς προγόνοις· ζῶσα γὰρ ταῦτα οὐχὶ ἔξην ἔχειν ἀμφοτέρω διὰ τὸν τύραννον. κραυγῆς δὲ γενομένης, ἡμαγμένην ἔχων τὴν σφαγίδα καὶ οὕτως ἀνάμιστος αἵματος γενόμενος, ᾧ προσέφυρεν αὐτὸν ἢ σφαγὴ τῆς κόρης, ἔθει διὰ τῆς πόλεως ἐμμανῆς ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν τοὺς πολίτας καλῶν. διεκπαισάμενος δὲ τὰς πύλας ἀνέβη τὸν ἵππον, ὃς ἦν παρεσκευασμένος αὐτῷ, καὶ συνέτεινεν ἐπὶ τὸ στρατόπεδον, Ἰαλλίου τε καὶ Νομιτωρίου τῶν ἀγαρόντων αὐτὸν ἐκ τοῦ χάρακος νεανίσκων καὶ τότε συμπροπεμπόντων. ἠκολούθει δ' αὐτοῖς καὶ ἄλλος ὄχλος δημοτῶν οὐκ ὀλίγος, ὥστε τοὺς σύμπαντας ἀμφὶ τετρακοσίους γενέσθαι.

XXXVIII. Ὁ δὲ Ἄππιος, ὡς τὸ περὶ τὴν κόρην

ἐπέγνω πάθος ἀναπηδᾶ τε ἀπὸ τοῦ δίφρου, καὶ  
διώκειν τὸν Οὐεργίνιον ἐβούλετο πολλὰ καὶ λέγων 2250  
καὶ πράττων ἄκοσμα. περιστάτων δ' αὐτὸν τῶν  
φίλων καὶ μηδὲν ἐξαμαρτάνειν ἀξιούντων, ἀπήει  
5 πρὸς ἅπαντας ἀγανακτῶν. ἤδη δ' αὐτῷ κατ' οἰκίαν  
ὄντι προσαγγέλλουσι τῶν ἐταίρων τινές, ὅτι περὶ τὸ  
πτῶμα τῆς κόρης Ἰκίλιός τε ὁ κηδεστῆς καὶ Νομιτώ-  
ριος ὁ θεῖος σὺν τοῖς ἄλλοις ἐταίροις τε καὶ συγγε-  
νήσιιν ἐστῶτες φητὰ καὶ ἄρρητα κατ' αὐτοῦ λέγουσι,  
10 καὶ καλοῦσι τὸν δῆμον ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν. ὁ δ' ὑπ'  
ὄργης ὡς εἶχε τάχους πέμπει τῶν ῥαβδούχων τινάς,  
κελεύσας ἀπάγειν εἰς τὸ δεσμοτήριον τοὺς κειραγό-  
τας καὶ τὸ πτῶμα μεταφέρειν ἐκ τῆς ἀγορᾶς· ἀφρο-  
νέστατον πρᾶγμα ποιῶν καὶ τοῖς τότε καιροῖς ἥκιστα  
15 ἀκριόττον. δέον γὰρ ἀποθεραπεύειν τὸν ὄχλον ὄργης  
εἰληφότα δικαίαν πρόφασιν, εἴξαυτα μὲν ἐν τῷ πα-  
ραχρήμα χρόνῳ, ὕστερον δὲ τὰ μὲν ἀπολογούμενον,  
τὰ δὲ πικρατούμενον, τὰ δ' ἐτέραις τισὶν εὐεργεσίαις  
ἀναλαβόντα, ἐπὶ τὸ βικαιότερον ἐνεχθεὶς εἰς ἀπόνοιαν  
20 αὐτοὺς ἠνάγκασε τραπέσθαι. οὐ γὰρ ἀνέσχοντο τῶν 2254  
ἐπιβαλλομένων ἔλκειν τὴν νεκρὰν ἢ τοὺς ἀνδρας εἰς  
τὸ δεσμοτήριον ἀπάγειν, ἀλλ' ἐμβοήσαντες ἑαυτοῖς  
σὺν ὠθισμῷ τε καὶ πληγαῖς τῶν βιαζομένων, ἐξέβα-  
λον αὐτοὺς ἐκ τῆς ἀγορᾶς. ὥστ' ἠναγκάσθη ἀκούσας  
25 ταῦτα ὁ Ἄππιος ἅμα συγχροῖς ἐταίροις καὶ πελάταις  
εἰς τὴν ἀγορὰν πορεύεσθαι, παίειν κελεύων καὶ ἀνείρ-  
γειν ἐκποδῶν τοὺς ἐν τοῖς στενωποῖς. πνθόμενοι δὲ  
τὴν διάνοιαν αὐτοῦ τῆς ἐξόδου Οὐαλέριός τε καὶ  
Ἰοράτιος, οὓς ἔφην ἡγεμονικωτάτους εἶναι τῶν ἀντι-  
30 ποιουμένων τῆς ἐλευθερίας, πολλὴν καὶ ἀγαθὴν νεό-  
τητα περὶ αὐτοὺς ἄγοντες ἴστανται πρὸ τοῦ νεκροῦ·  
καὶ ἐπειδὴ πλησίον αὐτῶν οἱ περὶ τὸν Ἄππιον ἐγέ-

νοντο, πρῶτον μὲν εἰς λόγους ἐπαχθεῖς καὶ προπη-  
λακισμοὺς κατὰ τῆς ἐξουσίας αὐτῶν ἐχώρουν, ἔπειτα  
καὶ τὰ ἔργα ὅμοια τοῖς λόγοις παρείχοντο παλουτές  
τε καὶ ἀνατρέποντες τοὺς ὁμοῖε χωροῦντας.

XXXVIII. Ὁ δ' Ἄππιος ἀδημονῶν ἐπὶ τῷ παρ' 5  
ἐλπίδα τῆς κωλύσεως, καὶ οὐκ ἔχων ὅ τι χρήσεται  
τοῖς ἀνδράσι, τὴν ὀλεθριωτάτην ἔγνω βαδίζειν ὁδόν.  
εἰς γὰρ ἔτι τοῦ πλήθους αὐτῷ διαμέμοντος οἰκειῖον,  
ἀναβὰς ἐπὶ τοῦ Ἡφαίστου τὸ ἱερὸν ἐκάλεε τὸν δῆμον  
εἰς ἐκκλησίαν, καὶ κατηγορεῖν ἐπειράτο τῶν ἀνδρῶν 10  
παρανομίαν τε καὶ ὕβριν, ἐξουσία δημοκρατικῆ καὶ  
ἐλπίδι κούφῃ ἐπαιρούμενος, ὅτι συναγανακτήσας ὁ  
δῆμος αὐτῷ παρήσει ῥίψαι τοὺς ἀνδρας κατὰ τῆς  
πέτρας. οἱ δὲ περὶ τὸν Οὐαλέριον ἕτερον τόπον τῆς  
ἀγορᾶς καταλαβόμενοι, καὶ τὸ πτῶμα τῆς παρθένου 15  
θέντες ὄθεν ὑπὸ πάντων ὀφθῆσεσθαι ἐμελλεν, ἐτέ-  
ραν συνῆγον ἐκκλησίαν, καὶ πολλὴν ἐποιούντο τοῦ  
τ' Ἀππίου καὶ τῶν ἄλλων ὀλιγαρχικῶν κατηγορίαν.  
ἐμελλέ τε, ὅπερ εἰκὸς ἦν, οὓς μὲν τὸ ἀξίωμα τῶν  
ἀνδρῶν, οὓς δ' ὁ τῆς κόρης ἔλεος δεινὰ καὶ πέτρα 20  
2256 δεινῶν διὰ τὸ ἀτυχὲς κάλλος παθούσης, οὓς δ' αὐτὸς  
ὁ τῆς ἀρχαίας καταστάσεως πόθος εἰς ταύτην τὴν  
ἐκκλησίαν παρακαλῶν, πλείους τῶν ἐτέρων συνάξειν,  
ὥστ' ὀλίγους τινάς ὑπολειφθῆναι περὶ τὸν Ἄππιον,  
αὐτοὺς τοὺς ὀλιγαρχικούς, ἐν οἷς ἦσαν τινες οὐκέτι 25  
τῆς ὀλιγαρχίας αὐτῶν ἀκροώμενοι, διὰ πολλὰς προ-  
φάσεις, ἀλλ', εἰ γένοιτ' ἰσχυρὰ τὰ τῶν ἐναντίων,  
ἄσμενοι χωρήσειν ἐπ' ἐκείνους. ἐρημούμενον δὲ  
θεωρῶν ἑαυτὸν ὁ Ἄππιος ἠναγκάσθη μεταγνῶναι  
καὶ ἀπελθεῖν ἐκ τῆς ἀγορᾶς· ὁ καὶ μάλιστα ὤνησεν 30  
αὐτόν. βαλλόμενος γὰρ ὑπὸ τοῦ δημοτικῶν πλήθους  
καλὰς ἔτισεν ἂν αὐτῷ τὰς δίκας. μετὰ τοῦτ' ἐξουσίας

ὄσης ἐβούλοντο τυχόντες οἱ περὶ τὸν Οὐαλέριον, ἐνεφοροῦντο τῶν κατὰ τῆς ὀλιγαρχίας λόγων καὶ τοὺς ἔτι ἐνδοιάζοντας ἐξεδημαγώγουν. ἔτι δὲ μᾶλλον ἐξηλλοτριώσαν τὸν πολιτικὸν ὄχλον οἱ τῆς κόρης 2257 2260 τῶν σκηνῶν ἃς διεπορεύετο μεταξύ δειπνοῦντες ἅπαντες ἀθροοί, φανούς ἔχοντες καὶ λαμπάδας, ἀγανίας πλήρεις καὶ θορόβῳ περιχέομενοι περὶ αὐτὸν ἠκολούθουν. ἐπεὶ δ' εἰς τὸν ἀναπεπταμένον τοῦ στρατοπέδου τόπον ἦλθεν, ἐπὶ μετεώρου τινὸς στάς, ὥσθ' ὑπὸ πάντων ὄρασθαι, διηγείτο τὰς καταλαβούσας αὐτὸν συμφορὰς, μάρτυρας τῶν λόγων παρεχόμενος τοὺς σὺν αὐτῷ παρόντας ἐκ τῆς πόλεως. ὡς δὲ κατέμαθεν ὀλοφυρομένους τε πολλοὺς καὶ δακρύνοντας, εἰς λυσίας καὶ δεήσεις αὐτῶν ἐτρόπετο, μὴ περριδεῖν μήτ' αὐτὸν ἀτιμώρητον γενόμενον μήτε τὴν πατρίδα προσηλακίζομένην. λέγουσι δ' αὐτῷ 15 ταῦτα πολὺ τὸ βουλόμενον ἐξ ἀπάντων ἀκούειν καὶ ἐπικελευόμενον λέγειν ἐγίνετο. τοιγάρτοι καὶ θρασύτερον ἤδη καθήπτετο τῆς ὀλιγαρχίας διεξιῶν, ὡς πολλῶν μὲν ἀφείλοντο τὰς οὐσίας οἱ δέκα, πολλῶν δὲ πληγαῖς ἠμίσαντο τὰ σώματα, παμπόλλους δὲ φυγεῖν 20 ἠνάγκασαν ἐκ τῆς πατρίδος οὐδὲν ἀδικήσαντας, γυναικῶν τε ὕβρεις καὶ παρθένων ἐπιγάμων ἀρπαγὰς καὶ παίδων ἐλευθέρων προσηλακισμοὺς καὶ τὰς ἄλλας αὐτῶν παρανομίας τε καὶ ἀμότητας ἐπιλογιζόμενος. Καὶ ταῦτ', ἔφη, προσηλακίζουσιν ἡμᾶς οἱ μὴ νό- 25 μῳ τὴν ἐξουσίαν ἔχοντες μήτε ψηφίσματι βουλῆς ἢ δήμου συγχωρήματι λαβόντες· ὁ γὰρ ἐναύσιος αὐτοῖς τῆς ἀρχῆς χρόνος, ὃν ἔχρη αὐτοὺς ἄρξαντας ἑτέροις παραδοῦναι τὰ κοινά, παρελήλυθεν· ἀλλ' ἐκ τοῦ βιαιοτάτου τῶν τρόπων, πολλὴν δειλίαν καὶ μα- 30 λακίαν καταγνόντες ἡμῶν ὥσπερ γυναικῶν, εἰσελθέτω δὴ λογισμὸς ἕκαστου ὑμῶν ὃν τ' αὐτὸς πέ-

XXXX. Τὰ μὲν δὴ κατὰ πόλιν ἐν τοιαύταις 25 ἦν ταραχαῖς. Οὐεργίνιος δ', ὃν ἔφη αὐτόχειρα γενέσθαι τῆς ἑαυτοῦ θυγατρὸς, ἀπὸ φύτης ἐλαύνων τὸν ἵππον ἀφικνεῖται περὶ λύχνων ἀφὰς ἐπὶ τὸν πρὸς Ἀλγιδῶ χάρακα, τοιοῦτος οἶος ἐκ τῆς πόλεως ἐξέδραμεν, αἵματι πεφυρμένος ἅπας καὶ τὴν μαγειρικὴν σφαγίδα διὰ χειρὸς ἔχων. ἰδόντες δ' αὐτὸν 30 οἱ πρὸ τοῦ στρατοπέδου τὰς φυλακὰς φυλάττοντες ἐν ἀπόρῳ τ' ἦσαν ὅτι πέπονθεν εἰκάσαι, καὶ παρη-

κολούθουν ὡς ἀκουσόμενοι μέγα πρᾶγμα καὶ δεινόν. ὁ δὲ τέως μὲν ἐπορεύετο κλαίων καὶ διασημαίνων τοῖς ὁμοσε χωροῦσιν ἀκολουθεῖν· ἐξέτρεχον δ' ἐκ τῶν σκηνῶν ἃς διεπορεύετο μεταξύ δειπνοῦντες ἅπαντες ἀθροοί, φανούς ἔχοντες καὶ λαμπάδας, ἀγανίας πλήρεις καὶ θορόβῳ περιχέομενοι περὶ αὐτὸν ἠκολούθουν. ἐπεὶ δ' εἰς τὸν ἀναπεπταμένον τοῦ στρατοπέδου τόπον ἦλθεν, ἐπὶ μετεώρου τινὸς στάς, ὥσθ' ὑπὸ πάντων ὄρασθαι, διηγείτο τὰς καταλαβούσας αὐτὸν συμφορὰς, μάρτυρας τῶν λόγων παρεχόμενος τοὺς σὺν αὐτῷ παρόντας ἐκ τῆς πόλεως. ὡς δὲ κατέμαθεν ὀλοφυρομένους τε πολλοὺς καὶ δακρύνοντας, εἰς λυσίας καὶ δεήσεις αὐτῶν ἐτρόπετο, μὴ περριδεῖν μήτ' αὐτὸν ἀτιμώρητον γενόμενον μήτε τὴν πατρίδα προσηλακίζομένην. λέγουσι δ' αὐτῷ 15 ταῦτα πολὺ τὸ βουλόμενον ἐξ ἀπάντων ἀκούειν καὶ ἐπικελευόμενον λέγειν ἐγίνετο. τοιγάρτοι καὶ θρασύτερον ἤδη καθήπτετο τῆς ὀλιγαρχίας διεξιῶν, ὡς πολλῶν μὲν ἀφείλοντο τὰς οὐσίας οἱ δέκα, πολλῶν δὲ πληγαῖς ἠμίσαντο τὰ σώματα, παμπόλλους δὲ φυγεῖν 20 ἠνάγκασαν ἐκ τῆς πατρίδος οὐδὲν ἀδικήσαντας, γυναικῶν τε ὕβρεις καὶ παρθένων ἐπιγάμων ἀρπαγὰς καὶ παίδων ἐλευθέρων προσηλακισμοὺς καὶ τὰς ἄλλας αὐτῶν παρανομίας τε καὶ ἀμότητας ἐπιλογιζόμενος. Καὶ ταῦτ', ἔφη, προσηλακίζουσιν ἡμᾶς οἱ μὴ νό- 25 μῳ τὴν ἐξουσίαν ἔχοντες μήτε ψηφίσματι βουλῆς ἢ δήμου συγχωρήματι λαβόντες· ὁ γὰρ ἐναύσιος αὐτοῖς τῆς ἀρχῆς χρόνος, ὃν ἔχρη αὐτοὺς ἄρξαντας ἑτέροις παραδοῦναι τὰ κοινά, παρελήλυθεν· ἀλλ' ἐκ τοῦ βιαιοτάτου τῶν τρόπων, πολλὴν δειλίαν καὶ μα- 30 λακίαν καταγνόντες ἡμῶν ὥσπερ γυναικῶν, εἰσελθέτω δὴ λογισμὸς ἕκαστου ὑμῶν ὃν τ' αὐτὸς πέ-

πονθε καὶ ἂν οἶδεν ἑτέρουσ παθόντας· καὶ εἴ τις  
 ὑμῶν δελεαζόμενος ὑπ' αὐτῶν ἠδοναῖς τιςιν ἢ χά-  
 ρισιν οὐ πεφύβηται τὴν ὀλιγαρχίαν, οὐδὲ δέδοικε μὴ  
 καὶ ἐπ' αὐτὸν ἔλθοι ποτὲ σὺν χρόνῳ τὰ δεινὰ, μα-  
 5 θῶν ὅτι τυράννοις οὐδὲν ἔστι πιστόν, οὐδ' ἀπ'  
 εὐνοίας αἱ τῶν κρατούντων δίδονται τισι χάριτες,  
 καὶ πάντα τὰ ἴμοια τούτοις, μεταγνώτω· καὶ μὴ  
 διανοία χρησάμενοι πάντες ἐλευθεροῦτε ἀπὸ τῶν τυ- 2261  
 10 ράννων τὴν πατρίδα, ἐν ἧ θεῶν τε ὑμῖν λεῖα ἴδρυται  
 καὶ θῆκαι προγόνων εἰσίν, οὓς ὑμεῖς τιμᾶτε μετὰ  
 θεοῦς, καὶ γηραιοὶ πατέρες τροφεῖα πολλὰ καὶ ἄξια  
 τῶν πόνων ἀπαιτοῦντες, γυναικῆς τε κατὰ νόμους  
 ἐγγνηθεῖσαι καὶ θυγατέρες ἐπίγαμοι φροντίδος οὐ  
 μικρᾶς δεόμενοι τοῖς ἔχουσι καὶ γοναὶ παίδων ἀρ-  
 15 ρένων, οἷς ὀφείλεται δίκαια φύσεως καὶ προγόνων.  
 οἰκίας γὰρ δὴ καὶ κλήρους καὶ χρήματα σὺν πολλοῖς  
 κτηθέντα πόνοις ὑπὸ πατέρων καὶ ὑμῶν αὐτῶν σιω-  
 πῶ· ἂν οὐδὲν ὑμῖν ἔξῃστι βεβαίως ἔχειν, ἕως ἂν  
 20 ὑπὸ τῶν δέκα τυραννήσῃτε.  
 XXXXI. Οὔτε σωφρόνων οὔτε γενναίων ἐστὶν  
 ἀνθρώπων τὰ μὲν ἀλλότρια κτᾶσθαι δι' ἀνδραγα-  
 θίαν, τὰ δ' οἰκεία περιορᾶν ἀπολλύμενα διὰ μαλα-  
 κίαν οὐδὲ πρὸς μὲν Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους καὶ  
 Σαβίνους καὶ τοὺς ἄλλους περιοίκους ἅπαντας πολε-  
 25 μεῖν μακροῦς καὶ ἀδιαλείπτους πολέμους ὑπὲρ ἀρχῆς 2262  
 καὶ δυναστείας, πρὸς δὲ τοὺς παρὰ νόμον ἄρχοντας  
 ὑμῶν μὴ θέλειν ἄρασθαι τὰ ὄπλα ὑπὲρ ἀσφαλείας  
 τε καὶ ἐλευθερίας. οὐκ ἀναλήψεσθε τὸ φρόνημα τῆς  
 πατρίδος; οὐ παραστήσεται λογισμὸς ὑμῖν τῆς ἀρετῆς  
 30 τῶν γονέων ἄξιος, οἷ διὰ μιᾶς γυναικὸς ὕβριν ὑφ'  
 ἐνὸς τῶν Ταρκύνιου παίδων ὑβρισθείσης, καὶ διὰ  
 τὴν συμφορὰν ταύτην ἑαυτὴν διαχορησαμένης, οὕτως

ἠγανάκτησαν ἐπὶ τῷ πάθει καὶ παρωξύνθησαν καὶ  
 κοινὴν ἀπάντων ἠγήσαντο τὴν ὕβριν, ὥστ' οὐ μόνον  
 Ταρκύνιον ἐξέβαλον ἐκ τῆς πόλεως, ἀλλὰ καὶ τὸ βα-  
 σιλικὸν πολίτευμα κατέλυσαν, καὶ τὸ λοιπὸν ἀπέπειαν  
 μηδένα Ῥωμαίων ἄρχειν διὰ βίον τὴν ἀνυπεύθυνου 5  
 ἀρχήν, αὐτοὶ τε τοὺς μεγίστους ὁμοσάντες ὄρκους,  
 καὶ κατὰ τῶν ἐγγόνων ἀράς ἐάν τι παρὰ ταῦτα ποι-  
 ῶσι καταρασάμενοι; ἔπειτ' ἐκεῖνοι μὲν ἐνὸς οὐκ  
 ἠνεργίαν ἀκολάστου μειρακίου τυραννικὴν ὕβριν εἰς  
 10 ἐν σῶμα ἐλεύθερον γενομένην, ὑμεῖς δὲ πολυκέφαλον  
 2263 τυραννίδα πάση παρανομίᾳ τε καὶ ἀσελείᾳ χρωμέ-  
 νην καὶ ἐτι μᾶλλον χρησομένην, ἐάν νῦν ἀνάσχησθε,  
 ὑπομνεῖτε; οὐκ ἐμοὶ μόνῳ θυγάτηρ ἐγένετο διαφέ-  
 ρουσα τὴν ὄψιν ἑτέρων, ἣν ἀπὸ τοῦ φανεροῦ βιάζε-  
 σθαι καὶ προσηλακίζειν Ἀππίος ἐπεβάλετο, ἀλλὰ καὶ 15  
 ὑμῶν εἰσι πολλοῖς τοῖς μὲν θυγατέρες, τοῖς δὲ γα-  
 μεταί, τοῖς δὲ νεανία παῖδες εὐπροπεῖς, οὓς τί κω-  
 λύσει πρὸς ἄλλον τινὸς τῶν δέκα τυράννων ἢ καὶ  
 πρὸς αὐτοῦ τοῦ Ἀππίου ταυτὰ παθεῖν; εἰ μὴ τις 20  
 ἄρα θεῶν ἐστὶν ἐγγνητής, ὡς ἐάν τὰς ἐμὰς ταύτας  
 συμφορὰς ἀτιμωρήτους εἰσήτε οὐκ ἐφ' ὑμῶν πολλοὺς  
 τὰ ὅμοια δεινὰ ἤξει, ἀλλὰ μέχρι τῆς ἐμῆς θυγατρὸς  
 ὁ τυραννικὸς ἔρως προελθὼν στήσεται, καὶ περὶ τὰ  
 λοιπὰ σώματα παίδων τε καὶ παρθένων σωφρονήσει.  
 25 πολλῆς μέντοι μωρίας καὶ σκαιότητος, σαφῶς ἴστε, 25  
 2264 τὰ ὑπονοούμενα ταῦθ' ὥς οὐκ ἔσται λέγειν. ἀόρι-  
 στοὶ γὰρ αἱ τῶν τυράννων ἐπιθυμίαι κατὰ τὸ εἶκος,  
 οἷα δὴ μήτε νόμον ἔχουσαι κωλυτὴν μήτε φόβον.  
 ἐμοὶ τε δὴ πρᾶττοντες τιμωρίαν δικαίαν, καὶ ὑμῖν  
 αὐτοῖς ἀσφάλειαν ἵνα μὴ ταῦτα πάθητε παρασκευα- 30  
 ζόμενοι, διαρρηξάτε ἤδη ποτὲ τοὺς χαλινοὺς, ὧ  
 σχήλιοι· ἀναβλέψατε ὀρθοῖς ὄμμασι πρὸς τὴν ἐλευ-  
 10\*

θερίαν. ἐπὶ τίνι γὰρ ἑτέρῳ προφάσει μᾶλλον ἀγανακτῆσθε ἢ ταύτῃ, ὅτι τὰς τῶν πολιτῶν θυγατέρας ὡς δούλας ἀπάγουσιν οἱ τύραννοι καὶ μετὰ μαστίγων νυμφαγωγοῦσιν; ἐν ποίῳ δὲ τὸ ἐλεύθερον φρόνημα ἀναλήψεσθε καιρῷ τὸν νῦν παρέντες, ἐν ᾧ τὰ ὄπλα περὶ τοῖς σώμασιν ἔχετε;

XXXXII. Ἐπι δ' αὐτοῦ λέγοντος ἀνεβόησαν οἱ πολλοὶ τιμωρήσειν ὑπισχνούμενοι, καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῶν λόχων ἐξ ὀνόματος ἐκάλουν ἀξιούντες ἔργου 2260  
 10 ἔχουσαι, καὶ ἐκ τοῦ φανεροῦ πολλοὶ παριόντες ἐθάρορον λέγειν, εἴ τι δεινὸν ἦσαν πεπονθότες. μαθόντες δὲ τὰ γινόμενα οἱ πέντε ἄνδρες, οὓς ἔφην ἡρεῖσθαι τῶν ταγματῶν, δείσαντες μὴ τις ἐπ' αὐτοὺς τῶν ὄχλων ὀργὴ γένηται, συνέδραμον εἰς τὸ στρατήγιον 15  
 15 ἅπαντες καὶ μετὰ τῶν φίλων ἐσκόπον, ὅπως πάντοσσι τὴν ταραχὴν, τὰ οἰκτεῖα ὄπλα περιστησάμενοι. ὡς δ' ἐπέθοντο ἀπεληλυθότας ἐπὶ τὰς σκηνάς, λήξαντά τε καὶ πανσάμενον τὸν θόρουβον, ἀγνοοῦντες 20  
 20 δι' ἀπορητῶν συνωμοσιῶν ἀπόστασιν πράττειν καὶ συνελευθεροῦν τὴν πατρίδα, ἔκριναν, ἐπειδὴν ἡμέρα τάχιστα γένηται, τὸν μὲν ἐκταράττοντα τοὺς ὄχλους Οὐεργίνιον συλλαβόντας ἔχειν ἐν φυλακῇ, τὰς δὲ 25  
 25 τοὺς πολεμίους, καὶ τὴν κρατίστην αὐτῶν τῆς χώρας ἐγκαθημένους δηοῦν, περὶ τῶν ἐν τῇ πόλει πραττομένων μὴδὲν τοὺς σφετέρους ἐτι εἰδέντας πολυπραγμονεῖν, τὰ μὲν διὰ τὰς ὀφελείας, τὰ δὲ διὰ 2260  
 30 νετο δ' αὐτοῖς οὐδὲν τῶν ἐκ διαλογισμοῦ· οὐδὲ γὰρ τὸν Οὐεργίνιον εἶσαν οἱ λοχαγοὶ καλούμενοι εἰς τὸ στρατήγιον ἀπελθεῖν, ὑποπτεύ[οντες, μὴ τι πάθοι

δεινόν, ἀλλὰ καὶ τὸν] διαληφθέντ[α λόγον, ὡς] ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἀγαγεῖν τοὺς λόχους ἐβούλοντο, [κατωνείδιζον] λέγοντες· Ὡς καλῶς ἡμῶν ἐστρατηγήκατε καὶ πρότερον, ἵνα καὶ νῦν λαβόντες ἐλπίδας ἀκολουθῶμεν ὑμῖν, οἷτινες ὄσσην οὐπω πρότερον ἔτε- 5  
 5 ροὶ Ῥωμαίων ἡγεμόνες ἐκ τ' αὐτῆς ἄγοντες τῆς πόλεως στρατιὰν καὶ ἀπὸ τῶν συμμάχων ἀγείραντες, οὔτε [τινὰ νίκην ἢ βλάβην ἐποιήσατε κατὰ] τῶν ἐχθρῶν, ἀλλὰ δ' ἀνανδρίαν τε καὶ ἀπειρίαν [ἀπεδείξασθε, κακῶς] στρατοπεδευσάμενοι, καὶ τὴν ἑαυτῶν 10  
 10 1067 χώραν ὡς ὑπὸ τῶν πολεμίων [καταδηωθεῖσαν] πτωχοῦς καὶ ἀπόρους ἡμᾶς ἐποιήσατε ἀπάντων, ὅσοι κρατοῦντες τοῖς ὄπλοις τῶν ἐναντίων] ἐνικῶμεν ταῖς μάχαις, ὅτε ὑμῶν κρείττους ἦσαν στρατηγοί· τρόπαιά τε καθ' ἡμῶν ἀνιστάσι καὶ σκηνάς καὶ ἀνδρά- 15  
 15 ποδα καὶ ὄπλα καὶ χρήματα διηρηαιότες ἔχουσι τὰ ἡμέτερα.

XXXXIII. Ὁ δὲ Οὐεργίνιος ὑπὸ τ' ὀργῆς καὶ ἐκ τοῦ μὴδὲν ἐτι δεδοικέναι τοὺς ἡγεμόνας αὐθαδέστερον αὐτῶν καθήπτετο, λυμεῶνας τε καὶ ὀλέθρους 20  
 20 τῆς πατρίδος ἀποκαλῶν, καὶ παραινῶν τοῖς λοχαγοῖς ἅπασιν ἀραμένους τὰ σημεῖα οἰκάδε ἀπάγειν τὴν στρατιάν. ὀρρωδούντων δ' ἐτι τῶν πολλῶν τὰ ἱερὰ σημεῖα κινεῖν, ἔπειτα τοὺς ἡγεμόνας καὶ τοὺς 25  
 25 στρατηγοὺς καταλιπεῖν οὔτε ὄσιον οὔτ' ἀσφαλὲς εἶναι πᾶσι νομιζόντων· ὃ τε γὰρ ὄρκος ὁ στρατιωτικός, ὃν ἀπάντων μάλιστα ἐμπεδοῦσι Ῥωμαῖοι, τοῖς 1068  
 1068 στρατηγοῖς ἀκολουθεῖν κελεύει τοὺς στρατενομένους ὅποι ποτ' ἂν ἄγωσιν, ὃ τε νόμος ἀποκτείνειν ἔδωκε τοῖς ἡγεμόσιν ἐξουσίαν τοὺς ἀπειθοῦντας ἢ 30  
 30 τὰ σημεῖα καταλιπόντας ἀκρίτως· ταῦτα δὲ δι' εὐλαβείας αὐτοὺς ἔχοντας ὄραν Οὐεργίνιος ἐδίδασκεν,

ὅτι λέλυκεν αὐτῶν τὸν ὄρκον ὁ νόμος, ἐπειδὴ νόμος  
 μὲν ἀποδειχθέντα δεῖ τὸν στρατηγὸν ἄρχειν τῶν δυ-  
 ναμῶν, ἢ δὲ τῶν δέκα ἀνδρῶν ἐξουσία παράνομος  
 ἦν ὑπερβαλοῦσα τὸν ἐνιαύσιον χρόνον εἰς ὃν ἀπε-  
 5 δείχθη. τὸ δὲ τοῖς μὴ κατὰ νόμον ἄρχουσι ποιεῖν τὸ  
 κελευόμενον οὐκ εὐπειθεῖαν εἶναι καὶ εὐσέβειαν,  
 ἀλλ' ἄνοιαν καὶ μανίαν. ταῦτ' ἀκούσαντες ὀρθῶς λέ-  
 γεσθαι ἠγούμενοι, καὶ παρακελευόμενοι τε ἀλλήλοις  
 καὶ τι καὶ θάσος ἐκ τοῦ δαιμονίου λαβόντες, αἰρου-  
 10 ται τὰ σημεῖα καὶ προῆγον ἐκ τοῦ χάρακος. ἐμελλον  
 δ', ὅπερ εἰκὸς ἐν ποικίλοις τ' ἦθεσι καὶ οὐχ ἅπασι  
 τὰ κράτιστα διανοομένοις, ἔσεσθαι τινες οἱ μένον-  
 τες ἅμα τοῖς ὀλιγόρχαις καὶ στρατιῶται καὶ λοχαγοί,  
 πλὴν οὐ τοσοῦτοι τὸ πλῆθος, ἀλλ' ἐλάττους παρὰ  
 15 πολὺ τῶν ἐτέρων. οἱ δ' ἐξεληθόντες ἐκ τοῦ στρατο- 2269  
 πέδου δι' ὅλης ἡμέρας ἐπιπορευθέντες ἐσπέρας κατα-  
 λαβούσης παρήσαν εἰς τὴν πόλιν, οὐδενὸς ἐξαγγέ-  
 λαντος αὐτῶν τὴν ἐφοδον, καὶ συνειτάραξαν τοὺς ἐν-  
 δον οὐ μετρίως πολέμιον οἰομένους στρατὸν εἰσεληλυ-  
 20 θέναι· κραυγὴ τε καὶ δρόμος ἄτακτος ἀνὰ τὴν πόλιν  
 ἦν. οὐ μὴν ἐπὶ πολὺν γε διέμεινεν ἡ ταραχὴ χρό-  
 νον, ὥστε κακὸν τι γενέσθαι δι' αὐτήν. διεξιόντες  
 γὰρ τοὺς στενωποὺς ἐβόων, ὅτι φίλοι τ' εἰσὶ καὶ  
 ἐπ' ἀγαθῷ τῆς πόλεως εἰσεληλύθασιν, καὶ τὰ ἔργα  
 25 ὅμοια παρέρχοντο τοῖς λόγοις ἀδικοῦντες οὐδένα.  
 ἀφικόμενοι δ' εἰς τὸν καλούμενον Ἀουεντίνον· ἔστι  
 δὲ τῶν ἐμπεριεχομένων ἐν τῇ Πρώμῃ λόφῳ οὗτος  
 ἐπιτηδεύτατος ἐν στρατοπεδεύεσθαι· περὶ τε τὸ τῆς  
 Ἀρτέμιδος ἱερὸν τίθενται τὰ ὄπλα, τῇ δ' ἐξῆς ἡμέρᾳ  
 30 κρατυνάμενοι τὸν χάρακα καὶ χιλιάρχους δέκα τῶν  
 κοινῶν ἀποδείξαντες κυρίους, ὧν ἠγεμῶν ἦν Μάρκος  
 Ὀππιος, ἔμμενον ἐφ' ἡσυχίας.

XXXXIII. Ἦκον δ' αὐτοῖς ἐπίκουροι μετ' οὐ  
 πολὺ καὶ ἀπὸ τῆς ἐν Φιδήμῃ στρατιᾶς οἱ κράτιστοι  
 τῶν τριῶν ταγμάτων λοχαγοὶ πολλὴν δύναμιν ἐπα-  
 γόμενοι, ἀλλοτρίως μὲν ἔτι κάλαι διακειμένοι πρὸς  
 τοὺς ἐκεῖ στρατηγούς, ἐξ οὗ Σίκιον τὸν πρεσβευ- 5  
 τὴν ἀπέκτειναν, ὥσπερ ἔφην, δεδιότες δ' ἄρξαι τῆς  
 ἀποστάσεως πρότεροι, ὡς οἰκείων ὄντων τῇ δεκαδ-  
 αρχίᾳ τῶν ἐν Ἀλγιδῷ πέντε ταγμάτων, τότε δ',  
 ἐπειδὴ τὴν ἐκείνων ἀπόστασιν ἐπέγνωσαν, ἀγαπη-  
 10 τῶς τὸ συμβᾶν ἀπὸ τῆς τύχης δεξάμενοι. ἠγεμόνες  
 καθ' ὁδὸν ἀποδειχθέντες, ὧν ἐπιφανέστατος Σέξτος  
 Μάλιος ἦν. ἐπεὶ δὲ συνέμιξαν ἀλλήλοις, θήμενοι τὰ  
 ὄπλα τοῖς εἰκοσι χιλιάρχοις ἐπέτρεψαν ἅπαντα ὑπὲρ  
 τοῦ κοινοῦ λέγειν τε καὶ πράττειν. ἐκ δὲ τῶν εἰκοσι 15  
 τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀπέδειξαν δ' οὗ προβούλους,  
 Μάρκον Ὀππιον καὶ Σέξτον Μάλιον· οὗτοι βουλευ-  
 τήριον ἐξ ἁπάντων καταστησάμενοι τῶν λοχαγῶν,  
 20 μετ' ἐκείνων ἅπαντα διετέλουσαν πραγματευόμενοι.  
 ἀδήλου δ' ἔτι τοῖς πολλοῖς τῆς διανοίας αὐτῶν οὐ- 20  
 σης, Ἀππιος μὲν, οἷα δὴ συγγινώσκων ἑαυτῷ τῆς  
 παρουσίας ταραχῆς αἰτίῳ γεγονότι καὶ τῶν προσδο-  
 κωμένων δι' αὐτὴν ἔσεσθαι κακῶν, οὐκέτι τῶν κοι-  
 νῶν οὐδὲν ἠέλιον πράττειν, ἀλλὰ κατ' οἶκον ἔμμενεν·  
 ὁ δὲ σὺν αὐτῷ τεταγμένος ἐπὶ τῆς πόλεως Σπόριος 25  
 Ὀππιος, διαταραχθεὶς κατ' ἀρχάς καὶ αὐτός, ὡς  
 αὐτίκα μάλα τῶν ἐχθρῶν σφίσιν ἐπιθησομένων καὶ  
 ἐπὶ τούτῳ ἠκόντων, ἐπειδὴ κατέμαθεν οὐδὲν νεωτε-  
 ρίσαντας αὐτούς, ὑφέμενος τοῦ δέους ἐκάλει τὴν βου-  
 λὴν εἰς τὸ συνέδριον ἐκ τῶν οἰκιῶν κατ' ἄνδρα με- 30  
 ταπεμπόμενος. ἔτι δ' αὐτῶν συλλεγομένων ἦκου  
 οἱ ἐκ τῆς ἐν Φιδήμῃ στρατιᾶς ἠγεμόνες, ἀγανακτοῦν-

τες ἐπὶ τῷ καταλείφθαι τοὺς χάρακας ὑπὸ τῶν  
στρατιωτῶν ἀμποτέρους, καὶ τὴν βουλὴν πείθοντες  
ἀξίαν τοῦ πράγματος ὀργὴν κατ' αὐτῶν λαβεῖν. ἐπεὶ  
δ' ἀγορεύειν γνώμην ἕκαστον ἔδει, Λεύκιος μὲν  
5 Κορνήλιος ἔφη δεῖν ἀπιέναι τοὺς κατέχοντας τὸν  
Ἄουεντινὸν αὐθημερὸν ἐπὶ τοὺς ἑαυτῶν χάρακας,  
καὶ τὰ κελευόμενα ὑπὸ τῶν στρατηγῶν ἐπιτελεῖν  
μηδενὸς ὄντας τῶν γεγονότων ὑποδίκους, πλὴν τῶν  
αἰτίων τῆς ἀποστάσεως μόνων· τούτοις δὲ προσθεῖναι  
10 δίκας τοὺς στρατηγούς. εἰ δὲ μὴ ποιῶσι ταῦτα,  
βουλεύειν περὶ αὐτῶν τὸ συνέδριον ὡς ἐκλειοπέ-  
των τὴν τάξιν, ἐφ' ἣν ἐτάχθησαν ὑπὸ τῶν ἡγεμό-  
νων, καὶ περὶ τὸν στρατιωτικὸν ἡσεβηκότων ὄρκον.  
Λεύκιος δὲ Οὐαλέριος \* \* \* \* \*

15 \* \* \* \* \*  
ἀλλ' ὑπὲρ τῶν Ῥωμαϊκῶν νόμων, οὓς ἐν ταῖς  
δώδεκα δέλτοις ἀναγεγραμμένους εὖρομεν, οὔτε μη-  
δένα ποιήσασθαι λόγον ἤρομιτεν, οὕτω σεμνῶν ὄν-  
των καὶ τοσαύτην ἐχόντων διαφορὰν παρὰ τὰς Ἑλλη-  
20 νικὰς νομοθεσίας, οὔτε περαιτέρω τοῦ δέοντος προ-  
βαίνειν ἐμνηκύναντας τὴν περὶ αὐτῶν ἱστορίαν.

XXXXV. Οἱ δὲ μετὰ τὴν κατάλυσιν τῆς δεκαδ-  
αρχίας τὴν ὑπατοῦ ἀρχὴν πρῶτοι παρὰ τοῦ δήμου  
λαβόντες ἐπὶ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας, ὥσπερ ἔφη,  
25 Λεύκιος Οὐαλέριος Ποπίλιος καὶ Μάρκος Ὀράτιος  
Βαρβάτος, αὐτοὶ τε δημοτικοὶ τὰς φύσεις ὄντες καὶ  
παρὰ τῶν προγόνων ταύτην διαδεδεγμένοι τὴν πολι-  
τείαν, τὰς ὑποσχέσεις φυλάττοντες, ἃς ἐποίησαντο  
πρὸς τοὺς δημοτικούς, ὅτ' ἀποθέσθαι τὰ ὄπλα συνέ-  
30 πειθον αὐτούς, ὡς πάντα τὰ συμφέροντα τῷ δήμῳ  
πολιτευσόμενοι, νόμους ἐκύρωσαν ἐν ἐκκλησίαις λο-  
χιτίσι, δυσχεραίνοντων μὲν τῶν πατρικίων, αἰδου-

μένων δ' ἀντιλέγειν, ἄλλους τέ τινες, οὓς οὐ δέο-  
μαι γράφειν, καὶ τὸν κελεύοντα τοὺς ὑπὸ τοῦ δήμου  
τεθέντας ἐν ταῖς φυλετικαῖς ἐκκλησίαις νόμους ἅπασι  
κεῖσθαι Ῥωμαίοις ἐξ Ἰσου, τὴν αὐτὴν ἔχοντας δύνα-  
μιν τοῖς ἐν ταῖς λοχίτισιν ἐκκλησίαις τεθησομένοις.  
5 τιμωρίαὶ δὲ προσέκειντο τοῖς καταλύουσιν ἢ παραβαί-  
1074 νουσι τὸν νόμον, εἰάν ἀλώσι, θάνατος καὶ δήμευσις  
τῆς οὐσίας. οὗτος ὁ νόμος ἐξέβαλε τὰς ἀμφισβητή-  
σεις τῶν πατρικίων, ἃς ἐποιούντο πρὸς τοὺς δημο-  
τικούς πρότερον, οὐκ ἀξιούντες τοῖς ὑπ' ἐκείνων  
τεθείσι νόμοις πειθαρχεῖν, οὐδ' ὅλως τὰ ἐν ταῖς φυ-  
λετικαῖς ἐκκλησίαις ἐπικυρούμενα κοινὰ τῆς πόλεως  
ἀπάσης δόγματα νομίζοντες, ἀλλ' αὐτοῖς μόνοις ἐκέ-  
15 νοις ἴδια· ὅτι δ' ἂν ἡ λοχίτις ἐκκλησία γνῶ, τοῦθ'  
ἠγνούμενοι σφίσι τ' αὐτοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις πολιταῖς  
τετάχθαι. εἴρηται δὲ καὶ πρότερον, ὅτι ἐν μὲν ταῖς  
φυλετικαῖς ἐκκλησίαις οἱ δημοτικοὶ καὶ πένητες ἐκρά-  
20 τουν τῶν πατρικίων, ἐν δὲ ταῖς λοχίτισιν ἐκκλησίαις  
οἱ πατρικοὶ παρὰ πολὺ τῶν ἄλλων ἐλάττους ὄντες  
περιῆσαν τῶν δημοτικῶν.

XXXXVI. Τούτου κωρωθέντος ὑπὸ τῶν ὑπά-  
των τοῦ νόμον σὺν ἄλλοις τισὶν ὥσπερ ἔφη δημοτι-  
κοῖς, εὐθύς οἱ δήμαρχοι καιρὸν ἐπιτήδειον ἤκειν νο-  
μίζοντες, ἐν ᾧ τιμωρήσονται τοὺς περὶ τὸν Ἄππιον,  
25 εἰσαγγελίας ᾗοντο δεῖν ποιήσασθαι κατ' αὐτῶν, οὐχ  
ἅμα πάντας ὑπάγοντες ἐπὶ τὴν δίκην, ἵνα μηδὲν  
ἀλλήλους ἀφελῶσιν, ἀλλὰ καθ' ἕνα· ᾗον γὰρ οὕ-  
τως ὑπελάμβανον εὐμεταχειρίστους ἔσεσθαι. σκο-  
πούμενοι δ' ἀπὸ τίνος ἂν ᾗοξαιτο ἐπιτηδειοτάτου,  
τὸν Ἄππιον πρῶτον ἐγνωσαν εὐθύνειν, τῶν τ' ἄλ-  
30 λων ἀδικημάτων ἕνεκα μισούμενον ὑπὸ τοῦ δήμου,  
καὶ τῶν νεωστὶ περὶ τὴν παρθένον γενομένων παρα-



νομιῶν. ἔλόντες μὲν γὰρ τοῦτον εὐπετῶς ἐδόκουν  
καὶ τῶν ἄλλων κρατήσῃν· εἰ δ' ἀπὸ τῶν ταπεινοτέρων  
ἄρξαιτο, μαλακώτερας ὑπελάμβανον τὰς ὀργὰς  
τῶν πολιτῶν πρὸς τοὺς ἐπιφανεστάτους καὶ τελευ-  
5 ταιούς κρινομένους ἔσεσθαι, συντονωτέρας οὖσας  
ἐπὶ τοῖς προτέροις ἀγῶσιν, ὃ πολλὰκις ἤδη συνέβη.  
ταῦτα βουλευσάμενοι συνέσχον τοὺς ἄνδρας, Ἀππίου  
δὲ Οὐεργίνιον ἔταξαν ἄνευ κλήρου κατηγορεῖν. εἰς-  
αγγέλλεται δὴ μετὰ τοῦτο εἰς τὸν δῆμον Ἀππίος  
10 ὑπὸ τοῦ Οὐεργίνιου κατηγορηθεὶς ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας,  
καὶ αἰτεῖται χρόνον εἰς ἀπολογία. ἀπαχθεὶς δ' εἰς  
τὸ δεσμοκτήριον, ἵνα φυλάττηται μέχρι δίκης· οὐ  
γὰρ ἐδόθη ἔγγυθις αὐτῷ· πρὶν ἐπιστήναι τὴν ἀπο-  
δειχθεῖσαν ἡμέραν τῆς κρίσεως ἐν τοῖς δεσμοῖς ἀπο-  
15 θνήσκει, ὡς μὲν ἢ τῶν πολλῶν ὑπόληψις ἦν ἔξ ἐπι-  
ταγῆς τῶν δημάρχων· ὡς δ' οἱ τὴν αἰτίαν ἀπολύσα-  
σθαι βουλόμενοι διεφήμεζον, αὐτὸς ἑαυτὸν ἀναρτη-  
σάμενος βρόχῳ μετ' ἐκείνου Σπόριος Ὀππίος εἰς-  
αχθεὶς εἰς τὸν δῆμον ὑφ' ἐτέρου τῶν δημάρχων  
20 Ποπλίου Νομιτωρίου καὶ τυχῶν ἀπολογίας ἀπά-  
σαις ἀλίσκεται ταῖς ψήφοις, καὶ παραδοθεὶς εἰς τὸ  
δεσμοκτήριον αὐθημερὸν ἀποθνήσκει. οἱ δὲ λοιποὶ  
τῶν δέκα πρὶν εἰσαγγελθῆναι φυγαῖς αὐτοὺς ἐξη-  
μίωσαν. τὰς δ' οὐσίας τῶν ἀνηρημένων καὶ τῶν  
25 ἀποφυγόντων οἱ ταμίαι τῆς πόλεως ἀνέλαβον εἰς τὸ  
δημόσιον. εἰσαγγέλλεται δὲ καὶ Μάρκος Κλαύδιος  
ὃ τὴν παρθένου ἐπιβαλόμενος ὡς δούλην ἀπάγειν  
ὑπὸ τοῦ μνηστήρος αὐτῆς Ἰαλλίου· καὶ τὴν αἰτίαν  
εἰς τὸν ἐπιτάξαντα παρανομεῖν Ἀππίου ἀναφέρων  
30 θανάτου μὲν ἀπολύεται, φυγῇ δ' αἰδίῳ ζημιοῦται,  
τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπηρετησάντων τι παρανομοῦ  
τοῖς ὀλιγόχαις οὐδεὶς ἔσχευ ἀγῶνα δημόσιον, ἀλλὰ

πᾶσιν ἄδεια ἐδόθη. ὃ δὲ τοῦτο τὸ πολίτευμα εἰση-  
γησάμενος ἦν Μάρκος Δοέλλιος ὁ δήμαρχος, ἀχθο-  
μένων ἤδη τῶν πολλῶν, καὶ τῶν πολεμίων . . . .  
γενέσθαι προσδοκῶντων.

XXXXVII. Ἐπεὶ δ' αἱ κατὰ πόλιν ἐπαύσαντο  
5 ταραχαί, συναγαρόντες τὴν βουλήν οἱ ὑπατοὶ δόγμα  
κυροῦσιν ἐξάγειν τὸν στρατὸν ἐπὶ τοὺς πολεμίους διὰ  
ταχέων. ἐπικυρώσαντος δὲ τοῦ δήμου τὰ ψηφισθέντα  
ὑπὸ τῆς βουλῆς, Οὐαλέριος μὲν ἄτερος τῶν ὑπᾶτων  
τὴν ἡμίσειαν ἔχων τοῦ στρατοῦ μοῖραν ἐξῆγεν ἐπὶ τ'  
10 Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους· συνῆλθε γὰρ ἀμφοτέρω  
τὰ ἔθνη. ἐπιστάμενος δὲ τοὺς Αἰκανοὺς ἐκ τῶν  
προτέρων κατορθωμάτων αὐχheimer προσειληφότης  
15 καὶ εἰς πολλὴν καταφρόνησιν τῆς Ῥωμαίων δυνά-  
μεως ἐπαρθέντας, ἔτι μᾶλλον ἐβούλετο ἐπᾶραι καὶ  
θεραστέρους ποιῆσαι, δόξαν οὐκ ἀληθῆ παρασχών,  
ὡς ὀρθωδῶν εἰς χεῖρας ἰέναι πρὸς αὐτοὺς, καὶ πάντα  
δεδιότος ἐποίησε. χωρίον τε γὰρ εἰς στρατοπεδείαν  
ὑψηλὸν καὶ δυσπρόσιτον ἐξελέξατο τάφρον τε βα-  
θεῖαν περιεβάλετο καὶ χάρακας ἤγειρεν ὑψηλοῦς.  
20 προκαλονόμενων δὲ τῶν πολεμίων αὐτὸν εἰς μάχην  
πολλὰκις καὶ κακιζόντων τὴν ἀνανδρίαν ἠνείχετο  
μένων ἐφ' ἡσυχίας. ἐπεὶ δ' ἔγνω τὴν κρατίστην τῶν  
πολεμίων δύναμιν ἐπὶ προνομῆν τῆς Ἑθνίκων τε  
καὶ Λατίνων γῆς ἐξεληλυθῆσαν, ἐν δὲ τῷ χάρακι  
25 φυλακὴν οὔτε πολλὴν καταλειπομένην οὔτ' ἀγαθὴν,  
τοῦτον εἶναι νομίσας τὸν καιρὸν ἐπιτήδειον ἐξῆγε  
κεκοσμημένην τὴν στρατιάν καὶ παρέταξεν ὡς εἰς  
μάχην. οὐδενὸς τ' ἀντεπιόντος ἐκείνην μὲν τὴν ἡμέ-  
30 ραν ἐπέειχε, τῇ δ' ἐξῆς ἐπὶ τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν  
ἦγεν οὐ σφόδρα ὀχυρὰν οὔσαν. μαθόντες δὲ πολιορ-  
κούμενον τὸν χάρακα οἱ προεξεληλυθότες ἐπὶ τὰς

προνομάς ταχέως ἦγον, πλὴν οὐχ ἅμα καὶ ἐν κόσμῳ, σποράδες δὲ καὶ κατ' ὀλίγους ὡς ἕκαστοι εἶχον ἐπιφαινούμενοι· οἱ τ' ἐν τοῦ χάρακος, ἐπεὶ τοὺς σφετέρους προσιόντας ἐθεάσαντο, θρασύτεροι γερονότες 5 ἐξῆλθον ἀθρόοι. καὶ γίνεται μέγας ἀγὼν καὶ φόβος ἐξ ἀμφοτέρων πολὺς, ἐν ᾧ νικήσαντες οἱ Ῥωμαῖοι τοὺς τε συστάδην μαχομένους ἐτρέψαντο, καὶ τοὺς φεύγοντας ἐπιδιώκοντες, οὓς μὲν ἀπέκτειναν, οὓς δ' αἰχμαλώτους ἔλαβον, τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν κρατήσαντες χρήματα πολλὰ καὶ λείαν ἄφθονου περιεβά- 10 λοντο. Οὐαλέριος μὲν δὴ ταῦτα διαπραξάμενος ἀδεῶς ἦδη τὴν γῆν τῶν πολεμίων ἐπιῶν εἰδήν.

XXXXVIII. Μάρκος δ' Ὀράτιος ἐπὶ τὸν κατὰ Χαβίνων πόλεμον προαγαγών, ἐπειδὴ τὰ κατὰ τὸν 15 συνάρχοντα ἔγνω, καὶ αὐτὸς ἐκ τοῦ χάρακος τὰς δυνάμεις ἀντεπήγε θῦπτον ὅλη δυνάμει πρὸς οὐκ ἐλάττους ἀριθμὸν τοὺς Σαβίνους καὶ τὰ πολέμια 2280 [ἐμπειροτάτους· ἐνδείξαντο γὰρ] φρόνημά τε καὶ τόλμαν ἐκ τῶν προτέρων κατορθωμάτων πολλὴν πρὸς τοὺς ἀντιμαχομένους, καὶ κοινῶς ἅπαντες καὶ ἰδίως 20 ὁ τούτων προηγούμενος· ἦν γὰρ οὐ μόνον στρατηγὸς ἀγαθός, ἀλλὰ καὶ πολεμιστὴς κατὰ χεῖρα γενναῖος· καὶ τῶν ἰσπέων μεγάλην προθυμίαν παρασχόμενον νίκην ἀναιρεῖται λαμπροτάτην, πολλοὺς 25 μὲν ἀποκτείνας τῶν πολεμίων, πολλῶ δ' ἔτι πλειόνων αἰχμαλώτων τετυχηκώς, τοῦ τε χάρακος αὐτῶν ἐρήμου κρατήσας, ἐν ᾧ τὴν τ' ἀποσκευὴν τῶν πολεμίων πολλὴν εὗρε καὶ τὴν λείαν ἅπασαν, ἦν ἐκ τῆς Ῥωμαίων γῆς ἐλήθισαντο, αἰχμαλώτους τε πάνυ πολλοὺς 30 τῶν σφετέρων ἀνεσώδατο. οὐ γὰρ ἔφθασαν ἀνασκευασάμενοι τὰς ὠφελείας οἱ Σαβίνοι διὰ καταφρόνησιν. τὰ μὲν οὖν τῶν πολεμίων χρήματα τοῖς στρατιώταις

ὠφέλειαν ἐφήκε ποιεῖσθαι, προεξελόμενος ἐκ τῶν λαφύρων ὅσα τοῖς θεοῖς καθιερώσειν ἔμελλε· τὴν δὲ 3361 λείαν τοῖς ἀφαιρεθεῖσιν ἀπέδωκε.

XXXXVIII. Ταῦτα διαπραξάμενος ἀπήγε· εἰς Ῥώμην τὰς δυνάμεις, καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον 5 Οὐαλέριος ἦκεν, ἦν τ' ἀμφοτέροις μέγα φρονούσιν ἐπὶ ταῖς νίκαις [καὶ] ἐλπίς ἐπιφανεῖς κατάξεν θριάμβους. οὐ μὴν ἐχώρησέ γ' αὐτοῖς κατ' ἐλπίδα τὸ ἔργον. συναχθεῖσα γὰρ κατ' αὐτῶν ἡ βουλή κατεστρατοπεδευκόντων ἔξω τῆς πόλεως εἰς τὸ καλού- 10 μενον Ἄρειον πεδῖον, καὶ τὰ πραχθέντα ὑπ' ἀμφοτέρων μαθοῦσα τὴν ἐπινίκιον οὐκ ἐπέτρεψε ποιήσασθαι θυσίαν, πολλῶν μὲν καὶ ἄλλων ἐναντιωθέντων αὐτοῖς ἐκ τοῦ φανεροῦ, μάλιστα δὲ Κλαυδίου Γαίου· 15 θεῖος δ' ἦν οὗτος, ὥσπερ ἔφη, Ἄππῖω τῷ καταστησάμενῳ τὴν ὀλιγαρχίαν καὶ νεωστὶ ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀνααιρεθέντι· τοὺς τε κυρωθέντας ὑπ' αὐτῶν νόμους προβαλλομένου, δι' ὧν ἠλέττωσαν τὸ τῆς βου- 20 λῆς κράτος, καὶ τἄλλα πολιτεύματα, ὅσα οὗτοι \* \* \* πολιτευόμενοι διετέλεσαν· τελευταίαν δὲ τὴν τῶν 20 3382 δέκα ἀνδρῶν, οὓς προὔδωκαν τοῖς δημάρχοις, τῶν μὲν ἀπόλειαν, τῶν δὲ δήμευσιν, ὡς παρὰ τοὺς ὄρκους καὶ τὰς συνθήκας, διεξιόντος. τὰ γὰρ ἐπὶ τῶν ἱερῶν συνομολογηθέντα τοῖς πατρικίοις πρὸς τοὺς δημοτικούς ἐπ' ἀδεία τε πάντων γενέσθαι καὶ 25 ἀμνηστία τῶν προτέρων· τὸν τ' Ἀππίου θάνατον οὐκ αὐτοχειρίᾳ γενέσθαι λέγοντος, ἀλλ' ἐπιβούλως ὑπὸ τῶν δημάρχων πρὸ δίκης, ἵνα μῆτε λόγου τύχη κρινόμενος μὴ ἐλέους, ὡς, εἰ κατέστη γούν εἰς κρί- 30 σιν ἀνὴρ, γένους ἀξίωμα παρεχόμενος καὶ πολλὰ τὸ κοινὸν εὐ πεποικηκώς ὄρκους τε καὶ πίστις ἐπιβού- 30 3383 μος, αἷς ἀνθρώποι πιστεύοντες εἰς διαλλαγὰς

συνέρονται, τέκνα τε καὶ συγγένειαν καὶ αὐτὸ τὸ ταπεινὸν σχῆμα καὶ τάλλα πολλὰ [φέρων] εἰς οἶκτον ἐφελκόμενα τὸ πλῆθος. ταῦτα δὲ πάντα κατηγορήματα τῶν ὑπάτων [καὶ αὐτῶν ἐκχέαντος Κλαυδίου 2284  
5 Γαίου, καὶ πάντων] τῶν παρόντων, ἔδοξεν ἀγαπᾶν αὐτοὺς εἰ μὴ δάσουσι δίκας· θροιάμβων δὲ καταγωγῆς ἢ τιμῶν τοιούτων συγχωρήσεως οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἀξιόους εἶναι τυγχάνειν.

Λ. Ἀποψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς τὸν θροιάμβον, ἀγανακτοῦντες οἱ περὶ τὸν Οὐαλέριον καὶ δεινὴν ὕβριν ὑπολαμβάνοντες ὑβρίζεσθαι συνεκάλεσαν εἰς ἐκκλησίαν τὸ πλῆθος· καὶ πολλὰ τῆς βουλῆς κατηγορήσαντες, συναγορευσάντων αὐτοῖς τῶν δημάρχων καὶ νόμον εἰσηγησαμένων, παρὰ τοῦ δήμου 15 λαμβάνουσι τὴν καταγωγὴν τοῦ θροιάμβου, πρῶτοι Ῥωμαίων ἀπάντων τοῦτο εἰσηγησάμενοι τὸ ἔθος. ἐκ δὲ τούτου πάλιν εἰς ἐγκλήματα καὶ διαφορὰς οἱ δημοτικοὶ καθίσταντο πρὸς τοὺς πατρικίους· παρ᾽ αὐτοὺς δ' αὐτοὺς οἱ δημαρχοὶ καθ' ἡμέραν ἐκκλησιάζοντες καὶ πολλὰ κατὰ τῆς βουλῆς λέγοντες. ἦν δ' ἡ 20 μάλιστα ἐρεθίζουσα τοὺς πολλοὺς ὑπόληψις, ἣν ἐκαίνοι παρεσκευάσαν ἰσχυρὰν γενέσθαι, φήμαις τ' ἀδεσπότοις καὶ εἰκασμοῖς ἀξηθηθεῖσα οὐκ ἀλόγοις, ὡς καταλυσόντων τῶν πατρικίαν τοὺς νόμους, οὓς ἐκύρωσαν οἱ 25 περὶ Οὐαλέριον ὑπάτοι· δόξα τ' ἰσχυρὰ καὶ οὐ πολὺν ἀπέχουσα τοῦ πίστις εἶναι τοὺς πολλοὺς κατεῖχε. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ τούτων πραχθέντα τῶν ὑπάτων ταῦτ' ἦν.

ΛΙ. Οἱ δὲ τὸν ἐξῆς ὑπατεύσαντες ἐνιαυτὸν Δάρος Ἐρμίνιος καὶ Τίτος Οὐεργίνιος· καὶ οἱ παρὰ 30 τούτων τὴν ἀρχὴν παραλαβόντες, Μάρκος Γερνίκιος

\* \* \* \* \* 2285  
\* \* \* \* \*

ΛΙΙ. Μηδὲν δ' αὐτῶν ἀποκρινομένων, ἀλλ' ἀγανακτοῦντων, παρελθὼν αὐθις Σκαπίτιος ἐπὶ τὸ βῆμα· Ἔχει, ἔφη, παρακεχωρημένον, ἄνδρες πολῖται, παρ' αὐτῶν τῶν διαφορομένων, ὅτι τῆς 5 ἡμετέρας χώρας ἑαυτοῖς μηδὲν προσηκούσης ἀντιποιοῦνται· πρὸς ταῦτα ὁρῶντες τὰ δίκαια καὶ τὰ εὖορκα ψηφίσασθε. Ταῦτα τοῦ Σκαπίτιου λέγοντος αἰδῶς εἰσήει τοὺς ὑπάτους ἐνθυμουμένους, ὡς οὔτε δίκαιον οὔτ' εὐπρεπὲς ἢ δίκῃ λήφεται τέλος, ἂν τινα ἀμφισβητουμένην ὑφ' ἑτέρων χώραν δικαστῆς αἰρε- 10 2286 θεῖς ὁ Ῥωμαίων δῆμος μηδέποτε αὐτῆς ἀντιποιησάμενος ἑαυτῷ προσδικάσῃ τοὺς ἀμφισβητοῦντας ἀφελόμενος· καὶ πολλοὶ σφόδρα ἐλέχθησαν εἰς ἀποτροπὴν τοῦ πράγματος ὑπὸ τῶν ὑπάτων καὶ τῶν ἡρουμένων τῆς βουλῆς λόγοι διακενῆς. οἱ γὰρ ἀνεληφότες τὰς 15 ψήφους πολλὴν μωρίαν εἶναι λέγοντες ἑτέρους περιορᾶν τὰ σφέτερα κατέχοντας, καὶ οὐκ εὐσεβὲς ἐξοίσειν τέλος ὑπολαμβάνοντες, ἐὰν Ἀρικηνοῦς ἢ Ἀρδεάτας κυρίου ἀποδείξωσι τῆς ἀμφισβητουμένης γῆς ὁμομοκότες ὧν ἂν εὖρωσιν αὐτὴν οὖσαν τούτων 20 ἐπικρίνειν· τοῖς τε δικαζομένοις ὀργὴν ἔχοντας, ὅτι τοὺς ἀποστερουμένους αὐτῆς δικαστῆς ἠξίωσαν λαβεῖν, ἵνα μηδ' ὕστερον ἐτι σφίσι ἐγγένηται τὴν ἑαυτῶν ἀνακομίσασθαι κτήσιν, ἣν αὐτοὶ μεθ' ὄρκου 2287 δικάσαντες ἑτέρων ἐπέγνωσαν εἶναι. ταῦτα δὲ λογιζόμενοι καὶ ἀγανακτοῦντες τρίτον ἐκέλευσαν τεθῆναι καθίσκον ὑπὲρ τῆς πόλεως Ῥωμαίων καθ' ἐκάστην φυλὴν, εἰς ὃν ἀποθήσονται τὰς ψήφους· καὶ γίνεται πάσαις ταῖς ψήφοις ὁ Ῥωμαίων δῆμος τῆς ἀμφιλόγου χώρας κύριος, ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτων τῶν ὑπάτων ἐπράχθη. 30

ΛΙΙΙ. Μάρκου δὲ Γεννικίου καὶ Γαίου Κορτίου τὴν ἀρχὴν παρεληφότων αἱ πολιτικαὶ πάλιν ἀνι-

στάντο διαφοραί, τῶν δημοτικῶν ἀξιούντων ἅπασιν  
 Ῥωμαίοις ἐξεῖναι τὴν ὑπάτου ἀρχὴν λαμβάνειν· τέως  
 γὰρ οἱ πατριῶκοι μόνοι μετήσαν αὐτὴν ἐν ταῖς λοχί-  
 τισιν ἐκκλησίαις ἀποδεικνύμενοι· νόμον τε συγγρά-  
 5 φαντες ὑπὲρ τῶν ὑπατικῶν ἀρχαιρεσιῶν εἰσέφερον  
 οἱ τότε δημαρχοῦντες ἐκτὸς ἐνὸς Γαίου Φουρουρίου  
 πάντες οἱ λοιποὶ συμφρονήσαντες, ἐν ᾧ τὸν δῆμον 2288  
 ἐποιοῦντο κύριον τῆς διαγνώσεως καθ' ἕνα ἕκαστον  
 ἐνιαυτόν, εἴτε πατριῶκος βούλοιο μετιεῖναι τὴν ὑπα-  
 10 τεῖαν εἴτε δημοτικούς. ἐφ' οἷς ἠγανάκτουσιν οἱ τοῦ  
 βουλευτικῶ μετέχοντες συνεδρίου, καταλυομένην  
 τὴν ἑαυτῶν δυναστείαν ὀρώσας, καὶ πάντα ὑπομέ-  
 νειν ᾤοντο δεῖν πρότερον ἢ τὸν νόμον κύριον εἶσθαι  
 γενέσθαι· ὄργαι τε καὶ κατηγορίαι καὶ ἀντιπράξεις  
 15 ἐγίνοντο συνεχεῖς ἐν ἰδίῳ τε συλλόγοις καὶ κατὰ  
 τὰς κοινὰς συνόδους, ἀπάντων τῶν πατριῶκων πρὸς  
 ἅπαντας ἠλλοτριωμένων τοὺς δημοτικούς. καὶ λόγοι  
 πολλοὶ μὲν ἐν τῷ συνεδρίῳ, πολλοὶ δὲ κατὰ τὰς ἐκ-  
 κλησίας ὑπὸ τῶν προϊσταμένων τῆς ἀριστοκρατίας  
 20 ἐλέχθησαν, ἐπιεικέστεροι μὲν ὑπὸ τῶν οἰομένων  
 ἀγνοῖα τοῦ συμφέροντος ἀμαρτάνειν τοὺς δημοτικούς,  
 τραχύτεροι δ' ὑπὸ τῶν νομιζόντων ἐξ ἐπιβουλῆς καὶ  
 φθόρου τοῦ πρὸς αὐτοὺς τὸ πρᾶγμα συγκείσθαι.

LIII. Ἐλκομένου δὲ τοῦ χρόνου διακενῆς, ἦκου  
 25 εἰς τὴν πόλιν ἀπὸ τῶν συμμάχων ἄγγελοι λέγοντες,  
 ὅτι πολλῇ στρατιᾷ μέλλουσιν ἐλαύνειν ἐπ' αὐτοὺς 2289  
 Αἰκανοὶ τε καὶ Οὐόλοῦσκοι, καὶ δεόμενοι βοήθειαν  
 ἀποστεῖλαι σφίσι διὰ ταχέων ὡς ἐν τρίβῳ τοῦ πολέ-  
 μου κειμένοις. ἐλέγοντο δὲ καὶ Τυρρητῶν οἱ καλού-  
 30 μενοι Οὐιεντανοὶ παρασκευάζεσθαι πρὸς ἀπόστα-  
 σιν, Ἀρδεάται τ' αὐτῶν οὐκέτ' ἦσαν ὑπήκοοι τῆς  
 ἀμφιλόγου χώρας ὄργην ἔχοντες, ἣν ὁ Ῥωμαίων

δῆμος αἰρεθεὶς δικαστῆς αὐτῷ προσεδίκασεν ἐν τῷ  
 παρελθόντι ἐνιαυτῷ. ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα ψη-  
 φίζεται στρατιὰν καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους  
 ἀμφοτέρους ἐξάγειν δυνάμεις. ἀντέπραπτον δὲ τοῖς  
 γνωσθεῖσιν ὑπὸ τῶν ὑπάτων οἱ τὸν νόμον εἰσφέρου- 5  
 τες [ἔχουσι δ' ἐξουσίαν ἐναντιοῦσθαι δῆμαρχοι τοῖς  
 ὑπάτοις] ἀφαιρούμενοί τε τοὺς ἀρομένους ὑπ' αὐτῶν  
 ἐπὶ τὸν στρατιωτικὸν ὄρκον, καὶ τιμωρίαν οὐδεμίαν  
 ἐᾶντες λαμβάνειν παρὰ τῶν ἀπειθούντων. πολλὰ δὲ  
 τῆς βουλῆς ἀξιούσης ἐν μὲν τῷ παρόντι χρόνῳ τὴν 10  
 φιλονεικίαν καταβαλεῖν, ὅταν δὲ τέλος οἱ πόλεμοι  
 λάβωσι, τότε προτιθέσθαι τὸν περὶ τῶν ἀρχαιρεσιῶν  
 νόμον, οἱ δῆμαρχοι τοσούτου ἐδέησαν εἶξαι τοῖς καιροῖς,  
 ᾧστε καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἐναντιώσεσθαι τοῖς δόγ-  
 15 μασι τῆς βουλῆς ἔλεγον, καὶ οὐδὲν εἴσειν δόγμα  
 περὶ οὐδενὸς κυρωθῆναι πράγματος, εἰ μὴ τὸν ὑπ'  
 αὐτῶν εἰσφερόμενον προβουλευσῆ νόμον. καὶ οὐ μὴ-  
 20 τον ἐν τῷ συνεδρίῳ πρὸς τοὺς ὑπάτους ταῦτ' ἀπει-  
 λῆσαι προήχθησαν, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας ὄρκους,  
 οἵπερ εἰσὶ μέγιστοι παρ' αὐτοῖς, κατὰ τῆς ἑαυτῶν  
 πίστεως διωμόσαντο, ἵνα μηδὲν τῶν ἐγνωσμένων  
 αὐτοῖς πεισθεῖσιν ἐξῆ καταλύειν.

LV. Πρὸς δὴ τὰς ἀπειλὰς ταύτας ἐσκόπουσιν ὁ  
 2291 τι χρῆ ποιεῖν οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ κορυφαῖοτατοί  
 τῶν προεστηκότων τῆς ἀριστοκρατίας, συναχθέντες 25  
 εἰς τὸν ἰδιωτικὸν σύλλογον ὑπὸ τῶν ὑπάτων αὐτοὶ  
 καθ' ἑαυτούς. Γάιος μὲν οὖν Κλαύδιος ἦμιστα δημο-  
 τικὸς ὢν καὶ ταύτην διαδεδεγμένος ἐν προγόνων  
 τὴν αἴρεσιν τῆς πολιτείας ἀνθαδεδέτερον γνώμην  
 εἰσέφερε, μήτε ὑπατείας μήτ' ἄλλης ἀρχῆς τῷ δήμῳ 30  
 παραχωρεῖν μηδεμιᾶς· τοὺς δὲ τὰναντία πράττειν  
 ἐπιχειροῦντας ὅπλοις κωλύειν, εἰ μὴ πείθονται

τοῖς λόγοις, φειδῶ μηδεμίαν ποιουμένους μήτ' ἰδιώ-  
του μήτ' ἄρχοντος. ἅπαντας γὰρ τοὺς ἐπιχειροῦντας  
τὰ πάτρια κινεῖν ἔθνη καὶ τὸν κόσμον τοῦ πολιτεύμα-  
τος τὸν ἀρχαῖον διαφθεῖρειν ἀλλοτρίους καὶ πολε-  
5 μίους εἶναι τῆς πόλεως. Τίτος δὲ Κοῖντιος οὐκ εἶα  
τῇ βίᾳ κατείργειν τὸ ἀντίπαλον, οὐδὲ δι' ὄπλων καὶ  
δι' αἵματος ἐμφυλίου χωρεῖν πρὸς τὸ δημοτικόν, ἄλ-  
λων τε καὶ δημάρχου σφίσιν ἐναντιωσομένων, οὓς  
λερούς εἶναι καὶ παναγεῖς ἐψηφίσαντο οἱ πατέρες  
10 ἡμῶν θεοὺς καὶ δαίμονας ἐγγυητὰς ποιησάμενοι τῶν  
ὁμολογιῶν, καὶ τοὺς μεγίστους ὄρκους κατ' ἐξουσίας 2291  
αὐτῶν τε καὶ τῶν ἐγγόνων, ἐάν τι παραβαίνωσι τῶν  
συγκειμένων, κατομοσάμενοι.

LVI. Ταύτη προσθεμένων τῇ γνώμῃ καὶ τῶν  
15 ἄλλων τῶν παρακληθέντων εἰς τὸ συνέδριον, παρα-  
λαβὼν τὸν λόγον ὁ Κλαύδιος· Οὐκ ἄγνωσθ' ἔφη-  
σεν, ἡλικῶν κρηπίς καταβληθήσεται συμφορῶν ἅπα-  
σιν ἡμῖν, ἐάν ἐπιτρέψωμεν τῷ δήμῳ περὶ τοῦ νόμου  
ψῆφον λαβεῖν· οὐκ ἔχων δ' ὅ τι χρὴ ποιεῖν, οὐδὲ  
20 δυνάμενος τοσούτοις οὐσιν μόνος ἀντιλέγειν, εἴκω τοῖς  
βουλευμάσι τοῖς ὑμετέροις. δίκαιον γὰρ, ἀποφαίνε-  
σθαι μὲν ἕκαστον ἃ δοκεῖ τῷ κοινῷ συνοῖσιν, πεί-  
θεσθαι δὲ τοῖς ὑπὸ τῶν πλειόνων κριθεῖσιν. ἐκεῖνο  
μῆνοι παραινεῖν ὑμῖν ὡς ἐν χαλεποῖς καὶ ἀβουλήτοις  
25 πράγμασιν ἔχω, τῆς μὲν ὑπατείας μήτε νῦν μήθ'  
ὑστερον παραχωρεῖν μηδενὶ πλὴν τῶν πατρικίων,  
οἷς μόνοις οὐσίῳ τε καὶ θεμιτόν ἐστι τυγχάνειν· ὅταν  
δ' εἰς ἀνάγκην κατακλεισθῆτε, ὥσπερ νῦν, μεταδι-  
δόναι καὶ τοῖς ἄλλοις πολίταις τῆς μεγίστης ἐξουσίας  
30 τε καὶ ἀρχῆς, χιλιάρχους τε ἀντὶ τῶν ὑπάτων ἀπο- 2293  
δεικνυτε, ἀριθμὸν αὐτῶν ὀρίσαντες ὅσον δή τινα·  
ἐμοὶ μὲν γὰρ ὀκτώ ἢ ἕξ ἀποχορῆν δοκεῖ· ἐν τε τού-

τοῖς τοῖς ἀνδράσι μὴ ἐλάττονας ἀριθμὸν ἔστωσαν οἱ  
πατριῖοι τῶν δημοτικῶν. ταῦτα γὰρ ποιοῦντες οὔτε  
τὴν τῶν ὑπάτων ἀρχὴν εἰς ταπεινοὺς καὶ ἀναξίους  
καταβαλεῖτε, οὔτε δυναστείας ἀδίκους ἑαυτοῖς κατα-  
σχευάξεσθαι δόξετε μηδεμιᾶς ἀρχῆς μεταδιδόντες 5  
τοῖς δημοτικοῖς. Ἐπαινεσάντων δ' ἅπαντων τὴν  
γνώμην καὶ οὐθενὸς τἀναντία λέγοντος· Ἀκούσατ',  
ἔφη, ἃ καὶ τοῖς ὑπάτοις ὑμῖν ἔχω παραινεῖν. ἡμέ-  
ραν προειπόντες, ἐν ἣ τὸ προβούλευμα ἐπικυρώσετε  
καὶ τὰ κριθέντα ὑπὸ τῆς βουλῆς, λόγον ἀπόδοτε τοῖς 10  
ἀπολογουμένοις ὑπὲρ τοῦ νόμου καὶ τοῖς κατηγοροῦσι·  
δηθέντων δὲ τῶν λόγων, ὅταν καθήκη τὰς γνώμας  
ἐρωτᾶν, μήτ' ἀπ' ἐμοῦ ἄρξασθε μήτ' ἀπὸ Κοῖντίου  
1104 τουδὶ μήτ' ἀπ' ἄλλου τῶν πρεσβυτέρων μηδενός,  
ἀλλ' ἀπὸ τοῦ φιλοδημοτάτου τῶν βουλευτῶν Λευκίου 15  
Οὐαλερίου, καὶ μετὰ τοῦτον ἀξιούτε Ὀράτιον εἰ τι  
βούλεται λέγειν. ὅταν δὲ τὰς παρ' ἐκείνου γνώμας  
ἐξετάσητε, τότε τοὺς πρεσβυτέρους ἡμᾶς κελύετε  
λέγειν. ἐγὼ μὲν οὖν τὴν ἐναντιουμένην γνώμην τοῖς  
δημάρχοις ἀποδείξομαι πάσῃ τῇ παρρησίᾳ χρωόμενος· 20  
τουτὶ γὰρ τῷ κοινῷ συμφέρει· τὸ δὲ περὶ τῶν χιλιάρ-  
χων πολίτευμα, εἰ βουλομένοις ἐστίν, εἰσηγείσθω  
Τίτος Γενύκιος οὗτος· προεπωδεδάτη γὰρ ἡ γνώμη  
καὶ ὑποψίαν ἡμῖστα παρεξουσα γένοιτ' ἂν, ἐάν οὗτος  
αὐτὴν ὁ σὸς ἀδελφός, ὃ Μάρκε Γενύκιε, λέγη. 25  
Ἐδόκει καὶ ταῦτα ὀρθῶς ὑποτίθεσθαι, καὶ οἱ μὲν  
ἀπήεσαν ἐκ τοῦ συλλόγου· τοῖς δὲ δημάρχοις θέος  
ἐνέπιπτε πρὸς τὴν ἀπόρρητον τῶν ἀνδρῶν συνου-  
σίαν, ὡς ἐπὶ κακῷ τιμὴ τοῦ δήμου μεγάλῃ γενομένην,  
3096 ἐπειδὴ κατ' οἰκίαν τε συνήδρευσαν, ἀλλ' οὐκ ἐν τῷ 30  
φανερῷ, καὶ οὐδένα τῶν προεστηκότων τοῦ δήμου  
κοινωνὸν τῶν βουλευμάτων παρέλαβον, καὶ μετὰ

τοῦτο συνέδριον αὐτοὶ πάλιν ἐκ τῶν φιλοδημοτάτων συναγαγόντες ἀλεξήματα καὶ φυλακὰς ἀντεμηχανῶντο πρὸς τὰς ἐπιβουλάς, ὥς ἐκ τῶν πατρικίων ἔσεσθαι σφίσι ὑπώπτεον.

5 LVII. Ὡς δὲ καθήκειν ὁ χρόνος, ἐν ᾧ τὸ προ-  
βούλευμα ἔδει γενέσθαι, συγκαλέσαντες οἱ ὑπάτοι  
τὴν βουλὴν καὶ πολλὰς ὑπὲρ ὁμονοίας καὶ εὐκοσμίας  
ποιησάμενοι παρακλήσεις, πρώτους ἀπέδωκαν λέγειν  
τοῖς εἰσηγησαμένοις δημάρχους τὸν νόμον. καὶ παρελ-  
10 θῶν εἰς ἕξ αὐτῶν Γάιος Κανολήμιος περὶ μὲν τοῦ  
δίκαιον ἢ συμφέροντα εἶναι τὸν νόμον οὐτ' ἐδίδα-  
σκεν οὐτ' ἐμέμνητο· θαυμάζειν δ' ἔφη τῶν ὑπάτων,  
ὅτι βεβουλευμένοι τε καὶ κεκοικότες ἤδη κατὰ σφῶς  
αὐτοὺς ἂ δεῖ πράττειν, ὥσπερ ἀδοκίμαστον πρᾶγμα  
15 καὶ βουλῆς δεόμενον εἰς τὸ συνέδριον ἐπεχειρήσαν  
εἰσφέρειν, καὶ λόγον ἀπέδωκαν ὑπὲρ αὐτοῦ τοῖς 2290  
προαιρουμένοις, εἰρωνεῖαν εἰσάγοντες οὔτε ταῖς ἑαυ-  
τῶν ἡλικίαις ἀρμόττουσαν, οὔτε τῷ μεγέθει τῆς ἀρ-  
χῆς προσήκουσαν. πονηρῶν τ' ἀρχῆς ἔφη πολιτευμά-  
20 των αὐτοὺς εἰσάγειν, ἀπόρρητα βουλευτήρια συνά-  
γοντας ἐν ἰδίαις οἰκίαις, καὶ οὐδ' ἅπαντας τοὺς  
βουλευτὰς εἰς ταῦτα παρακαλοῦντας, ἀλλὰ τοὺς σφί-  
σιν αὐτοῖς ἐπιτηδειοτάτους. τῶν μὲν οὖν ἄλλων  
συνέδρων τῶν ἀπελαθέντων τῆς κατοικίδιου βουλῆς  
25 ἦττον ἔφη θαυμάζειν· Μάρκον δὲ Ὀρατίου καὶ Λευ-  
κίου Οὐαλερίου τῶν καταλυσάντων τὴν ὀλιγαρχίαν,  
ὑπατικῶν ἀνδρῶν καὶ οὐδενὸς ἦττον ἐπιτηδείων τὰ  
κοινὰ βουλεύειν, τὴν ἀπαξίωσιν τῆς εἰς τὸ συνέδριον  
παρακλήσεως ἐπεπλήχθαι, καὶ οὐ δύνασθαι συμ-  
30 βάλλειν ἐπὶ τίνι λόγῳ δικαίῳ, εἰκάζειν δὲ μίαν αἰ-  
τίαν, ὅτι πονηρὰς καὶ ἀσυμφόρους γνώμας εἰσηγεῖ-  
σθαι μέλλοντες κατὰ τῶν δημοτικῶν οὐκ ἐβούλοτο

παρακαλεῖν εἰς ταῦτα τὰ συνέδρια τοὺς φιλοδημοτά-  
τους, ἀγανακτήσοντας δηλονότι καὶ οὐ περιορισμένους  
οὐδὲν ἄδικον πολίτευμα κατὰ τοῦ δήμου γινόμενον.

9297 LVIII. Τοιαῦτα τοῦ Κανολήμιου μετὰ πολλοῦ  
σχετλιασμοῦ λέγοντος, καὶ τῶν μὴ παραληφθέντων 5  
εἰς τὸ συνέδριον βουλευτῶν πρὸς ὄργην δεξαμένων  
τὸ πρᾶγμα, παρελθὼν ἄτερος τῶν ὑπάτων Γενύμιος  
ἀπολογεῖσθαι καὶ πρᾶναι τὰς ὀργὰς αὐτῶν ἐπει-  
ρᾶτο, διδάσκων, ὅτι τοὺς μὲν φίλους παραλάβοιεν,  
οὐχ ἵνα τι κατὰ τοῦ δήμου διαπράξαιτο, ἀλλ' ἵνα 10  
μετὰ τῶν ἀναγκαιοτάτων βουλευσάιντο, τί πράττου-  
τες οὐδ' ὀποτέραν δόξουσιν ἐλαττοῦν τῶν αἰρέσεων,  
πότερον ταχεῖαν ἀποδιδόντες τῇ βουλῇ περὶ τοῦ νό-  
μου διάγνωσιν, ἢ χρονιωτέραν. Ὀρατίον δὲ καὶ Οὐα-  
λέριον οὐκ ἄλλης τινὸς χάριν αἰτίας μὴ παραλαβεῖν 15  
εἰς τὸ συνέδριον, ἀλλ' ἵνα μὴ τις ὑποψία περὶ αὐ-  
τῶν παρ' ἀξίαν ἢ τοῖς δημοτικοῖς, ὥς μεταβεβλημέ-  
νων τὴν προαίρεσιν τῆς πολιτείας, ἐὰν ἄρα ἐπὶ τῆς  
ἑτέρας γένωνται γνώμης, τῆς ἀξιούσης ἀναβαλέσθαι  
τὴν ὑπὲρ τοῦ νόμου διάγνωσιν εἰς ἕτερον καιρὸν ἐπι- 20  
9298 τηδειότερον. ἐπειδὴ δ' ἅπασιν τοῖς παραληφθεῖσιν ἢ  
συντομωτέρα διάγνωσις ἀμείνων ἔδοξεν εἶναι τῆς  
βραδυτέρας, πράττειν ὥς ἐκείνοις ἐφάνη. Ταῦτ'  
εἰπὼν καὶ θεοὺς ἐπομοσάμενος ἢ μὴν τάληθ' ἔλεγεν  
καὶ τοὺς παρακληθέντας ἐκ τῶν βουλευτῶν, ἔφη, 25  
πᾶσαν ἀπολύσεσθαι διαβολήν, οὐ λόγοις, ἀλλ' ἔργοις.  
ὅταν γὰρ οἱ βουλόμενοι κατηγορεῖν καὶ ἀπολογεῖσθαι  
παρὶ τοῦ νόμου διεξέλθωσι τὰ δίκαια, πρώτους ἐπὶ  
τὴν ἐρώτησιν τῆς γνώμης κατέγειν οὐχὶ τοὺς πρεσβυ-  
τάτους καὶ τιμωτάτους τῶν βουλευτῶν, οἷς ἐκ τῶν 30  
πατριῶν ἐθισμῶν καὶ τοῦτ' ἀποδεδόσθαι τὸ γέρας,  
οὐδὲ τοὺς δι' ὑποψίας ὄντας παρὰ τοῖς δημοτικοῖς,

ὡς οὐδὲν ὑπὲρ αὐτῶν χρηστὸν οὔτε λέγοντας οὔτε 2299  
φρονούντας, ἀλλ' ἐκ τῶν νεωτέρων τοὺς δοκοῦντας  
εἶναι φιλοδημοτάτους.

LVIII. Ὑποσχόμενος δὲ ταῦτα καὶ δούς ἐξου-  
5 σίαν τοῖς βουλομένοις λέγειν, ἐπειδὴ οὔτε κατηγο-  
ρήσων οὔτ' ἀπολογησόμενος οὐδεὶς ὑπὲρ τοῦ νόμου  
παρήει, παρελθὼν αὐτῶν ἐρωτᾷ πρῶτον Οὐαλέριον,  
τί τῷ κοινῷ συμφέροι, καὶ τί προβουλεύσαι τοῖς συν-  
έδοις παραινεῖ. ὁ δ' ἀναστὰς καὶ πολλοὺς διεξε-  
10 θῶν ὑπὲρ αὐτοῦ τε καὶ τῶν προγόνων λόγους, ὡς  
ἐπὶ τῷ συμφέροντι τῆς πόλεως τοῦ δημοτικοῦ μέρους  
προϊσταμένον, καὶ καταριθμησάμενος ἅπαντας ἐξ  
ἀρχῆς τοὺς κατασχόντας τὴν πόλιν κινδύνους ἐκ τῶν  
τᾶναντία πολιτευομένων, τοῖς τ' ἀπεχθῶς ἐσχηκόσι  
15 πρὸς τὸ δημοτικὸν ἅπασιν ἀλυσιτελεῆς γενόμενον ἀπο-  
δείξας τὸ μισόδημον, ἐπαίνοους τε πολλοὺς περὶ τοῦ  
δήμου ποιησάμενος, ὡς αἰτιωτάτου τῇ πόλει γερονό-  
τος οὐ μόνου τῆς ἐλευθερίας, ἀλλὰ καὶ τῆς ἡγεμο-  
νίας. ἐπεὶ ταῦτα καὶ παραπλήσια τούτοις διεξῆλθε, 2300  
20 τελευτῶν ἔφη μὴ δύνασθαι πόλιν ἐλευθέραν εἶναι,  
ἐξ ἧς ἂν τις τὴν ἰσότητ' ἀνέλη· ἔφη τε δοκεῖν ἑαυτῷ  
τὸν μὲν νόμον δίκαιον εἶναι, τὸν ἀξιοῦντα πᾶσι με-  
τεῖναι Ῥωμαίοις τῆς ὑπατικῆς ἀρχῆς, τοῖς γε δὴ βίου  
ἀνεπλήρητον ἐσχηκόσι καὶ πράξεις ἀποδεδειγμένοις  
25 τῆς τιμῆς ταύτης ἀξίας, τὸν δὲ καιρὸν οὐκ ἐπιτή-  
δειον εἰς τὴν ὑπὲρ αὐτοῦ διάγνωσιν ἐν πολεμικαῖς  
ὑπαρχούσης ταραχαῖς τῆς πόλεως· συνεβούλευέ τε  
τοῖς μὲν δημάρχοις εἶναι τὴν καταγραφὴν γενέσθαι  
τῶν στρατιωτῶν καὶ τὴν ἔξοδον μὴ κωλύειν τῶν κα-  
30 ταγραφέντων, τοῖς δ' ὑπάτοις, ὅταν τὸ κράτιστον  
τέλος ἐπιθῶσι τῷ πολέμῳ, πρῶτον ἀπάντων τὸ περὶ  
τοῦ νόμου προβούλευμα εἰς τὸν δῆμον ἐξενεργεῖν.

ταῦτα δὲ γραφῆναί τ' ἤδη καὶ διομολογηθῆναι πρὸς  
ἀμφοτέρων. Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Οὐα-  
λερίου, καὶ μετὰ τούτου Ὀρατίου· δευτέρῳ γὰρ  
τούτῳ λόγον ἀπέδωκεν οἱ ὑπατοὶ ταῦτό πάθος  
ἅπασιν τοῖς παρούσι συνέβη. οἱ μὲν γὰρ ἀνελεῖν τὸν 5  
νόμον βουλομένοι τὴν ἀναβολὴν τῆς περὶ αὐτοῦ  
διαγνώσεως ἀγαπητῶς ἀκούσαντες, τὸ μετὰ τὸν πό-  
λεμον ἐπάνεργες εἶναι σφίσι προβουλεύσαι περὶ αὐ-  
τοῦ χαλεπῶς ἀπέδεξαντο· οἱ δὲ κύριον ὑπὸ τοῦ  
συνεδρίου κριθῆναι προαιρούμενοι, τὸ μὲν ὡμολο- 10  
γημένον δίκαιον εἶναι τὸν νόμον ἀσμένως ἤκουον,  
τὸ δ' εἰς ἑτέρους ἐκπίπτειν χρόνους τὸ προβούλευμα  
πρὸς ὀργὴν ἐλάμβανον.

LX. Θεορύβου δέ, ὅπερ εἰκός, ἐπὶ τῇ γνώμῃ  
γενομένου διὰ τὸ μὴ πᾶσι τοῖς μέρεσιν αὐτῆς εὐα- 15  
2302 ρεστεῖν ἀμφοτέρους, παρελθὼν ὁ ὑπάτος τρίτον  
ἠρώτα Γάιον Κλαύδιον, ὃς ἔδοκει τῶν προεστηκότων  
τῆς ἐτέρας τάξεως τῆς ἐναντιουμένης τοῖς δημοτι-  
κοῖς ἀνταδέστωτος εἶναι καὶ δυνατώτατος. οὗτος  
ἐκ παρασκευῆς διεξῆλθε λόγον κατὰ τῶν δημοτικῶν, 20  
πάνθ' ὅσα ἔδοξε πῶποτε ἐναντία τοῖς κалоῖς καὶ  
πατρίοις ἐθίσμοις ὑπομιμνήσκων, οὐ κεφάλαιον ἦν,  
εἰς ὃ κατέσκηπτεν ἡ γνώμη, μηδεμίαν ἀποδιδόναι  
τῇ βουλῇ διάγνωσιν ὑπὲρ τοῦ νόμου τοὺς ὑπάτους,  
μήτ' ἐν τῷ παρόντι χρόνῳ μήτ' ὕστερον, ὡς ἐπὶ 25  
καταλύσει τῆς ἀριστοκρατίας εἰσφερομένου καὶ συγ-  
χεῖν μέλλοντος ἅπαντα τὸν κόσμον τῆς πολιτείας.  
γενομένου δὲ πρὸς τὴν γνώμην ἔτι πλείονος Θεορύβου,  
τέταρτος ἀνίσταται κληθεὶς Τίτος Γενύκιος, ἀδελφὸς  
θατέρου τῶν ὑπᾶτων· ὃς ὀλίγα διαλεχθεὶς ὑπὲρ τῶν 30  
κατεχόντων καιρῶν τὴν πόλιν, ὅτι δεῖν ἀνάγκη  
τῶν χαλεπωτάτων θάτερον αὐτῇ συμπεσεῖν, ἢ διὰ

τὰς πολιτικὰς ἔριδας καὶ φιλοτιμίας ἰσχυρὰ τὰ τῶν  
 ἐχθρῶν ποιῆσαι πράγματα, ἢ τοὺς ἕξωθεν ἐπιφερο- 2300  
 μένους ἀποτρέψασθαι βουλομένη κακῶς τὸν οἰκείον  
 καὶ πολιτικὸν διαλύσασθαι πόλεμον ἔφησε, δεῖν  
 5 ὄντων κακῶν, ὧν ἀνάγκη θάτερον ἄκοντας ὑπομεί-  
 ναι, τοῦτ' αὐτῷ δοκεῖν εἶναι λυσιτελέστερον, τὸ  
 συγχωρῆσαι τῷ δήμῳ τὴν βουλήν παρασπᾶσαι τι τοῦ  
 κόσμου τῆς πατρίου πολιτείας μᾶλλον, ἢ τοῖς ἄλλοφύ-  
 λοις τε καὶ πολεμίοις καταγέλαστον ποιῆσαι τὴν πόλιν.  
 10 Ταῦτ' εἰπὼν τὴν δοκιμασθεῖσαν ὑπὸ τῶν παραγε-  
 νηθέντων ἐν τῷ κατ' οἰκίαν συνεδρίῳ γνώμην εἰσέ-  
 φερεν, ἣν εἰσηγήσατο Κλαύδιος, ὥσπερ ἔφην, ἀντὶ  
 τῶν ὑπᾶτων χιλιάρχους ἀποδειχθῆναι, τρεῖς μὲν ἐκ  
 τῶν πατρικίων, τρεῖς δ' ἐκ τῶν δημοτικῶν, ἕξουσίαν  
 15 ἔχοντας ὑπατικὴν ὅταν δὲ τελῶσιν οὗτοι τὴν ἀρχὴν  
 καὶ καθήκη νέας ἀρχὰς ἀποδείκνυσθαι, τὴν βουλήν  
 καὶ τὸν δῆμον αὐθις συνελθόντας διαγνώναι, πότε-  
 ρον ὑπάτους ἢ χιλιάρχους βούλονται παραλαβεῖν  
 τὴν ἀρχήν. ὅ τι δ' ἂν ἅπασι δόξη ψῆφον ἐπευέγκασι,  
 20 τοῦτ' εἶναι κύριον. ἐπιτελεῖσθαι δὲ τὸ προβούλευμα  
 καθ' ἕκαστον ἐνιαυτόν.

LXI. Ταύτην ἀποδειξαμένου τὴν γνώμην Γε- 2304  
 νυκίου πολὺς ἐξ ἁπάντων ἔπαινος ἐγένετο· καὶ οἱ  
 μετ' ἐκείνου ἀνιστάμενοι μικροῦ δεῖν πάντες ταῦτα  
 25 συνεχώρουν κράτιστα εἶναι. γράφεται δὴ τὸ προ-  
 βούλευμα ὑπὸ τῶν ὑπᾶτων, καὶ λαβόντες αὐτὸ μετὰ  
 πολλῆς χαρᾶς οἱ δήμαρχοι προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν.  
 ἔπειτα καλέσαντες τὸ πλῆθος εἰς τὴν ἐκκλησίαν,  
 πολλοὺς διέθεντο τῆς βουλῆς ἐπαίνους, καὶ παραγ-  
 30 γέλλειν τὴν ἀρχὴν ἐκέλευον τοῖς ἐθέλουσι τῶν δημο-  
 τικῶν ἅμα τοῖς πατρικίοις. οὕτω δ' ἄρα κοῦφόν τι  
 πράγμα ἐστὶν ἐπιθυμία δίχα λόγου γινωμένη καὶ

ταχὺ μεταπίπτου ἐπὶ θάτερον μέρος, μάλιστα δὲ ἢ  
 τῶν ὄχλων, ὥσθ' οἱ περὶ παυτὸς ποιούμενοι τέως  
 τῆς ἀρχῆς μεταλαβεῖν, καὶ εἰ μὴ δοθείη τοῦτ' αὐτοῖς  
 ὑπὸ τῶν πατρικίων ἢ καταλείψοντες τὴν πόλιν ὡς  
 πρότερον, ἢ διὰ τῶν ὄπλων αὐτὸ ληφόμενοι, ἐπειδὴ 5  
 τὸ συγχώρημα ἔλαβον, ἀπέστησαν εὐθύς τῆς ἐπιθυ-  
 μίας καὶ τὰς σπουδὰς ἐπὶ θάτερον μετέβαλον. πολ-  
 10 ῶν γέ τοι δημοτικῶν παραγγελλόντων τὴν χιλιαρ-  
 χίαν καὶ κατεσπουδασμένας ποιουμένων τὰς δεήσεις,  
 οὐδένα τῆς τιμῆς ταύτης ἄξιον εἶναι ὑπέλαβον· ἀλλὰ 10  
 γενόμενοι τῆς ψήφου κύριοι τοὺς ἐκ τῶν πατρικίων  
 μετιόντας αὐτὴν ἄνδρας ἐπιφανεῖς χιλιάρχους ἀποδει-  
 κνύουσιν, Αὔλιον Σεμπρόνιον Ἀτρατῖνον, καὶ Λεύ-  
 κιον Ἀτίλιον Λαῦσκον καὶ Τίτον Κλύλιον Σικελόν.  
 LXII. Οὗτοι παραλαμβάνουσι πρῶτοι τὴν ἀνθ- 15  
 ὑπάτου ἀρχὴν κατὰ τὸν τρίτον ἐνιαυτὸν τῆς ὀγδοη-  
 κοστῆς καὶ τετάρτης Ὀλυμπιάδος, ἄρχοντος Ἀθήνησι  
 Διφίλου. κατασχόντες δ' αὐτὴν ἑβδομήκοντα καὶ  
 τρεῖς μόνον ἡμέρας ἀποτίθενται κατὰ τὸν ἀρχαῖον  
 ἐθισμόν ἐκούσιοι, θεοπέπτων τιμῶν σημείων κωλυ- 20  
 τηρίων αὐτοῖς τοῦ πράττειν τὰ κοινὰ γεινομένου.  
 τούτων δὲ τὴν ἕξουσίαν ἀπειπαμένων, ἢ βουλή συν-  
 ελθοῦσα μεσοβασιλεῖς ἀποδείκνυσι. καὶ ἐκεῖνοι  
 25 προσιπόντες ἀρχαιρέσια καὶ τῷ δήμῳ τὴν διάγνωσιν  
 ἀποδεδόντες, εἴτε βούλεται χιλιάρχους εἴτε ὑπάτους 25  
 ἀποδείξαι, κρίναντος αὐτοῦ μένει ἐπὶ τοῖς ἐξ ἀρχῆς  
 ἐθισμοῖς, ἀπέδοσαν τοῖς βουλομένοις τῶν πατρικίων  
 μετιέναι τὴν ὑπάτου ἀρχὴν· καὶ γίνονται πάλιν ἐκ  
 τῶν πατρικίων ὑπάτοι Λεύκιος Παπίριος Μοριλλά-  
 νος καὶ Λεύκιος Σεμπρόνιος Ἀτρατῖνος, ἐνὸς τῶν 30  
 ἀποθεμένων τὴν χιλιαρχίαν ἀδελφός. αὐτὰι δύο  
 κατὰ τὸν αὐτὸν ἐνιαυτὸν ἀρχαὶ Ρωμαίων αἱ τὸ μέ-



γιστου ἔχουσαι κράτος ἐγένοντο. πλὴν οὐκ ἐν ἀπά-  
 σαις ταῖς Ῥωμαϊαῖς χρονογραφίαις ἀμφοτέραι φέρον-  
 ται, ἀλλ' ἐν αἷς μὲν οἱ χιλίαρχοι μόνον, ἐν αἷς δ'  
 οἱ ὑπατοί, ἐν οὐ πολλαῖς δ' ἀμφοτέρω, αἷς ἡμεῖς  
 5 οὐκ ἄνευ λογισμοῦ συγκατατιθέμεθα, πιστεύοντες  
 δὲ ταῖς ἐκ τῶν ἱερῶν τε καὶ ἀποθέτων βίβλων μαρ-  
 τυρίαις. ἄλλο μὲν οὖν οὐδὲν ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς οὔτε 2307  
 πολεμικὸν οὔτε πολιτικὸν ἔργον ἱστορίας ἄξιον ἐπράχθη,  
 συνθῆκαι δὲ πρὸς τὴν Ἀρδεατῶν πόλιν ἐγένοντο περὶ  
 10 φιλίας τε καὶ συμμαχίας· ἐπροσβαύσαντο γὰρ ἀποτιθέ-  
 μενοι τὰ περὶ τῆς χώρας ἐγκλήματα, παρακαλοῦντες  
 φίλοι Ῥωμαίων γενέσθαι καὶ σύμμαχοι. ταύτας τὰς  
 συνθήκας τὸ τῶν ὑπάτων ἀρχεῖον ἐπεκύρωσε.

LXIII. Τῷ δ' ἐξῆς ἐνιαυτῷ πάλιν ὑπάτους ψη-  
 15 φισαμένου τοῦ δήμου κατασταθῆναι, παραλαμβά-  
 νουσι τὴν ὑπατον ἀρχὴν τῇ διχομήνιδι τοῦ Δεκεμ-  
 βρίου μηνὸς Μάρκος Γεράνιος Μακερόνιος τὸ δεύ-  
 τερον καὶ Τίτος Κοίντιος Καπετωλίνος τὸ πέμπτον.  
 οὗτοι διδάξαντες τὴν βουλήν, ὅτι πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα  
 20 πράγματα διὰ τὰς συνεχεῖς τῶν ὑπάτων στρατείας  
 ἡμελημένα παρῆται, πάντων δ' ἀναγκαϊότατον τὸ  
 περὶ τὰς τιμῆσεις τῶν βίων νόμιμον, ἐξ ὧν ὁ τ' ἀρι- 2308  
 θμὸς τῶν ἐχόντων τὴν στρατεύσιμον ἡλικίαν ἐγινώ-  
 σκετο καὶ τῶν χρημάτων τὸ πλῆθος, ἀφ' ὧν ἔδει τὰς  
 25 εἰς τὸν πόλεμον εἰσφορὰς ἕκαστον τελεῖν, οὐδεμιᾶς  
 τιμῆσεως ἐντὸς ἑπτακαίδεκα ἐτῶν γενομένης ἀπὸ τῆς  
 Λευκίου Κορηλίου καὶ Κοίντου Φαβίου [ὑπατείας  
 ὥστε] \*\*\* καταλιπεῖν οἱ πονηρότατοί τε καὶ ἀσελ-  
 γέστατοι Ῥωμαίων, ἀλλὰ τόπον μεταλαμβάνειν, ἐν ᾧ  
 30 περίεστι ζῆν αὐτοῖς, ὡς προήρηται.

## EXCERPTA

EX

LIBRO XII.

I. Ὅτι λιμοῦ κατὰ τὴν Ῥώμην γενομένου Ἰσχυ-  
 ροῦ ἀνὴρ τις οἴκου τε οὐκ ἀφανοῦς καὶ χρήμασιν ἐν  
 τοῖς μάλιστα δυνατός, Σπόριος Μαίλιος Εὐδαίμων  
 ἐπίκλησιν ἐπὶ τῆς πολλῆς εὐπορίας, νεωστὶ μὲν παρ-  
 ειληφῶς τὸν οἶκον τοῦ πατρός, ἡλικίαν δὲ καὶ 5  
 τάξιν ἔχων ἱππικὴν, οἷα μῆτε ἀρχὰς παραλαμβάνειν  
 μῆτε ἄλλην κοινὴν ἐπιμέλειαν μηδεμίαν, λαμπρὸς εἰ  
 καὶ τις ἄλλος τὰ πολέμια καὶ πολλοῖς κεκοσμημένος  
 ἀριστεύεις, κράτιστον ὑπολαβὼν καιρὸν ἐπιθίσει  
 τυραννίδος, ἐπὶ δημαγωγίᾳ τοῦ πλήθους ἐτραπέτο, 10  
 τὴν θάστην τῶν ἐπὶ τυραννίδα φερούσων ὁδῶν.  
 ἔχων δὲ πολλοὺς ἐταίρους καὶ πελάτας, ἄλλους ἄλλη  
 διέπεμψε χρήματα δοῦς ἐκ τῶν ἰδίων εἰς συναγγο-  
 μούς τροφῆς, καὶ αὐτὸς εἰς Τυρρηνίαν ἦχeto. ἐν  
 βραχεῖ δὲ χρόνῳ δι' ἑαυτοῦ τε καὶ τῶν ἐταίρων πολ- 15  
 λὴν κατακομίσας ἀγορὰν διεμέτρει τοῖς πολίταις,  
 ἀντὶ δώδεκα δραχμῶν διδράχμιον ἀπομετρῶν τὸν  
 μῶδιον ὅσους δὲ αἰσθοῖτο παντάπασιν ἀδυνάτους  
 καὶ μὴδ' ὑπὲρ τῆς ἐφημέρου τροφῆς ἔχοντας προέσθαι  
 τὸ διάφορον ἄνευ τιμῆς χαριζόμενος. ταύτη τῇ φιλ- 20

ανθρωπία τὸν δῆμον ἀναλαβὼν καὶ θαυμαστὴν ὄσῃν δόξαν ἀπενεγκάμενος, ἔρχετο πάλιν ἐμπορευόμενος ἑτέρας ἀγορὰς· καὶ παρῆν οὐ διὰ μακροῦ ποταμηγούς ἄγων σκάφας πολλὰς πάνυ μεστὰς τροφῆς, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον τοῖς πολίταις ἐμέτρει. οἱ δὲ πατριῖοι ταῦτα πράττοντα ὁρῶντες αὐτὸν ὑποψίας τε ἐλάμβανον τῆς ἄγαν φιλοτιμίας τοῦ ἀνδρός οὐδενὸς ἀγαθοῦ ἀπολαύσειν οἴομενοι, καὶ συνιστάμενοι κατὰ τὴν ἀγορὰν ἐσκόπουον ὅτινα χρῆ 5  
 10 τρόπον εὐπρεπέστερον ἀνευ κινδύνου παῦσαι τούτων αὐτὸν τῶν πολιτευμάτων· κρύφα μὲν τὸ πρῶτον καὶ κατ' ὀλίγους συνιόντες καὶ διαλεγόμενοι πρὸς ἀλλήλους, ἔπειτα καὶ ἐκ τοῦ φανεροῦ καταβοῶντες, ἐπειδὴ βαρῆς τε καὶ ἀφόρητος ἦν ἔργα τε πράττων ὑπερηφανίας μεστὰ καὶ λόγους διεξιῶν ἀνθάδεις ὑπὲρ 15  
 ἑαυτοῦ· ὃς γε πρῶτον μὲν καθεζόμενος ἐπὶ βήματος περιφανούς, ὥσπερ ἔθος ἦν τοῖς τὰς ἀρχὰς ἔχουσιν, ἐχρημάτιζε τοῖς προσιοῦσι δι' ἡμέρας περὶ τὴν σιτοδοσίαν, ἐμβαλὼν τῆς τιμῆς ταύτης τὸν ἀποδειχθέντα 20  
 ἔπαρχον ὑπὸ τῆς βουλῆς· ἔπειτα συνεχεῖς ποιούμενος ἐκκλησίας, οὐκ ὄν ἐν ἔθει Ῥωμαίοις ἰδιώτην ἐκκλησίαν συνάγειν, πολλὰ μὲν τοῦ Μηνυκίου κατηγορεῖ πρὸς τὸν δῆμον, ὡς ὄνομα φέροντος ἀρχῆς μόνου, ἔργον δὲ οὐδὲν ἀποδειξαμένου τοῖς πένησιν ὠφελίμου, 25  
 πολλὰ δὲ τοὺς πατρικίους διεβάλλε πρὸς τὸν δῆμον, ὡς ταῦτα πράττοντας ἐξ ὧν ὀλίγος τε καὶ οὐδενὸς ἄξιος ὁ δῆμος ἔσται καὶ οὐδ' ἐπὶ σιτοδείᾳ φροντίδα τῶν ἀπόρων ἔχοντας οὐδεμίαν, οὔτε κοινῇ πάντας οὔτε ἰδίᾳ τοὺς δυνατοὺς, παντὸς μάλιστα 30  
 δέον αὐτοὺς χορημασί τε καὶ σώμασιν ὥσπερ αὐτὸς δὴ κακοπαθεῖν καὶ πάντοθεν ἐπεισάγειν τῇ πόλει τὰς ἀγορὰς. ἡξίου τε πρὸς τὰ τῶν ἄλλων ἔργα πατρι-

κίων τὰ ὑφ' ἑαυτοῦ πραττόμενα ἐξετάζειν, ὡς πολὺ καὶ τὸ πᾶν ἀλλήλων διαφέροντα. ἐκείνους μὲν γὰρ οὐδὲν ἐκ τῶν ἰδίων εἰς τὸ κοινὸν ἀναλίσκοντας ἔτι καὶ τὴν δημοσίαν γῆν σφετερισαμένους πολὺν ἤδη καρπούσθαι χρόνον, ἑαυτὸν δὲ τῶν δημοσίων οὐδὲν 5  
 ἔχοντα ἔτι καὶ τὴν πατρῴαν καταχορηγεῖν οὐσίαν εἰς βοήθειαν τῶν ἀπόρων καὶ, ἐπειδὴ τὰ ὄντα καταναλώσῃ, δανείσματα ποιείσθαι παρὰ φίλων οὐδὲν ἀντικαταλλαττόμενον τῆς τοιαύτης φιλοτιμίας ὅτι μὴ τὴν πολιτικὴν εὐνοίαν, ἧς οὐδὲ τὸν ἐξάνθρωπον 10  
 πλοῦτον ἠρεῖσθαι τιμιώτερον. οἱ δὲ περὶ αὐτὸν συνεστῶτες ἀεὶ σιωτῆρα καὶ πατέρα καὶ κτίστην ἀπεκάλου τῆς πατρίδος, καὶ τὴν μὲν ὑπατικὴν ἔξουσίαν ἐλάττονα χάριν ἢ κατὰ τὸ μέγεθος τῶν ἔργων αὐτοῦ γενήσεσθαι δοθῆναι ἀπέφαινον, ἄλλη δέ τιμ 15  
 μείζουσι καὶ λαμπροτέρα τιμῇ κοσμεῖν ἡξίου αὐτόν, ἦν καὶ γένος ἔξει τὸ ἐξ ἐκείνου. ὡς δὲ καὶ τὴν τρίτην ἔξοδον ποιησάμενος ἐπὶ τὰ παραθαλάττια τῆς Ἰταλίας, ἐκ τε Κύμης καὶ τῶν περὶ Μισσηνὸν λιμένων σιτηγούς ὀλκάδας ἄγων πολλὰς κατέπλευσεν εἰς 20  
 Ῥωσίαν, ὃ τῆς Ῥώμης ἐστὶν ἐπίνειον, καὶ κατέκλυσε ταῖς τροφαῖς τὴν πόλιν, ὡς μηδὲν ἔτι τῆς ἀρχαίας εὐετηρίας διαφέρειν, ἅπας ὁ δῆμος ἔτοιμος ἦν, εἰ γένοιτο τῆς ψήφου κύριος ἐν ἀρχαιροσείας, εἴτε ὑπατεῖαν εἴτε ἄλλην τινα τιμὴν μετίοι, μηδενὸς 25  
 ἐπιστρεφόμενος μήτε νόμου κωλύοντος μητ' ἀνδρὸς ἐναντιουμένου χαρίζεσθαι. ταῦτα ὁρῶντες οἱ προσσηκότες τῆς ἀριστοκρατίας καὶ οὔτε ἐπιτρέπειν ἄξιοντες οὔτε κωλύειν δύναμιν ἔχοντες ἐν πολλῇ πάντες ἦσαν ἀθυμίᾳ· καὶ ἔτι μᾶλλον διεταράχθησαν, ἐπειδὴ 30  
 κωλύοντων ἐκκλησίας συνάγειν αὐτὸν καὶ δημηγορεῖν τῶν τε δημάρχων καὶ ὑπάτων, συστραφεῖς

ὁ δῆμος ἐκείνους μὲν ἐξέβαλεν ἐκ τῆς ἀγορᾶς, τῷ δὲ Μαίλιῳ πολλὴν ἄδειαν καὶ ῥώμην παρέσχευ. ἐν ταύτῃ δὲ καταστάσει τῆς πόλεως ὑπαρχούσης, ὁ τῆς ἀγορᾶς ἀποδειχθεὶς ἐπαρχος, ἀχθόμενος μὲν ἐπὶ τοῖς προσηλακισμοῖς τῶν λόγων, οἷς αὐτὸν ὑβρίζων ὁ Μαίλιος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις διετέλει, δεδοικῶς δὲ τὸν ἄνδρα μάλιστα τῶν ἄλλων, εἴ τινος ἐπιλάβοιτο ἀρχῆς, μὴ πρότερον τῆς ἀριστοκρατίας αὐτὸν ποιήσεται, ἢ τὸν δῆμον ἐξερεθίσας πρὸς αὐτὸν ποιήσεται 10 διὰ τὴν ἐκ τῆς εταιρείας ἐπιβουλήν τινα κατ' αὐτοῦ μηχανησάμενος, ἀγανακτῶν τε δι' ἀμφοτέρω ταῦτα καὶ ἀπηλλάχθαι προθυμούμενος ἐκείνου μίζονα ἢ κατ' ἰδιώτην ἰσχὺν ἔχοντος, ἐπιμελῆ ζήτησιν ἐποιεῖτο τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεγομένων τε καὶ πραττομένων 15 νων. πολλῶν δὲ οὕτων οἷς ὁ ἀνὴρ συνεργοῖς ἐχρήτο τῶν ἀπορητῶν, καὶ οὔτε τὰς φύσεις ὁμοίων οὔτε τὰς γνώμας παραπλησίων, ἔμελλέ τις ὅπερ εἰκὸς οὐ βεβαίως αὐτῷ ἔσεσθαι φίλος, ἢ διὰ φόβον ἢ διὰ κέρδος ἴδιον· ᾧ τὰ πιστὰ δοῦς ὁ Μηνύκιος ὑπὲρ τοῦ μηδεὶν φράσειν ὅστις ἦν, ἄπασαν ἔγνω τὴν τε διανοίαν τοῦ Μαίλιου καὶ τὴν παρασκευήν. ὡς δὲ καὶ τεκμήριον ἔλαβεν ἀναμφίλεκτον καὶ τὴν πράξιν ἐν χερσὶν οὔσαν ἔγνω, λέγει πρὸς τοὺς ὑπάτους· ἐκείνοι δ' οὐκ ἀξιούντες ἐφ' ἑαυτοῖς ποιῆσαι μόνοις ἐπιχειρήσεως τηλικαύτης ἐξέτασιν εἰς τὴν βουλήν φροντοδεῖν τὸ πρᾶγμα εἰσφέρειν, καὶ συνεκάλουν τὸ συνέδριον εὐθύς ὡς περὶ πολέμου δὴ τινος ὑπεροχίου βουλευσόμενοι. πληρωθέντος δὲ τοῦ συνεδρίου διὰ ταχέων, παρελθὼν ἄτερος αὐτῶν ἔλεξεν, ὅτι πράξις 25 αὐτοῖς μεμῆνυται συσκευαζομένη κατὰ τῆς πόλεως πολλῆς πᾶνυ καὶ ταχείας φυλακῆς δεομένη διὰ τὸ τοῦ κινδύνου μέγεθος· ταύτης δ' ἔφη μηνυτὴν οὐ

τῶν ἐπιτυχόντων εἶναι τινα πολιτῶν, ἀλλ' ὃν αὐτοὶ δι' ἀρετὴν ἐπὶ τῆς μεγίστης τε καὶ ἀναγκαιοτάτης τῷ κοινῷ χρείας ἔταξαν, δοκιμάσαντες αὐτοῦ τὴν τε πίστιν καὶ τὴν πρὸς τὰ κοινὰ φιλοτιμίαν ἐκ τῶν παρὰ πάντα τὸν βίον ἐπιτηδευομένων. μετεώρου δὲ τῆς βουλῆς ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ γενομένης ἐκάλει τὸν Μηνύκιον, κάκεινος ἔλεξεν· [ζητεῖ ἐν τῷ περὶ δημηγοριῶν] Esc.

II. Ὡς δ' ἐμηνύθη τῇ βουλῇ, δικτάτορα προχειρίζονται, ὁ δὲ τὸν ἱππάρχην \*\*\* ἐκέλευσεν ἔχοντι 10 τοὺς ἱππεῖς ἦκειν ὡς αὐτὸν περὶ μέσας νύκτας, τοῖς δὲ βουλευταῖς εἰς τὸ Καπιτώλιον ἔωθεν ἔτι συλλεγεσθαι, τῷ δὲ Μηνυκίῳ τὸν τε μηνυτὴν ἄγοντι καὶ τὰς ἄλλας ἀποδείξεις κομίζοντι πρὸς τὸ βῆμα παρῆναι, ἅπασι δὲ φυλάττειν ἀπόρητα πρὸς τοὺς ἔξω 15 τοῦ συνεδρίου τὰ βουλευμάτα· μίαν εἶναι λέγων ἀσφάλειαν, εἰ μηδὲν ὁ Μήλιος ἀκούσειε τῶν περὶ αὐτοῦ λεγομένων τε καὶ πραττομένων. διατάξας δὲ τὰλλα ὅσων ἔδειτο, μέχρι δύσεως ἡλίου πάντας ἐν τῷ βουλευτηρίῳ κατασχών, σκότους οὕτως ἤδη διέλυσε τὸν σύλλογον· ὡς δὲ μέση νὰξ γένετο προσελθὼν 20 ἐκ τῆς οἴκτας . . . ἐξῆει περὶ τὸν ὄρθρον τοὺς ἐπιλέκτους ὑπ' ἀμφοτέρων τῶν ὑπάτων ἐπαγόμενος καὶ αὐτοὺς τοὺς ὑπάτους. οὗτοι μὲν οὖν τὸ Καπιτώλιον ἅμα τοῖς βουλευταῖς ἔωθεν κατειληφότες ἐφρούρουν· 25 ὁ δὲ Μαίλιος οὐδὲν ἀκηκοὼς τούτων ἡμέρας γενομένης προσελθὼν εἰς τὴν ἀγορὰν, ἐχρημάτιζε τοῖς δεομένοις ἐπὶ τοῦ βήματος καθεζόμενος· καὶ μετ' οὐ πολὺ παρῆν ὁ ἱππάρχος Σερουίλιος πρὸς αὐτόν, ἄγων τοὺς ἀκμαιοτάτους τῶν ἱππέων ἔχοντας ὑπὸ τοῖς ἱματίοις ξίφη, καὶ στὰς πλησίον αὐτοῦ λέγει· ὁ δικτάτωρ σε κελεύει, Μαίλιε, πρὸς αὐτὸν ἦκειν· κά-

κείνος ὑποτυχών, ποῖος, ἔφη, κελεύει με, Σερούλιε, δικτάτωρ πρὸς αὐτὸν ἐλθεῖν, ὃ ποῦ καὶ πότε γενόμενος; καὶ ἅμα διαταραχθεὶς περιέβλεψεν εἰς τοὺς περὶ τὸ βῆμα. ἀφασίας δὲ ἅπαντας κατασχούσης διὰ  
 5 τὸ μηδένα γιννώσκειν τὰ πραχθέντα ὑπὸ τῆς βουλῆς, λέγει πάλιν ὁ Σερούλιος· εἰσηγγέλθης χθές εἰς τὴν βουλὴν, ὦ Μαίλιε, νεωτέροις ἐπιχειρεῖν πράγμασιν, ἴσως οὐκ ἀληθῶς· οὐδενὸς γὰρ ἄξιον ἀπὸ τῆς αἰτίας προκαταγινώσκειν. ταύτην ἐξετάσαι τὴν μήνυσιν  
 10 ἢ βουλὴν προσελομένη δικτάτορος ἔφησε δεῖν τοῖς πράγμασιν, ὡς οὐ τὸν ἐλάχιστον τῶν κινδύνων τρέχουσα, καὶ ἀπέδειξε τῆς ἐξουσίας ταύτης κύριον Δεύκιον Κοίντιον Κικιννάτου, ὃν οἶσθα δήπου καὶ σὺ κράτιστον ὄντα τῶν πατρικίων καὶ δις ἤδη ταύτην  
 15 ἀνεπιλήπτως τετελεκότα τὴν ἀρχήν. οὗτος ὁ ἀνὴρ δικαστήριόν σοι καθίσαι καὶ λόγον ἀποδοῦναι βουλόμενος ἀπέσταλκεν ἡμᾶς, ἐμὲ τὸν ἵππαρχον ἅμα τοῖσδε τοῖς ἀνδράσι, ἄξοντας σε ἀσφαλῶς ἐπὶ τὴν ἀπολογία. εἰ δὲ μηδὲν ἀδικεῖν πέποιθας, ἴθι καὶ  
 20 λέγε τὰ δίκαια περὶ σαντοῦ πρὸς ἄνδρα φιλόπολι, ὃς οὔτε διὰ τὸν κοινὸν φθόνον οὔτε δι' ἄλλην ἀδικον πρόφασιν οὐδεμίαν ἐμποδῶν ποιῆσαι σε βουλήσεται. ὁ δ' ὡς ἤκουσεν ἀναπηδᾷ τε καὶ μεγάλα ἀναβοήσας, ἄνδρες, ἔφη, δημοτικοί, βοηθεῖτέ μοι συναρπαζομένῳ διὰ τὴν πρὸς ὑμᾶς εὐνοίαν ὑπὸ τῶν  
 25 δυνατῶν· οὐ γὰρ ἐπὶ δίκην [καλοῦμαι] πρὸς αὐτῶν, ἀλλ' ἐπὶ θάνατον καλοῦμαι. βοῆς δὲ γενομένης καὶ θορύβου πολλοῦ περὶ τὸ βῆμα, συγγνοὺς ὅτι πλείους εἰσὶ τῶν βοηθούτων οἱ συλλαμβάνειν μέλλοντες αὐτόν, καὶ οὐ μακρὰν ἐτέρους ὑποκαθῆσθαι ἐν ὄπλοις, καταπηδᾷ ταχέως ἀπὸ τοῦ βήματος καὶ διὰ τῆς ἀγορᾶς ἐχώρει δρόμῳ σπεύδων εἰς τὴν οἰκίαν καταφυγεῖν.

καταλαμβάνομενος δ' ὑπὸ τῶν ἱππέων εἰς ἐργαστήριον εἰστρέχει μαγειρικόν, καὶ κοπίδα τῶν κρεοτόπων ἀρπάσας παίει τὸν πρῶτον αὐτῷ προσελθόντα. ἔπειτα πολλῶν ἐπιπεσόντων ἀθρόων ἀμυνόμενος καὶ βραχὺν ἀντισχῶν χρόνον, ἀπεικόπη ὑπὸ τινος τὸν  
 5 βραχίονα καὶ πίπτει καὶ κατακοπεῖς ὥσπερ θηρίου ἀποθνήσκει. Μαίλιος μὲν δὴ μεγάλων ὄρεχθεις πραγμάτων καὶ μικροῦ πάνυ δεήσας τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν κατασχεῖν, οὕτως ἀξήλου καὶ πικρᾶς καταστροφῆς ἔτυχε. ἐξενεχθέντος δὲ εἰς τὴν ἀγορὰν  
 10 τοῦ νεκροῦ καὶ γενηθέντος πᾶσι φανεροῦ, δρόμος ἦν καὶ βοή καὶ θόρυβος ἀπάντων τῶν κατὰ τὴν ἀγορὰν, τῶν μὲν οἰκτιρόντων, τῶν δὲ ἀγανακτούντων, τῶν δὲ ὁμόσε τοῖς δεδρακόσι χωρεῖν ἐσπουδακόντων. τοιαύτης δὲ ταραχῆς γενομένης μαθὼν ὁ  
 15 δικτάτωρ, ὅτι διαπέπρακται τοῖς ἱππεῦσι τὸ προσταχθὲν ἔργον, κατέβαινε ἀπὸ τῆς ἀκρας εἰς τὴν ἀγορὰν, τοὺς τε βουλευτὰς ἐπαγόμενος ἅπαντας καὶ τοὺς ἱππεῖς περὶ ἑαυτὸν ἔχων γυμνὰ φαίνοντας ξίφη· καὶ  
 20 δημηγορήσας ἐπ' ἐκκλησίας ἀπέλυσε τὸν ὄχλον. Esc. III. (1) . . . . ἔχων περὶ ἑαυτὸν ἀνθρώπους ἐξ ἀπάσης συνειλεγμένους κακίας, οὓς ἐσίτιζεν ὥσπερ θηρία κατὰ τῆς πατρίδος. εἰ μὲν οὖν ὑπήκουσέ μοι καὶ παρέσχεν ἑαυτὸν ἐν τοῖς νόμοις μένοντα, μεγίστην ἂν τοῦτ' αὐτῷ παρέσχε ἡσυχίαν εἰς  
 25 τὴν ἀπολογία, καὶ τεκμήριον οὐκ ἐλάχιστον ἦν τοῦ μηδὲν βεβουλεύσθαι κατὰ τῆς πατρίδος· νῦν δ' ὑπὸ τῆς συνειδήσεως ἐλαυνόμενος, ὃ πάσχουσιν ἅπαντες οἱ τὰς ἀνοσίους βουλὰς κατὰ τῶν ἀναγκαιοτάτων σφίσι ποιησάμενοι, τοῦτο ἔπαθε· φυγεῖν τὸν ἔλεγχον ἦγνω, καὶ τοὺς ἡμιοντας ἐπ' αὐτὸν ἱππεῖς μαγειρικῇ κοπίδι παίων ἀπήλαυεν . . . Ambr.

III. Τῶν δὲ δημοτικῶν οἱ μὲν οὐ συμβουλευ-  
σαντες ἐπὶ τῇ καταλύσει τῆς πολιτείας ἠγανάκτουν καὶ  
δι' ὀργῆς τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ ἀνδρὸς ἐλάμβανον·  
οἱ δὲ κοινωνήσαντες τῆς συνωμοσίας ἀφειμένοι τοῦ  
5 φόβου χαίρειν τε προσεποιούντο καὶ τὸ συνέδριον  
τῶν βουλευμάτων ἐπήμουν· ὀλίγοι δὲ τινες ἐξ αὐτῶν  
οἱ πονηρότατοι λογοποιεῖν ἐτόλμων ἐν ταῖς ἐξῆς ἡμέ-  
ραις, ὡς ἀνηρπασμένοι πρὸς τῶν δυνατῶν τοῦ Μαι-  
λίου, καὶ διαστασιάζειν τὸν δῆμον ἐπεχείρουν· οὗς  
10 ἀφανεῖ θανάτῳ διαχορησάμενος ὁ δικτάτωρ, ἐπειδὴ  
κατέπαυσε τὸν θόρυβον, τὴν ἀρχὴν ἀποτίθεται.

Οἱ μὲν δὴ τὰ πιθανώτατά μοι δοκοῦντες γρά-  
φειν περὶ τῆς Μαίλιου τελευτῆς οὕτω παραδεδώ-  
κασι· λεγέσθω δὲ καὶ ὁ δοκῶν ἦττον εἶναι μοι πιθα-  
15 νός λόγος, ᾧ κέχρηται Κίγκιος καὶ Καλπούρμιος  
ἐπιχώριοι συγγραφεῖς, οἱ φασιν οὔτε δικτάτορα  
ὑπὸ τῆς βουλῆς ἀποδειχθῆναι τὸν Κοίντιον οὔτε  
ἱππάρχην ὑπὸ τοῦ Κοιντίου τὸν Σερονίλιον. γενο-  
μένης δὲ μηνύσεως ὑπὸ τοῦ Μηνυλίου τοὺς παρ-  
20 ὄντας ἐν τῷ συνεδρίῳ πιστεύσαντας ἀληθῆ τὰ  
λεγόμενα εἶναι, καὶ γνώμην ἀποδειξαμένου τῶν  
πρεσβυτέρων τινὸς ἄκριτον ἢ μὴν ἀποκτεῖναι τὸν  
ἄνδρα παραχορήμα πεισθέντας, [καὶ] οὕτω τὸν Σερ-  
ουίλιον ἐπὶ τοῦτο τάξαι τὸ ἔργον, νέον ὄντα καὶ  
25 κατὰ χεῖρα γενναῖον. τοῦτον δὲ φασὶ λαβόντα τὸ  
ξίφιδιον ὑπὸ μάλης ἐλθεῖν πρὸς τὸν Μαίλιον πο-  
ρευόμενον ἐκ τῆς ἀγορᾶς, καὶ προσελθόντα εἰπεῖν,  
ὅτι βούλεται περὶ πράγματος ἀπορρήτου καὶ μεγάλου  
διαλεχθῆναι πρὸς αὐτόν. κελεύσαντος δὲ τοῦ Μαίλιου  
30 μικρὸν ἀποχωρήσαι τοὺς ἐγγὺς αὐτῷ παρόντας,  
ἐπειδὴ μονωθέντα τῆς φυλακῆς ἔλαβε, γυμνώσαντα  
τὸ ξίφος βάψαι κατὰ τῆς σφαγῆς· τοῦτο δὲ πράξαντα

δρόμῳ χωρεῖν εἰς τὸ βουλευτήριον, ἔτι συγκαθη-  
μένων τῶν συνέδρων, ἔχοντα τὸ ξίφος ἠμαγμένον  
καὶ κεκραγόντα πρὸς τοὺς διώκοντας, ὅτι κελευσθεῖς  
ὑπὸ τῆς βουλῆς ἀνήρηκε τὸν τύραννον. ἀκούσαντας  
δὲ τὸ τῆς βουλῆς ὄνομα τοὺς ὠρμηκότας παῖειν τε 5  
καὶ βάλλειν αὐτὸν ἀποτραπέσθαι καὶ μηδὲν εἰς αὐ-  
τὸν παρανομήσαι. ἐκ τούτου καὶ τὴν ἐπωνυμίαν τὸν  
Ἄλαν αὐτῷ τεθῆναι λέγουσιν, ὅτι τὸ ξίφος ἔχων ὑπὸ  
μάλης ἦλθεν ἐπὶ τὸν ἄνδρα· ἄλας γὰρ καλοῦσι Ῥω-  
μαῖοι τὰς μάλας. 10

Ἀναιρεθέντος δὲ τοῦ ἀνδρὸς καθ' ἑκάτερον τρό-  
πον, συνελθοῦσα ἡ βουλὴ τὴν τε οὐσίαν αὐτοῦ εἶναι  
δημοσίαν ἐψηφίσατο καὶ τὴν οἰκίαν ἕως ἐδάφους  
κατασκαφῆναι. οὗτος ὁ τόπος ἔτι καὶ εἰς ἐμὲ ἦν ἐν  
πολλαῖς ταῖς πέριξ οἰκίαις μόνος ἀνειμένος ἔρημος, 15  
καλούμενος ὑπὸ Ῥωμαίων Αἰκυμήλιον· ὡς ἂν ἡμεῖς  
εἰπομεν ἰσόπεδον Μήλιον, αἶκον γὰρ ὑπὸ Ῥωμαίων  
τὸ μηδεμίαν ἔχον ἔξοχὴν καλεῖται· τόπον οὖν τινα  
Αἶκον Μήλιον ἐξ ἀρχῆς κληθέντα, ὕστερον συμ-  
φθαρέντων [δὲ] ἀλλήλοις κατὰ τὴν μίαν ἐκφορὰν 20  
τῶν ὀνομάτων Αἰκυμήλιον ἐκάλεσαν. τῷ δὲ τὴν κατὰ  
τοῦ Μαίλιου μῆνυσιν ἀποδόντι Μηνυλίῳ στάσιν ἀν-  
δριάντος ἐψηφίσατο ἡ βουλὴ. *Esc. et pag. 179, 17—21*  
*Ambr.*

V. (2) Τυρρητῶν καὶ Φειδηναίων καὶ Οὐτιεν- 25  
τανῶν πολεμούντων Ῥωμαίοις, καὶ Λάρου Τολου-  
μνίου τοῦ βασιλέως Τυρρητῶν πανδεινὰ ποιοῦντος  
κατ' αὐτῶν, χιλιαρχός τις Ῥωμαῖος, Αὔλος Κορνή-  
λιος Κόσσος ἐπίκλησιν, ἐλαύνει τὸν ἵππον κατὰ τοῦ  
Τολουμνίου· καὶ ἐπειδὴ ἀγχοῦ ἐγένετο, φέρουσι κατ' 30  
ἀλλήλων τὰ δόρατα. ὁ μὲν οὖν Τολούμμιος τὸν  
ἵππον αὐτοῦ παίει διὰ τοῦ στήθους, ὃς ἀναχαιτίσας  
12\*

ῥιπτεῖ τὸν ἐπιβάτην· ὁ δὲ Κορνήλιος διὰ θυροῦ τε καὶ θώρακος ἐλάσας τὴν αἰχμὴν εἰς τὰ πλευρὰ περι-  
 5 τρέπει τὸν Τολούμνιον ἀπὸ τοῦ ἵππου, καὶ ἔτι διαν-  
 ισταμένου φέρει διὰ τοῦ βουβῶνος τὸ ξίφος. ἀποκτεί-  
 5 νας δὲ αὐτὸν καὶ τὰ σκῦλα ἀφελόμενος, οὐ μόνον τοὺς  
 ὁμοίως χωροῦντας ἵππεις τε καὶ πεζοὺς ἀνέστειλεν,  
 ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν κεράτων ἀμφοτέρων ἀντέ-  
 χοντας εἰς ἀθυμίαν καὶ δέος κατέστησεν. *Ambr.*

VI. (3) Δεύτερον ὑπατεύοντος Αὔλου Κορνη-  
 10 λίου Κόσσου καὶ Τίτου Κοιντίου αὐχμῶ μεγάλῳ  
 κακωθεῖσα ἡ γῆ πάντων ἐσπάνισεν οὐ μόνον τῶν  
 ὀμβρῶν, ἀλλὰ καὶ τῶν νεματίων ὑδάτων· ἐκ δὲ  
 τούτου προβάτων μὲν καὶ ὑπόζυγίων καὶ βοῶν ἐπίλει-  
 15 ψις παντελής ἐγένετο· εἰς δὲ τοὺς ἀνθρώπους νόσοι  
 κατέσκηψαν πολλαὶ μὲν καὶ ἄλλαι, μάλιστα δὲ ἡ ψω-  
 ρώδης καλουμένη, δεινὰς ὀδύνας παρέχουσα τοῖς  
 χρωσὶ κατὰ τοὺς ὀδαξησμούς, καὶ πρὸς τὰς ἐλκώσεις  
 20 ἔτι μᾶλλον ἀγριαινομένη· πάθος ἐλεινὸν ἐν τοῖς  
 πάντι καὶ τοῦ ταχίστου τῶν ὀλέθρων αἴτιον. *Ambr.*

(4) Οὐκ ἐδόκει τοῖς προεστηκόσι τοῦ συνεδρίου  
 βαθεῖαν εἰρήνην καὶ πολυχρόνιον ἄγειν σχολήν, ἐν-  
 20 θυμουμένοις ὅτι θάθυμια καὶ τροφή συνεισπορεύε-  
 ται ταῖς πόλεσι μετὰ τῆς εἰρήνης, καὶ ἅμα τὰς πολι-  
 τικὰς ὀρρωδοῦσι ταραχάς. καὶ αὐταὶ γὰρ ἅμα τῷ  
 25 καταλυθῆναι τοὺς ὑπερορίους πολέμους χαλεπαὶ καὶ  
 συνεχεῖς ἐξ ἀπάσης προφάσεως ἀνίσταντο.

Κρεῖττον ταῖς φιλανθρωπίαις περιεῖναι τῶν  
 30 ἐχθρῶν ἢ ταῖς τιμαρίαις, δι' ἃς, κεί μηδὲν ἕτερον,  
 αἱ γέ τοι παρὰ τῶν θεῶν ἐλπίδες ἡδίους αὐτοῖς  
 ὑπάρχουσιν. *Ambr.*

(5) Ὡς ἔμαθε τοὺς πολεμίους ἐκ τῶν κατόπιν  
 προσιόντας, ἐπιστρέφειν μὲν ὀπίσω περιεχόμενος

ὑπὸ τῶν πολεμίων πανταχόθεν ἀπέγνων, ἐνθυμούμε-  
 νος ὅτι κινδυνεύουσιν ἅπαντες οὐθὲν ἀποδειξάμενοι  
 γενναῖον ἔργον αἰσχίστα διαφθαρῆναι, ὀλίγοι τε  
 πρὸς πολλοὺς μαχόμενοι καὶ τεθωρακισμένοι πρὸς  
 5 ἐλαφροὺς. ἰδὼν δὲ ὄχθον τινὰ ὑψηλὸν ἐπιεικῶς, ὃς  
 ἦν αὐτῷ οὐ πρόσω, τοῦτον ἔγνω καταλαβέσθαι. *Ambr.*

(6) Ἀγρίππας Μηνήμιος καὶ Πόπλιος Λου-  
 κρήτιος καὶ Σερούιος Ναύτιος, χιλίαρχοι τιμηθέντες,  
 ἐπίθεσιν τινα κατὰ τῆς πόλεως γενομένην ὑπὸ δού-  
 10 λων ἐφόρασαν. ἔμελλον δὲ οἱ μετέχοντες τῆς συνω-  
 μοσίας πῦρ ἐμβαλόντες ταῖς οἰκίαις κατὰ πολλοὺς  
 ἅμα τόπους νύκτωρ, ὅποτε μάθοιεν ἐπὶ τὴν τῶν  
 καιομένων βοηθείαν ὠρηκτότας ἅπαντας, τό τε Κα-  
 πιτώλιον καὶ τοὺς ἄλλους ἔρμηνους καταλαμβά-  
 15 νεσθαι τόπους, ἐγκρατεῖς δὲ γενόμενοι τῶν καρτερῶν  
 τῆς πόλεως, ἐπὶ τὴν ἐλευθερίαν τοὺς ἄλλους δούλους  
 παρακαλεῖν, καὶ σὺν ἐκείνοις ἀποκτείναντες τοὺς  
 δεσπότης τὰς τῶν πεφονευμένων γυναῖκας τε καὶ  
 κτήσεις παραλαμβάνειν. τῆς δὲ πράξεως περιφανοῦς  
 γενομένης, συλληφθέντες οἱ πρῶτοι συνθέντες τὴν  
 20 ἐπιβουλήν καὶ μαστιγωθέντες ἐπὶ τοὺς σταυροὺς  
 ἀπήχθησαν· τῶν δὲ μηνυσάντων αὐτοὺς ὄντων  
 δεῦν ἐλευθερίαν τε καὶ δραχμὰς χιλίας ἐκάτερος  
 ἔλαβεν ἐκ τοῦ δημοσίου. *Ambr.*

VII. (7) Ἐσπευδε τὸν πόλεμον συντελέσαι ἐν  
 25 ὀλίγαις ἡμέραις ὁ Ῥωμαίων χιλίαρχος, ὡς δὴ ὁμόδιόν  
 τι πρᾶγμα καὶ κατὰ χειρὸς αὐτῷ γενησόμενον, ὑπο-  
 χειρίους ποιήσασθαι μίαν μάχην τοὺς πολεμίους. τῷ  
 δὲ ἡγεμόνι τῶν πολεμίων ἐνθυμουμένῳ τό τε ἐμπει-  
 30 ροπόλεμον τῶν Ῥωμαίων καὶ τὸ ἐν τοῖς κινδύνοις καρ-  
 τερικόν, μάχην μὲν ἐκ παρατάξεως ἴσην καὶ φανεράν  
 ποιῆσθαι πρὸς αὐτοὺς οὐκ ἐδόκει· διαστρατήγειν δὲ

τὸν πόλεμον ἀπάταις τισὶ καὶ δόλοις. καὶ παρατηρεῖν, εἴ τι πλεονέκτημα καθ' ἑαυτῶν ἐκείνοι παρέχουσι. *Ambr.*

Τραυματίας καὶ παρασχεδὸν ἐλθῶν ἀποθανεῖν.

<sup>5</sup> *Ambr.*

VIII. (8) Ἐν Ῥώμῃ χειμῶνος γενομένου βιαίου ἐνθα ἡ ἐλαχίστη χιῶν κατηνέχθη οὐκ ἐλάττων ἢν ἐπτά ποδῶν τὸ βάθος. καὶ συνέπεσεν ἀνθρώπους τε ὑπὸ τοῦ υἱετοῦ διαφθαρεῖναι τινὰς καὶ πρόβητα 10 πολλὰ καὶ τῶν ἄλλων κτηνῶν καὶ ὑποζυγίων μοῖραν οὐκ ὀλίγην, τὰ μὲν ὑπὸ τοῦ κρυμοῦ σφακελίσαντα, τὰ δὲ νομῆς τῆς συνήθους ἀπορία. δένδρων τε καρποφόρων, ὅσα μὴ πέφυκεν ὑπερβολὰς υἱετῶν ὑπομένειν, τὰ μὲν εἰς τέλος ἐξηράνθη, τὰ δὲ ἐπικαέντα 15 τοὺς βλαστοὺς ἄκαρπα ἐπὶ πολλοὺς χρόνους ἐγένετο. ἐλύθησάν τε καὶ τῶν οἰκιῶν συγγαί, καὶ τινες καὶ περιετρόπησαν, μάλιστα δὲ ὅσαι ἐκ τῶν λίθων κατὰ τὴν διάλυσίν τε καὶ ἀπότηξιν τῆς χιόνος. τοῦτο τὸ πάθος οὔτε πρότερόν ποτε γενομένου ἐν ἱστορίας 20 γραφῇ περὶ ταῦτα τὰ χωρία παρελήφαμεν, οὐδ' ὕστερον ἕως τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου, μετρίῳ γέ τι βραχέστερον τοῦ μέσου, κατὰ τὸν ὑπὲρ Ἀθηναίων γραφόμενον δι' Ἑλλησπόντου παράλληλον. τότε δὲ πρώτον καὶ μόνον ἐξέβη τῆς εἰωθυίας κράσεως ἢ τοῦ 25 περιέχοντος τήνδε τὴν γῆν φύσις. *Ambr.*

VIII. (9) Ἐορτὰς ἤγον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς καλουμένας τῇ ἐπιχωρίῳ γλώττῃ στρωμνάς, ὑπὸ τῶν Σιβυλλείων κελευσθέντες χρησμῶν. νόσος γάρ τις λοιμώδης γενομένη θεόπεμπτός τε καὶ ὑπὸ τέχνης 30 ἀνθρωπίνης ἀνίατος εἰς ζήτησιν αὐτοὺς ἤγαγε τῶν χρησμῶν. ἐκόσμησάν τε στρωμνάς τρεῖς, ὡς ἐκέλευον οἱ χρησμοί, μίαν μὲν Ἀπόλλωνι καὶ Ἀητοί,

ἐτέραν δὲ Ἡρακλεῖ καὶ Ἀρτέμιδι, τρίτην δὲ Ἐρμῇ καὶ Ποσειδῶνι· καὶ διετέλουν ἐφ' ἡμέρας ἐπτά δημοσία τε καταθύοντες καὶ ἰδίᾳ κατ' οἰκίαν δύναμιν ἅπαντες τοῖς θεοῖς ἀπαρχόμενοι, ἐστιάσεις τε λαμ- 5 προτάτας ἐπιτελοῦντες, καὶ ξένων τοὺς παρεπιδη- 5 μούντας ὑποδεχόμενοι. (10) Πείσων δὲ ὁ τιμητικὸς ἐν ταῖς ἐνιαυσίοις ἀναγραφαῖς καὶ ταῦτ' ἐτι προστίθησιν· ὅτι λελυμένων μὲν τῶν θεραπόντων ὅσους πρότερον ἐν τοῖς δεσμοῖς εἶχον οἱ δεσπόται, πλη- 10 θυούσης ὄχλου ξενικοῦ τῆς πόλεως, ἀναπεπταμένων 10 τῶν οἰκιῶν διὰ ἡμέρας τε καὶ νυκτός, καὶ δίχα κωλύσεως εἰσόντων εἰς αὐτὰς τῶν βουλομένων, οὔτε χρῆμα οὐδὲν ἀπολωλεμένας τις ἠτιάσατο οὔτε ἠδικήσθαι τινα ὑπ' οὐδενός, καίτοι πολλὰ φέρειν εἰωθῶ- 15 των πλημμελῆ καὶ παράνομα τῶν ἐορταίων καιρῶν 15 διὰ τὰς μέθας. *Ambr.*

X (11) Οὐιεντανὸς πολιορκούτων Ῥωμαίων περὶ τὴν ἐπιτολὴν τοῦ κυνός, ὅτε μάλιστα λίμναι τε ἐπιλείπουσι καὶ ποταμοὶ πάντες, ὅτι μὴ μόνος ὁ 20 Αἰγύπτιος Νεῖλος, λίμνη τις, ἀπέχουσα τῆς Ῥώμης 20 οὐ μείον ἢ σταδίων ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς καλουμένοις ὄρεσι, παρ' ἧ τὸ ἀρχαῖον ἢ τῶν Ῥωμαίων μητρό- 25 πολις ᾤκειτο, οὔτε ὑετῶν γενομένων οὔτε υἱετῶν οὔτ' ἄλλης τινὸς αἰτίας ἀνθρώποις φανεράς, τοσαύτην ἔλαβεν ἐκ τῶν ἐν αὐτῇ ναμάτων ἐπίδοσιν, 25 ὥστε πολλὴν μὲν ἐπικλύσαι τῆς παρορείου, πολλὰς δὲ οἰκίσεις γεωργικὰς καταβαλεῖν, τελευτῶσαν δὲ καὶ τὸν μεταξὺ τῶν ὄρων αὐλῶνα διασπάσαι καὶ 30 ποταμὸν ἐκχεῖν κατὰ τῶν ὑποκειμένων πεδίων ἐξάσιον. (12) Τοῦτο μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι, κατ' ἀρχὰς 30 μὲν, ὡς δαιμονίου τινὸς μηνιόντος τῇ πόλει, θυσίαις ἐξιλιάσασθαι τοὺς κατέχοντας τὸν τόπον θεοὺς καὶ

δαίμονας ἐψηφίσαντο, καὶ τοὺς ἐπιχωρίους μάντις ἀνέκρινον, εἴ τι λέγειν ἔχουσιν· ἐπεὶ δ' οὔτε ἡ λίμνη τὴν ἑαυτῆς τάξιν ἀπελάμβανεν, οὔτε οἱ μάντις ἀκριβῆς οὐδὲν ἔλεγον, ἀλλὰ τῷ θεῷ χρῆσθαι 5 παρήνουν, ἐπὶ τὸ Δελφικὸν μαντεῖον ἀπέστειλαν θεοπρόπους. *Ambr.*

XI (13) Ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ Οὐιεντανῶν τις ἔμπειρος τῆς ἐπιχωρίου μαντικῆς διὰ προγόνων ἐτύχχανε φυλακὴν ἔχων τοῦ τείχους, ἐγερόνει δέ 10 τις αὐτῷ τῶν ἀπὸ τῆς Ῥώμης λοχαγῶν ἐκ παλαιοῦ γνώριμος. οὗτος ὁ λοχαγὸς ἐγγὺς τοῦ τείχους ποτὲ γενόμενος καὶ τοὺς συνήθεις ἀσπασμοὺς τῷ ἀνδρὶ ἀποδοὺς, οἰκτεῖρειν αὐτὸν ἔφη τῆς καταληψομένης 15 ὁ Τυρρηνὸς ἀνηκόως τὴν ὑπέρχουσιν τῆς Ἀλβανίδος λίμνης, καὶ τὰ παλαιὰ περὶ αὐτῆς προσιδῶς θέσφατα, ἀναγελάσας· οἶον, ἔφησεν, ἐστὶν ἀγαθὸν τὸ προειδέναι τὰ μέλλοντα. ὑμεῖς δὲ κατὰ τὴν ἀγνωσίαν τῶν ἀποβησομένων πόλεμον ἀτελῆ καὶ πόρους ἀνηνύ- 20 τους ἀντλεῖτε τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν ἀναστήσειν οἰόμενοι. εἰ δέ τις ὑμῖν ἐδήλωσεν, ὅτι τῇ πόλει τῆδε τότε πέπρωται ἀλῶναι, ὅταν ἡ πρὸς Ἀλβανῶ λίμνη σπανάσῃ τῶν ἀθιγενῶν ναμάτων μηκέτι μίσηται θαλάττη, ἐπαύσασθε ἂν αὐτοὶ τε δαπανώμενοι καὶ 25 ἡμᾶς ἐνοχλοῦντες. ταῦτα ὁ Ῥωμαῖος μαθὼν, πολὺς ἐν τῷ σκοπεῖν καθ' ἑαυτὸν γενόμενος, τότε μὲν ἀπήει, (14) τῇ δ' ἐξῆς προσιπῶν τοῖς χιλιάρχοις ἃ διανοεῖτο παρῆν ἐπὶ τὸν αὐτὸν τόπον ἄνοπλος, ὥστε μηδεμίαν ὑποψίαν ἐπιβουλῆς τὸν Τυρρηνὸν ὑπὲρ 30 αὐτοῦ λαβεῖν. χρησάμενος δὲ τοῖς συνήθεσιν ἀσπασμοῖς, πρῶτον μὲν ὑπὲρ τῆς κατεχούσης τὸ Ῥωμαϊκὸν στρατόπεδον ἀμηχανίας διελέγετο ἄλλ', ἐφ' οἷς

ἠσθήσεσθαι τὸν Τυρρηνὸν ὑπελάμβανεν, ἔπειτα ἐξηγητὴν αὐτῷ γενέσθαι ἠέλιου σημείων τιῶν καὶ τεράτων νεωστὶ τοῖς χιλιάρχοις γερονότων. πείθεται τοῖς λόγοις ὁ μάντις οὐδεμίαν δεδοικῶς ἐξαπάτην, καὶ τοὺς συνόντας αὐτῷ μεταστῆναι κελεύσας αὐτὸς ἠκούσθαι μόνος τῷ λοχαγῷ. ὁ δὲ Ῥωμαῖος ὑπαγόμενος αὐτὸν ἀπατέρῳ τοῦ τείχους διὰ τῶν πρὸς ἀπάτην 5 μηχανηθέντων λόγων, ὡς ἐγγὺς ἐγένετο τοῦ περιεχίσματος, περιλαβὰν ταῖς χερσὶν ἀμφοτέραις μέσον αἰρεταί τε καὶ πρὸς τὸ Ῥωμαϊκὸν ἀποφέρεται στρα- 10 τόπεδον. *Ambr.*

XII. (15) Τοῦτον τὸν ἄνδρα οἱ χιλιάρχοι λόγοις τε θεραπεύοντες καὶ βασάνων ἀπειλαῖς δεδιττόμενοι ἅπαντα παρεσκεύασαν ἐξεικεῖν, ἃ περὶ τῆς Ἀλβανίδος λίμνης ἀπέκρυπτεν· εἶτα καὶ πρὸς τὴν βουλήν 15 αὐτὸν ἀναπέμπουσιν. τοῖς δ' ἐκ τοῦ συνεδρίου οὐχ ἡ ὅμοια παρέστη δόξα· ἀλλὰ τοῖς μὲν ἐδόκει πανοῦργός τις εἶναι καὶ γόης ὁ Τυρρηνός, καὶ καταψεύδεσθαι τοῦ δαιμονίου τὰ περὶ τὸν χρησμόν· τοῖς δ' ἀπὸ πάσης ἀληθείας εἰρηκένα. (16) Ἐν τῇ αὐτῇ 20 δ' ἀμηχανίᾳ τῆς βουλῆς ὑπαρχούσης παρήσαν οἱ προαποσταλέντες εἰς Δελφοὺς θεόπροποι, χρησμοὺς κομίζοντες τοῖς ὑπὸ τοῦ Τυρρηνοῦ πρότερον ἀπηγγελμένοις συνάδοντας· ὅτι θεοὶ καὶ δαίμονες οἱ λαχόντες τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν τοσοῦτον αὐτοῖς ἐγ- 25 γυνῶνται χρόνον ἀσάλευτον φυλάξαι τὴν ἐκ προγόνων παραδοθεῖσαν εὐδαιμονίαν, ὅσον ἂν διαμένωσιν αἱ πηγαὶ τῆς ἐν Ἀλβανῶ λίμνης ὑπερχόμεναι καὶ μέχρι θαλάττης ἀπορρέουσαι· ὅταν δ' ἐκεῖναι φύσιν τε τὴν ἑαυτῶν καὶ ὁδοὺς τὰς ἀρχαίας ἐκλιποῦσαι καθ' 30 ἐτέρας ἐκτραπῶσιν, ὡς μηκέτι μίσησθαι τῇ θαλάττῃ, καὶ τὴν πόλιν αὐτῶν ἀνάστατον ἔσεσθαι· τοῦτο δ'



οὐκ εἰς μακρὰν ὑπὸ Ῥωμαίων γενήσεσθαι, ἐὰν ὀρύγ-  
μασι καθ' ἕτερα χωρία γενομένοις ἐκτρέψωσι τὴν  
πλημμύραν τῶν ὑδάτων εἰς τὰ πρόσω τῆς θαλάττης  
πεδιά. ταῦτα μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι εὐθύς ἐπέστησαν  
5 τοῖς ἔργοις τοὺς χειροτέχνας. *Ambr.*

XIII. (17) Ὡς δὲ ταῦτ' ἤκουσαν Οὐιεντανοὶ παρ'  
αἰχμαλώτου τιμῶς, ἐπικηρυκένεσθαι πρὸς τοὺς πο-  
λιορκούντας ἤθελον περὶ καταλύσεως τοῦ πολέμου,  
πρὶν ἀλῶναι κατὰ κράτος τὴν πόλιν· καὶ ἀποδείκνυν-  
10 ται πρέσβεις οἱ πρεσβύτατοι. ἀποψηφισαμένης δὲ  
τῆς βουλῆς τῶν Ῥωμαίων τὰς διαλλαγὰς, οἱ μὲν ἄλλοι  
πρέσβεις ἀπήεσαν ἐκ τοῦ βουλευτηρίου σιωπῇ, ὁ δὲ  
ἐπιφανέστατος ἐξ αὐτῶν καὶ κατὰ τὴν μαντικὴν ἐμ-  
πειρίαν δοκιμώτατος, ἐπιστὰς ταῖς θύραις καὶ περι-  
15 βλέψας εἰς ἀπαντας τοὺς παρόντας ἐν τῷ συνεδρίῳ·  
Καλόν, ἔφησεν, ὦ Ῥωμαῖοι, δόγμα ἐξενηρόχατε καὶ  
μεγαλοπρεπές, οἱ τὴν ἡγεμονίαν ἀξιοῦντες ἔχειν τῶν  
περιοίκων δι' ἀρετὴν, πόλιν οὔτε μικρὰν οὔτε ἄση-  
μον ἀποτιθεμένην τὰ ὄπλα καὶ παραδιδούσαν ὑμῖν  
20 ἑαυτὴν οὐκ ἀξιοῦντες ὑπήκοον ἔχειν, ἀλλὰ πρόρρι-  
ζον ἀνελεῖν βουλόμενοι, οὔτε τὸν ἐκ τοῦ θεοῦ δει-  
σαντες χόλον, οὔτε τὴν παρ' ἀνθρώπων ἐντραπέντες  
νέμεσιν. ἀνθ' ὧν ὑμῖν δίκη τιμωρὸς ἤξει παρὰ  
θεῶν εἰς τὰ ὅμοια ζημιούσα· Οὐιεντανοὺς γὰρ ἀφε-  
25 λόμενοι τὴν πατρίδα μετ' οὐ πολὺ τὴν ἑαυτῶν ἀπο-  
βαλεῖτε. *Ambr.*

(18) Μετὰ βραχὺ δὲ ἀλισκομένης τῆς πόλεως  
οἱ μὲν ὁμοίως τοῖς πολεμίοις χωροῦντες ἄνδρες ἀγα-  
θοὶ γενόμενοι καὶ πολλοὺς ἀποκτείναντες κατεκό-  
30 πησαν, οἱ δ' αὐτοχειρία σφάξαντες αὐτοὺς διε-  
φθάρησαν· ὅσοις δὲ δι' ἀνανδρίαν τε καὶ ταπεινό-  
τητα ψυχῆς πάντ' ἐφαίνετο τοῦ τεθνήσκειν τὰ δεινὰ

μετριώτερα, ῥίψαντες τὰ ὄπλα παραδίδοσαν τοῖς  
κεκρατηκόσιν ἑαυτούς. *Ambr.*

XIII. (19) Ὁ δὲ δικτάτωρ Κάμιλλος, οὗ στρα-  
τηγία ἢ πόλις ἦλω, ἐπὶ μετεώρου τινὸς ἐστῶς  
ἅμα τοῖς ἐπιφανεστάτοις Ῥωμαίων, ὅθεν ἅπανα ἢ 5  
πόλις ἦν καταφανής, πρῶτον μὲν ἐμακάρισεν ἑαυτὸν  
τῆς παρουσίας εὐτυχίας, ὅτι καθελείν αὐτῷ μεγάλην  
καὶ εὐδαίμονα πόλιν ἐξεγένετο δίχα πόνου, ἢ Τυρ-  
ρηγίας μὲν ἀνθούσης τότε καὶ πλείστον τῶν κατοι-  
κούντων τὴν Ἰταλίαν ἐθνῶν δυναμένης οὐκ ἐλαχίστη 10  
μοῖρα ἦν, Ῥωμαῖοις δὲ περὶ τῆς ἡγεμονίας διαφορο-  
μένη καὶ πολλοὺς πολέμους ὑπομείνασα ἄχρι δεκάτης  
γενεᾶς διετέλεσεν, ἐξ οὗ δ' ἤρξατο πολεμεῖν καὶ πο-  
λιορκεῖσθαι συνεχῶς, δέκα διήνεγκε τὴν πολιορκίαν  
ἐτη πάσης πεπραθεῖσα τύχης. (20) Ἐπειτ' ἐνθυμη- 15  
θεῖς, ὡς ἐπὶ μικρᾶς αἰωρεῖται ἡσπῆς ἢ τῶν ἀνθρώ-  
πων εὐδαιμονία, καὶ βέβαιον οὐδὲν διαμένει τῶν  
ἀγαθῶν, διατείνας εἰς οὐρανὸν τὰς χεῖρας εὔξατο  
τῷ τε Διὶ καὶ τοῖς ἄλλοις θεοῖς, μάλιστα μὲν ἀνε-  
πίφθονον ἑαυτῷ τε καὶ τῇ πατρίδι γίνεσθαι τὴν παρ- 20  
οῦσαν εὐδαιμονίαν· εἰ δέ τις μέλλοι κοινῇ συμφορᾷ  
τὴν Ῥωμαίων πόλιν ἢ τὸν αὐτοῦ βίον καταλαμβάνειν  
ἀντίπαλος τῶν παρόντων ἀγαθῶν, ἐλαχίστην γενέσθαι  
ταύτην καὶ μετριωτάτην.

XV. (21) Ἦν δὲ ἡ Οὐιεντανῶν πόλις οὐθὲν 25  
ὑποδεστέρα τῆς Ῥώμης ἐνοικεῖσθαι, γῆν τε πολλὴν  
καὶ πολύνκαρπον ἔχουσα, τὴν μὲν ὄρεινήν, τὴν δὲ  
πεδιάδα, καὶ τὸν περικείμενον ἀέρα καθαρώτατον  
καὶ πρὸς ὑγίειαν ἀνθρώποις ἄριστον, οὔτε ἔλους πλη-  
σίον ὄντος, ὅθεν ἔλκονται βαρεῖς ἀτμοὶ καὶ δυσώδεις, 30  
οὔτε ποταμοῦ τινος ψυχρᾶς ἕωθεν ἀπέντος αὔρας,  
ὑδάτων τε οὐ σπανίων ὄντων οὐδ' ἐπακτῶν, ἀλλ'

αὐθιγενῶν καὶ πλουσίων καὶ πίνεσθαι κρατίστων.  
Ambr.

XVI. (22) Αἰνεῖαν λέγουσι τὸν ἐξ Ἀρχίσου καὶ Ἀφροδίτης, ὅτε κατέσχευεν εἰς Ἰταλίαν, θῦσαι προαιρουόμενον ὅτῳ δὴ τινι θεῶν, μετὰ τὴν εὐχὴν μέλλοντα τοῦ παρεσκευασμένου πρὸς τὴν θυσίαν ἱερείου κατάρχεσθαι, τῶν Ἀχαιῶν ἰδεῖν τινα πρόσωθεν ἐρχόμενον, εἴτε Ὀδυσσεύα, ὅτε τῷ περὶ τὸν Ἄορνον μαντεῖω χρῆσθαι ἔμελλεν, εἴτε Διομήδην, ἠνίκα Δαῦνῳ 10 σύμμαχος ἀφίκετο· ἀχθόμενον δὲ τῷ συγκυρήματι, καὶ πολεμίαν ὄψιν ἐφ' ἱεροῖς φανείσαν ὡς πονηρὸν οἰωνὸν ἀφοσιώσασθαι βουλόμενον, ἐγκαλύψασθαι τε καὶ στραφῆναι· μετὰ δὲ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολεμίου χειρωψάμενον αὐθις ἐπιτελέσαι τὴν θυσίαν. 15 γενομένου δὲ τῶν ἱερῶν κρειτόνων ἠσθῆναι τε τῷ συγκυρήματι καὶ φυλάττειν ἐπὶ πάσης εὐχῆς τὸ αὐτὸ ἔθος, τοὺς τε ἀπ' ἐκείνων γενομένους ὡς ἐν τι τῶν περὶ τὰς ἱερουργίας νομίμων καὶ τοῦτο διατηρεῖν. (23) Ἐπόμενος δὲ τοῖς πατρικοῖς ὁ Κάμιλλος νόμοις, 20 ἐπειδὴ τὴν εὐχὴν ἐποιήσατο καὶ κατὰ τῆς κεφαλῆς εἴλκυσε τὸ ἱμάτιον, ἐβούλετο μὲν στραφῆναι· τῆς δὲ βάσεως ὑπενεχθείσης οὐ θνηθεὶς ἀναλαβεῖν αὐτὸν ὑπτίως ἐπὶ τὴν γῆν φέρεται. τοῦτοι τὸν οἰωνὸν οὔτε μαντείας οὔτ' ἐνδοιασμοῦ δεόμενοι, ἀλλὰ καὶ τῷ 25 φανλοτάτῳ θάδιον ὄντα συμβαλεῖν, ὅτι πεσεῖν αὐτῷ πᾶσα ἀνάγκη πτώμα ἄσχημον, οὔτε φυλακῆς οὔτε ἀφοσιώσεως ἄξιον ὑπέλαβεν, ἀλλ' ἐπὶ τὸ κεχαρισμένον ἑαυτῷ μετήνεγκεν, ὡς ὑπακηκοῦσαν αὐτοῦ ταῖς εὐχαῖς τῶν θεῶν καὶ τὸ κακὸν ἐλάχιστον παρεσκευασ- 30 κῶτων γενέσθαι. Ambr.

## EXCERPTA

EX

## LIBRO XIII.

I. (1) Καμίλλου τὴν Φαλεσίαν πόλιν πολιορκούτος, Φαλίσκων τις εἶτ' ἀπεγνωκὸς τὴν πόλιν, εἴτε κέρδη θηρώμενος ἴδια, παῖδας ἐκ τῶν ἐπιφανεστάτων οἰκῶν παρακρουσάμενος· ἦν δὲ διδάσκαλος γραμμάτων· ἐξήγαγεν ἐκ τῆς πόλεως, ὡς περιπατή- 5 σοντας τε πρὸ τοῦ τείχους καὶ τὸ Ῥωμαϊκὸν στρατόπεδον θεασομένους. ὑπαγόμενος δὲ κατὰ μικρὸν αὐτοὺς προσωτέρω τῆς πόλεως ἐπὶ φυλακτῆριον Ῥωμαϊκὸν ἄγει, καὶ τοῖς ἐκδραμοῦσι παραδίδωσι· ὑφ' ὧν ἀχθεὶς ἐπὶ τὸν Κάμιλλον ἔφη· βεβουλεύσθαι μὲν 10 ἔτι πάλα τὴν πόλιν ὑπὸ Ῥωμαίων ποιῆσαι, οὐθενὸς δὲ κύριος ὢν οὔτε ἄκρας οὔτε πυλῶν οὔθ' ὀπλων τοῦτον ἐξευρηκέαι τὸν τρόπον, ὑποχειρίους ποιῆσαι τοὺς βίεις τῶν εὐγενεστάτων, ἀφικτον ἀνάγκην ὑπο- 15 λαβῶν τοὺς πατέρας αὐτῶν καταλήψεσθαι τῆς σωτηρίας τῶν τέκνων περιεχομένους τάχιον παραδοῦναι Ῥωμαίοις τὴν πόλιν. ὁ μὲν δὴ ταῦτ' ἔλεγε, πολλὰς ἐλπίδας ἔχων θαυμαστάς τινας ἐξοίσεσθαι μισθοῦς τῆς προδοσίας. Ambr.

II. (2) Ὁ δὲ Κάμιλλος εἰς φυλακὴν παραδιδούς 20 τὸν γραμματιστὴν καὶ τοὺς παῖδας, ἐπιστέλλει τῇ βουλῇ διὰ γραμμάτων τὰ γενόμενα, καὶ τί χρὴ ποιεῖν

ἤρετο. ἐπιτρέψαντος δ' αὐτῷ τοῦ συνεδρίου πράττειν ὅ τι ἂν αὐτῷ φαίνηται κρείτιστον, προαγαγὼν ἐκ τοῦ στρατοπέδου τὸν γραμματιστὴν ἅμα τοῖς παισὶ, καὶ οὐ μακρὰν ἀπὸ τῶν πυλῶν τὸ στρατηγικὸν βῆμα  
 5 προστάξας τεθῆναι, πολλοῦ συνδραμόντος ὄχλου, τοῦ μὲν ἐπὶ τὰ τεῖχη, τοῦ δ' ἐπὶ τὰς πύλας, πρῶτον μὲν ἐδήλωσε τοῖς Φαλίσκοις οἷα ὁ γραμματιστὴς εἰς αὐτοὺς ἐτόλμησε παρανομεῖν· ἔπειτα περικαταροῦξαι τὴν ἐσθῆτα τοῦ ἀνδρὸς ἐκέλευσε τοῖς ὑπηρέταις, καὶ  
 10 ξαίνειν τὸ σῶμα μάλιστα πάννυ πολλαῖς. ὡς δὲ ταύτης ἄλις εἶχε τῆς τιμωρίας, θάβδους τοῖς παισὶν ἀναδούς ἀπάγειν αὐτὸν ἐκέλευσεν εἰς τὴν πόλιν δεδεμένον τῷ χεῖρε ὀπίσω, παιοντάς τε καὶ πάντα τρόπου αἰκιζομένους. ἀνακομισάμενοι δὲ τοὺς παῖδας οἱ Φα-  
 15 λίσκοι καὶ τὸν γραμματιστὴν ἀξίως τῆς κακῆς διανοίας τιμωρησάμενοι παρέδωκαν τῷ Καμίλλῳ τὴν πόλιν.

*Ambr.*

III. (3) Ὁ αὐτὸς Κάμιλλος ἐπὶ τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν στρατεύων ἠῦξάτο τῇ βασιλείᾳ Ἡρα τῇ ἐν  
 20 Οὐιεντανοῖς, ἂν κρατήσῃ τῆς πόλεως τό τε ξόανον αὐτῆς ἐν Ῥώμῃ καθιδρῦσειν καὶ σεβασμοὺς αὐτῇ καταστήσεσθαι πολυτελεῖς. ἀλούσης δὲ τῆς πόλεως, ἀπέστειλε τῶν ἱππέων τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀρουμένους ἐκ τῶν βάρων τὸ ἔδος· ὡς δὲ παρήλθον οἱ  
 25 πεμφθέντες εἰς τὸν νεῶν, καὶ τις ἐξ αὐτῶν εἶτε μετὰ παιδιᾶς καὶ γέλωτος εἶτε οἰανοῦ δεόμενος, εἰ βούλοιο μεταλθεῖν εἰς Ῥώμην ἢ θεός, ἤρετο, φωνῇ γεγωνῶν τὸ ξόανον ἐφθέγγετο, ὅτι βούλεται. τοῦτο καὶ δις γέγονεν· ἀπιστοῦντες γὰρ οἱ νεανίσκοι, εἰ τὸ  
 30 ξόανον ἦν τὸ φθεγγόμενον, πάλιν ἤρουντο τὸ αὐτὸ καὶ τὴν αὐτὴν φωνὴν ἤκουσαν. *Ambr.*

III. (4) Ἐν δὲ τῇ ἀρχῇ τῶν μετὰ τὸν Κάμιλλον

ὑπᾶτων νόσος εἰς Ῥώμην κατέσκηψε λοιμική, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τε ἀνομβρίας καὶ αὐχμῶν λαβοῦσα ἰσχυρῶν· ἀφ' ὧν κακωθείσα ἦ τε δεινότητις καὶ ἡ σιτοφόρος ὀλίγους μὲν ἀνθρώποις καρπούς ἐξήνεγκε καὶ νοσερούς, ὀλίγην δὲ καὶ πονηρὰν βοσκήμασι νομῆν. προ-  
 5 βᾶτων μὲν οὖν καὶ τῶν ἄλλων ὑποζυγίων ἀναρίθμητόν τι διεφθάρη πλήθος, οὐ χιλοῦ σπανισάμενον μόνον ἀλλὰ καὶ ποτοῦ, τοσαύτη τῶν τε ποταμίων καὶ τῶν ἄλλων ναμάτων ἐπίλειψις ἐγένετο, \* \* \* ἦνίκα  
 μάλιστα κάμνει πάντα δίψει τὰ βοτὰ. ἀνθρώποι δὲ ὀλί-  
 10 γοι μὲν τινες διεφθάρησαν, ἃς οὐπω πρότερον ἐπειράσαν προσηνεγκάμενοι τροφάς· οἱ δὲ λοιποὶ μικροῦ δεῖν πάντες εἰς νόσους δεινὰς κατέπεσον, ἀρχομένας μὲν ἀπὸ μικρῶν ἐξανθημάτων, ἃ περὶ τοὺς ἔξωθεν  
 15 χρῶτας ἀνίστατο, κατασκηπτούσας δ' εἰς ἕλλη μεγάλα φαγεδαίναις ὅμοια, πονηρὰν μὲν ὄψιν, δεινὴν δὲ ἀλγηδόνα παρέχοντα. ἦν τε οὐδὲν λαμα τῆς περιωδυνίας τοῖς κάμνουσιν, ὅ τι μὴ κνησμοὶ καὶ σπαραγμοὶ συνεχεῖς λωβώμενοι τοῖς χρωσὶ μέχρι γυμνώσεως  
 20 ὀστέων. *Ambr.*

V. (5) Μετ' οὐ πολὺ δὲ οἱ δήμαρχοι Καμίλλῳ φθονήσαντες ἐκκλησίαν κατ' αὐτοῦ συνήγαγον, καὶ ἐξημίωσαν αὐτὸν δέκα μυριάσιν ἀσσαρίων, οὐκ ἀγνωοῦντες ὅτι πολλοστόν τι μέρος ὁ βίος ἦν αὐτῷ τοῦ κατακρίματος, ἀλλ' ἔν' ἀπαχθεῖς εἰς τὸ δεσποτήριον  
 25 ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀσχημονήσῃ ὁ τοὺς ἐπιφανεστάτους κατορθώσας πολέμους. τὸ μὲν οὖν ἀργύριον οἱ πελάται τε καὶ συγγενεῖς αὐτοῦ συνεισενέγκαντες ἐκ τῶν ἰδίων χρημάτων ἀπέδωκαν, ὥστε μηδεμιᾶς πειραθῆναι ὕβρεως· ὁ δ' ἀνὴρ ἀφόρητον ἠγρούμενος τὸν  
 30 προπηλατισμὸν ἐκχωρεῖν ἔγνω τῆς πόλεως. (6) Γενόμενος δὲ πλησίον τῶν πυλῶν καὶ τοὺς παρόντας

ἀσπασάμενος ὀλοφυρομένους καὶ δακρύνοντας, οἷου  
στερέσθαι μέλλοιεν ἀνδρός, πολλὰ κατὰ τῶν παρειῶν  
ἀφελὲς δάκρυα καὶ τὴν κατασχούσαν αὐτὸν ἀσχημο-  
σύνην ἀνακλαυσάμενος, εἶπεν· ὦ θεοὶ καὶ δαίμονες,  
5 ἔφοροι τῶν ἀνθρώπων ἔργων, ὑμᾶς ἀξιῶ δικαστὰς  
γενέσθαι μοι τῶν τε πρὸς τὴν πατρίδα πολιτευμάτων  
καὶ παντὸς τοῦ παρεληλυθότος βίου· ἔπειτ', ἐὰν μὲν  
ἔνοχον εὐρηγέ με ταῖς αἰτίαις, ἐφ' αἷς ὁ δῆμος κατε-  
ψηφίσάτο μου, πονηρὰν καὶ ἀσχήμονα τελευτήν δοῦ-  
10 ναι τοῦ βίου· ἐὰν δ' ἐν ἅπασιν, οἷς ἐπιστεύθη ὑπὸ  
τῆς πατρίδος ἐν εἰρήνῃ τε καὶ κατὰ πολέμους, εὐσεβῆ  
καὶ δίκαιον καὶ πάσης ἀσχήμονος ὑποψίας καθαρὸν,  
τιμωροῦς γενέσθαι μοι, τοιούτους ἐπιστήσαντας τοῖς  
ἡδίκηκόσι κινδύνους καὶ φόβους, δι' οὓς ἀναγκασθή-  
15 σονται μηδεμίαν ἄλλην ἐλπίδα σωτηρίας ὀρῶντες ἐπ'  
ἐμὲ καταφυγεῖν. ταῦτ' εἰπὼν εἰς πόλιν Ἀρδέαν  
ᾤχετο. *Ambr.*

VI. (7) Ἐπήκουσαν δὲ αὐτοῦ ταῖς εὐχαῖς οἱ θεοί·  
καὶ ὑπὸ Κελτῶν μετὰ μικρὸν ἢ πόλις ἐάλω, ἄνευ  
20 τοῦ Καπιτωλίου. καταφυγόντων δὲ ἐν αὐτῷ τῶν  
περιφανεστέρων· τὸ γὰρ ἄλλο πλῆθος ἐν ταῖς Ἰταλι-  
καῖς φεῦγον διεσπάρη πόλεσι· καὶ πολιορκουμένων ὑπὸ  
Κελτῶν, οἱ πρὸς τὴν Οὐιεντιανῶν πόλιν καταφυγόν-  
τες Ῥωμαῖοι Καιδίκιον τινα στρατοπεδιάρχην ποιούσιν·  
25 ὁ δὲ Κάμιλλον ἀποδείκνυσι καὶ ταῦτα ἀπόντα ἠγε-  
μόνα πολέμου καὶ εἰρήνης ἐξουσίαν ἔχοντα αὐτοκρά-  
τορα. καὶ γενόμενος ἠγεμῶν τῆς προεβείας παρε-  
κάλει Κάμιλλον διαλλαγῆναι πρὸς τὴν πατρίδα, τὰς  
συμφορὰς ἐν αἷς ἦν ἐπιλογισάμενον, δι' ἃς ὑπέμι-  
30 νεν ἐπὶ τὸν ὑβρισθέντα ὑφ' ἐαυτῆς καταφυγεῖν.  
(8) Ὑποτυχῶν δὲ ὁ Κάμιλλος εἶπεν· οὐδέομαι πα-  
ρακλήσεως, ὦ Καιδίκιε· αὐτὸς γάρ, εἰ μὴ θάττου

ὑμεῖς ἀφίκεσθε κοινωνεῖν με τῶν πραγμάτων ἀξιοῦν-  
τες, ἔτοιμος ἦν ταύτην ἄγων τὴν δύναμιν, ἣν παρ-  
οῦσαν ὀρατέ μοι, πρὸς ὑμᾶς ἤκειν. ὑμῖν δέ, ὦ  
θεοὶ τε καὶ δαίμονες, ὅσοι τὸν ἀνθρώπινον ἐποπτεύ-  
ετε βίον, ὧν τε ἤδη τετιμῆκατέ μοι πολλὴν οἶδα χάριν,  
5 καὶ περὶ τῶν μελλόντων εὐχόμεαι καλὴν καὶ εὐτυχε-  
τῆ πατρίδι γενέσθαι τὴν ἐμὴν κἀθοδου. εἰ δὲ ἐνῆν  
ἀνθρώπῳ τὰ μέλλοντα συμβῆσεσθαι προιδεῖν, οὐδέ-  
ποτ' ἂν εὐξάμην ἐς τοιαύτας ἐλθούσαν τυχὰς τὴν  
πατρίδα δεηθῆναί μου· μυριάκις δ' ἂν εἰλόμην ἀξί-  
10 λον γενέσθαι μοι καὶ ἄτιμον τὸν μετὰ ταῦτα βίον, ἢ  
βαρβάρων ἀνθρώπων ὁμότητι γενομένην τὴν Ῥώμην  
ὑποχείριον ἐπιθεῖν καὶ ἐν ἐμοὶ μόνῳ τὰς λοιπὰς ἐλ-  
πίδας τῆς σωτηρίας ἔχουσαν. ταῦτα εἰπὼν καὶ τὰς  
δυνάμεις παραλαβὼν ἄφνω τε τοῖς Κελτοῖς ἐπιφα-  
15 νελὲς εἰς φυγὴν αὐτοὺς τρέπει, καὶ ἐμπεσὼν ἀσυν-  
τάκτοις τε καὶ τεταραγμένοις δίκην προβάτων κατ-  
έσφαξεν. *Ambr.*

VII. (9) Ἔτι δ' οὖν πολιορκουμένων τῶν ἐν τῷ  
Καπιτωλίῳ καταφυγόντων, νέος τις ἀπὸ τῆς Οὐιεν-  
20 τανῶν πόλεως ὑπὸ Ῥωμαίων πεμφθεὶς εἰς τοὺς ἐν  
τῷ Καπιτωλίῳ καὶ λαθῶν τοὺς αὐτόθι φυλάσσοντας  
Κελτοὺς ἀνῆλθέ τε καὶ εἰπὼν ὅσα ἔδει πάλιν ὑπὸ  
νύκτα ἀπηλλάγη. ὡς δὲ ἡμέρα ἐγένετο τῶν Κελτῶν  
τις ἰδὼν τὰ ἰχνη λέγει πρὸς τὸν βασιλέα· ὁ δὲ συγκα-  
25 λέσας τοὺς ἀνδρειοτάτους, ἐδήλωσεν αὐτοῖς τὴν τοῦ  
Ῥωμαίου ἄνοδον· ἔπειτ' αὐτοὺς ἤξλου τὴν αὐτὴν  
ἐκείνῳ παρασχομένους τόλμην πειραῖσθαι τῆς ἐπὶ τὸ  
φρούριον ἀναβάσεως, πολλὰς ὑπισχνούμενος τοῖς  
ἀναβάσι δωρεάς. ὁμολογησάντων δὲ συχνῶν παρήγ-  
30 γειλε τοῖς φύλαξιν ἡσυχίαν ἄγειν, ἵνα καθεύδου  
αὐτοὺς ὑπολαβόντες οἱ Ῥωμαῖοι καὶ αὐτοὶ πρὸς ὕπνου

τράπωνται. (10) Ἦδη δὲ τῶν πρώτων ἀναβεβηκότων καὶ τοὺς ὑστερίζοντας ἀναδεχομένων, ἵνα πλείους γενόμενοι τότε ἀποσφάξωσι τοὺς ἐν ταῖς φυλακαῖς καὶ καταλάβωσι τὸ ἔθνος, ἀνθρώπων μὲν οὐδεὶς 5 ἔμαθεν, ἱεροὶ δὲ τινες Ἦρας χήνες ἐν τῷ τεμένει τρεφόμενοι καταβοῶντες ἅμα καὶ τοῖς βαρβάροις ὁμοίως χωροῦντες κατήγοροι γίνονται τοῦ κακοῦ. ἐκ δὲ τούτου ταραχὴ τε καὶ κραυγὴ καὶ [ὁ] δρόμος ἀπάντων ἦν παρακαλούντων ἀλλήλους ἐπὶ τὰ ὄπλα 10 καὶ οἱ Κελτοὶ δὲ πλείους ἤδη γεγονότες ἐχώρουν ἐνδοτέρω. *Amb.*

VIII. (11) Ἐνθάδε τις τῶν ἐσχηκότων τὴν ὑπατον ἀρχὴν, Μάρκος Μάλλιος, ἀρπάσας τὰ ὄπλα καὶ συστὰς τοῖς βαρβάροις τὸν τε πρῶτον ἀναβάντα καὶ 15 κατὰ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ τὸ ξίφος φέροντα φθάσας παῖσι κατὰ τοῦ βραχίονος καὶ ἀποκόπτει τὸν ἀγκῶνα· καὶ τὸν ἐπὶ τούτῳ πρὶν [ἦ] εἰς χεῖρας ἐλθεῖν ὀρθῶ τῷ θυρεῶ πατάξας εἰς τὸ πρόσωπον ἀνατρέπει καὶ κείμενον ἀποσφάττει· ἔπειτα τοὺς ἄλλους τεταρα- 20 γμένους ἤδη ἐλαύνων ὑπὸ πόδας, οὓς μὲν ἀπέκτει- νεν, οὓς δὲ κατὰ τοῦ κρημοῦ διώκων ἐξέχευεν. ἀντὶ ταύτης εὔρετο τῆς ἀριστείας τὴν πρόπουσαν τῷ τότε καιρῷ δωρεὰν παρὰ τῶν κατεχόντων τὸ Καπιτώλιον, οἴνου καὶ ζέας τὸ ἐφήμερον ἀνδρὸς ἐκάστου τρεφῆς.

(12) Περὶ δὲ τῶν ἐν ἐκείνῳ τῷ τόπῳ τὴν φυλακὴν ἐκλιπόντων, καθ' ὃν ἀνέβησαν οἱ Κελτοί, ζητήσεως γενομένης ὅ τι χρὴ ποιεῖν, ἢ μὲν βουλὴ θάνατον ἀπάντων κατεψηφίσατο· ὁ δὲ δῆμος ἐπεικέστερος 25 γενόμενος ἐνὸς τοῦ ἡγεμόνος αὐτῶν ἠρκέσθη τῇ κο- λάσει. ἵνα δὲ φανερὸς γένοιτο τοῖς βαρβάροις ὁ θάνατος αὐτοῦ, δεθεὶς τὰς χεῖρας ὀπίσω κατὰ τοῦ κρημοῦ βάλλεται πρὸς αὐτούς. ἐκείνου δὲ τιμωρη-

θέντος οὐδὲν ἔτι θάθυμον ἦν τῶν περὶ τὰς φυλακὰς, ἀλλὰ παννύχιοι διετέλουν ἅπαντες ἐργοηγοῦτες· ὥστε τοὺς Κελτοὺς ἀπογνόντας δι' ἀπάτης ἢ κλοπῆς καθέξειν τὸ φρούριον περὶ λύτρων διαλέγεσθαι, ἃ 5 τοῖς βαρβάροις δόντες κομιοῦνται τὴν πόλιν. *Amb.*

VIII. (13) Ἐπεὶ δὲ τὰ ὄρνια ἐπετέλεσαν, καὶ τὸ χροσίου οἱ Ῥωμαῖοι κατήνεγκαν, σταθμὸς μὲν ἦν, ὃν ἔδει τοὺς Κελτοὺς λαβεῖν, εἰ καὶ κ' ἄλαντα· 10 τεθέντος δὲ τοῦ ζυγοῦ, πρῶτον μὲν αὐτὸ τὸ τάλαν- τον ὁ Κελτὸς βαρύτερον τοῦ δικαίου παρῆν φέρων, ἔπειτα ἀγανακτούντων πρὸς τοῦτο τῶν Ῥωμαίων τοσοῦτου ἐδέησε μετριάσαι περὶ τὸ δίκαιον, ὥστε καὶ 15 τὴν μάχαιραν ἅμα τῇ θήκῃ καὶ τῷ ζωστήρι περιε- λόμενος ἐπέθηκα τοῖς σταθμοῖς. τῷ δὲ ταμίᾳ πυν- θανομένῳ, τί θέλει τοῦτ' εἶναι τὸ ἔργον, ἀπεκρίνατο 20 τούτοις τοῖς ὀνόμασιν· ὀδύνη τοῖς κεκρατημένοις. ἐπεὶ δὲ ὁ συγκείμενος σταθμὸς οὐκ ἐξεπληροῦτο διὰ τὴν τοῦ Κελτοῦ πλεονεξίαν, ἀλλὰ καὶ τὸ τρίτον ἐνέ- 25 δει μέρος, ἀπήεσαν οἱ Ῥωμαῖοι χρόνον εἰς συμπο- ρισμόν τοῦ λείποντος αἰτησάμενοι· ὑπέμειναν δὲ 30 ταύτην τὴν ὑπερηφανίαν τῶν βαρβάρων οὐθὲν ἐγνωκότες τῶν ἐπὶ τοῦ στρατοπέδου πραττομένων παρὰ Καϊδιλίου καὶ Καμίλλου, ὡς ἔφαμεν. *Amb.*

X. (14) Ἡ δὲ αἰτία τῆς ἐς Ἰταλίαν τῶν Κελ- τῶν ἀφίξεως τοιάδε ἦν. Λοκῶμαν τις Τυρρηνοῦν 25 ἡγεμῶν μέλλων τελευτᾶν τὸν βίον ἀνδρὶ πιστῷ Ἄρροντι ὄνομα παρακατέθετο τὸν υἱὸν ἐπιτροπεύειν· τελευτήσαντος δὲ τοῦ Τυρρηνοῦ παραλαβὼν τὴν ἐπιμελείαν τοῦ παιδίου ὁ Ἄρρων ἐπιμελῆς καὶ δι- 30 καιος γέγονε τῆς πίστεως φύλαξ, καὶ εἰς ἄνδρας ἐλθόντι πᾶσαν ἀπέδειξε τῷ παιδί τὴν καταλειφθεῖ- σαν ὑπὸ τοῦ πατρὸς οὐσίαν. ἀνθ' ὧν οὐχ ὁμοίως

ἐκομίσατο παρὰ τοῦ μειρακίου χάριτας. (15) Οὕσης γὰρ αὐτῷ γυναικὸς εὐμόρφου καὶ νέας, ἧς περὶ πλείστου τὴν κοινωνίαν ἐποιεῖτο, σῶφρονος τὸν ἄλλον χρόνον ἅπαντα γενομένης ἐρασθεῖς ὁ νεανίσκος ἅμα 5 τῷ σώματι καὶ τὴν διανοίαν τῆς ἀνθρώπου διέφθειρεν, καὶ οὐκέτι κρύβδα ἀλλ' ἀναφανδὸν ἐξήτει αὐτῇ διαλέγεσθαι. ἀχθόμενος δὴ ὁ Ἄρρων τῷ ἀποσπασμῷ τῆς γυναικὸς, καὶ ἐφ' οἷς ὑβρίζετο πρὸς ἀμφοτέρων δυσανασχετῶν, τιμωρίαν δὲ οὐ δυνάμενος παρ' αὐ- 10 τῶν λαβεῖν, ἀποδημίαν ἐστείλατο, πρόφασιν αὐτῆς ποιησάμενος ἐμπορίαν. ἀσμένως δὲ τοῦ νεανίσκου τὴν ἀπαλλαγὴν αὐτοῦ δεξαμένου καὶ παρασχόντος ὄσων εἰς τὴν ἐμπορίαν ἐδεῖτο, πολλοὺς μὲν ἀσκούς οἴνου τε καὶ ἐλαίου ταῖς ἀμάξαις ἐπιθέμενος, πολ- 15 λούς δὲ φορμούςς σύκων ἤγεεν εἰς τὴν Κελτικὴν. *Ambr.*

XI. (16) Οἱ δὲ Κελτοὶ οὔτε οἶνον ἀμπέλινον εἰ- δότες τμηκαῦτα οὔτε ἐλαιον οἶον αἰ παρ' ἡμῖν ἐλαῖαι φέρουσιν, ἀλλ' οἶνω μὲν χρώμενοι κριθῆς σαπίσης 20 ἐν ὕδατι χυλῷ δυσώδει, ἐλαίῳ δὲ συεῖω στέατι πεπαλαιωμένῳ τὴν τε ὀσμὴν καὶ τὴν γεῦσιν ἀτόπω, τότε δὲ πρῶτον ἀπολαύσαντες ὧν οὕτω ἐρεύσαντο καρπῶν, θαυμαστάς ὄσας ἐφ' ἐκάστῳ ἐλάμβανον ἠδονάς, καὶ τὸν ξένου ἠρώτων, πῶς τε γίνεται τού- 25 των ἐκαστου καὶ παρὰ τίσιν ἀνθρώποις. (17) Ὁ δὲ Τυρρηνὸς πρὸς αὐτοὺς φησιν, ὅτι γῆ μὲν ἐστὶν ἢ τούτους ἐκφέρουσα τοὺς καρποὺς πολλή καὶ ἀγαθή, νέμονται δὲ αὐτὴν ὀλίγοι τινὲς ἀνθρώποι καὶ τὰ εἰς πόλεμον οὐδὲν ἀμείνους γυναικῶν ὑπέθετό τε αὐ- 30 τοῖς μὴ δι' ὠνῆς αὐτὰ παρ' ἐτέρων ἐτι λαμβάνειν, ἀλλ' ἐκβαλόντας τοὺς τότε κυρίους ὡς οἰκεία καρποῦσθαι. τούτοις δὴ τοῖς λόγοις οἱ Κελτοὶ πειθό-

μενοι ἦλθον εἰς Ἰταλίαν καὶ Τυρρηνῶν τοὺς καλου- μένους Κλουσίους, ὅθεν ἦν καὶ ὁ πείσας αὐτούς, ἐπολέμουν. *Ambr.*

XII. (18) Ἀποσταλέντων δὲ πρεσβευτῶν ἐκ Ρώμης ἐπὶ Κελτοὺς, ἐπεὶ ἤκουσεν εἰς τῶν πρεσβευόντων 5 Κόιντος Φάβιος τοὺς βαρβάρους ἐπὶ προνομίην ἐξελη- λυθέναι, συνάπτει πόλεμον αὐτοῖς καὶ τὸν τῶν Κελτῶν ἡγεμόνα ἀναίρει· ἀποστείλαντες δὲ εἰς Ρώμην οἱ βάρ- βαροι ἠξίουν παραδιδόναι σφίσι τὸν ἄνδρα καὶ τὸν 10 ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐκδότους, ποινὰς ὑπέξοντας τῶν ἀπο- λωλότων. (19) Παρελκούσης δὲ τῆς βουλῆς τὰς ἀπο- κρίσεις, ἐπὶ τὴν Ρώμην τὸν πόλεμον ἀναγκάως οἱ Κελτοὶ μετήγαγον. Οἱ δὲ Ῥωμαῖοι ἀκούσαντες ἐξῆ- 15 εσαν ἐκ τῆς πόλεως ἄγοντες ἐκ μὲν τῶν ἐπιλέκτων τε καὶ κατηθλημένων ἐν τοῖς πολέμοις στρατιωτῶν 15 τέτταρα τάγματα ἐντελή· ἐκ δὲ τῶν ἄλλων πολιτῶν τοὺς κατοικιδίους τε καὶ σχολαίους καὶ ἦτιον ὁμιλη- κότητας πολέμοις πλείους ὄντας ἀριθμῶ τῶν ἐτέρων. τούτους δὴ τρεψάμενοι οἱ Κελτοὶ [καὶ] σύμπασαν τὴν 20 Ῥώμην ἄνευ τοῦ Καπιτωλίου παρεστῆσαντο. *Ambr.*

Νέπετος πόλις Ἰταλίας, Διονύσιος τρισκαιδεκάτῳ Ῥωμαϊκῆς ἀρχαιολογίας, τὸ ἔθνικόν Νεπεσίνοσ. *Stephanus Byz. s. v. Νέπετος.*

## EXCERPTA

EX

## LIBRO XIII.

I. (1) Ἡ δὲ Κελτική κείται μὲν ἐν τῷ πρὸς τὴν ἑσπέραν καθήκοντι τῆς Εὐρώπης μέρει, μεταξὺ τοῦ τε βορείου πόλου καὶ τῆς ἰσημερινῆς δύσεως· τετράγωνος δὲ οὕσα τῷ σχήματι, τοῖς μὲν Ἀλπείοις ὄρεσι μεγίστοις οὗσι τῶν Εὐρωπαϊῶν συνάπτει κατὰ τὰς ἀνατολάς· τοῖς δὲ Πυρρηναίοις κατὰ μεσημβρίαν τε καὶ νότον ἄνεμον· τῇ δὲ ἕξω στηλῶν Ἡρακλείου θαλάττῃ κατὰ τὰς δύσεις· τῷ δὲ Σκυθικῷ τε καὶ 10 Θρακίῳ γένει κατὰ βορέαν ἄνεμον καὶ ποταμὸν Ἴστρου, ὃς ἀπὸ τῶν Ἀλπείων καταβαίνων ὄρων μεγίστος τῶν τῆδε ποταμῶν καὶ πᾶσαν τὴν ὑπὸ τοῖς ἄρκτοις ἠπειρον διελθὼν εἰς τὸ Ποντικὸν ἐξερεύεται πέλαγος. (2) Τοσαύτη δὲ οὕσα τὸ μέγεθος, ὅση μὴ πολὺ 15 ἀποδεῖν τετάρτη λέγεσθαι μοῖρα τῆς Εὐρώπης, εὐδρός τε καὶ πείρα καὶ καρποῖς δαψιλῆς καὶ κτήνεσιν ἀρίστη νέμεσθαι, σχίζεται μέση ποταμῷ Ῥήνῳ, μεγίστῳ μετὰ τὸν Ἴστρου εἶναι δοκοῦντι τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν. καλεῖται δ' ἡ μὲν ἐπὶ τάδε τοῦ 20 Ῥήνου Σκύθαις καὶ Θραξίν ὀμοροῦσα Γερμανία, μέχρι δρυμοῦ Ἐρκυνίου καὶ τῶν Ῥιπαίων ὄρων

καθήκουσα· ἡ δ' ἐπὶ θάτερα τὰ πρὸς μεσημβρίαν βλέποντα μέχρι Πυρρήνης ὄρους, ἡ τὸν Γαλατικὸν κόλπον περιλαμβάνουσα, Γαλατία τῆς θαλάττης ἐπώνυμος. (3) Κοινῶ δ' ὀνόματι ἡ σύμπασα πρὸς Ἑλλήνων καλεῖται Κελτική, ὡς μὲν τινὲς φασιν, 5 ἀπὸ τινος γίγαντος Κελτοῦ αὐτόθι δυναστεύσαντος. ἄλλοι δὲ ἐξ Ἡρακλέους καὶ Ἀστερόπης τῆς Ἀτλαντίδος δύο γενέσθαι μυθολογοῦσι παῖδας, Ἴβηρον καὶ Κελτόν, οὓς θέσθαι ταῖς χώραις, ὧν ἤρξαν ἀμφοτέροι, τὰς ὀνομασίας ἀφ' αὐτῶν. οἱ δὲ ποταμὸν εἶναι 10 τινα λέγουσι Κελτόν ἐκ τῆς Πυρρήνης ἀναδιδόμενον, ἀφ' οὗ πρῶτον μὲν τὴν συννεγγίς, ἔπειτα δὲ καὶ τὴν ἄλλην χώραν σὺν χρόνῳ κληθῆναι Κελτικὴν. φασὶ δὲ καὶ τινες, ὅτι τοῖς πρώτοις Ἑλλήσιν εἰς τὴνδε τὴν γῆν περαιομένους αἱ νῆες ἀνέμῳ βιαίῳ φερό- 15 μенаι κατὰ τὸν κόλπον ἐκελσαν τὸν Γαλατικόν, οἱ δὲ ἄνδρες, ἐπειδὴ τοῦ αἰγιαλοῦ ἐλάβοντο, Κελτικὴν ἀπὸ τοῦ συμβάντος αὐτοῖς πάθους τὴν χώραν ἐκάλεσαν, ἣν ἐνὸς ἀλλαγῆ γραμματος οἱ μεταγενέστεροι Κελτικὴν ὀνόμασαν. *Ambr.* 20

II. (4) Ἀθήνησι μὲν ἐν τοῦ γηγενεὺς Ἐρεχθέως τῷ σηκῷ ἱερὰ τις ὑπ' Ἀθηναῖς φυτευθεῖσα ἐλαία κατὰ τὴν ἔριν τὴν γενομένην αὐτῇ πρὸς Ποσειδῶνα περὶ τῆς χώρας, ἅμα τοῖς ἄλλοις τοῖς ἐν τῷ ἱερῷ οὖσιν ἐμπροσθεῖσα ὑπὸ τῶν βαρβάρων, ὅτε τῆς 25 ἀκροπόλεως ἐκράτησαν, δευτέρῃ τῆς ἐμπροσθεως ἡμέρᾳ βλαστὸν ἐκ τοῦ στελέχους ἀνήκευ ὅσον τε πηχυαῖον, δῆλον ἅπασι ποιῆσαι βουλομένων τῶν θεῶν, ὅτι ταχέως ἑαυτὴν ἡ πόλις ἀναλαβοῦσα βλαστὸν ἀντὶ τῶν παλαιῶν ἐξοίσει νέους. (5) Ἐν δὲ 30 τῇ Ῥώμῃ καλιὰς τις Ἄρεος ἱερὰ περὶ τὴν κορυφὴν ἰδρυμένη τοῦ Παλατιοῦ συγκатаφλεγείσα ταῖς πέριξ

οικίαις ἕως ἐδάφους, ἀνακαθαιρομένων τῶν οἰκοπέ-  
δων ἕνεκα τῆς ἐπισκευῆς, ἐν μέσῃ τῇ περικαύστῳ  
σποδῷ τὸ σύμβολον τοῦ συνοικισμοῦ τῆς πόλεως  
διέσωσεν ἀπαθές, ῥόπαλον ἐκ θατέρου τῶν ἄκρων  
5 ἐπικάμπιον, οἷα φέρουσι βουκόλοι καὶ νομεῖς οἱ μὲν  
καλυρόπας, οἱ δὲ λαγωβόλα καλοῦντες, ᾧ Ῥωμύλος  
ὀρυμθενόμενος διέγραψε τῶν οἰωνῶν τὰς χάρας, ὅτε  
τὴν πόλιν οἰκίσειν ἐμελλεν.

Εὐζώνῳ καὶ οὐδὲν ἕξω τῶν ὄπλων φερούσῃ  
10 στρατιᾷ.

Κρότου καταρραγέντος, ὡς ἐπὶ μεγίστῳ μὲν θεά-  
ματι, καλλίστῳ δ' ἀκούσματι, οἳ τε βεβαίως ἄποροι  
καὶ οἱ πλαττύμενοι τὴν εἰς τὸ παντελές ἀπορίαν.  
Ambr.

15 III. (8) Ὅτι Μάρκος Φούριος ὁ δικτάτωρ ἀνὴρ <sup>2309</sup>  
ἦν τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἀκμασάντων ἡλικίαν τὰ τε  
πολέμια λαμπρότατος καὶ τὰ πολιτικά φρονιμώτατος.  
Vales.

III. (6) Μάλλιος ὁ ἀριστεύσας, ὅτε εἰς τὸ Καπι-  
20 τώλιον Ῥωμαῖοι κατέφυγον, κινδυνεύων διὰ τυραν-  
νίδος ἐπίθεσιν ἀπολέσθαι, βλέψας εἰς τὸ Καπιτώ-  
λιον καὶ τὰς χεῖρας ἐκτείνας εἰς τὸν ἐν αὐτῷ νεῶν  
τοῦ Διὸς εἶπεν· οὐδ' ἐκεῖνος ὁ τόπος ἰκανὸς ἔσται  
με σῶσαι, ὃν ὑπὸ τῶν βαρβάρων κρατηθέντα διέ-  
25 σωσα ὑμῖν ἐγώ; ἀλλὰ καὶ τότε ὑπὲρ ὑμῶν ἀπέθνη-  
σκον καὶ νῦν ὑφ' ὑμῶν ἀποθανοῦμαι. τότε μὲν οὖν  
συμπαθήσαντες ἀφῆκαν αὐτόν· ὕστερον δὲ κατὰ  
κρημνοῦ ἐρρίφη. Ambr.

V. (7) Κρατήσας τῶν πολεμίων καὶ τὴν στρα-  
30 τῖαν ἐπικλύσας ταῖς ἀφελείαις Τίτος Κοίντιος δικτα-  
τορεύων ἐν ἡμέραις ἑννέα πόλεις ἑννέα πολεμίων  
ἔλαβεν.

Ἀηφθέντες ἀμφοτέρωθεν ἀγρηθδὸν οἱ θεοστურγεῖς  
κατεκόπησαν. Ambr.

2410 VI. (8) Ὅτι οἱ Ῥωμαῖοι μεγαλοπρεπεῖς. τῶν γὰρ  
ἄλλων ὀλίγου δεῖν πάντων ἐν τε τοῖς κοινοῖς τῶν  
πόλεων πράγμασι καὶ ἐν τοῖς ἰδίους βίοις πρὸς τὰ 5  
τελευταῖα τῶν συμβαινόντων τὰς διανοίας μεθαρ-  
μοττομένων, καὶ πολλάκις ἔχθρας τε μεγάλας διὰ τὰς  
τυχούσας φιλανθρωπίας καταλυομένων, καὶ φιλίας  
πολυχρονίουσ διὰ μικρὰ καὶ φανῶλα προσκρούματα  
διαιρούντων, ἐκεῖνοι τούναντιον ἐπὶ τῶν φίλων 10  
ᾧοντο χοῖναι ποιεῖν, ταῖς τε παλαιαῖς εὐεργεσίαις  
χαρίζεσθαι τὰς ἐπὶ τοῖς προσφάτοις ἐγγλήμασιν  
ὀργάς. (9) Θαυμαστὸν μὲν δὴ καὶ τοῦτο τῶν ἀν-  
δρῶν· λέγω δὲ τὸ μηδεὶ μνησικακῆσαι τῶν Τυ-  
σκανῶν, ἀλλὰ πάντας ἀφεῖναι τοὺς ἐξαμαρτόντας 15  
ἀζημίους· πολλῶ δ' ἔτι τούτου θαυμασιώτερον, ὃ  
μετὰ τὴν ἄφρσιν τῶν ἐγγλημάτων αὐτοῖς ἐχαρίσαντο.  
2411 σκοπούμενοι γὰρ ὡς μηδὲν ἔτι τοιοῦτον ἐπὶ τῇ  
πόλει γενήσεται μηδ' ἀφορμὴν νεωτερισμοῦ λήψονται  
τινες, οὔτε φρουρὰν εἰς τὴν ἀκρόπολιν αὐτῶν ᾧοντο 20  
δεῖν εἰσάγειν, οὔτε παρὰ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀν-  
δρῶν ὄμηρα λαμβάνειν, οὔτε ὄπλα τοὺς ἔχοντας  
ἀφελέσθαι, οὔτ' ἄλλο σημεῖον οὐδὲν ἀπιστουμένης  
φιλίας ποιῆσαι· μίαν δὲ πράξιν οἰόμενοι ἅπαντας  
τοὺς κατὰ συγγένειαν ἢ φιλίαν προσήκοντας ἀλλή- 25  
λοις τὴν τῶν ἀγαθῶν ἰσομοιρίαν, πολιτείαν ἐγνωσαν  
τοῖς κρατηθεῖσι χαρίσασθαι, πάντων μεταδόντες  
ὡν τοῖς φύσει Ῥωμαίοις μετῆν, (10) οὐ τὴν αὐ-  
τὴν διάνοιαν λαβόντες τοῖς ἀξιοῦσι τῆς Ἑλλάδος  
ἄρχειν οὔτ' Ἀθηναίοις οὔτε Λακεδαιμονίοις· τί γὰρ 30  
δεῖ περὶ τῶν ἄλλων Ἑλλήνων λέγειν; Ἀθηναῖοι μὲν  
2412 γὰρ Σαμίους ἀποίκους ἑαυτῶν ὄντας, Λακεδαιμόνιοι



δὲ Μεσσηνίους ἀδελφῶν οὐδὲν διαφέροντας, ἐπειδὴ προσέκρουσαν αὐτοῖς τι, διαλυσάμενοι τὴν συγγένειαν οὕτως ὡμῶς διεχειρίσαντο καὶ θηριωδῶς, ἐπειδὴ τὰς πόλεις αὐτῶν ὑποχειρίους ἔλαβον, ὥστε μηδὲ τοῖς ἀγριωτάτοις τῶν βαρβάρων ὑπερβολὴν τῆς εἰς τὰ ὁμόφυλα παρανομίας παραλιπεῖν. (11) Μυρία τοιαῦτα λέγειν ἂν τις ἔχοι ταῖς πόλεσι ταύταις ἡμαρτημένα, ἃ παρήμι, ἐπεὶ καὶ τούτων μεμνημένους ἄχθομαι· τὸ γὰρ Ἑλληνικὸν οὐκ ὀνόματι διαφέρειν τοῦ βαρβάρου ἡξίου, οὐδὲ διαλέκτου χάριν, ἀλλὰ συνέσει καὶ χρηστῶν ἐπιτηδευμάτων προαιρέσει, μάλιστα δὲ τῷ μηδὲν τῶν ὑπὲρ τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν πρὸς ἀλλήλους παρανομεῖν. ὅσοις μὲν οὖν ταῦτα ἐπὶ πλεῖον ὑπῆρξεν ἐν τῇ φύσει, τούτους οἶμαι δεῖν λέγειν Ἑλληνας· ὅσοις δὲ τἀναντία βαρβάρους. καὶ τὰς μὲν ἐπιεικεῖς καὶ φιλανθρωπούς διανοίας τε καὶ πράξεις αὐτῶν Ἑλληνικὰς εἶναι λογίζομαι· τὰς δ' ὡμὰς καὶ θηριώδεις ἄλλως τε κἂν περὶ συγγενεῖς τε καὶ φίλους γένωνται βαρβαρικὰς. Τυσικλανοὶ μὲν δὴ πρὸς τῷ μηδὲν ἀφαιρεθῆναι τῶν σφετέρων ἀλούσης τῆς πόλεως, [ἀλλὰ] καὶ τὰ τῶν κεκρατηκότων ἀγαθὰ προσλαβόντες ἀπῆσαν. *Vales.*

VII. Ὅτι Σολπίκιος Ρούφος ἐπίκλησιν ἀνὴρ ἦν ἐν τε ταῖς πολεμικαῖς πράξεσιν ἐπιφανής, καὶ πολιτείας προαίρεσιν ἐξηλωκῶς τὴν διὰ μέσου. *Vales.*

VIII. (12) Οἱ Κελτοὶ τῇ Ῥώμῃ ἐκ δευτέρου στρατεύσαντες τὴν χώραν τὴν Ἀλβανὴν ἐπόρθουν· ἐνθα μὲν πολλῆς ἅπαντες ἐδωδῆς ἐμπιπλάμενοι, πολὺν δὲ πίνοντες ἄκρατον οἶνον· ἔστι δὲ ὁ τῆδε φρούμενος μετὰ τὸν Φαλερινὸν ἡδιστος οἶνος μελικράτῳ μάλιστα προσεμφορῆς· ὕπνον τε πλείονα τοῦ συνήθους αἰρούμενοι καὶ δίαταν ὑπὸ σκιαῖς ὡς τὰ

πολλὰ ἔχοντες, τοσαύτην ἔλαβον ἐπίδοσιν εἰς πολυσαρκίαν τε καὶ ἀπαλότητα, καὶ οὕτως ἐξεθλήνθησαν τὰς δυνάμεις, ὥσθ' ὅποτε γυμνάξαι ἐπιβάλοιντο τὰ σώματα καὶ διαπονεῖν ἐν τοῖς ὅπλοις, κόπτεσθαι μὲν ἄσθματι συνεχεῖ τὰ πνεύματα, ρεῖσθαι δ' ἰδρώτι πολλῷ τὰ μέλη, θάπτου δὲ ἀφίστασθαι τῶν πόνων ἢ κελευσθεῖεν ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων. *Ambr.*

VIII. (13) Ταῦτα μαθὼν ὁ τῶν Ῥωμαίων δικτάτωρ Κάμιλλος, συγκαλέσας τοὺς ἀμφ' αὐτὸν ἐδημηγόρησε πολλὰ παρορμώοντα εἰς τόλμαν, ἐν οἷς καὶ τάδε·

ὅπλα κρεῖττονα τῶν βαρβαρικῶν ἡμῖν μεμηχάνηται, θώρακες καὶ κράνη καὶ κνημίδες καὶ κραταιοὶ θυρεοί, ὅφ' ὧν ὅλα τὰ σώματα ἔχομεν ἐν φυλακῇ, ξίφη τε ἀμφίστομα καὶ ἀντὶ λόγχης οἰστός, ἄφυκτον βέλος· τὰ μὲν σκεπαστήρια, οἷα μὴ ῥαδίως ταῖς πληγαῖς εἴκειν, τὰ δ' ἀμυντήρια, ὡς δι' ἀπάσης φέρεσθαι προβολῆς. τῶν δὲ γυμναῖ μὲν αἱ κεφαλαί, γυμνὰ δὲ τὰ στέρνα καὶ αἱ λαγόνες, γυμνοὶ δὲ μηροὶ καὶ σκέλη μέχρι ποδῶν, ἔρυνά τε οὐδὲν ἕτερον, ὅ τι μὴ θυρεοί· ἀμυντήρια δὲ λόγχαι καὶ [μάχαιραι,] κοπίδες ὑπερμήκει. (14) Τὸ δὲ χωρίον, ἐν ᾧ τὸν ἀγῶνα ποιησόμεθα, σύνεργον ἡμῖν τοῖς ἀπὸ μετεώρου κατιοῦσιν ἐπὶ τὸ πρᾶνές· ἐκείνοις δὲ πολέμιον τοῖς ἐκ τοῦ χθαμαλοῦ πρὸς τὰ μετέωρα χωρεῖν ἀναγκαζομένοις. φοβείσθω δὲ μηδεὶς ὑμῶν μήτε τὸ πλῆθος τῶν πολεμίων μήτε τὸ μέγεθος· μηδ' εἰς ταῦτά τις πλεονεκτήματα αὐτῶν ὀρθῶν ἀθυμότερος πρὸς τὸν ἀγῶνα ἔστω, ἀλλ' ἐνθυμείσθω, πρῶτον μὲν ὅτι κρεῖττόν ἐστιν ἔλαττον στρατεύμα ἐπιστάμενον ἢ δεῖ πράττειν, ἢ πολὺ ἀμαθές· ἔπειθ' ὅτι τοῖς μὲν ὑπὲρ τῶν ἰδίων ἀγωνιζο-

μένους ἢ φύσις αὐτῆ θάρσος τέ τι πρὸς τοὺς κινδύνους παρίστησι, καὶ πνεῦμα ἐνθουσιῶδες ὥσπερ τοῖς θεοφορήτοις παρέχει· τοῖς δ' ἀρπάσαι τὰ ἀλλότρια προθυμουμένοις μαλακώτεραι πρὸς τὰ δεινὰ αἰ τόλμαι φιλοῦσι γίνεσθαι. (15) Ἄλλα μὴν οὐδ' οἷς δεδίδνουνται τοὺς πολεμίους καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἔλθειν ἐκδειματοῦσιν ὀρρωδητέα ἡμῖν ἔστιν, ὥσπερ ἀπείροις πολέμου. τί γὰρ [ἄν] θυνήσονται δεινὸν ἐργάσασθαι τοὺς ὁμοίως χωροῦντας αἰ βεθεῖται κόμαι καὶ τὸ ἐν τοῖς ὄμμασιν αὐτῶν πικρὸν καὶ ὁ βλοσυρὸς τῆς ὄψεως χαρακτήρ, αἱ τε δὴ πλημμελεῖς αὐταὶ σικρτήσεις καὶ τὰ διὰ κενῆς ἀνασεύματα τῶν ὄπλων καὶ οἱ πολλοὶ τῶν θυρεῶν κτύποι, καὶ ὅσα ἄλλα ὑπὸ βαρβάρου καὶ ἄφρονος ἀλαζονείας κατὰ τε μορφῆς καὶ φωνῆς ἐν ἀπειλαῖς πολεμίων σπαθᾶται, τίνα παρέχειν πέφυκε τοῖς ἀνοήτως ἐπιούσι πλεονεξίαν, ἢ τοῖς μετὰ λογισμοῦ παρὰ τὰ δεινὰ ἔστωσι φόβον; (16) Ταῦτα δὴ διανοηθέντες, ὅσοι τε ὑμῶν ἐν τῷ κατὰ Κελτῶν προτέρῳ πολέμῳ παρεγένεσθε καὶ ὅσοι διὰ νεότητα ἀπελείφθητε αὐτοῦ, οἱ μὲν ἵνα τὴν τότε ἀρετὴν μὴ καταισχύνητε τῇ νῦν δειλίᾳ, οἱ δ' ἵνα μηδὲν ἐνδεέστεροι γένησθε τῶν πρεσβυτέρων ἐν ἐπιδείξει καλῶν ἔργων, ἵτε, ὧ γενναῖοι παῖδες ἀγαθῶν ζηλωταὶ πατέρων, ἵτε ἀκαταπλήκτως ἐπ' αὐτούς, θεοὺς τε ἀρωγούς ἔχοντες, οἱ παρεξουσὶν ὑμῖν ἐξουσίαν, οἷας ἐβούλεσθε παρὰ τῶν ἐχθίστων ἀναπράξασθαι δίκας, καὶ στρατηγὸν ἐμέ, ᾧ πολλὴν μὲν εὐβουλίαν μαρτυρεῖτε, πολλὴν δ' εὐποτυίαν· μακάριον μὲν ἔχοντες τὸν ἀπὸ τοῦδε χρόνου, οἷς ἂν ἐγγένηται τὸν ἐπιφανέστατον τῇ πατρίδι στέφανον καταγαγεῖν, καλὴν δὲ καὶ ἀθάνατον εὐκλείαν καταλείψοντες ἀπὸ τοῦ θνητοῦ σώματος νηπίοις παισὶ καὶ γηραιοῖς γονεῦ-

σιν, οἱ ταύτην ἐκπληρώσοντες τὴν τοῦ βίου τελευτήν. οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγειν· κινεῖται γὰρ ἤδη τὸ βάρβαρον στρατεύμα χωροῦν ἐφ' ἡμᾶς. ἀλλ' ἄπιτε καὶ καθίστασθε εἰς τάξιν. *Ambr.*

X. (17) Ἡ μὲν οὖν τῶν βαρβάρων μάχη πολὺ τὸ θηριῶδες καὶ μαυικὸν ἔχουσα πλημμελής τις ἦν καὶ σοφίας τῆς ἐν ὄπλοις ἄμοιρος. τοτὲ μὲν γὰρ ἀνατείνοντες ἄνω τὰς μαχαίρας τὸν ἄγριον τρόπον ἔπαιον ὄλοις συνεπιπτοντες τοῖς ἑαυτῶν σώμασιν, ὥσπερ ὑλότομοι τινες ἢ σκαπανεῖς, τοτὲ δ' ἐκ τῶν πλαγίων ἀστοχάστους πληγὰς ἐξέφερον, ὡς αὐτοῖς σκεπαστηριοῖς ὅλα διακόψοντες τὰ σώματα τῶν ἀντιπολέμων· ἔπειτα τὰς ἀκμὰς τῶν σιδήρων ἀπέστρεφον. (18) Ἡ δὲ τῶν Ῥωμαίων ἀλκή καὶ πρὸς τὸ βάρβαρον αὐτῶν ἀντιτέχνησις εὐπαιδευτός τε ἦν καὶ πολὺ τὸ ἀσφαλές ἔχουσα. ἔτι γὰρ αὐτῶν ἀναιρομένων τὰς μαχαίρας ὑποδύνοντες ὑπὸ τοὺς βραχίονας καὶ τοὺς θυρεοὺς εἰς ὕψος ἀνατείνοντες, ἔπειτα γυροὶ καὶ βραχεῖς γινόμενοι, τὰς μὲν ἐκείνων πληγὰς ὑπερπετεῖς γινόμενας ἀπράκτους καὶ κενὰς ἐποίουν· αὐτοὶ δὲ ὄρθα τὰ ξίφη φέροντες βουβῶνάς τε αὐτῶν ἔπαιον καὶ λαγόνας διήρουν καὶ διὰ στέρων ἐπὶ τὰ σπλάγγνα τὰς πληγὰς ἐξέτεινον· ὅσους δὲ ταῦτα τὰ μέρη διὰ φυλακῆς ἔχοντας αἰσθόιντο, γονάτων ἢ σφυρῶν νεύρα διακείροντες ἐξέχεον ἐπὶ τὴν γῆν βεβρυχότας καὶ τοὺς θυρεοὺς ὀδακτίζοντας καὶ βοὴν ὠρυγῆ παρὰ τὴν ἀσπίδα προεξιμένους. (19) Ἡ τε δύναμις ὑπέλειπε πολλοὺς τῶν βαρβάρων, ἐκλυόμενων τῶν μελῶν ὑπὸ κόπων, καὶ τῶν ὄπλων τὰ μὲν ἀπεστόμωτο, τὰ δὲ συνετέθραυστο, τὰ δ' οὐκέτι προσωφελεῖν δυνατὰ ἦν· χωρὶς γὰρ τοῦ καταρροῦτος ἐκ τῶν τραυμάτων αἵματος, οἱ δὲ ὄλων ἐκχεό-

μεινοὶ τῶν σωμάτων ἰδρωῶτες οὔτε τὰς μαχαίρας εἶον κρατεῖν οὔτε τοὺς θυρεοὺς κατέχειν, περιολισθαινότων ταῖς λαβαῖς τῶν δακτύλων καὶ τὰς ἀφὰς οὐκέτι κραταίως ἔχοντων. Ῥωμαῖοι δὲ πολλῶν ἐθάδες οὔτε πόνων διὰ τὰς ἀρούτους καὶ συνεχεῖς στρατείας ἅπαντα τὰ δεινὰ γενναίως ἀνέφερον. *Ambr.*

XI. (20) Ἐν Ῥώμῃ πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα σημεῖα θεόπεμπτα γέρονε, μέγιστον δὲ ἀπάντων τόδε· τῆς ἀγορᾶς κατὰ τὸ μέσον μάλιστα διεσφάγη τι τῆς γῆς εἰς βάθος ἄβυσσον, καὶ τοῦτ' ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας διέμεινε. ψηφισαμένης δὲ τῆς βουλῆς, οἱ ἐπὶ τῶν Σιβυλλείων χρησμῶν ἐπισκεψάμενοι τὰ βιβλία εἶπον, ὅτι τὰ πλείστον ἄξια τῷ Ῥωμαίων δήμῳ λαβοῦσα ἡ γῆ συνελύσεται τε καὶ πολλὴν ἀφθουίαν εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἀπάντων αὐτῶν ἀνήσει. τοιαῦτα τῶν ἀνδρῶν ἀποφηραμένων ἀπαρχὰς ἕκαστος εἰς τὸ χάσμα ἔφερεν, ἃν ᾤετο δεῖν ἀγαθῶν τῇ πατρίδι, ἀπὸ τε καρπῶν πελάνους καὶ ἀπὸ χρημάτων ἀπαρχὰς. (21) Μάρκος δὲ τις Κούρτιος ἐν τοῖς πρώτοις τῶν νέων ἀριθμούμενος σωφροσύνης ἕνεκα καὶ τῆς κατὰ πολέμου ἀρετῆς, ἔφοδον αἰτησάμενος ἐπὶ τὴν βουλὴν εἶπεν, ὅτι τῶν πάντων ἐστὶν ἀγαθῶν χρῆμα κάλλιστον καὶ πόλει Ῥωμαίων ἀναγκαιότατον ἀνδρῶν ἀρετὴ· εἰ δὴ καὶ ταύτης ἀπαρχὴν τινα ἡ γῆ λάβοι καὶ γένοιτο ἕκων ὁ τοῦτο χαριούμενος τῇ πατρίδι, πολλοὺς ἀνήσει ἡ γῆ ἄνδρας ἀγαθοὺς. ταῦτ' εἰπὼν καὶ μηδενὶ παραχωρήσειν ἑτέρῳ τῆς φιλοτιμίας ταύτης ὑποσχόμενος, τὰ τε ὄπλα περιέθετο καὶ ἐπὶ τὸν πολεμιστὴν ἵππου ἀνέβη· συναχθέντος δ' ἐπὶ τὴν θέαν τοῦ κατὰ τὴν πόλιν ὄχλου, πρῶτον μὲν ἠῤῥατο τοῖς θεοῖς ἐπιτελῆ ποιῆσαι τὰ μαντεύματα καὶ πολλοὺς ἄνδρας ὁμοίους αὐτῷ δοῦναι τῇ πόλει τῇ Ῥωμαίων

γένεσθαι· ἔπειτ' ἔφεις τῷ ἵππῳ τὰς ἡνίας καὶ τὰ κέντρα προσβαλὼν ἔρριψε κατὰ τοῦ χάσματος ἑαυτόν. ἐπὶ δὲ αὐτῷ πολλὰ μὲν ἱερεῖα, πολλοὶ δὲ καρποί, πολλὰ δὲ χρῆματα, πολλὸς δὲ κόσμος ἐσθῆτος, πολλαὶ δὲ ἀπαρχαὶ συμπασῶν τεχνῶν δημοσίᾳ κατὰ τοῦ χάσματος ἔρριφθσαν· καὶ αὐτίκα ἡ γῆ συνῆλθεν. *Ambr.*

XII. (22) ὑπερφυῖες τι χρῆμα σώματος ἦν ὁ Κελτός, οἷος ὑπεραίρειν πολὺ τὴν κοινὴν φύσιν. *Ambr.*

Δικίνιος Στόλων, ὁ δεκάκις δημοαρχήσας καὶ τοὺς νόμους εἰσηγησάμενος ὑπὲρ ὧν ἡ δεκαετής στάσις ἐγένετο, ἄλοὺς ἐν δίκῃ καὶ ὑπὸ τοῦ δήμου καταψηφισθεὶς τίμημα ἀργυρικὸν εἶπεν, ὅτι θηρίον οὐδὲν ἐστὶ δῆμον μιαιώτερον, ὃς οὐδὲ τῶν σιτιζόντων ἀπέχεται. *Ambr.*

XIII. (23) Τοῦ ὑπάτου Μαρκίου Πριβερνάτας πολιορκούντος, ἐπεὶ οὐδεμίᾳ τούτοις σατηρίας ἐλλείψις ὑπολείπεται, ἔπρεσβευόντο πρὸς αὐτόν· τοῦ δ' εἰπόντος· φράσατέ μοι, πῶς αὐτοὶ κολάζετε τοὺς ἀφισταμένους ὑμῶν οἰκέτας; ἀποκρίνεται πρὸς αὐτόν ὁ πρεσβύτατος· ὡς δεῖ κολάζεσθαι τοὺς ποθοῦντας ἀπολαβεῖν τὴν ἐμφυτον ἐλευθερίαν. καὶ ὁ Μάρκιος ἀποδεξάμενος αὐτοῦ τὴν παρορησίαν φησὶν· ἔαν δὲ δὴ καὶ πεισθῶμεν ὑμῖν ἀφείναι τὰς ὀργάς, τίνα δώσετε πίστιν ὑπὲρ τοῦ μηδὲν ἔτι ποιῆσειν ἐχθρῶν ἔργον; ἀποκρίνεται πάλιν ὁ πρεσβευτής· ἐπὶ σοὶ τοῦτ' ἐστὶ καὶ τοῖς ἄλλοις Ῥωμαίοις, Μάρκιε· κομισάμενοι μὲν γὰρ ἅμα τῇ πατρίδι καὶ τὴν ἐλευθερίαν βεβαίως διὰ παντὸς ὑμῖν ἐσόμεθα φίλοι· δουλεύειν δ' ἀναγκασθέντες οὐδέποτε. ἠγάσθη τε δὴ τῆς μεγαλοφροσύνης τοὺς ἄνδρας ὁ Μάρκιος, καὶ τὴν πολιορκίαν ἔλυσε. *Ambr.*

# EXCERPTA

EX

LIBRO XV.

I. Τῶν Κελτῶν ἐπιστρατευσάντων τῇ Ῥώμῃ, καὶ τινος βασιλέως εἰς μονομαχίαν προκαλουμένου τῶν Ῥωμαίων ὅστις εἶη ἀνὴρ, Μάρκος Οὐαλέριος, εἰς τῶν χιλιάρχων, ἀπόγονος ὢν Οὐαλερίου Ποπλικόλα 5 τοῦ συνελευθερώσαντος ἀπὸ τῶν βασιλείων τὴν πόλιν, ἐξήκει τῷ Κελτῷ διαγωνίσασθαι. ὡς δὲ συνήεσαν ὁμόσει, κόραξ καθεζόμενος ἐπὶ τοῦ κράνους αὐτοῦ ἐκεκράγει τε δεινὸν εἰς τὸν βάρβαρον ὄρων, καὶ ὁπότε μέλλοι πληγὴν ἐκφέρειν, πηδῶν ἐπ' αὐτὸν τοτὲ 10 μὲν τοῖς ὄνυξιν ἤμυτιτε τὰς παρειάς, τοτὲ δὲ τῷ ὄνυγι τοὺς ὀφθαλμοὺς ἐκοπιεν, ὥστε τὸν Κελτὸν ἐξω γενέσθαι τῶν φρενῶν, οὗθ' ὅπως τὸν ἄνδρα ἀμύνοιτο δυνάμενον συμβαλεῖν, οὗθ' ὅπως τὸν κόρακα φυλάττοιτο. (2) Ὡς δὲ πολὺς ἐγεγόνει τῇ μάχῃ 15 χρόνος, ὁ μὲν Κελτὸς φέρων ἐπὶ τὸν Οὐαλέριον τὴν μάχαιραν ὡς διὰ τῆς προβολῆς εἰς τὰ πλευρὰ βάψας, ἔπειτ' ἐπιπτόντος αὐτῷ τοῦ κόρακος καὶ τὰς ὄψεις ὀρύττοντος ἀνέτεινε τὸν θυρεὸν ὡς ἀπελάσων τὸν ὄρον· ὁ δὲ Ῥωμαῖος ἔτι μετεωρίζοντος τὸ ὄπλον ἀκο- 20 λουθήσας κάτωθεν ὑποφέρει τὸ ξίφος καὶ ἀναιρεῖ τὸν Κελτὸν. ὁ δὲ στρατηγὸς Κάμιλλος χρυσέῳ τοῦτον στεφάνῳ ἐκόσμησεν, ἐπῶνυμίαν θέμενος αὐτὸν Κορβίνον, ἀπὸ τοῦ συναγωνισαμένου κατὰ τὴν μονομαχίαν ζῶου· κόρβους γὰρ οἱ Ῥωμαῖοι καλοῦσι

τοὺς κόρακας· αὐτὸς τε διετέλεσεν ἐξ ἐκείνου συμβόλῳ κατὰ τοῦ κράνους κοσμούμενος κόρακι, καὶ ταῖς εἰκόσιν αὐτοῦ πάσαις οἱ πλάττοντες καὶ γράφοντες τοῦτο τὸ ζῶον ἐπὶ τὴν κεφαλὴν ἐφήμοτον. *Amb.*

II. (3) Ἐπόρθουν τὰς ἐπὶ τῶν ἀγρῶν κήσεις 5 πολλῆς εὐδαιμονίας γεμούσας.

Ἄνθρώπους πεπονημένους ὑπὸ πολέμου σώματα, καὶ πλὴν ὅσον ἀνέπνεον τὰ λοιπὰ νεκροῖς ὁμοίους.

Ἔτι θερμοῦς τὸ δὴ λεγόμενον οὔσης τῆς τοῦ ἀναιρεθέντος σποδοῦ. 10

Τὸν οἰκιστὸν ἀπολείται τρόπον ὑπ' ἀνδρὸς ἐχθροῦ πολιτικῶ σιτίζοντος αἵματι τὸν φθόνον.

Μοῖραν οὐκ ἐλαχίστην τῶν ἀφελειῶν τοῖς στρατιώταις χειρίζομενος, ὥστ' ἐπικλύσαι πλούτῳ τὴν ἐκάστου πενίαν. 15

Διέφθειραν αὐτῶν ἀκμαζούσας ἤδη σπορολογεῖσθαι τὰς ἀρούρας, καὶ τὰ κρᾶτιστα τῆς καρποφόρου ἐλωθήσαντο. *Amb.*

III. Ὅτι Κοίντου Σερουιλίου τὸ τρίτον [ὑπατεύοντος] καὶ Γαίου Μαρκίου Ρουτίλου ὑπατεούντων 20 κίνδυνοι τὴν Ῥώμην χαλεποὶ καὶ ἀπροσδόκητοι κατέσχον, οὓς εἰ μὴ θεῖα τις πρόνοια διεσκέδασε, δυεῖν κακῶν θάτερον ἂν αὐτῇ συνέπεσεν, ἢ δόξαν αἰσχίστην ἐνέγκαι ξενοκτονίας, ἢ φόνων ἀψασθαι πολιτικῶν. ἀφ' ἧς δ' αἰτίας εἰς τούτους ἦλθε τοὺς 25 κινδύνους, μικρὰ τῶν πρόσθεν ἀναλαβῶν δι' ὀλίγων πειράσσομαι διελθεῖν. ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ τὸν Σαννιτικὸν πόλεμον ὑπὲρ ἀπάσης Καμπανίας ἢ τῶν Ῥωμαίων πόλις ἀραμένη καὶ τρισὶ νικήσασα μάχαις τοὺς ἀντικαθέντας, ἐβούλετο μὲν ἀπάσας ἀπά- 30 γειν τὰς δυνάμεις, ὡς οὐθένος ἔτι κινδύνου ταῖς πόλεσι καταλειπομένον· δεομένων δὲ τῶν Καμπανῶν

μὴ καταλιπεῖν αὐτοὺς συμμάχων ἐρήμους, ὡς ἐπι-  
 θησομένου σφίσι τῶν Σαννιτῶν, εἰ μηδεμίαν ἔχοιεν  
 ξενικὴν βοήθειαν, ἔγνω τὸν ἀπαλλάξαντα τοῦ πολέ-  
 μου τὰς πόλεις ὑπατοῦ Μάρκου Οὐαλέριου ὅσην ἂν  
 5 αὐτοὶ βουληθῶσι τρέφειν στρατιὰν ἐν ταῖς πόλεσι  
 καταλιπεῖν. γενόμενος δὲ τῆς ἐξουσίας ταύτης κύ-  
 ριος ὁ ὑπάτος, ὅσοις ἦν βουλομένοις ὀψώνια καὶ μι-  
 σθόνους φέρεσθαι τῆς φυλακῆς, τούτους καθίστησιν  
 ἐν ταῖς πόλεσιν· ἐν οἷς ἦν τὸ πλεῖον μέρος ἀνεστίων  
 10 καὶ καταχρέων καὶ τὴν οἴκῳ πενίαν καὶ ἀγνωσίαν  
 ἀσμένως ἀποδιδρασκόντων. Τούτους οἱ Καμπανοὶ ταῖς  
 οἰκίαις ἀναλαμβάνοντες τραπέζαις τε ὑπεδέχοντο λαμ-  
 πραῖς καὶ ταῖς ἄλλαις ἐξέλιξον φιλοφροσύναις. πολυ-  
 τελῆς δὲ καὶ ἀβροδίατος ἱκανῶς τοῖς Καμπανίαν  
 15 οἰκοῦσι καὶ νῦν ἔστι καὶ τότε ἦν ὁ βίος καὶ πάντα τὸν  
 λοιπὸν ἔσται χρόνον, πολὺκαρπὸν τε πεδιάδα καὶ πο-  
 λύβοτον καὶ πρὸς ὑγίειαν ἀνθρώποις γεωργοῦσιν ἀρί-  
 στην οὖσαν. κατ' ἀρχάς μὲν οὖν ἀγαπητῶς οἱ φρου-  
 ροὶ τὴν φιλοξενίαν τῶν ἀνθρώπων ἐλάμβανον· ἔπειτα  
 20 διαφθειρόμενοι τὰς ψυχὰς ὑπὸ τοῦ κόρου τῶν ἀγα-  
 θῶν πονηροῦς ὑπολογισμοῦς κατὰ μικρὸν ἐλάμβανον,  
 καὶ συνιόντες ἀλλήλοις ἔλεγον ὡς ἀνοήτων ἀν-  
 θρώπων ποιήσουσιν ἔργον, εἰ τοσαύτην καταλιπόντες  
 εὐδαιμονίαν ἐπὶ τὸν ἐν Ῥώμῃ βίον ἀνακάμψουσιν,  
 25 ἐνθα λυπρὰ μὲν ἡ γῆ, πολλὰ δὲ εἰσφοραὶ, πολέμων  
 δὲ καὶ κακῶν ἀνάπανσις οὐδεμία, τὰ δὲ τῶν κοινῶν  
 πόνων ἄθλα παρ' ὀλίγοις, οἱ δὲ ἀσθενεῖς τοῖς βίοις  
 καὶ τῶν καθ' ἡμέραν ἀναγκαίων ἀποροῦντες, καὶ  
 ἔτι μᾶλλον οἱ τὰ χρέα μὴ δυνάμενοι διαλύσαι τοῖς  
 30 συμβαλοῦσι καὶ τὴν ἀνάγκην ἀποχρῶσθαι εἶναι σύμ-  
 βουλον τῶν συμφερόντων σφίσι ἀποφαίνοντες ἄνευ  
 τοῦ καλοῦ, οὐδ' εἰ πάντες νόμοι τε καὶ ἄρχοντες

τὰς ἐσχάτας τιμωρίας ἀπειλοῦεν αὐτοῖς [ἐν] Καμπα-  
 νοῖς ἔτι μεθῆσεσθαι τῆς παρουσίας εὐδαιμονίας ἔλε-  
 γον καὶ τελευτῶντες εἰς τοσαύτην ἀπόνοιαν ἤλθον,  
 ὥστε καὶ λέγειν ἐτόλμων· Τί δὴ καὶ θράσομεν δει-  
 νόν, εἰὰν Καμπανοὺς ἐκβαλόντες τὰς ἐκείνων πό- 5  
 λεις κατασχῶμεν; οὗτοι γὰρ αὐτοὶ πρότερον οὐκ ἐκ  
 τοῦ βελτίστου κτησάμενοι τὴν γῆν κατέσχον, ἀλλὰ  
 ἐπιξενωθέντες Τυρρηνοῖς τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν, καὶ  
 τοὺς ἄνδρας ἅπαντας διαφθείραντες, τὰς τε γυναῖκας  
 αὐτῶν καὶ τοὺς βίους καὶ τὰς πόλεις καὶ τὴν περι- 10  
 μέχτην χώραν παρέλαβον· ὥστε σὺν δίαῃ πείσονται  
 πᾶν ὅ τι ἂν πάθωσιν αὐτοὶ τῆς παρανομίας κατ-  
 ἀφῶντες καθ' ἑτέρω. τί δὴ καὶ τὸ κωλύσει ἡμᾶς  
 ἔσται ταῦτα μέχρι τοῦ παντὸς χρόνου καρποῦσθαι  
 τὰγαθά; Σαννῖται μὲν γε καὶ Σιδικῖνοι καὶ Αὔσονες 15  
 καὶ πάντες οἱ περίοικοι τοσοῦτον δεήσουσι Καμπα-  
 νοῖς τιμωροῦντες ἐφ' ἡμᾶς γε στρατεύειν, ὥστε ἀπο-  
 χρῆν ὑπολήφοντά σφίσι, εἰ τὰ ἑαυτῶν ἐάσομεν  
 ἐκάστους ἔχειν. Ῥωμαῖοι δὲ ἴσως μὲν καὶ κατ' εὐχὴν  
 δεξοῦνται τὸ πραχθέν, ἅπασαν ἀξιοῦντες Ἰταλίαν ταῖς 20  
 αὐτῶν ἀποικίας κρατεῖσθαι· εἰ δὲ ἀγανακτεῖν προσ-  
 ποιούμενοι, πολεμίους ἡμᾶς κρίναντες οὐ τοσαῦτα  
 δεινὰ διαθήσουσιν, ὅσα πείσονται πρὸς ἡμῶν. χώραν  
 τε γὰρ αὐτῶν δηώσομεν, ὅσον ἂν ἡμῖν δοκῆ, καὶ  
 δεσμώτας ἐν τῶν ἀγρῶν λύσομεν καὶ θεράποντας 25  
 ἐλευθερώσομεν, καὶ μετὰ τῶν ἐχθίστων αὐτοῖς Οὐο-  
 λούσκων τε καὶ Τυρρηνοῦν καὶ Σαννιτῶν καὶ τῶν ἐπι-  
 ευδοιαστῶς ἀκροωμένων Λατίνων στησόμεθα. ἡναγ-  
 κασμένοι δ' ἀνθρώποις καὶ τὸν ἐσχατοῦ περὶ ψυ-  
 χῆς τρέχουσι δρόμον οὐτ' ἀπορον οὐδὲν οὐτ' ἀντί- 30  
 παλον. Τοιαῦτα διαλεγόμενοι πρὸς ἀλλήλους ὀλίγοι  
 μὲν τὰ πρῶτα, ἔπειτα πλείους, ἔγνωσαν ἐπιχειρεῖν

ταῖς πόλεσι καὶ δι' ὄρκων ἐδίδοσαν ἀλλήλοις τὸ πιστόν. ἔφθασε δὲ τὴν ἐπιχείρησιν αὐτῶν εἰς τοῦμ-  
 φανὲς ἀγαθοῦσα μῆνυσις, ἣν τῶν συνομοσάντων τινὲς  
 ἐποίησαντο πρὸς τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Μάρκιον,  
 ὃ τὸν κατὰ Σαννιτῶν πόλεμον ὁ κληρὸς ἀπένευμεν,  
 ἥδη παρεληφότα τὰς ἐν τῇ Ῥώμῃ καταγραφείσας  
 δυνάμεις καὶ ὄντα ἐν ὁδῷ. ὁ δὲ ὑπάτος ἀπροσδοκῆ-  
 του καὶ δεινοῦ πράγματος ἀκούσας ἔκρινε μὴ λῆξαι  
 τὸ πρᾶγμα μῆδ' εἰδέναι δοκεῖν, ἀλλὰ δι' ἀπάτης  
 10 τινὸς καὶ στρατηγίας κωλύσαι τὰ συμβησόμενα ταῖς  
 πόλεσιν. ἀποστείλας δὴ τινὰς ἅμα τοῖς μηνυταῖς  
 κατασκευαστοὺς εἰς τὰς πόλεις πρὶν αὐτὸς ἐλθεῖν,  
 προπαρεσκευάσασκε λέγεσθαι πρὸς τοὺς ἐν ταῖς παρα-  
 χημασίαις, ὅτι τὰς μὲν φρουράς ἔγνω καταλιπεῖν ἐν  
 15 ταῖς πόλεσι τὰς τότε οὖσας, ἐπειδὴ βουλομένοις ἐστὶ  
 τοῖς Καμπανοῖς αὐτὰς μένειν, τῇ δ' οἰκοθεν ἀφιγ-  
 μένῃ σὺν αὐτῷ δυνάμει πολεμεῖν πρὸς Σαννίτας  
 παρασκευάζεται, καὶ ἐπεισεν ἅπαντας ταῦτα ὑπο-  
 λαβεῖν. ἀφικόμενος δὲ εἰς τὴν Καμπανίαν μετὰ  
 20 τῆς στρατιᾶς ἀπάσης εἰς ἐκάστην παρῆει πόλιν· καὶ  
 τοὺς ἐν ταῖς φρουραῖς ἀνακαλούμενος διεκρίνεν  
 ἀπάντων τοὺς μετασχόντας τῆς συνομοσίας. ἔπειτα  
 φιλανθρωπῶς ἐκάστοις διαλεγόμενος, οὓς μὲν ἀπέ-  
 λυσε τῶν σημείων, ὡς ἂν χαριζόμενος τὴν ἄφρασιν  
 25 τῆς στρατείας· οὓς δὲ τῷ πρεσβευτῇ καὶ τῷ χιλιάρχῳ  
 παραδοὺς ὡς ἐπὶ χρείας δὴ τινὰς στρατιωτικὰς ἀπέ-  
 λυσε· οὗτοι δ' ἦσαν οἱ πονηρότατοι καὶ οὐχ ὑπο-  
 μενοῦντες ἀφείσθαι τῆς στρατείας· ἐντειλάμενος τοῖς  
 ἄγρουσιν αὐτοὺς εἰς Ῥώμην διακομίσαι καὶ φυλάτ-  
 30 τειν ἐν ἀδήλοις φυλακαῖς, χωρίσαντας ἄλλους ἀπ'  
 ἄλλων, ἕως ἂν αὐτὸς ἀφίκηται. τοῖς δὲ ἀνδράσιν  
 ἐνθυμουμένοις ὅτι πάντες οἱ κορυφαιότατοι τῆς συν-

ωμοσίας οἱ μὲν ἀπολύονται τῶν σημείων, οἱ δ'  
 ἀποστέλλονται δίχα τῶν ἄλλων ὅποιδήποτε, λογι-  
 σμὸς εἰσῆλθε περιφανῆ γεγονέναι σφῶν τὴν συνομο-  
 σίαν, καὶ μετὰ ταῦτα δεῖος, εἰ χωρὶς ἀλλήλων γέ-  
 νοιντο καὶ τὰ ὄπλα θείην, μὴ δίκας ὑπόσχωσιν εἰς  
 5 Ῥώμην ἀπαχθέντες· συνιόντες τε κατ' ὀλίγους ἐσκό-  
 πουν τί χερὴ πράττειν. ἔπειτα γνώμην τινῶν εἰσ-  
 ηρησαμένων περὶ ἀποστάσεως, ἐπαινέσαντες τὸ βού-  
 λευμα καὶ πίστις ἀπορρήτους ἐν ἀλλήλοις ποιησά-  
 μενοι, οἱ τῆς στρατείας ἀφειμένοι περὶ Ταρρακίναν 10  
 πόλιν ἐν ἐπιτηδείοις χωρίοις παρ' αὐτὴν τὴν ὁδὸν  
 στρατοπεδεύονται. ἐπειδ' οἱ μετὰ τοῦ πρεσβευτοῦ  
 καὶ τῶν χιλιάρχων ἀποστελλόμενοι τοὺς ἡγεμόνας  
 καταλιπόντες, ἐστὶ δ' οὓς καὶ τῶν ἀγόντων σφᾶς  
 στρατιωτῶν πείσαντες ἀποστήναι, περὶ τὸν αὐτὸν 15  
 ἰδρύνονται τόπον. ὡς δὲ ἄπαξ οὗτοι τὰς παρόδους  
 κατελάβοντο, πολλοὶ προσήεσαν αὐτοῖς ὁσημέραι, καὶ  
 χεῖρ ἐγένετο περὶ αὐτοὺς καρτερά· ἔπειτα τὰ δεσμο-  
 τήρια ὑπ' αὐτῶν, ὅσα κατὰ τοὺς ἀγροὺς ἦν, ἐλύετο  
 καὶ συνέρρει ... Escor. 20

III. Οἱ δὲ τῶν Ῥωμαίων ὑπάτοι πᾶσαν τὴν με-  
 ταξὺ γῆν ἀδεῶς διελθόντες, τῶν μὲν οὐκ ἐναντιου-  
 μένων, τῶν δὲ συμπροπεμπόντων· πολλὰ δ' εἰσὶ  
 δυσχωρία κατὰ τὴν ἐκ Ῥώμης εἰς Καμπανίαν ἄγου-  
 σαν ὁδὸν ὄρεσι τε καὶ τέλμασι καὶ θαλάτταις καὶ 25  
 ποταμοῖς νανσιπόροις διακλειόμεναι, ὡς οὐ ἕαδιον ἦν  
 διελθεῖν ὑπὸ τῶν πολεμίων προκαταληφθείσας· καὶ  
 τινα καὶ ποταμόν, ὃς διὰ τῆς Κασιλίνων χώρας καὶ  
 πόλεως φέρεται, τριάκοντα τῆς Καπύης ἀπέχοντα  
 στάδια, Οὐολτοῦρον ὄνομα, τεττάρων οὐκ ἐλάττω 30  
 πλέθρων ὄντα τὸ πλάτος, ξυλίνη γεφύρα διαβάντες,  
 ἦν ἐν τρισὶ κατασκευάσαν ἡμέραις, διεξήεσαν, ἵνα

τοῖς μὲν τὰ σφέτερα φρονούσι Καμπανοῖς θάρσος ὡς  
τὰ κράτιστα προηρημένοι ἐγγένηται, τοῖς δὲ τάναν-  
τία δέος, καὶ προελθόντες ἐπέκεινα τῆς πόλεως ἀπὸ  
τετταράκοντα σταδίων Καπύης στρατοπεδεύονται ἐν  
5 ὑψηλῷ τόπῳ θέντες τὸν χάρακα, ἐνθα ὑπομένοντες  
τὰς παρὰ Σαννιτῶν ἀγορὰς τε καὶ συμμαχίας ἐκαρα-  
δόκουν. οἱ δ' ἄρα ὑπισχνούντο μὲν αὐτοῖς πλείω  
τῶν ἰκανῶν, ἐπήρχουν δ' οὐδὲν ὅτι καὶ λόγου ἄξιον,  
στρατιάν τ' ἀγείρειν ἐκ πάσης πόλεως σκηπτό-  
10 μνοι κατέτριβον τοὺς χρόνους. ἀπογνόντες δὴ τὰς  
ἐκεῖθεν ἐπικουρίας, καὶ τὰς μὲν ἐαυτῶν δυνάμεις  
ὀρώντες οὐδὲν ἰσχύος ἐκ τοῦ χρονισμοῦ προσλαμβα-  
νούσας, τὰς δὲ τῶν πολεμίων μακρῶ πλείους γιγνο-  
μένας, ἐπὶ τὰ ἔργα χωρεῖν ἔγνωσαν. ἐνθυμούμενοι  
15 δ' ὅτι πολὺ τῆς στρατιᾶς ἔστι τὸ δυσάγωγον καὶ ταῖς  
ἐπιταγαῖς τῶν ἡγεμόνων ἀπειθές, ὡς ἐν ἄλλαις τε  
πολλαῖς πείραις ἐδήλωσε καὶ τὰ τελευταῖα ἐν τῇ  
Καμπανικῇ παραχειμασίᾳ, ἀφ' ἧς εἰς τοςάντην ἀπό-  
νοϊαν ἤλθον αὐτῶν τινες, ὥστε καὶ πόλεσιν ἐπιθέ-  
20 σθαι καὶ τὸν ὕπατον καταλιπεῖν καὶ κατὰ τῆς πα-  
τριδος ὄπλα ἀναλαβεῖν, τούτους ὄντο δεινὸν πρῶτον  
ἀποδείξει σωφρονεστέρους, δεινότερον ποιήσαντες  
αὐτοῖς τὸν ἀπὸ τῶν ἡγεμόνων φόβον ἢ τὸν ἀπὸ τῶν  
πολεμίων κίνδυνον. ταῦτα διανοηθέντες ἐκκλησίαν  
25 συνήγον, καὶ λέγει Μάλλιος· [ζήτει ἐν τῷ περὶ στρα-  
τηγημάτων καὶ δημηγοριῶν. περὶ τοῦ υἱοῦ Μαλλίου  
τοῦ μονομαχίσαντος.] Escor.

V. (4) ἀλλὰ καὶ διότι τοὺς φίλους αὐτῶν Καμ- 2314  
πανοὺς πολλὰ καὶ μεγάλα ἐβλαπτον. ἢ δὲ βουλὴ τῶν  
30 Ῥωμαίων, Καμπανῶν πολλάκις ἐμφανιζόντων καὶ  
ἀποδυσρομένων κατὰ τῶν Νεαπολιτῶν, γνώμην ἐποιή-  
σατο πρέσβεις πρὸς τοὺς Νεαπολίτας ἀποστεῖλαι τοὺς

ἀξιόσοντας αὐτοὺς μηδὲν εἰς τοὺς ὑπηκόους τῆς τῶν  
Ῥωμαίων ἡγεμονίας παρανομεῖν, ἀλλὰ καὶ διδόναι τὰ  
δίκαια καὶ λαμβάνειν [καὶ] εἴ τι διαφέρονται πρὸς ἀλλή-  
λους, μὴ δὲ ὄπλων, ἀλλὰ διὰ λόγων, σύμβολα ποιησαμέ-  
2315 νους πρὸς αὐτοὺς, καὶ τὸ λοιπὸν εἰρήνην ἄγειν πρὸς 5  
ἅπαντας τοὺς περιοικοῦντας τὸ Τυρρηνικὸν πέλαγος,  
μητ' αὐτοὺς ἔργα πράττοντας ἢ μὴ προσῆκεν Ἑλλησι,  
μητε τοῖς πράττουσι συνεργοῦντας· μάλιστα δ' εἰ  
δύναντο θεραπείαις τῶν δυνατῶν παρασκευάσοντας  
ἀποστήναι μὲν ἀπὸ Σαννιτῶν τὴν πόλιν, σφίσι δ' 10  
αὐτοῖς γενέσθαι φίλην. (5) Ἐτυχον δὲ κατὰ τὸν αὐ-  
τὸν χρόνον ἀφιγμένοι πρὸς τοὺς Νεαπολίτας πρέσβεις  
ὑπὸ Ταραντίνων ἀποσταλέντες, ἄνδρες ἐπιφανεῖς  
καὶ πρόξενοι διὰ γένους τῶν Νεαπολιτῶν· καὶ ἕτε-  
ροι ὑπὸ Νωλέων ὁμόρων ὄντων καὶ σφόδρα τοὺς 15  
Ἑλληνας ἀσπαζομένων, τάναντία τοὺς Νεαπολίτας  
ἀξιόσοντας μητε σύμβολα ποιείσθαι πρὸς τοὺς Ῥο-  
2316 μαίους ἢ τοὺς ὑπηκόους αὐτῶν μητε διαλύεσθαι τὴν  
πρὸς Σαννίτας φιλίαν. ἐὰν δὲ ταύτην ποιήσονται  
Ῥωμαῖοι τοῦ πολέμου τὴν πρόφασιν, μὴ ὀρθοδεῖν, 20  
μηδ' ὡς ἄμαχόν τινα τὴν ἰσχὴν αὐτῶν καταπεπλη-  
χθαι, ἀλλὰ μένειν γενναίως καὶ ὡς προσῆκεν Ἑλλησι  
πολεμεῖν, τῇ τ' οικείᾳ πιστεύοντας δυνάμει καὶ τῇ  
παρὰ Σαννιτῶν ἀφιζομένῃ βοηθείᾳ, ναυτικὴν τ' ἰσχὴν  
προσληφόμενους ἔξω τῆς ἑαυτῶν, ἣν Ταραντίνοι 25  
πέμφουσιν, ἐὰν ἄρα καὶ ταύτης δέωνται, πολλὴν καὶ  
ἀγαθὴν. *Vrsin.*

VI. (6) Συναχθείσης οὖν τῆς βουλῆς καὶ πολ-  
λῶν ζηθέντων ἐν αὐτῇ λόγων, οὓς αἱ τε πρεσβείαι 30  
διεξήλθον καὶ οἱ συναγορευόντες αὐταῖς, διέστησαν  
αἱ γνώμαι τῶν συνέδρων· καὶ οἱ γε χαριέστατοι τὰ  
2317 τῶν Ῥωμαίων ἔδοξαν φρονεῖν. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν

ἡμέραν οὐδὲν ἐξηνέχθη προβούλευμα, εἰς ἑτέραν δὲ  
 πάλιν ἔδραν ἀναβληθείσης τῆς περὶ τῶν πρεσβειῶν  
 διαγνώσεως, ἀφικόμενοι κατὰ πλῆθος εἰς τὴν Νεά-  
 5 πολιν Σαννιτῶν οἱ δυνατώτατοι, καὶ τοὺς προεστη-  
 κώτας τῶν κοινῶν θεραπειῶν τισὶν οἰκειωσάμενοι,  
 πείθουσι τὴν βουλὴν ἐπὶ τῷ δήμῳ ποιῆσαι τὴν τοῦ  
 συμφέροντος αἴρεσιν. καὶ παρελθόντες εἰς τὴν ἐκ-  
 κλησίαν πρῶτον μὲν τὰς ἑαυτῶν εὐεργεσίας διεξήγε-  
 10 σαν, ἔπειτα τῆς Ῥωμαίων πόλεως πολλὰ κατηγοροῦν,  
 ὡς ἰπίστου καὶ δολίου. τελευτῶντες δὲ τοῦ λόγου  
 θαυμαστάς ἐποιούντο τοῖς Νεαπολίταις ὑποσχέσεις,  
 εἰάν εἰς τὸν πόλεμον καταστῶσι, στρατιὰν τε πέμψειν,  
 ὅσης αὐτῶν δέωνται, τὴν φυλάζουσαν αὐτῶν τὰ τεῖχη,  
 καὶ ταῖς ναυσὶν ἐπιβάτας καὶ τὴν εἰρεσίαν ἅπασαν 2318  
 15 παρέξειν, οὐ μόνον καταγγέλλοντες τοῖς ἰδίοις στρα-  
 τεύμασιν ἀλλὰ καὶ κείνοις ἀπάσας τὰς εἰς πόλεμον  
 δαπάνας ἐπιχορηγήσειν· ἀπώσαμένοις τε τὸ Ῥωμαϊ-  
 κὸν στράτευμα Κύμην τ' ἀνασώσειν, ἣν δευτέρα  
 γενεᾷ πρότερον ἐξελάσαντες τοὺς Κυμαίους Καμπανοὶ  
 20 κατέσχον, καὶ συγκατάξειν ἐπὶ τὰ σφέτερα τοὺς πε-  
 ριόντας ἐπὶ Κυμαίων, οὓς οἱ Νεαπολίται τῆς πατρί-  
 δος ἐκπεσόντας ὑπέδεξαντο καὶ πάντων ἐποιήσαντο  
 κοινωνοὺς τῶν ἰδίων ἀγαθῶν, χώραν τε προσθήσειν  
 τοῖς Νεαπολίταις ἐξ ἧς οἱ Καμπανοὶ κατείχον πάνυ  
 25 πολλήν. (7) Τῶν δὲ Νεαπολιτῶν ὅσον μὲν ἦν μέρος  
 εὐλογον καὶ πρὸ πολλοῦ δυνάμενον ὄραν τὰς κατα- 2319  
 ληφόμενας τὴν πόλιν ἐκ τοῦ πολέμου συμφορὰς, εἰ-  
 ρήνην ἄγειν ἠέλιον· τὸ δὲ φιλόκαινον καὶ τὰς ἐκ τῆς  
 ταραχῆς πλεονεξίας διῶκον ἐπὶ τὸν πόλεμον συνε-  
 30 λάμβανον, καταβοαί τ' ἀλλήλων ἐγίνοντο καὶ χειρο-  
 κρασίαι, καὶ προέβη τὸ νεῖκος εἰς λίθων βολὰς, καὶ  
 τελευτῶντες ἐκράτησαν οἱ κακίους τῶν κραιπτόνων,

ᾧστε τοὺς πρέσβεις τῶν Ῥωμαίων ἀπράκτους ἀπελ-  
 θεῖν. διὰ ταύτας τὰς αἰτίας ἡ βουλὴ τῶν Ῥωμαίων  
 στρατιὰν ἐπὶ Νεαπολίτας ἀποστείλαι ἐβουλεύθη. *Vrsin.*

VII. (8) Ὅτι μαθόντες οἱ Ῥωμαῖοι Σαννίτας  
 στρατιὰν ἀγείρου, τὸ μὲν πρῶτον πρέσβεις ἐπέμψαν 5  
 1820 οἱ δὲ προχειρισθέντες ἐκ τῶν βουλευτῶν πρέσβεις  
 ἐλθόντες ἐπὶ τοὺς προβούλους τῶν Σαννιτῶν ἔλεξαν·  
 Ἄδικαίτε, ἄνδρες Σαννίται, παραβαίνοντες τὰς  
 ὁμολογίας, ἃς ἐποιήσασθε πρὸς ἡμᾶς, ὀνόματα μὲν  
 ὑποδύμενοι συμμάχων, ἔργα δὲ πράττοντες πολε- 10  
 μίων, πολλὰς μὲν ἠττηθέντες ὑπὸ Ῥωμαίων μάχαις,  
 δεήσει δὲ μεγάλη καταλυσάμενοι τὸν πόλεμον, καὶ  
 τυχόντες εἰρήνης οἷας ἐβούλεσθε· τὰ δὲ τελευταῖα  
 φίλοι γενέσθαι τῆς πόλεως ἡμῶν προθυμηθέντες καὶ  
 σύμμαχοι καὶ τοὺς αὐτοὺς Ῥωμαίους ὁμόσαντες ἔξιεν 15  
 ἐχθροὺς καὶ φίλους. (9) Ὡν ἀπάντων ἐπιλαθόμενοι,  
 καὶ παρ' οὐδὲν ἠγησάμενοι τοὺς ὄρκους, ἐγκατελεί-  
 πετε μὲν ἡμᾶς ἐν τῷ πρὸς Λατίνους πολέμῳ καὶ  
 πρὸς Οὐδούσκους συστάντι, οὓς δι' ὑμᾶς ἐχθροὺς  
 1821 ἐχομεν, οὐ βουλόμενοι τοῦ καθ' ὑμῶν αὐτοῖς συνά- 20  
 ρασθαι πολέμου. ἐν δὲ τῷ παρελθόντι ἐναντιῷ Νεα-  
 πολίτας δεδιότας ἀναδειξαι τὸν καθ' ἡμῶν πόλεμον  
 ἀπάση σπουδῇ καὶ προθυμίᾳ χρώμενοι παρωρησάτε,  
 μᾶλλον δ' ἠναγκάσατε καὶ τὰς δαπάνας ἐπιχορηγεῖτε,  
 καὶ τὴν πόλιν δι' ὑμῶν αὐτῶν ἔχετε. νῦν δὲ πα- 25  
 ρασκευάζεσθε στρατιὰν ἐκ παντὸς ἀγείροντες τόπον·  
 πρόφασιν μὲν ἑτέραν ποιούμενοι, τὸ δ' ἀληθὲς ἐπὶ  
 τοὺς ἡμετέρους ἐγνωκότες ἄγειν ἀποίκους· καὶ ἐπὶ  
 ταύτας τὰς ἀδίκους πλεονεξίας Φουνθανοὺς παρακα-  
 30 λεῖτε καὶ Φορμιανοὺς καὶ ἄλλους τινάς, οἷς ἡμεῖς 30  
 ἰσοπολιτείας μετεδώκαμεν. (10) Οὕτω δὲ φανερωῶς  
 καὶ ἀναισχύντως συγχεόντων ὑμῶν τὰ περὶ τῆς φιλίας



καὶ συμμαχίας ὄρκια, [ποιούντες] πρεσβείαν πρὸς  
 ὑμᾶς ἐκρίναμεν ἀποστείλαι πρῶτον, καὶ μὴ πρότερον <sup>2321</sup>  
 ἄρξαι τῶν ἔργων πρὶν ἢ πειραθῆναι τῶν λόγων. ἃ  
 δὲ προκαλούμεθα ὑμᾶς, καὶ ὧν τυχόντες τὴν ἐπὶ τοῖς  
 5 παραλθοῦσιν ὀργὴν ἀποπληρώσειν οἴομεθα, ταῦτά  
 ἐστὶ πρῶτον μὲν ἀπάγειν ὑμᾶς ἀξιούμεν τὴν ἀπο-  
 σταλείσαν Νεαπολίταις συμμαχίαν· ἔπειτα μηδεμίαν  
 ἐκπέμπειν στρατιάν κατὰ τῶν ἀποίκων τῶν ἡμετέρων,  
 μηδὲ τοὺς ὑπηκόους ἐπὶ πάσας τὰς πλεονεξίας παρα-  
 10 καλεῖν· εἰ δὲ μὴ πᾶσιν ἔδοξεν ταῦτα ὑμῖν, ἀλλ' ἀπὸ  
 τῆς ἑαυτῶν γνώμης ἐπραττόν τινες, παραδοῦναι τοὺς  
 ἄνδρας ἡμῖν ἐπὶ δίκην. τούτων τυχόντες ἀκούομεθα,  
 μὴ τυχόντες δὲ θεοὺς καὶ δαίμονας, οὓς ἐν ταῖς συν-  
 15 θήκαις ἀμύσατε, μαρτυροῦμεθα, καὶ τοὺς εἰρηνοδίκας

ἐπὶ τοῦτο ἄγοντες ἐληλύθαμεν. *Vrsin.*  
 VIII. (11) Τοιαῦτα τοῦ Ῥωμαίου λέξαντος, βου-  
 λευσάμενοι καθ' αὐτοὺς οἱ πρόβουλοι τῶν Σαννι-  
 τῶν τοιαύτην ἐξήνεγκαν ἀπόκρισιν·

Τοῦ μὲν ὀψισμοῦ τῆς ἐπὶ τὸν κατὰ Σατίνων πό- <sup>2321</sup>  
 20 λεμον συμμαχίας οὐ τὸ κοινὸν αἴτιον· ἐψηφισάμεθα  
 γὰρ ἀποσταλῆναι τὴν στρατιάν ὑμῖν· οἱ δὲ τὴν ἡγε-  
 μονίαν ἔχοντες αὐτῆς πλείονα χρόνον ἀναλώσαντες  
 ἐν τῇ παρασκευῇ, καὶ ὑμεῖς αὐτοὶ θάπτον ἐπειχθέν-  
 25 τες ἐπὶ τὸν ἀγῶνα. τρισὶ γοῦν ἢ τέτταρσιν ἡμέραις  
 ὕστερον τῆς μάχης οἱ πεμφθέντες ὑφ' ἡμῶν ἀφίκοντο.  
 περὶ δὲ τῆς Νεαπολιτῶν πόλεως, ἐν ἣ τῶν ἡμετέρων  
 τινὲς εἰσιν, τοσοῦτον δέομεν ἀδικεῖν ὑμᾶς, εἰ τινα  
 τοῖς κινδυνεύουσι βοήθειαν εἰς σωτηρίαν κοινῇ παρ-  
 30 εχόμεθα, ὥστ' αὐτοὶ δοκοῦμεν ὑφ' ὑμῶν ἀδικεῖσθαι  
 μεγάλα. φίλην γὰρ ἡμῶν καὶ σύμμαχον οὐσαν τὴν <sup>2321</sup>  
 πόλιν ταύτην οὐκ ἔναγχος, οὐδ' ἀφ' οὗ τὰς πρὸς  
 ὑμᾶς ἐποιησάμεθα ὁμολογίας, ἀλλὰ δευτέρω γενεᾷ

πρότερον διὰ πολλὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας, οὐ-  
 40 θέν ἀδικηθέντες ὑμεῖς κατεδουλώσασθε. (12) Οὐ  
 μὴν οὐδὲ τούτω γε τῷ ἔργῳ τὸ κοινὸν ὑμᾶς τῶν  
 Σαννιτῶν ἠδίκησεν· ἰδιόξενοι δὲ τινὲς εἰσιν, ὡς  
 πυνθανόμεθα, καὶ φίλοι τῶν Νεαπολιτῶν, οἱ κατὰ <sup>5</sup>  
 τὴν ἑαυτῶν προαίρεσιν τῇ πόλει βοηθοῦντες, καὶ  
 τινες καὶ δι' ἀπορίαν ἰσως βίου μισθοφόροι. δια-  
 φθεῖρειν δὲ τοὺς ὑπηκόους ὑμῶν οὐθέν δεόμεθα·  
 καὶ γὰρ ἄνευ Φοννδανῶν καὶ Φορμιανῶν ἱκανοὶ  
 βοηθεῖν αὐτοῖς ἴσμεν, εἴν καταστῶμεν εἰς ἀνάγκην <sup>10</sup>  
 πολέμου. ἢ δὲ παρασκευὴ τῆς στρατιᾶς ἡμῶν ἐστὶν  
 οὐχ ὡς ἀφαιρησομένων τοὺς ὑμετέρους ἀποίκους τὰ  
 ἴδια, ἀλλ' ὡς τὰ ἴδια ἐξόντων διὰ φυλακῆς. ἀντι-  
 15 προκαλούμεθά τε ὑμᾶς, εἰ βούλεσθε τὰ δίκαια ποιεῖν,  
 ἐκχωρεῖν Φοργέλλης, ἣν πρὸ πολλοῦ πολέμῳ κρατη- <sup>15</sup>  
 σάντων ἡμῶν, ὅσπερ ἐστὶ νόμος κτήσεως δικαιοτά-  
 τος, ὑμεῖς οὐθενὶ δίκαιῷ σφετερισάμενοι δευτέρου  
 ἔτος ἤδη κατέχετε. τούτων ἡμεῖς τυχόντες, οὐδὲν  
 ὑποληφόμεθα ἀδικεῖσθαι. *Vrsin.*

VIII. (13) Μετὰ τοῦτο παραλαβὼν τὸν λόγον <sup>20</sup>  
 ὁ τῶν Ῥωμαίων εἰρηνοδίκης εἶπεν·  
 Οὐθέν ἐτι τὸ κολῦσον ἐστίν, οὕτω φανερώς  
 ἀνηρηκόταν ὑμῶν τὰ περὶ τῆς εἰρήνης ὄρκια· . . .  
 βουλευέσθαι τὸν Ῥωμαίων δῆμον αἰτιάσασθαι. πάντα  
 γὰρ αὐτῷ πέπρακται κατὰ τοὺς ἱερούς τε καὶ πα- <sup>25</sup>  
 2326 τρικοὺς νόμους, τὰ τε πρὸς τοὺς θεοὺς ὅσια καὶ  
 τὰ πρὸς ἀνθρώπους δίκαια. δικασταὶ δὲ τῶν μενόν-  
 των ἐν ταῖς ὁμολογίαις οἱ λαχόντες πολέμους ἐπισκο-  
 πεῖν ἔσονται θεοί.

Μέλλων δ' ἀπιέναι τὴν τε περιβολὴν κατὰ κε- <sup>30</sup>  
 φαλῆς εἰλκυσεν καὶ τὰς χεῖρας ἀνασχὼν εἰς τὸν οὐ-  
 ρανόν, ὡς ἔθος ἐστίν, ἀγῶς ἐποιήσατο τοῖς θεοῖς· εἰ

μὲν ἄδικα πάσχουσα ὑπὸ Σαννιτῶν ἢ Ῥωμαίων πόλις  
καὶ μὴ δυναμένη μετὰ λόγου καὶ κρίσεως διαλύσαι  
τὰς διαφορὰς ἐπὶ τὰ ἔργα χωρήσει, βουλὰς τ' ἀγα-  
θὰς αὐτῇ θεοὺς καὶ δαίμονας ἐπὶ νοῦν ἄγειν, καὶ  
5 πράξεις ἐν πᾶσι δίδοναι τοῖς πολέμοις εὐτυχεῖς· εἰ  
δ' αὐτὴ τι πλημμελοῦσα περὶ τὰ τῆς φιλίας ὄρκια <sup>2327</sup>  
προφάσεις κατασκευάζεται τῆς ἐχθρῶς οὐκ ἀληθεῖς,  
μήτε βουλὰς ὀρθοῦν αὐτοῦς, μήτε πράξεις. *Vrsin.*

X. (14) Ὡς δὲ διελύθησαν ἐκ τοῦ συλλόγου, καὶ  
10 τὰ λεχθέντα ἐδήλωσαν ἑκάτεροι ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι,  
τὰς ἐναντίας ἔσχον ὑπὲρ ἀλλήλων δόξας ἀμφοτέροι·  
Σαννίται μὲν βραδύτερα τὰ τῶν Ῥωμαίων ἔσεσθαι  
νομίζοντες, ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἐστὶ ποιεῖν, ὅτε μέλ-  
λοιεν ἄρχειν πολέμου· Ῥωμαῖοι δ' ἐν ὀλίγῳ τὴν  
15 Σαννιτῶν στρατιάν ἤξειν ἐπὶ τοὺς αὐτῶν ἀποίκους  
Φρεγελλάνους οἴομενοι. ἔπειτ' αὐτοῖς τὰ εἰκότα πα-  
θεῖν συνέβη. οἱ μὲν γὰρ παρασκευαζόμενοι καὶ  
μέλλοντες ἀπάλεσαν τοὺς καιροὺς τῶν πράξεων·  
Ῥωμαῖοι δ' ἐν ἐτοιμίῳ πᾶσαν ἔχοντες παρασκευήν, <sup>2328</sup>  
20 ἅμα τῷ πυθέσθαι τὰς ἀποκρίσεις τὸν τε πόλεμον  
ἐψηφίσαντο καὶ τοὺς ὑπάτους ἀπέστειλαν ἀμφοτέρους·  
καὶ πρὶν αἰσθῆσθαι τοὺς πολεμίους τὴν ἔξοδον, ἣ τε  
νεωστὶ καταγραφείσα καὶ ἡ περὶ Οὐολούσκους χει-  
μάζουσα δύναμις, ἣν εἶχε Κορνήλιος, ἐντὸς ἦν τῶν  
25 Σαννιτικῶν ὄρων. *Vrsin.*

Φοῦνδα — πόλις Ἰταλίας οἱ πολῖται Φουνδανοί,  
Διονύσιος ἐς Ῥωμαϊκῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz. s. v.*  
Φοῦνδα.

Καλησία, πόλις Ἀβσονικῆ. Διονύσιος ἐς Ῥωμαϊκῆς  
ἀρχαιολογίας. τὸ ἔθνηδὸν Καλησιανός, ὡς αὐτός. *Steph.*  
*Byz. s. v. Καλησία.*

## EXCERPTA

EX

## LIBRO XVI.

I. Ῥωμαίων εἰς τὸν κατὰ Σαννιτῶν τελευταίου  
πόλεμον ἐξιόντων, κεραυνὸς εἰς τὸν ἐπιφανέστατον  
τόπον κατασκήψας πέντε μὲν στρατιώτας ἀπέκτεινε,  
δύο δὲ σημείας διέφθειρεν, ὅπλα δὲ πολλὰ τὰ μὲν <sup>5</sup>  
κατέκαυσε, τὰ δ' ἐσπίλωσε. κεραυνοὶ δὲ κατήχθησαν  
τοῖς ἔργοις ἔττυμον φέροντες τοῦνομα· κεραῖσμοι γὰρ  
τινὲς εἰσι καὶ μεταβολαὶ τῶν ὑποκειμένων, εἰς τὰν-  
αντία τρέποντες τὰς ἀνθρωπίνων τύχας. αὐτὸ γὰρ  
πρῶτον ἠνάγκασται τὴν ἰδίαν ἀλλάξαι φύσιν τὸ κε- <sup>10</sup>  
ραῖνιον πῦρ, εἴτε δὴ αἰθριον εἴτε μεταρσιόν ἐστι,  
κάτω φερόμενον· οὐ γὰρ δὴ αὐτῷ θέμις ἐπὶ γῆν βρι-  
θεῖν κατὰ τὴν ἑαυτοῦ φύσιν, ἀλλ' ἀπὸ γῆς ἄνω  
μετεωροπολεῖν· ἐν αἰθέρι γὰρ αἱ πηγαὶ τοῦ θείου  
πυρός. (2) Ἀηλοὶ δὲ καὶ τὸ πῦρ τὸ παρ' ἡμῶν, εἴτε <sup>15</sup>  
Προμηθεύς εἴτε Ἡφαίστου δῶρόν ἐστιν, ὅποτε λύ-  
σαιεν τοὺς δεσμούς, ἐν οἷς ἠνάγκασται μένειν, δι'  
ἀέρος ἄνω φερόμενον ἐπὶ τὸ συγγενὲς ἐκείνο καὶ πᾶ-  
σαν ἐν κύκλῳ περιειληφὸς τὴν τοῦ κόσμου φύσιν.  
τὸ δὴ θεῖον ἐκείνο καὶ χωρισθὲν ὕλης φθαρτῆς δι' <sup>20</sup>  
ἀέρος ὀχοῦμενον, ὅταν ἐπὶ τὴν γῆν καταφέρηται,

βιασθὲν ὑπ' ἀνάγκης τινὸς ἰσχυρᾶς μεταβολᾶς μετα-  
 τεύεται καὶ τροπὰς ἐπὶ τοῦταλιν. (3) Τοιούτου  
 γοῦν τινος γενομένου καὶ τότε καταφρονήσαντες οἱ  
 Ῥωμαῖοι, καὶ ὑπὸ Ποντίου τοῦ Σαυνίτου κατακλει-  
 5 σθέντες εἰς ἀνεξόδους δυσχωρίας, μέλλοντες ἤδη τῷ  
 λίμῳ διαφθεῖρεσθαι παρέδωκαν ἑαυτοὺς τοῖς πολε-  
 μίοις ἀμφὶ τοὺς τετρακισμυρίους ὄντες· καὶ καταλεί-  
 ψαντες τὰ τε ὄπλα καὶ τὰ χρήματα τὸν ζυγὸν ἕπαντες  
 10 ὑπήλθον· τοῦτο δὲ σημεῖον τῶν ὑπὸ χειρὸς ἐλθόν-  
 των ἐστί. μετ' οὐ πολὺ δὲ τὰ αὐτὰ καὶ ὁ Πόντιος  
 ὑπὸ Ῥωμαίων ἔπαθε, καὶ τὸν ζυγὸν ὑπήλθον καὶ  
 αὐτὸς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ. *Ambr.*

II. (4) Ἐν τούτῳ σε ἀξιοῦμεν ἤδη κείμενοι καὶ  
 τὸ μηδὲν ὄντες, μηδεμίαν ἡμῶν ὕβριν προσθεῖναι  
 15 ταῖς συμφοραῖς, μηδὲ βαρεὶ ποδὶ ταῖς ἀθλίαις ἐπεμ-  
 βῆναι τύχαις.

Οὐκ οἶδας, ὅτι πολλοὶ μὲν τῶν ἡμετέρων παι-  
 δας ἐν τοῖς πολέμοις ἀπολωλέκασιν, πολλοὶ δὲ ἀδελ-  
 φούς, πολλοὶ δὲ φίλους; οἷς ἅπασιν πῶς ἄκρατον  
 20 νομίσεις ἐπὶ τῶν σπλάγγων ἀνθήσειν τὴν χολήν,  
 εἴην κωλύη τις αὐτοὺς τοσαύταις ψυχαῖς πολεμίων  
 τιμῆσαι τοὺς κατὰ γῆν, αἴπερ μόναι τῶν κατοι-  
 χουμένων δοκοῦσιν εἶναι τιμαί; (5) Φέρε δὴ κἄν  
 25 τοῦτο πεισθέντες ἢ βιασθέντες ἢ ὅ τι δὴ ποτε πα-  
 θόντες εἰξωσί γε καὶ ζῆν αὐτοὺς ἐάσωσιν, ἄρ' ἔτι  
 σοι δοκοῦσι καὶ τὰ χρήματα αὐτοὺς ἐάσειν ἔχειν, καὶ  
 μηδεμίᾳς πειραθέντας ἀσχημοσύνης, ὥσπερ ἠρωᾶς  
 30 τινος ἐπ' ἀγαθῷ τῆσδε τῆς γῆς φανέντας, ὁπότε δό-  
 ξειεν αὐτοῖς, ἀπελθεῖν, ἀλλ' οὐχ ὥσπερ θηρία περι-  
 χυθέντας διασπάσασθαι ταῦτα λέγειν ἐπιβαλόμενον  
 ἐμέ; οὐχ ὁρᾶς ὅτι καὶ τοὺς κυνηγούς οἱ θηρευταὶ  
 κύνες, ὅταν ἀλῶ θηρίου κατακλεισθὲν ὑπ' αὐτῶν εἰς

τὰ λίνα, περιδτανται τὴν ἐπιβάλλονσαν μοῖραν  
 ἀπαιτοῦντες τῆς ἄρας, καὶ εἴην μὴ μεταλάβωσιν εὐ-  
 θὺς αἵματος ἢ σπλάγγων, ἀρράζουσιν ἐπόμενοι καὶ  
 σπαράττουσι τὸν κυνηγόν, καὶ οὔτε διωκόμενοι οὔτε  
 παιόμενοι ἀπείργονται; *Ambr.* 5

III. (6) Δι' ἡμέρας μὲν ὅλης ἀγωνιζόμενοι τῶν  
 πόνων ἠνείχοντο· ἀφελόμενοι δὲ τοῦ σκότους τὴν  
 γνῶσιν τῶν τε οἰκείων καὶ τῶν πολεμίων, πρὸς τοὺς  
 οἰκείους χάρακας ἀπηλλάγησαν.

Ἄππιος Κλαύδιος περὶ τὰς θυσίας παρανομήσας 10  
 τι ἀπετυφλώθη καὶ Καῖκος προσηγορεύθη· οὕτω γὰρ  
 τοὺς τυφλοὺς Ῥωμαῖοι καλοῦσιν.

Αἱ ἐντολῆχοι γραφαὶ ταῖς τε γραμμαῖς πάνν ἀκρι-  
 βεῖς ἦσαν καὶ τοῖς μίγμασιν ἠδεῖαι, παντὸς ἀπηλ-  
 15 λαγμένον ἔχουσαι τοῦ καλουμένου ῥωποῦ τὸ ἀνθηρόν.

Τὰς νομμησίας οἱ Ῥωμαῖοι καλάνδας καλοῦσι,  
 τὰς δὲ διχοτόμους νόνας, τὰς δὲ πανσελήνους εἰ-  
 20 δούς. *Ambr.*

(7) Τοῖς δὲ κατὰ μέσσην ἀγωνιζόμενοις τὴν φά-  
 λαγγα ἀσπάθητον οὔσαν καὶ λαγαράν οἱ τῆσδε τε- 20  
 ταγμένοι συμπεσόντες ἐξέωσαν τῆς στάσεως.

Ὁ κατοικίδιος τε καὶ κλινοπετῆς πόλεμος ἐμάρανε  
 τὴν ἀκμὴν τῆς πόλεως.

Ἄνδρας ἱεραγωγούς καὶ ἱεραφορία τετιμημένους.  
 Φορᾶς ἀβούλου μεστός ἀνὴρ καὶ μανικὸν ἔχων 25  
 τὸ τολμηρόν, ἰδιογνωμονήσας καὶ ἐφ' ἑαυτῷ ποιή-  
 σας πάντα τοῦ πολέμου.

Ἐπειτα σὺ τολμᾶς κατηγορεῖν τῆς τύχης ὡς κα-  
 κῶς τοῖς πράγμασι χρησαμένης, ἐπὶ περιτραπέντος  
 αὐτὴν καθίσας σκάφους; οὕτω σκαιὸς ἦν. 30

Μέλη τὰ μὲν θεραπείας ἔτι δεόμενα, τὰ δὲ τὰς  
 οὐλὰς ἐφέλκοντα νεωστί. *Ambr.*

- III. (8) Ὅτι, φησὶ Διονύσιος, μιᾶς ἐτι μνησθῆ- 2336  
 σομαι πράξεως πολιτικῆς ἀξίας ὑπὸ πάντων ἀνθρώ-  
 πων ἐπαινεῖσθαι, ἐξ ἧς καταφανὲς ἔσται τοῖς Ἑλλη-  
 σιν, ὅσον ἦν τὸ μισοπόνηρον ἐν τῇ Ῥώμῃ τότε καὶ  
 5 τὸ πρὸς τοὺς παραβαίνοντας τὰ κοινὰ νόμιμα τῆς ἀν-  
 θρωπίνης φύσεως ἀμείλικτον. Γάιος Λαϊτώριος  
 Μέγγος ἐπίκλησιν ἐπιφανὴς κατὰ γένος, καὶ κατὰ τὰς 2337  
 πολεμικὰς πράξεις οὐκ ἀγεννῆς, ἐνὸς τῶν ταγματῶν  
 10 νεανίαν τινὰ τῶν ὁμοσκήνων διαφέροντα τὴν ὄψιν  
 ἐτέρων μέχρι μὲν τινος ἐπειθεν ἑαυτῷ χαρίσασθαι  
 τὴν τοῦ σώματος ὄραν ἐκόντα. ὡς δ' οὔτε δωρεαῖς  
 οὔτ' ἄλλη φιλανθρωπία τὸ μειράκιον ἠλίσκετο, κατ-  
 15 ἐχειν τὴν ἐπιθυμίαν ἀδύνατος ὦν βίαν προσφέρειν  
 ἐπεβάλετο. περιβοήτου δὲ τῆς ἀκοσμίας τοῦ ἀνδρός  
 ἅπασιν τοῖς ἐπὶ [τοῦ] στρατοπέδου γενομένης, κοινὸν  
 ἀδίκημα τῆς πόλεως εἶναι νομίσαντες οἱ δήμαρχοι  
 γραφὴν ἀποφέρουσι κατ' αὐτοῦ δημοσίᾳ, καὶ ὁ δήμος  
 20 ἀπάσαις ταῖς ψήφοις τοῦ ἀνδρός κατέγνω τίμημα δι-  
 κῆς ὀρίσας θάνατον, οὐκ ἀξιῶν εἰς ἐλεύθερα σώματα  
 καὶ προπολεμοῦντα τῆς τῶν ἄλλων ἐλευθερίας τοὺς  
 ἐν ταῖς ἄλλαις ὄντας ἀρχαῖς ὑβρίζειν τὰς ἀνηκέστους  
 καὶ παρὰ φύσιν τοῖς ἄρρεσιν ὕβρεις. *Vales. et Suid.*  
 s. v. Γάιος Λαϊτώριος.
- V. (9) Ἐτι δὲ τούτου θαυμασιώτερον ἐπραξαν  
 οὐ πολλοῖς πρότερον χρόνοις, καίτοι περὶ δοῦλον  
 25 σῶμα γενομένης τῆς ὕβρεως. ἐνὸς γὰρ τῶν παρα- 2338

Ῥωμαῖός τις Γάιος Λαϊτώριος, νεανίαν τινὰ τῶν ὁμοσκή-  
 νων ἐπειθεν ἑαυτῷ χαρίσασθαι τὴν τοῦ σώματος ὄραν ὡς δ'  
 οὔτε δωρεαῖς οὔτε φιλανθρωπία τὸ μειράκιον ἠλίσκετο, περι-  
 βοήτου τῆς ἀκοσμίας τοῦ ἀνδρός γενομένης, οἱ δήμαρχοι θά-  
 νατον αὐτοῦ κατέγνωσαν. *Ambr.*

δούτων Σαυνίταις τὸ στρατόπεδον χιλιάρχων καὶ  
 ὑπὸ ξιγρὸν ὑπελθόντων, Ποπλίον υἱός, ὡς ἐν πολλῇ  
 καταλειφθεὶς πενία δάνειον ἠναγκάσθη λαβεῖν εἰς  
 τὴν ταφὴν τοῦ πατρός, ὡς ἐρανισθησόμενος ὑπὸ τῶν  
 συγγενῶν. διαψευθεὶς δὲ τῆς ἐλπίδος ἀπήχθη πρὸς 5  
 τὸ χρέος τῆς προθεσμίας διελθούσης, κομιδῇ νέος  
 ὦν καὶ τῇ ὄψει ὠραῖος. οὗτος τὰ μὲν ἄλλα ὑπηρε-  
 τῶν, ὅσα δούλους δεσπόταις νόμος ἦν, ἠνείχετο, τὴν  
 δὲ τοῦ σώματος ὄραν χαρίσασθαι κελυόμενος ἠγα-  
 νάκει καὶ μέχρι παντός ἀπεμάχετο. πολλὰς δὲ διὰ 10  
 τοῦτο μαστίγων λαβῶν πληγὰς ἐξέδραμεν εἰς τὴν  
 ἀγοράν, καὶ στάς ἐπὶ μετεώρου τινός, ἐνθα πολλοὺς  
 ἐμελλε τῆς ὕβρεως λήψεσθαι μάρτυρας, τὴν τ' ἀκο-  
 λασίαν τοῦ δανειστοῦ διηγῆσατο καὶ τῶν μαστίγων  
 15 τοὺς μῶλαπας ὑπέδειξεν. ἀγανακτήσαντος δὲ τοῦ 15  
 δήμου καὶ δημοσίας ὀργῆς ἀξίου ἠγρησαμένου τὸ  
 πρῶγμα, ἀχθεὶς εἰς τὴν κρίσιν, κατηγοροῦντων τὴν  
 εἰσαγγελίαν τῶν δημάρχων, ὤφλε θανάτου δίκην. καὶ  
 δι' ἐκεῖνο τὸ πάθος ἅπαντες οἱ δουλωθέντες πρὸς τὰ  
 χρέα Ῥωμαῖοι νόμῳ κερσθέντι τὴν ἀρχαίαν ἐλευθε- 20  
 ρίαν ἐκομίσαντο. *Vales. et Suidas s. v. Γάιος Λαι-  
 τώριος.*

VI. (10) Ἀξιῶν τὴν βουλήν ὑπὲρ τῶν ἀπόρων  
 καὶ κατὰ χρεῶν.

Αἱ νεοσφαγεῖς τῶν θνουμένων σάρκες μέχρι τοῦ- 25  
 του διατελοῦσι τρέμουσαι τε καὶ παλλόμεναι, ἕως ἂν  
 τὸ κατεχόμενον ἐν αὐταῖς συγγενὲς πνεῦμα βιασά-  
 μενον τοὺς πόρους ἅπαν ἐξαναλωθῇ. τοῦτο σεισμῶν  
 αἴτιον γίνεται καὶ τῇ Ῥώμῃ ἅπασα γὰρ ὑπόνομος  
 οὕσα μεγάλας καὶ συνεχεῖς τάφρους, δι' ὧν ὄχετεύ- 30  
 εται τὸ ὕδωρ, καὶ πολλὰς ἀναπνοὰς στομάτων ἔχουσα,  
 διὰ τούτων ἀνίησι τὸ κατακλεισθὲν πνεῦμα ἐν αὐτῇ.

καὶ τοῦτο ἐστίν, ὃ κραδαίνει τε αὐτὴν καὶ σπαράττει τὴν ἐπιφάνειαν, ὅταν πολὺ καὶ βίαιον ἐναποληφθὲν εἰρηγῆται. *Ambr.*

Φρεγελλὰ πόλις Ἰταλίας, ἣ τὸ μὲν ἀρχαῖον ἦν Ὀπικῶν, ἔπειτα Ουολούσκων ἐγένετο. τὸ ἐθνικὸν Φρεγελλανός, ὡς Διονύσιος ἐξ τῆς Ῥωμαϊκῆς ἀρχαιολογίας καὶ ἄλλοι πλείστοι. *Steph. Byz. (Liv. VIII, 22.)*

Μέντρονα πόλις ἐν Ἰταλίᾳ Σαννιτῶν. Διονύσιος ἐκκαίδεκάτῳ. τὸ ἐθνικὸν Μέντροναῖος. *Steph. Byz. (Liv. IX, 25.)*

Ἀΐκαλον φρούριον τῆς Ἰταλίας. Διονύσιος ἐξ Ῥωμαϊκῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.*

Ἰάποδες ἔθνος Κελτικὸν πρὸς τῇ Ἰλλυρίᾳ. Διονύσιος ἐκκαίδεκάτῳ (?). *Steph. Byz.*

## EXCERPTA

EX

LIBRIS XVII et XVIII.

2328 I. (16, 11) Ὅτι ὁ Σαννιτικὸς αὐθις ἀνεροπιέσθη πόλεμος, ἀπὸ τοιαύτης αἰτίας ἀρξάμενος. μετὰ τὰς σπονδάς, ἃς ἐποίησαντο πρὸς τὴν Ῥωμαίων πόλιν οἱ Σαννίται, χρόνον ὀλίγον ἐπισχόντες ἐπὶ Λευκανοὺς ἐστράτευσαν ὁμόρους ὄντας, ἐκ παλαιᾶς τινος ὀρμηθέντες 5 ἔχθρας. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ταῖς ἑαυτῶν δυνάμεσι πιστευόντες οἱ Λευκανοὶ τὸν [τε] πόλεμον διέφερον.

2329 ἐν ἀπάσαις δὲ μειονεκτοῦντες ταῖς μάχαις, καὶ πολλὰ μὲν ἀπολωλεκότες ἤδη χωρία, κινδυνεύοντες δὲ καὶ περὶ τῆς ἄλλης γῆς ἀπάσης, ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων 10 βοήθειαν ἠναγκάσθησαν καταφυγεῖν· συνειδότες μὲν ἑαυτοῖς ἐψευσμένοις ἃς πρότερον ἐποίησαντο πρὸς αὐτοὺς ὁμολογίας, ἐν αἷς φιλίαν συνέθεντο καὶ συμμαχίαν, οὐκ ἀπογνόντες δὲ συμπεῖσαι αὐτούς, ἐὰν 15 ἐξ ἀπάσης τῆς πόλεως τοὺς ἐπιφανεστάτους παῖδας ὁμήρους ἅμα τοῖς πρεσβευταῖς ἀποστείλωσιν· ὅπερ καὶ συνέβη. (12) ἀφικομένων γὰρ τῶν πρέσβεων καὶ πολλὰ δεομένων, ἣ τε βουλή δέχεσθαι τὰ ὄμνηρα 20 ἔγνω καὶ τὴν φιλίαν πρὸς τοὺς Λευκανοὺς συνάψαι, καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε τὰ ψηφισθέντα ὑπ' αὐτῆς. 20 γενομένων δὲ τῶν συνθηκῶν πρὸς τοὺς ἀποσταλέντας ὑπὸ τῶν Λευκανῶν ἄνδρας, οἱ πρεσβύτατοι Ῥωμαίων καὶ τιμιώτατοι προχειρισθέντες ὑπὸ τῆς βου-

λῆς πρέσβεις ἀπεστάλησαν ἐπὶ τὴν κοινὴν τῶν Σαυνιτῶν σύνοδον, δηλώσοντες αὐτοῖς, ὅτι φίλοι καὶ σύμμαχοι Ῥωμαίων εἰσὶ Λευκανοί, καὶ τὴν τε χώραν ἦν ἔτυχον αὐτῶν ἀφηρημένοι παρακαλέοντες 5 ἀποδιδόναι, καὶ μηδὲν ἐτι πράττειν ἔργον πολεμίων, ὡς οὐ περιορισμένης τῆς Ῥωμαίων πόλεως τοὺς ἑαυτῆς ἰκέτας ἐξελαυνόμενος ἐκ τῆς σφετέρως. *Ursin.*

II. (16, 13) Οἱ δὲ Σαυνίται τῶν πρέσβειων ἀκούσαντες ἠγανάκτου τε καὶ ἀπελογοῦντο· πρῶτον μὲν 10 οὐκ ἐπὶ τούτῳ πεποιήσθαι λέγοντες τὰς περὶ τῆς εἰρήνης ὁμολογίας, ἐπὶ τῷ μηδένα μήτε φίλον ἰδίων ἠγήσασθαι μήτ' ἐχθρόν, ἐὰν μὴ Ῥωμαῖοι κελεύωσιν· ἐπειδ' ὅτι Λευκανοὺς οὐ πρότερον ἐποίησαντο Ῥωμαῖοι φίλους, ἀλλ' ἐναγχοὺς πολεμίους ἤδη σφῶν ὄν- 15 τας, πρόφασιν οὔτε δικαίαν οὔτ' εὐσχήμονα κατασκευαζόμενοι τοῦ καταλύσαι τὰς σπονδὰς. ἀποκρινομένων δὲ τῶν Ῥωμαίων, ὅτι τοὺς ὑπηκόους ὁμολογήσαντας ἔσεσθαι καὶ ἐπὶ τούτῳ τῷ δικαίῳ καταλυσαμένους τὸν πόλεμον ἅπαντα πείθεσθαι δεῖ 20 τοῖς παρειληφόσι τὴν ἀρχὴν· καὶ εἰ μὴ ποιήσουσι τὰ κελεύόμενα ἐκόντες, πολεμήσειν αὐτοῖς ἀπειλούντων. ἀφόρητον ἠγησάμενοι τὴν ἀνθάδειαν τῆς πόλεως οἱ Σαυνίται, τοὺς μὲν πρέσβεις ἐκέλευσαν ἀπαλλάττεσθαι παραχρῆμα· αὐτοὶ δὲ τὰ πρὸς τὸν πόλεμον ἐψηφί- 25 σαντο κοινῇ τε καὶ κατὰ πόλεις εὐτρεπίζεσθαι. *Ursin.*

III. (16, 14) Ἡ μὲν δὴ φανερὰ τοῦ Σαυνιτικοῦ πολέμου πρόφασις καὶ πρὸς πάντας εὐπρεπὴς λέγεσθαι ἢ Λευκανῶν ἐγένετο βοήθεια τῶν καταφυγόντων ἐπ' αὐτούς· ὡς κοινὸν δὴ τι τοῦτο καὶ πάτριον ἔθος 30 τῇ Ῥωμαίων πόλει τοῖς ἀδικουμένοις καὶ καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὴν βοηθεῖν· ἢ δ' ἀφανὴς καὶ μέλλον αὐτοὺς ἀναγκάζουσα διαλύεσθαι τὴν φιλίαν ἢ τῶν

Σαυνιτῶν ἰσχὺς πολλή τ' ἤδη γεγονυῖα καὶ ἐτι πλείων γενήσεσθαι νομιζομένη, εἰ Λευκανῶν τε χειρωθέντων καὶ δι' αὐτοὺς τῶν προσοίκων, ἀκολουθήσειν ἐμελλε 5 τὰ [τε] βαρβαρικὰ ἔθνη τὰ προσεχῆ τοῦτοις. αἱ τε δὴ σπονδαὶ μετὰ τὴν ἀφίξιν τῶν πρεσβευτῶν εὐθύς ἐλέλυτο, καὶ στρατιαὶ δύο κατεγράφοντο. *Ursin.*

IV. (16, 15) Ὅτι Ποστόμιος ὁ ὑπάτος τῆς διαδοχῆς αὐτοῦ ἐγγισίας μέγα φρονῶν ἐφ' ἑαυτῷ τῆς τ' ἀξιώ- 9339 σεως τοῦ γένους ἔνεκα, καὶ ὅτι διτταῖς ὑπατεῖαις ἤδη κεκοσμημένος ἦν. ἐφ' οἷς συνύπατος αὐτοῦ, 10 καταρχὰς μὲν ὡς ἀπελαυνόμενος τῶν ἴσων ἠγανάκτει, καὶ πολλάκις ἐπὶ τῆς βουλῆς τὰ δίκαια πρὸς αὐτὸν ἔλεγεν· ὕστερον δὲ συγγνοὺς ἑαυτῷ κατὰ τε προγόνων ὄγκον καὶ φίλων πλήθος καὶ κατὰ τὰς 15 ἄλλας δυνάμεις ἐλάττονα ἰσχὺν ἔχοντι· δημοτικὸς γὰρ ἦν καὶ τῶν νεωστὶ παρελθόντων εἰς γνώσιν· εἰξέ τε τῷ συνυπάτῳ καὶ παρεχώρησε τοῦ Σαυνιτικοῦ πολέμου τὴν ἡγεμονίαν. πρῶτον μὲν δὴ τοῦτο δια- 20 βολὴν ἠνεγκε τῷ Ποστομίῳ κατὰ πολλὴν ἀνθάδειαν γενόμενον· καὶ ἕτερον αὐθις ἐπὶ τούτῳ βαρύτερον ἢ ὡς κατὰ Ῥωμαίων ἡγεμόνα. ἐπιλεξάμενος γὰρ ἐκ τῆς ἑαυτοῦ στρατίας περὶ τοὺς δισχιλίους ἄνδρας εἰς τοὺς ἰδίους ἀγροὺς ἀπήγαγεν· οἷς ἄνευ σιδήρου 25 δρυμὸν ἐκέλευσε κείρειν. καὶ μέχρι πολλοῦ κατέσχε τοὺς ἄνδρας ἐν τοῖς ἀγροῖς θητῶν ἔργα καὶ θερα- 30 πόντων ὑπηρετοῦντας. (16) Τοσαύτη δὲ ἀνθάδεια πρὸ τῆς ἐξόδου χρησάμενος, ἐτι βαρύτερος ἐφάνη τοῖς κατ' αὐτὴν τὴν στρατείαν ἐπιτελεσθεῖσι, καὶ παρέσχε τῇ βουλῇ καὶ τῷ δήμῳ μίσους ἀφορμὰς δι- 3004 καίου. τὸν γὰρ ὑπατεύσαντα τῷ πρόσθεν ἑαυτῷ Φάβιον τῆς βουλῆς ψηφισαμένης μένειν ἐπὶ τοῦ

στρατοπέδου, καὶ τὴν ἀνθύπατον ἀρχὴν ἔχοντα πρὸς ταύτην τὴν μερίδα τῶν Σαννιτῶν πολεμεῖν, γράμματα πέμπων ἐκχωρεῖν ἐκ τῆς Σαννιτιδος ἐκέλευσεν, ὡς αὐτῷ μόνῳ τῆς ἡγεμονίας προσηκούσης. καὶ πρὸς τοὺς ἀποσταλέντας ὑπὸ τῶν συνέδρων πρέσβεις, ἀξιοῦντας μὴ κωλύειν τὸν ἀνθύπατον ἐπὶ τοῦ στρατοπέδου μένειν, μηδ' ἀντιπράττειν τοῖς ἐψηφισμένοις ὑφ' αὐτῶν, ὑπερηφάνους καὶ τυραννικὰς ἔδωκεν ἀποκρίσεις· οὐ τὴν βουλὴν ἀρχεῖν ἑαυτοῦ φήσας, ἕως ἔστιν ὑπάτος, ἀλλ' αὐτὸν τῆς βουλῆς ἀπολύσας δὲ τοὺς πρέσβεις ἐπὶ τὸν Φάβιον ἤγε τὴν στρατιάν, ὡς εἰ μὴ βούλοιο ἐκὼν παραχωρεῖν τῆς ἀρχῆς τοῖς ὄπλοις προσαναγκάσων. καταλαβὼν δὲ τοῦτον Κομινίᾳ πόλει προσκεθήμενον, ἐξήλασεν ἐκ τοῦ στρατοπέδου κατὰ πολλὴν ὑπεροψίαν τῶν ἀρχαίων ἐθισμῶν καὶ δεινὴν ὑπερηφανίαν. Φάβιος μὲν αὐτοῦ εἴξας τῇ μανίᾳ τῆς ἡγεμονίας ἐξεχώρησεν. *Vales. et Suidas s. v. Ποστόμιος.*

V. (16, 17) Ὅτι ὁ αὐτὸς Ποστόμιος πρῶτον μὲν τὸ 2335  
 20 Κομινίον ἐκ πολιορκίας παραλαμβάνει, χρόνον οὐ πολὺν ἐν ταῖς προσβολαῖς διατρίψας· ἔπειτα Οὐενουσίαν πολυάνθρωπον καὶ ἄλλας πόλεις πλείστας ὅσας· ἐξ ὧν μύριοι μὲν ἐσφάγησαν, ἑξακισχίλιοι δὲ καὶ διακόσιοι τὰ ὄπλα παρέδωκαν. ταῦτα διαπραξάμενος οὐχ ὅπως χάριτος ἢ τιμῆς τινος ἠξιώθη παρὰ τῆς βουλῆς, ἀλλὰ καὶ τὴν προὔπαρχουσαν ἀξίωσιν ἀπέβαλεν. ἀποστελλομένων γὰρ εἰς μίαν τῶν ἀλουσῶν ὑπ' ἐκείνου πόλεων, τὴν καλουμένην Οὐενουσίαν, δισμυρίων ἐποίκων, ἕτεροι τῆς ἀποικίας ἠρέθησαν ἡγεμόνες· ὁ δὲ τὴν πόλιν ἐξελὼν καὶ τὴν γνώμην τῆς ἀποστολῆς τῶν κληρούχων εἰσηγησάμενος, οὐδὲ ταύτης ἄξιος ἐφάνη τῆς τιμῆς. (18) *Εἰ*

μὲν οὖν σώφρονι λογισμῷ τὰ συμβάντα ἤνεγκε, καὶ τὸ χαλεπὸν τοῦ συνεδρίου λόγων τε καὶ ἔργων χρησίων θεραπαίαις ἐπράννευ, οὐδεμιᾶς ἂν ἐτι συμφορᾶς εἰς ἀτιμίαν φερούσης ἐπειράθη. νῦν δ' ἀγανακτῶν καὶ ἀντιχαλεπαίνων τὰς τ' ὀφελείας ὡς ἔλαβεν 5 ἐκ τῶν πολεμίων ἀπάσας τοῖς στρατιώταις ἐχαρίσατο, καὶ πρὶν ἀποσταλῆναι τὸν διάδοχον τῆς ἀρχῆς ἀπέλυσεν ἀπὸ τῶν σημείων τὰς δυνάμεις, καὶ τελευτῶν ὄν οὔτε ἡ βουλὴ οὔτε ὁ δῆμος συνεχώρησεν αὐτῷ θρόμβον ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γνώμης κατήγαγεν. ἐφ' 10 οἷς ἅπασιν ἐτι μεζονος ἐξ ἀπάντων μίσους ἐκινῆντος, ἅμα τῷ παραδοῦναι τὴν ἀρχὴν τοῖς μεθ' ἑαυτὸν ὑπάτοις, εἰς δίκην ὑπάγεται δημοσίαν ὑπὸ δυνεῖν δημάρχων. καὶ κατηγορηθεὶς ἐν τῷ δήμῳ πάσαις ταῖς φυλαῖς κατακρίνεται, τμήμα τῆς εἰσαγγελίας 15 ἐχούσης χρηματικὸν πέντε μυριάδας ἀργυρίου. *Vales.*

Φερεντῖνος πόλις Σαννιτῶν ἐν Ἰταλίᾳ. τὸ ἔθνικόν Φερεντανὸς λέγεται καὶ Φερέντιοι, ὡς Διονύσιος εἰς τῆς Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.*

Μιλωνία πόλις Σαννιτῶν ἐπιφανεστάτη. Διονύσιος εἰς τὸ ἔθνικόν Μιλωνιάτης. *Steph. Byz. (Liv. X, 3.)*

Νηκουία πόλις Ουμβριῶν. Διονύσιος ἐπτακαίδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. τὸ ἔθνικόν Νηκουιάτης. *Steph. Byz. (Liv. X, 9.)*

Ναονία πόλις Σαννιτῶν, ἀπὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ Νάου, ὡς Διονύσιος ὀκτωκαίδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz. (Liv. X, 10.)*

Οκρίκοια πόλις Τυρρηνῶν. Διονύσιος ὀκτωκαίδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. τὸ ἔθνικόν Οκρικολανός, ὡς αὐτὸς φησιν. *Steph. Byz. (Liv. IX, 41.)*

## EXCERPTA

EX

## LIBRO XVIII.

I. (17, 1) Ὅτι Κρότων πόλις ἐν Ἰταλία ἐστὶ καὶ Σύβαρις, ἀπὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ οὕτως κληθεῖσα.

Ὅτε Λακεδαιμόνιοι Μεσῆρην ἐπολέμουν, καὶ 5  
 χῆρος ἀνδρῶν ἢ πόλις ἦν, δεομέναις ταῖς γυναιξὶ  
 καὶ μάλιστα ταῖς ἐν ἀκμῇ παρθένοις μὴ περιδεῖν  
 τὰς μὲν ἀγάμους, τὰς δὲ ἀτέκνους γενομένας, ἐπέμ-  
 ποντό τινες αἰὲ νέοι παραλλάξ ἀπὸ τοῦ στρατοπέδου  
 τῆς μίξεως τῶν γυναικῶν ἕνεκα, καὶ συνήεσαν αἷς  
 10 ἐπιτύχοιεν ἐκ τούτων γίνονται τῶν ἀδιακρίτων ἐπι-  
 μιξιῶν παῖδες, οὓς ἀνδρωθέντας οἱ Λακεδαιμόνιοι  
 προεπηλάμιζον τὰ τε ἄλλα καὶ Παρθενίας προσηγό-  
 ρουον. (2) Στάσεως δὲ γενομένης, ἠττηθέντες οἱ  
 παρθενίαι ἀναχωροῦσιν ἐκόντες ἐκ τῆς πόλεως· καὶ  
 15 πέμψαντες εἰς Δελφοὺς χρησμὸν ἔλαβον πλεῖν εἰς  
 Ἰταλίαν, ἐξευρόντας δὲ χωρίον τῆς Ἰαπυρίας Σατύ-  
 ριον καὶ ποταμὸν Τάραντα, ἐνθ' ἂν ἰδῶσι τράγον  
 τῆ θαλάττῃ τέγγοντα τὸ γένειον, ἐκεῖ τοὺς βίους  
 ἰδρῦσασθαι. πλεύσαντες δὲ τὸν τε ποταμὸν ἐξεῦρον,  
 20 καὶ κατὰ τινος ἕρμεσος πλησίον τῆς θαλάττης πεφυ-  
 κότες ἄμπελον ἐθεάσαντο κατακεχυμένην, ἐξ ἧς τῶν

ἐπιτράγων τις καθειμένος ἤπτετο τῆς θαλάττης.  
 τοῦτο ὑπολαβόντες εἶναι τὸν τράγον, ὃν προεῖπεν  
 αὐτοῖς ὁ θεὸς ὄψεσθαι τέγγοντα τὸ γένειον τῆ θα-  
 λάττῃ, αὐτοῦ μένοντες ἐπολέμουν Ἰάπυργας, καὶ  
 ἰδρῦνται τὴν ἐπώνυμον τοῦ ποταμοῦ Τάραντος 5  
 πόλιν. *Ambr.*

II. (17, 3) Ἀρτιμήδης ὁ Χαλκιδεὺς λόγιον εἶχεν,  
 ἐνθ' ἂν εὔρη τὸν ἄρρενα ὑπὸ τῆς θηλείας ὠπνισμέ-  
 νον, αὐτόθι μένειν καὶ μηκέτι προσωτέρω πλεῖν·  
 πλεῦσας δὲ περὶ τὸ Παλλάντιον τῆς Ἰταλίας, καὶ 10  
 ἰδῶν ἄμπελον [κατὰ τινος ἕρμεσος ὁμοίως κατακεχυ-  
 μένην, θηλείαν μὲν τὴν ἄμπελον,] ἄρρενα δὲ τὸν  
 ἕρμεσος, ὄχλειαν δὲ τὴν πρόσφρυσιν, τέλος ἔχειν τὸν  
 χρησμὸν ὑπέλαβε· καὶ τοὺς κατέχοντας τὸν τόπον  
 βαρβάρους ἐκβαλὼν οἰκεῖ. Ῥήγιον ὁ τόπος καλεῖται, 15  
 εἰθ' ὅτι σκόπελος ἦν ἀπορρώξ, εἰθ' ὅτι κατὰ τοῦτον  
 ἢ γῆ τὸν τόπον ἐρράγη καὶ διέστησεν ἀπὸ τῆς Ἰτα-  
 λίας τὴν ἀντικρὺ Σικελίαν, εἴτε ὑπ' ἀνδρὸς δυνάστου  
 ταύτην ἔχοντος τὴν προσηγορίαν. *Ambr.*

III. (17, 4) Λευκίππος τῷ Λακεδαιμονίῳ πυνθανο- 20  
 μένω, ὅπου πεπρωμένω αὐτῷ εἶη κατοικεῖν καὶ τοῖς  
 περὶ αὐτόν, ἔχρησεν ὁ θεὸς πλεῖν μὲν εἰς Ἰταλίαν,  
 γῆν δὲ οἰκίσειν, εἰς ἣν ἂν καταχθέντες ἡμέραν καὶ  
 νύκτα μείνωσι· καταχθέντος δὲ τοῦ στόλου περὶ Καλ- 25  
 λίπολιν ἐπίνειόν τι τῶν Ταραντίνων, ἀρασθεὶς τοῦ  
 χωρίου τὴν φύσιν ὁ Λευκίππος πείθει Ταραντίνους  
 συγχωρησαί σφισιν ἡμέραν αὐτόθι καὶ νύκτα ἐναυλί-  
 σασθαι. ὡς δὲ πλείους ἡμέραι διήλθον, ἀξιούντων  
 αὐτοὺς ἀπιέναι τῶν Ταραντίνων, οὐ προσεῖχεν αὐ-  
 τοῖς τὸν νοῦν ὁ Λευκίππος, παρ' ἐκείνων εἰληφέναι 30  
 λέγων τὴν γῆν καθ' ὁμολογίας εἰς ἡμέραν καὶ νύκτα·  
 ἴσως δ' ἂν ἢ τούτων θάτερον, οὐ μεθῆσεσθαι τῆς



γῆς. μαθόντες δὴ παρακικρουσμένους ἑαυτοὺς οἱ Ταραντῖνοι συγχωροῦσιν αὐτοῖς μένειν. *Ambr.*

III. (17, 5) Ἄκραν τῆς Ἰταλίας Ζεφύριον οἱ Λοκροὶ κατοικήσαντες Ζεφύριοι ἀνομάσθησαν.

5 Μένειν αὐτὸν ἐγνώκεσαν ἐφ' ᾧ ἦν τόπων, καὶ τὸν ἐκείθεν φέοντα πόλεμον ἀνέχειν.

Εἰς ὕλας καὶ φάραγγας καὶ τραχῶνας ὄρεινους διεσκέδασθησαν.

10 (6) Ταραντῖνός τις ἀνὴρ Αἰνησίας καὶ περὶ πάσας τὰς ἡδονὰς ἀσελγής, ἀπὸ τῆς ἀκολάστου καὶ κακῶς δημοσιευθείσης ἐν παισὶν ὥρας ἐπεκαλεῖτο Θάις.

Τὸ πλήθος ἀνδρολογήσαντες ἀπήεσαν.

Οἱ σπερμολογώτατοι τῶν κατὰ τὴν πόλιν καὶ ἀναγωγότατοι. *Ambr.*

15 V. (17, 7) Ὅτι Ποστόμιος πρόεδρος ἐστάλη πρὸς Ταραντῖνους καὶ τινα αὐτοῦ διεξιόντος λόγον οὐχ

ὅπως προσεῖχον αὐτῷ τὴν διάνοιαν ἢ λογισμοὺς ἐλάμβανον οἱ Ταραντῖνοι σωφρόνων ἀνθρώπων καὶ περὶ πόλεως κινδυνευούσης βουλευομένων· ἀλλ' εἰ

20 τι μὴ κατὰ τὸν ἀκριβέστατον τῆς Ἑλληνικῆς διαλέκτου χαρακτῆρα ὑπ' αὐτοῦ λέγοιτο παρατηροῦντες ἐγγέλων· καὶ πρὸς τὰς ἀνατάσεις ἐτραχύνοντο, καὶ βαρβάρους ἀπεκάλουν, καὶ τελευτῶντες ἐξέβαλλον ἐκ τοῦ θεάτρου. ἀπιόντων δ' αὐτῶν, εἰς τῶν ἐφεστη-

25 κότων ἐν τῇ παρόδῳ Ταραντῖνων, Φιλωνίδης ὄνομα, σπερμολόγος ἀνθρώπος, ὃς ἀπὸ τῆς οἰνοφυγίας, ἢ

Φιλωνίδης τις Ταραντῖνος σπερμολόγος ἀνθρώπος, ὃς ἀπὸ τῆς οἰνοφυγίας, ἢ παρὰ πάντα τὸν βίον ἐκέχρητο, προσηγορεύετο Κοτύλη, ἰδὼν τοὺς Ῥωμαίων πρόεβεις διόντας, ἀνασυρόμενος τὴν περιβολὴν καὶ σχηματίζας ἑαυτὸν ὡς ἀσχιστον ὀφθῆναι, τὴν οὐδὲ λέγεσθαι πρόεπουσαν ἀκαθαρσίαν κατὰ τῆς ἱερᾶς ἐσθῆτος τοῦ πρεσβευτοῦ κατεσκέδασεν. ἀνθ' ὧν οὐ μεμπτὰς δίκας ἐτίσαν οἱ Ταραντῖνοι. *Ambr.*

παρὰ πάντα τὸν βίον ἐκέχρητο, προσηγορεύετο Κοτύλη, μεστὸς ὧν ἔτι τῆς χθιζῆς μέθης, ὡς ἐγγὺς ἦσαν οἱ πρόεβεις, ἀνασυρόμενος τὴν ἀναβολὴν, καὶ 3311 σχηματίζας ἑαυτὸν ὡς ἀσχιστον ὀφθῆναι, τὴν οὐδὲ λέγεσθαι πρόεπουσαν ἀκαθαρσίαν κατὰ τῆς ἱερᾶς 5 ἐσθῆτος τοῦ πρεσβευτοῦ κατεσκέδασε.

(8) Γέλωτος δὲ καταρραγέντος ἐξ ὄλου τοῦ θεάτρου, καὶ συγκροτούτων τὰς χεῖρας τῶν ἀγροχωτάτων, ἐμβλέψας εἰς τὸν Φιλωνίδην ὁ Ποστόμιος εἶπεν· Δεχόμεθα τὸν οἰωνόν, ᾧ σπερμολόγε ἀνθρώπε, ὅτι 10 καὶ τὰ μὴ αἰτούμενα δίδοτε ἡμῖν. ἔπειτα εἰς τὸν ὄχλον ἐπιστραφεὶς καὶ τὴν ὑβρισμένην ἐσθῆτα δεικνύς, ὡς ἔμαθεν ἔτι πλείονα γινόμενον ἐξ ἀπάντων τὸν γέλωτα, καὶ φωνὰς ἤκουσεν ἐνίων ἐπικαιρόντων καὶ τὴν ὑβρίν ἐπαινοῦντων· Γελάτε, ἔφησεν, ἕως 15 ἔξεστιν ὑμῖν, ἄνδρες Ταραντῖνοι, γελάτε· πολὺν γὰρ τὸν μετὰ ταῦτα χρόνον κλαύσετε. ἐπικραυθέντων δὲ τινῶν πρὸς τὴν ἀπειλήν· καὶ ἵνα γε μᾶλλον, ἔφησεν, ἀγανακτήσητε, καὶ τοῦθ' ὑμῖν λέγομεν, ὅτι πολλῷ τὴν ἐσθῆτα ταύτην αἵματι ἐκπλυνεῖτε. ταῦτα 20 3342 οἱ τῶν Ῥωμαίων πρόεβεις ὑβρισθέντες ὑπὸ τῶν Ταραντῖνων ἰδίᾳ τε καὶ δημοσίᾳ, καὶ ταύτας τὰς φωνὰς ἐπιθεσπίσαντες, ἀπέπλευσαν ἐκ τῆς πόλεως. *Ursin.*

VI. (17, 9) Ἄρτι δ' Αἰμιλίου Βορβούλα ἐπέκλησεν 25 τὴν ἀρχὴν παρεληφότος, παρήσαν οἱ σὺν τῷ Ποστόμῳ πεμφθέντες εἰς τὸν Τάραντα πρόεβεις, ἀπόκρισιν μὲν οὐδεμίαν φέροντες, τὰς δὲ ὑβρεῖς ἃς ἦσαν ὑβρισμένοι πρὸς αὐτῶν διεξιόντες, καὶ τὴν ἐσθῆτα τοῦ Ποστομίου πίστιν τῶν λόγων παρεχόμενοι. ἀγα- 30 νακτήσεως δὲ μεγάλης ἐξ ἀπάντων γενομένης, συναγαρόντες τὴν βουλὴν οἱ περὶ τὸν Αἰμιλίον ὕπατοι.

τί χορή πρᾶττειν ἐσκόπουν, ἔωθεν ἀρξάμενοι μέχρι  
 δύσεως ἡλλοῦ· καὶ τοῦτ' ἐποίησαν ἐφ' ἡμέρας συ-  
 χνάς. (10) Ἦν δ' ἡ ζήτησις οὐχ ὑπὲρ τοῦ λελύσθαι  
 τὰς περὶ τῆς εἰρήνης ὁμολογίας ὑπὸ τῶν Ταραντί-  
 5 νων· τοῦτο γὰρ ἅπαντες ὁμολογοῦν· ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ  
 χρόνου τῆς ἀποσταλησομένης ἐπ' αὐτοὺς στρατιᾶς.  
 ἦσαν γὰρ τινες οἱ παραινούντες μήπω τοῦτον ἀνα-  
 λαμβάνειν τὸν πόλεμον, ἕως Ἀσκανοί τ' ἀφροστήκασι  
 καὶ Βρέττιοι καὶ τῶν Σαννιτῶν πολὺ καὶ φιλοπό-  
 10 λεμον ἔθνος, καὶ Τυρροηνία παρ' αὐταῖς οὐσα ταῖς  
 θύραις ἐτι ἀχειρώτος ἦν· ἀλλ' ὅταν ὑποχέτρια γέ-  
 νηται τάδε τὰ ἔθνη, μάλιστα μὲν ἅπαντα, εἰ δὲ μή  
 γε, τὰ πρὸς ἀνατολὰς καὶ πλησίον τοῦ Τάραντος  
 κείμενα. τοῖς δὲ τάναντία τούτοις ἐφαίνετο συμφέ-  
 15 ρειν μὴδὲ τὸν ἐλάχιστον χρόνον ἀναμένειν, ἀλλ'  
 ἐπιψηφίζειν τὸν πόλεμον ἤδη. καὶ ἐπεὶ τὰς γνώμας  
 ἔδει διαριθμῆσθαι, πλείους ἐφάνησαν οὗτοι τῶν  
 ἀναβάλλεσθαι τὸν πόλεμον εἰς ἑτέρους καιροὺς παρ-  
 αινούντων· καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε τὰ δόξαντα τῇ  
 20 βουλῇ [ζήτηει ἐν τῇ περὶ στρατηγημάτων]. *Ursin.*

VII (17, 11) ... Φύσιν ἔχουσι τοῖς μὲν διασῶσαι  
 τὰ ἑαυτῶν ἀγαθὰ βουλομένοις οἱ περὶ τὸν αὐτὸν  
 ἀναστρεφόμενοι τόπον οἰωνοὶ σχολαιοτέρα τῇ πτήσει  
 πρὸς ἀγαθοῦ εἶναι συμβόλον· τοῖς δὲ τῶν ἀλλοτριῶν  
 25 ἐπισημένους οἱ τὴν ἐπίτομον καὶ ταχεῖαν ὁρμὴν ἔχον-  
 τες εἰς τὰ πρόσω· οὗτοι μὲν γὰρ πορισταί τε καὶ  
 θηρευταί τῶν οὐχ ὑπαρχόντων εἰσίν, ἐκεῖνοι δὲ ἐπί-  
 σκοποὶ καὶ φύλακες τῶν παρόντων. *Amb.*

(12) Ἄπασαν τὴν πολεμίαν διεξήει, ἀρούρας τε  
 30 ἀκμαῖον ἤδη τὸ σιτικὸν μέρος ἐχούσας πυρὶ διδοῦς  
 καὶ δένδρα καρποφόρα κείρων.

Παραπλήσιόν τι πάσχουσιν αἱ δημοκρατούμεναι

πόλεις τοῖς πελάγεσιν· ἐκεῖνά τε γὰρ ὑπὸ τῶν ἀνέ-  
 μων ταράττεται φύσιν ἔχοντα ἡρεμεῖν, αὐταῖ τε ὑπὸ  
 τῶν δημαγωγῶν κυκῶνται μηδὲν ἐν ἑαυταῖς ἔχουσαι  
 κακόν. *Amb.*

VIII (17, 13) Τῶν Ταραντίνων βουλομένων ἐκ τῆς 5  
 Ἠπειροῦ Πύρρον μετακαλεῖν ἐπὶ τὸν κατὰ Ῥωμαίων  
 πόλεμον, καὶ τοὺς καλύοντας ἐξελαυνόντων, Μέτων  
 τις καὶ αὐτὸς Ταραντίνος, ἵνα τύχοι προσοχῆς καὶ  
 διδάξειεν αὐτοὺς, ὅσα μετὰ τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας  
 εἰς πόλιν ἐλευθέραν καὶ τροφῶσαν εἰσελεύσεται, 10  
 συγκαθημένον τοῦ πλήθους παρῆν εἰς τὸ θεάτρον  
 ἐστεφανωμένος ὡσπερ ἐκ συμποσίου, παιδίσκην πε-  
 ριειληφῶς ἀλητροῖδα κομωστικὰ μέλη προσαυλοῦ-  
 σαν. (14) Διαλυθείσης δὲ τῆς ἀπάντων σπουδῆς εἰς  
 γέλωτα, καὶ τῶν μὲν ἄδειν αὐτὸν κελεύόντων, τῶν 15  
 δὲ ὀρχεῖσθαι, περιβλέψας κύκλῳ καὶ τῇ χειρὶ διαση-  
 μήνας ἡσυχίαν αὐτῷ παρασχεῖν, ἐπειδὴ κατέστειλε  
 τὸν θόρον· Ἄνδρες, ἔφη, πολῖται, τούτων, ὧν  
 ἐμὲ ποιοῦντα ὁρᾶτε νῦν, οὐδὲν ὑμῖν ἐξέσται ποιεῖν,  
 ἐὰν βασιλεὺς καὶ φρουρὰν εἰς τὴν πόλιν εἰσελθεῖν 20  
 ἐάσῃτε. ὧς δὲ κινουμένους καὶ προσέχοντας εἶδε  
 πολλοὺς καὶ κελεύοντας λέγειν, σῶζων ἐτι τὸ προσ-  
 ποίημα τῆς κραιπάλης τὰ συμβησόμενα αὐτοῖς ἡρι-  
 θμεῖτο κακά· ἐτι δὲ αὐτοῦ λέγοντος, οἱ τῶν κακῶν  
 αἴτιοι συλλαβόντες αὐτὸν κατὰ κεφαλὴν ἐξωθοῦσιν 25  
 ἐκ τοῦ θεάτρον. *Amb.*

VIII (17, 15) Βασιλεὺς Ἠπειρωτῶν Πύρρος, βα-  
 σιλέως Αἰακίδου, Ποπλίῳ Οὐαλερίῳ τῷ Ῥωμαίων  
 ὑπάτῳ χαιρεῖν. πεπύσθαι μὲν εἰκός σε παρ' ἑτέρων,  
 ὅτι πάρεμι μετὰ τῆς δυνάμεως Ταραντίνους τε καὶ 30  
 τοῖς ἄλλοις Ἰταλιώταις ἐπικαλεσαμένοις βοηθήσαν·  
 καὶ μὴδὲ ταῦτα ἀγνοεῖν, τίνων τε ἀνδρῶν ἀπόγονός

εἶμι, καὶ τίνας αὐτὸς ἀποδέδειγμαὶ πράξεις, καὶ πό-  
σιν δύναμιν ἐπάγομαι καὶ ὡς τὰ πολέμια ἀγαθῆν.  
οἶομαι δὲ σε τούτων ἕκαστον ἐπιλογιζόμενον μὴ  
περιμένειν ἕως ἂν ἔργω καὶ πείρᾳ μάθῃς τὴν κατὰ  
5 τοὺς ἀγῶνας ἡμῶν ἀρετὴν, ἀλλ' ἀποστάντα τῶν  
ὄπλων χωρεῖν ἐπὶ τοὺς λόγους, συμβουλεύω τε σοι,  
περὶ ὧν ὁ Ῥωμαίων δῆμος διαφέρεται πρὸς Ταραν-  
τίνους ἢ Λευκανοὺς ἢ Σαννίτας ἐμοὶ τὴν διαγνώσιν  
ἐπιτρέπειν· διαιτήσω γὰρ ἀπὸ παντὸς τοῦ δικαίου  
10 τὰ διάφορα, καὶ παρεξω τοὺς ἐμῆς φίλους ἀπάσας  
τὰς βλάβας ἀποτίνοντας, ἅς ἂν αὐτῶν ἐγὼ καταγνῶ.  
(16) Ὅρθῶς δὲ ποιήσετε καὶ ὑμεῖς βεβαιωτὰς παρα-  
σχόντες ὑπὲρ ὧν ἂν ἐκείνων τινὲς ἐπικαλῶσιν, ὅτι  
τὰ κριθέντα ὑπ' ἐμοῦ φυλάξετε κύρια. ταῦτα ποι-  
15 οῦσι μὲν ὑμῖν εἰρήνην ἐπαγγέλλομαι παρεξέειν καὶ  
φίλος ἔσεσθαι καὶ ἐφ' οὓς ἂν με παρακαλήτε πολέ-  
μους προθύμως βοηθήσειν· μὴ ποιούσι δ' οὐκ ἂν  
ἐπιτρέψωμι χώραν συμμάχων ἀνδρῶν ἐξερημοῦν καὶ  
πόλεις Ἑλληνίδας ἀναρπάξαι καὶ σώματα ἐλεύθερα  
20 λαφυροπωλεῖν, ἀλλὰ κωλύσω τοῖς ὄπλοις, ἵνα παύ-  
σησθε ἤδη ποτὲ ἄγοντες καὶ φέροντες ὄλην Ἰταλίαν,  
καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις ὡς δούλοις ἐντροφῶντες. ἐκ-  
δέξομαι δὲ τὰς σὰς ἀποκρίσεις μέχρι δεκάτης ἡμέρας·  
περαιτέρω γὰρ οὐκ ἂν εἴη δύναμις. *Ambr.*

25 X. (17, 17) Πρὸς ταῦτα ὁ Ῥωμαίων ὑπατος ἀντι-  
γράφει, τὴν τε αὐθάδειαν τοῦ ἀνδρὸς ἐπιρραπίζων  
καὶ τὸ φρόνημα τῆς Ῥωμαίων πόλεως ἐνδεικνύμενος·  
Πόπλιος Οὐαλέριος Λαβίνιος, στρατηγὸς ὑπατος  
Ῥωμαίων, βασιλεὺς Πύρρῳ χαίρειν. ἀνδρὸς ἔργον  
30 εἶναι μοι δοκεῖ σώφρονος ἀπειλητικῆς πέμπειν ἐπι-  
στολὰς πρὸς τοὺς ὑπηκόους· ὧν δ' οὔτε τὴν δύναμιν  
ἐξήτακεν οὔτε τὰς ἀρετὰς ἐπέγνωκε, τούτων ὡς φανύ-

λων καὶ μηδενὸς ἀξίων καταφρονεῖν, ἀνοήτου μοι  
φαίνεται τρόπου τεκμήριον εἶναι καὶ τὸ διάφορον  
οὐκ ἐπισταμένου. ἡμεῖς δὲ οὐ τοῖς λόγοις τιμωρεῖ-  
σθαι τοὺς ἐχθροὺς εἰσώθαμεν, ἀλλὰ τοῖς ἔργοις, καὶ  
οὔτε δικαστὴν ποιούμεθά σε περὶ ὧν Ταραντίνους ἢ 5  
Σαννίταις ἢ τοῖς ἄλλοις πολεμίοις ἐγκαλοῦμεν, οὔτ'  
ἐγγυητὴν λαμβάνομεν ἐκτίσματος οὐδενός· ἀλλὰ τοῖς  
ἡμῶν αὐτῶν ὄπλοις τὸν ἀγῶνα κρινοῦμεν, καὶ τὰς  
τιμωρίας, ὡς ἂν αὐτοὶ θέλωμεν, ἀναπράξομεν.  
ταῦτα δὴ προειδὼς ἀνταγωνιστὴν ἡμῖν παρασκευάζε 10  
σαντόν, ἀλλὰ μὴ δικαστὴν. (18) Καὶ περὶ ὧν ἡμᾶς  
αὐτὸς ἀδικεῖς οὔστινας ἐγγυητὰς ἐκτίσμάτων παρε-  
ξεῖς σκόπει· μὴ Ταραντίνους ἀναδέχου μηδὲ τοὺς  
πολεμίους τὰ δίκαια ὑφέξειν. εἰ δ' ἐκ παντὸς τρό-  
που πόλεμον αἰρεῖσθαι πρὸς ἡμᾶς διέγνωκας, ἴσθι 15  
σοι ταῦτ' οὐ συμβησόμενον, ὃ πᾶσι συμβαίνειν ἀνάγκη  
τοῖς μάχεσθαι βουλομένοις, πρὶν ἐξετάσαι πρὸς οὓς  
ποιήσονται τὴν μάχην. ταῦτα ἐνθυμούμενος, εἰ τινος  
δέη τῶν ἡμετέρων, ἀποθέμενος τὰς ἀπειλὰς καὶ τὸ  
βασιλικὸν αὔχημα καταβαλὼν ἴθι πρὸς τὴν βουλήν, 20  
καὶ δίδασκε καὶ πείθε τοὺς συνέδρους, ὡς οὐδενὸς  
ἀτυχήσων οὔτε τῶν δικαίων οὔτε τῶν εὐγνωμόνων.  
*Ambr.*

XI. (18, 1) Λαβίνιος ὁ Ῥωμαίων ὑπατος κατάσχο 25  
πον τοῦ Πύρρου συλλαβῶν καὶ καθοπλίσας τὴν στρα-  
τιὰν πᾶσαν καὶ εἰς τάξιν καταστήσας, ὡς ἐπέδειξε τῷ  
κατασκόπῳ, φράζειν ἐκέλευσε πρὸς τὸν ἀποστείλαντα  
πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν, καὶ πρὸς οἷς ἐθεάσατο λέγειν,  
ὅτι Λαβίνιος ὁ Ῥωμαίων ὑπατος αὐτὸν παρακαλεῖ  
μὴ λάθρα πέμπειν ἐτέρους ἐπὶ τοὺς κατασκευομένους, 30  
ἀλλ' αὐτὸν ἐλθόντα φανερῶς ἰδεῖν τε καὶ μαθεῖν τὴν  
Ῥωμαίων δύναμιν. *Ambr.*

XII. (18, 2) Ἀνή τις Ὀβλάκος ὄνομα, Οὐλσίμιος ἐπίκλησιν, τοῦ Φερρετανῶν ἔθνος ἡγεμῶν, ὁρᾶν τὸν Πύρρον οὐ μίαν ἔχοντα στάσιν, ἀλλὰ πᾶσι τοῖς μαχομένοις ὀξέως ἐπιφαινόμενον, προσεῖχεν ἐκείνῳ  
 5 μόνῳ τὸν νοῦν, καὶ ὅποι παριππεύοι τὸν ἴδιον ἀντιπαρήγεν ἵππον· καὶ τις ἰδὼν αὐτὸν τῶν μετὰ τοῦ βασιλέως, Λεοννάτος Λεοφάντου Μακεδῶν, ὑποπτέυει τε καὶ δελξας τῷ Πύρρῳ λέγει· τοῦτον τὸν ἄνδρα φυλάττου, βασιλεῦ· πολεμιστῆς γὰρ ἄκρος  
 10 καὶ οὐκ ἐφ' ἐνὸς ἐστηκὼς τόπου μάχεται, σὲ δὲ παρατηρεῖ καὶ τέτακνεν ἐπὶ σοὶ τὸν νοῦν. (3) Τοῦ δὲ βασιλέως λέγοντος· τί δ' ἂν με θράσειεν εἰς ὧν τοσοῦτους ἔχοντα περὶ ἑμαυτὸν; καὶ τι καὶ νεανιευόμενον περὶ τῆς ἑαυτοῦ θώμης, ὡς εἰ καὶ συνέλθοι  
 15 πρὸς ἕνα μόνος οὐκ ἄπεισιν ὀπίσω χαιρῶν, λαβῶν ὃν ἀνέμενε καιρὸν ὁ Φερρετανὸς Ὀβλάκος ἐλαύνει σὺν τοῖς περὶ αὐτὸν εἰς μέσην τὴν βασιλικὴν ἴλην· διακόψας δὲ τὸ στίφος τῶν πέριξ ἱππέων ἐπ' αὐτὸν ἐφέρετο τὸν βασιλέα, διαλαβῶν ἀμφοτέραις ταῖς  
 20 χερσὶ τὸ δόρυ· κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ χρόνον ὁ μὲν Λεοννάτος, ὁ προσιπῶν τῷ Πύρρῳ φυλάττεσθαι τὸν ἄνδρα, μικρὸν ἐκνεύσας εἰς τὰ πλάγια τὸν ἵππον αὐτοῦ παῖει τῷ ξυστῶ δια τῆς λαρόνος· ὁ δὲ Φερρετανὸς ἤδη καταφερόμενος τὸν τοῦ βασιλέως διὰ τοῦ  
 25 στήθους ἐλαύνει. καὶ συγκαταπίπτουσι τοῖς ἵπποις ἀμφοτέρω. (4) Τὸν μὲν οὖν βασιλέα τῶν σωματοφυλάκων ὁ πιστότατος ἐπὶ τὸν ἴδιον ἵππον ἀναβιβάσας ἐξελαύνει· τὸν δὲ Ὀβλάκον μέχρι πολλοῦ διαγωνισάμενον, ἔπειτα ὑπὸ πλῆθος τῶν τραυμάτων  
 30 καταπονηθέντα, τῶν ἐταίρων τινὲς ἀράμενοι μεγάλου περὶ τὸν νεκρὸν ἀγῶνος γενομένου διακομίζουσιν. ἐκ τότε δὲ ὁ βασιλεὺς, ἵνα μὴ διάσημος εἴη τοῖς

πολεμίοις, τὴν μὲν ἰδίαν χλαμύδα, ἣν ἐν ταῖς μάχαις εἰώθει φορεῖν, ἀλουργῆ τε οὔσαν καὶ χρυσόπαστον, καὶ τὸν ὄπλισμὸν πολυτελέστερον ὄντα τῶν ἄλλων τῆς τε ὕλης ἕνεκα, καὶ τῆς τέχνης, τὸν πιστότατον τῶν ἐταίρων καὶ κατὰ τοὺς ἀγῶνας ἀνδρειότατον  
 5 Μεγακλῆν ἐκέλευσεν ἐνδύσαι, τὴν δὲ φαιάν ἐκείνου χλαμύδα καὶ τὸν θώρακα καὶ τὴν ἐπὶ τῇ κεφαλῇ καυσίαν αὐτὸς ἔλαβεν· ὅπερ αἴτιον αὐτῷ τῆς σωτηρίας ἔδοξε γενέσθαι. *Ambr.*

XIII. (18, 5) Ὅτι Πύρρον τοῦ Ἑπειρωτῶν βασιλέως ἐπὶ τὴν Ῥώμην στρατιὰν ἐξαγαρόντος, ἐβουλεύσαντο  
 πρεσβευτὰς ἀποστεῖλαι τοὺς ἀξιόσοντας Πύρρον ἀπολυτρώσαι σφίσι τοὺς αἰχμαλώτους εἴτ' ἀντιδιαλλαξάμενον ἑτέρων σωματίων εἴτ' ἀργύριον κατ'  
 15 ἄνδρα ὀρίσαντα, καὶ ἀποδεικνύουσι πρέσβεις Γάιον Φαβρίκιον, ὃς ἐνιαυτῷ τρίτῳ πρότερον ὑπατεύων Σαννίτας καὶ Λευκανοὺς καὶ Βρεττίους ἐνίκησε μεγάλας μάχαις καὶ τὴν Θουρίων πολιορκίαν ἔλυσε, καὶ Κόιντον Αἰμίλιον τὸν συνάραξαντα τῷ Φαβρικίῳ  
 20 καὶ τὴν ἡγεμονίαν τοῦ Τυρρηνικοῦ πολέμου σχόντα, καὶ Πόπλιον Κορνήλιον, ὃς ἐνιαυτῷ τετάρτῳ πρότερον ὑπατεύων Κελτῶν ἔθνος ὄλον, τοὺς καλουμένους Σένωνας ἐχθίστους Ῥωμαίων ὄντας, πολεμῶν  
 25 ἀπαντας ἤβηδὸν κατέσφαξεν. (6) Οὗτοι πρὸς Πύρρον ἀφικόμενοι καὶ διαλεχθέντες ὅσα τῇ τοιαύτῃ χρεῖα πρόσφορα ἦν, ὡς ἀτέκμαρτον πρᾶγμα τύχη καὶ ταχέαι τῶν πολέμων αἱ τροπαὶ καὶ τῶν συμβησομένων οὐδὲν ἀνθρώποις προειδέναι ἴσδιον, ἐπ' ἐκείνῳ τὴν αἴρεσιν ἐποίουν, εἴτ' ἀργύριον ἀντὶ τῶν  
 30 αἰχμαλώτων ἐβούλετο λαβεῖν εἴτε ἑτέρους αἰχμαλώτους. (7) Πύρρος δὲ μετὰ τῶν φίλων βουλευσάμενος ἀποκρίνεται τάδε αὐτοῖς·

Σχέτιόν τι πράγμα ποιεῖτε, ὧ ἄνδρες Ῥωμαῖοι, φιλίαν μὲν οὐ βουλόμενοι συνάψαι πρὸς ἐμέ, τοὺς δὲ ἀλόντας κατὰ πόλεμον ἀξιούντες ἀπολαβεῖν ἵνα τοῖς αὐτοῖς τούτοις σώμασιν εἰς τὸν κατ' ἐμοῦ πόλεμον ἔχητε χρῆσθαι. ἀλλ' εἰ τὰ κράτιστα βούλεσθε πράττειν, καὶ τὸ κοινῇ συμφέρον ἀμφοτέροις ἡμῖν σκοπεῖτε, σπεισάμενοι τὸν πόλεμον τὸν πρὸς ἐμέ καὶ τοὺς ἐμούς συμμάχους ἀπολάβετε τοὺς ἰδίους προῖκα παρ' ἐμοῦ πολίτας τε καὶ συμμάχους ἅπαντας ἄλλως δ' οὐκ ἂν ὑπομείναιμι πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ὑμῖν προέσθαι. Ursin.

XIII. (18, 8) Ταῦτα μὲν τῶν τριῶν πρεσβευτῶν παρόντων ἐλέξεν· ἰδίᾳ δὲ τὸν Φαβρίκιον ἀπολαβῶν· Ἐγὼ δέ, φησὶν, ὧ Φαβρίκιε, πυνθάνομαι σε κράτι-  
 15 στον ἐν ἡγεμονίαις πολέμων εἶναι, καὶ τῷ βίῳ δίκαιον καὶ σώφρονα, καὶ τὰς ἄλλας ἀπάσας ἔχοντα ἀρετὰς χρημάτων δ' ἄπορον, καὶ καθ' ἐν τὸ μέρος τοῦτο ἐλασσοῦμενον ὑπὸ τῆς τύχης, ὥστε μηδὲν ἄμεινον τῶν πενεσιτάτων βουλευτῶν ἐν τοῖς κατὰ τὸν  
 20 βίον διατελεῖν. τοῦτο δὴ τὸ μέρος ἐκπληρῶσαι προθυμούμενος, ἔτοιμός εἰμι διδόναι σοι πλῆθος ἀργυρίου καὶ χρυσίου τοσοῦτον, ὅσον κτησάμενος ἅπαντας ὑπερβαλεῖς πλούτῳ τοὺς μάλιστα δοκοῦντας Ῥωμαίων εὐπορεῖν· καλὸν νομίσας ἀνάλωμα καὶ  
 25 πρέπον ἡγεμόνι τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀναξίως τῆς ἀρετῆς διὰ πενίαν πράττοντας εὐεργετεῖν, καὶ βασιλικῷ πλούτου τοῦτ' ἀνάθημα καὶ κατασκευάσμα λαμπρότατον. (9) μαθῶν δὲ τὴν ἐμὴν προαίρεσιν, Φαβρίκιε, καὶ πᾶσαν ἀποθέμενος αἰδῶ, μέτεχε τῶν  
 30 παρ' ἡμῖν ὑπαρχόντων ἀγαθῶν, ὡς ἐμοῦ μέλλοντος εἶσεσθαι καὶ μεγάλην σοι χάριν, καὶ μὰ Δι' οὐκ ἐλάττω . . . . . καὶ ξένων τοὺς τιμιωτάτους

εἶναι νόμιζε. ἐμοὶ δ' ἀντὶ τούτων μήτ' ἀδικον μήτ' αἰσχρὰν πράξιν ὑπηρετήσης μηδεμίαν, ἀλλ' ἐξ ὧν αὐτός τε κρείττων ἔσῃ καὶ τιμιώτερος ἐν τῇ ἑαυτοῦ πατρίδι. καὶ πρῶτον μὲν ἐπὶ τὰς διαλλαγὰς, ὅση δύναμις ἐν σοί, παρόρμησον τὴν ἄχρι τοῦδε δύσ-  
 5 εριν καὶ οὐδὲν τῶν μετρίων φρονοῦσαν βουλήν, διδάσκων, ὡς ἐπὶ κακῷ τῆς πόλεως ὑμῶν ἀφίγμαι, Ταραντίνοις καὶ τοῖς ἄλλοις Ἰταλιώταις ὑποσχόμενος βοηθήσειν, οὗς οὔτε ὅσιον οὔτ' εὐσχημόν ἐστὶ μοι παρόντι μετὰ δυνάμεως καὶ τὴν πρῶτην νενικηκότι  
 10 μάχην ἐγκαταλιπεῖν. καὶ πάνυ πολλὰ καὶ ἀναγκαῖα πράγματα κατὰ τοῦτον γενόμενα τὸν καιρὸν ἐπὶ τὴν ἰδίαν με ἀρχὴν μετακαλεῖ. (10) πίστις τε ὑπέχομαι πάσας, ὅποσαι βεβαιούσιν ἀνθρώπων ὁμολογίας, καὶ μόνῳ καὶ μετὰ τῶν ἄλλων πρεσβευτῶν περὶ τῆς οἰ-  
 15 καδὲ ἀνακομιδῆς εἰ Ῥωμαῖοι ποιήσονται φιλίαν, ἵνα θαρρῶν πρὸς τοὺς ἑαυτοῦ πολίτας λέγῃς, εἰ δὴ τισὶ τὸ τῆς βασιλείας ὄνομα ὑποπτόν ἐστιν ὡς ἀπατηλὸν ἐν ὁμολογίαις, ἐξ ὧν ἕτεροὶ τινες ἐν ὄρκοις καὶ σπονδαῖς παρανομεῖν ἔδοξαν ὅμοια καὶ περὶ ἐμοῦ  
 20 τεκμαιρομένοις. γενομένης δὲ τῆς εἰρήνης, ἴθι μετ' ἐμοῦ σύμβουλος τε ἀπάντων ἐσόμενος ἐμοὶ καὶ ὑποστράτηγος καὶ τῆς βασιλικῆς εὐτυχίας μέτοχος. ἐμοὶ τε γὰρ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ πιστοῦ φίλου δεῖ, σοὶ τε χορηγίας βασιλικῆς καὶ πραγμάτων βα-  
 25 σιλικῶν· ἐὰν δὴ συνενέγκωμεν ταῦτ' εἰς τὸ κοινόν, τὰ μέγιστα τῶν ἀγαθῶν παρ' ἀλλήλων ἀποισόμεθα. Ursin.

XV. (18, 11) Πανσαμένον δ' αὐτοῦ, μικρὸν ἐπισχῶν ὁ Φαβρίκιος εἶπε· Περὶ μὲν τῆς ἀρετῆς, ἥτις ἐστὶ περὶ ἡμᾶς, ἢ κατὰ τὰς κοινὰς πράξεις, ἢ κατὰ τὸν ἴδιον βίον, οὐδὲν ἐμὲ δεῖ ἐπ' ἐμᾶντοῦ λέγειν, ἐπειδὴ  
 30 16\*

πέπνυσαι παρ' ἑτέρων· οὐδέ γε περὶ τῆς πενίας, ὅτι  
 μοι γῆδιον μικρόν ἐστι κομιδῆ καὶ φαῦλον οἰκίδιον  
 καὶ οὐτ' ἀπὸ δανεισμάτων οὐτ' ἐκ ἀνδραπόδων ὁ  
 βίος· φαίνη γὰρ καὶ τούτων ἀκριβῶς ἀκηκόεσθαι παρ'  
 5 ἑτέρων. (12) Περὶ δὲ τοῦ κἀκίον με Ῥωμαίων τινὸς  
 πράττειν δι' ἀπορίαν, καὶ μηδὲν εἶναι μοι πλέον  
 ἀσχοῦντι καλοκαγαθίαν, ὅτι τῶν πλουσίων οὐκ εἰμί,  
 κακῶς ὑπέληφας, εἴτ' ἀκούσας τινὸς εἴτ' αὐτὸς εἰ-  
 κάξων. ἐμοὶ γὰρ οὐδεμία πάποτε κακοδαιμονίας αἰ-  
 10 σθησις παρὰ τὸ μὴ πολλὰ κεκτήσθαι γέγονεν οὐδ'  
 ἔστιν, οὐδ' ἄδυράμην τὴν ἑμαντοῦ τύχην οὐτ' ἐν  
 τοῖς κοινοῖς πράγμασιν οὐτ' ἐν τοῖς ἰδίοις. (13) τί  
 γὰρ καὶ παθῶν ἐγκαλοῖην ἂν αὐτῇ; πότερον, ὅτι μοι  
 τῶν καλῶν καὶ περιμαχῆτων, ἐφ' οἷς ἅπανα φύσις  
 15 ἐσπούδακεν εὐγενῆς, οὐδενὸς ἐξεγένετο παρὰ τῆς 2351  
 πατρίδος μεταλαβεῖν διὰ πενίαν; ὃς ἄρχω τε τὰς  
 μεγίστας ἀρχὰς καὶ πρεσβεύω τὰς ἐπιφανεστάτας  
 πρεσβείας καὶ σεβασμούς ἱερῶν πιστεύομαι τοὺς  
 ἀριωτάτους καὶ γνώμην ἀγορεύειν ἀξιούμενος περὶ  
 20 τῶν ἀναγκαιοτάτων καλοῦμαι ἐν ᾧ προσήκει μοι τό-  
 πῳ, ἐπαινοῦμαι τε καὶ ζηλοῦμαι καὶ οὐδενὸς δεύτε-  
 ρος εἰμί τῶν μέγιστα δυναμένων, καὶ παράδειγμα  
 τοῖς ἄλλοις εἶναι δοκῶ καλοκαγαθίας, οὐδὲν ἐκ τῆς  
 ἐμῆς οὐσίας εἰς ταῦτα δαπανῶν, ὥσπερ οὐδὲ τῶν  
 25 ἄλλων οὐδεὶς. (14) οὐ γὰρ ἐνοχλεῖ τοῖς ἐκάστου  
 βίοις ἡ πόλις ἡ Ῥωμαίων, ὥσπερ τινὲς ἕτεροι, ἐν  
 αἷς ὁ κοινὸς μὲν πλοῦτος ὀλίγος ἔστιν, ὁ δὲ τῶν  
 ἰδιωτῶν πολὺς· ἀλλ' αὐτὴ παρέχει τοῖς πρὸς τὰ  
 κοινὰ προσιοῦσιν ἅπαντα ὅσων ἂν δεῶνται, λαμπρὰς 2352  
 30 καὶ μεγαλοπρεπεῖς ὑποτιθεῖσα χορηγίας· ὥστε μηδὲν  
 ἀτιμότερον εἶναι τὸν πενέστατον τοῦ πλουσιωτάτου  
 κατὰ τὴν ἐπαξίωσιν τῶν καλῶν, ἀλλὰ πάντα εἶναι

Ῥωμαίους, ὅσοι ἂν ὡσι διὰ καλοκαγαθίαν τούτων  
 ἄξιοι τῶν τιμῶν, ἀλλήλοις ἴσους. ὁπότε δὲ πενό-  
 μενος οὐδὲν παρὰ τοῦτ' ἔλαττον ἔχω τῶν πολλὰ  
 κεκτημένων, τί παθῶν ἂν κατηγορήσῃ τῆς τύχης,  
 ὅτι οὐχ ὑμῖν ἐξέσωσε τοῖς βασιλεῦσιν, οἷς ὁ πολὺς 5  
 θησαυρίζεται χρυσός; ἀλλὰ μὴν ἐν γε τοῖς ἰδίοις  
 τοσοῦτον ἀπέχω κακοδαιμονίας, ὥστ' ἐν ὀλίγοις  
 πᾶν τῶν μακαρίων ἑμαυτὸν εἶναι δοκῶ παρὰ  
 τοὺς πλουσίους ἐξετάζων, καὶ ἐπὶ τούτῳ μέγιστον  
 φρονῶ, (15) ἐπειδὴ τὰ μὲν ἀναγκαῖα τὸ λυπρὸν ἀπό- 10  
 χρη μοι γῆδιον φιλεροῦντι καὶ ταμιευομένῳ παρέ-  
 χειν· τὰ δ' ἐξω τῶν ἀναγκαίων οὐ βιάζεται ζητεῖν  
 ἢ φύσις, ἀλλὰ καὶ τροφή πάσα ἠδεῖά μοι, ἣν ἂν ὁ  
 2353 λιμὸς σκευάσῃ, καὶ ποτὸν ἅπαν γλυκὺ, ὃ τι ἂν ἡ  
 δίψα πορίσῃ, καὶ ὕπνος μαλθακός, ὅταν ἠγήσῃται 15  
 κόπος, ἐσθῆς τε ἡ παρέχουσα μὴ ὀιγοῦν ἀνταρκε-  
 στάτη, καὶ σκεῦος ὃ τι ἂν εὐτελέστατον τῶν δυναμέ-  
 νων τὰς αὐτὰς παρέχειν χρεῖας οἰκειότατον. ὥστ'  
 οὐδὲ κατὰ τοῦτο δίκαιος εἶην τῆς τύχης κατηγορεῖν,  
 ἢ μοι τοσαύτην παρέσχεν οὐσίαν, ὅσην ἡ φύσις ἐβού- 20  
 λετο ἔχειν· τῶν δ' ὑπερβαλλόντων οὐτε πόθον ἐνέ-  
 φρυσεν οὐτ' εὐπορίαν ἔδωκεν. Ursin.

XVI. (18, 16) Νῆ Δί', ἀλλ' οὐ περὶ ἐστὶ μοι τοῖς  
 πλησίον ἐπαρκεῖν, οὐδ' ἐκ περιουσίας ἐπιστήμην 25  
 2354 ἔδωκέ μοι ὁ θεὸς ἔχειν οὐδὲ μαντικὴν, αἷς ὠφέλου  
 ἂν τοὺς δεομένους, οὐδ' ἄλλα πολλὰ· ἃ δ' ἔστιν ἐν  
 ἐμοί, τούτων μεταδιδούς καὶ πόλει καὶ φίλοις, καὶ  
 ἀφ' ὧν δύναμαι ποιεῖν εὐ τινας, ταῦτα κοινὰ τοῖς  
 δεομένοις παρέχω, οὐκ ἂν ἠγησαίμην αἴτιον ἑμαυ-  
 τόν; ταῦτα δ' ἔστιν, ἃ σὺ κράτιστα νομίζεις εἶναι, 30  
 καὶ πολλῶν χρημάτων αἰτεῖς πρῖσθαι. (17) εἰ δὲ  
 δὴ καὶ τὰ μάλιστα διὰ τὰς εὐεργεσίας τῶν δεομένων

τὸ πολλὰ κεκτηῖσθαι χρήματα μεγάλης ἦν σπουδῆς  
καὶ φιλοτιμίας ἄξιον, καὶ μακαριωτάτους ὑπῆρχεν  
εἶναι τοὺς πλουσιωτάτους, ὡς τοῖς βασιλευσὶν ὑμῖν 2356  
δοκεῖ, πότερος ἦν μοι τρόπος εὐπορίας κρείττων;  
5 ἀφ' ὧν σύ μοι νῦν μεταδίδως αἰσχρῶς, ἢ ἀφ' ὧν  
αὐτὸς ἐκτησάμην καλῶς πρότερον; παρέσχε γάρ μοι  
τὰ πολιτικὰ πράγματα χρηματισμῶν ἀφορμὰς δικαίας,  
πολλὰς μὲν καὶ πρότερον, μάλιστα δ', ἐπεὶ ἐπὶ  
Σαυνίτας καὶ Λευκανοὺς καὶ Βρεττίους στρατιῶν  
10 ἄγων ἐστάλην τετάρτῳ πρότερον ἐναντιῶ τὴν ὑπατον  
ἀρχὴν ἔχων, καὶ πολλὴν μὲν χάραν ἐλεηλάτησα, πολ-  
λαῖς δὲ μάχαις τοὺς ἀντιταξαμένους ἐνίκησα, πολλὰς  
δὲ καὶ εὐδαίμονας πόλεις κατὰ κράτος ἐλὼν ἐξεπόρ-  
θησα, ἐξ ὧν τὴν στρατιᾶν ἅπασαν ἐπλούτησα, καὶ  
15 τὰς εἰσφορὰς τοῖς ἰδιώταις ἄς εἰς τὸν πόλεμον προ-  
εισήνεγκαν ἀπέδωκα, καὶ τετρακόσια τάλαντα μετὰ  
τὸν θρίαμβον εἰς τὸ ταμεῖον εἰσήνεγκα. (18) ἔπειτ' 2356  
ἐκείνων τῶν δορικτήτων ἐξόν μοι λαβεῖν ὅποσα ἐβου-  
λόμην οὐ λαβάν, ἀλλὰ καὶ τὸν ἐκ τοῦ δικαίου πλοῦτον  
20 ὑπεριδῶν ἔνεκα δόξης, ὡς Οὐαλέριος Ποπλικόλας  
ἐποίησε καὶ ἄλλοι πλείστοι πρὸς τούτῳ συχνοί, δι' 2357  
οὓς ἢ πόλις ἡμῶν τηλικαύτη γέγονε, τὰς παρὰ σοῦ  
δέξομαι δωρεάς, καὶ ἀντὶ τῆς κρείττονος εὐπορίας  
ἀλλάξομαι τὴν χεῖρωνα; ἐκείνη μὲν γε τῇ κτήσει καὶ  
25 τὸ μεθ' ἡδονῆς ποιεῖσθαι τὰς ἀπολαύσεις πρὸς τῷ  
καλῶς καὶ δικαίως προσῆν ταύτης δὲ καὶ τοῦτ'  
ἄπεστι. δανείσματα γάρ ἐστιν, ὅσα προσλαμβάνου-  
σιν ἄνθρωποι παρ' ἑτέρων, βαρύνοντα τὴν ψυχὴν  
ἕως ἂν ἀποδοθῇ, κἂν ὀνόμασι καλοῖς αὐτὰ κοσμήσαι  
30 τις, φιλανθρωπίας καλῶν καὶ δωρεάς ἢ χάριτας. 2358  
(19) φέρε, ἐὰν δὴ μανεῖς δέξομαι χρυσόν, ὃν δίδως  
μοι, καὶ τοῦθ' ἅπασι Ῥωμαίοις γένηται φανερόν,

ἔπειθ' οἱ τὴν ἀνυπεύθυνον ἔχοντες ἀρχὴν, οὓς ἡμεῖς  
Τιμητὰς καλοῦμεν, οἷς ἀποδέδοται τοὺς ἀπάντων  
Ῥωμαίων ἐξετάζειν βίους καὶ τοὺς ἐκβαλνοντας ἐκ τῶν  
πατριῶν ἐθῶν ζημιοῦν, καλέσαντές με λόγον ἀποδοῦ-  
ναι κελεύσωσι τῆς δωροδοκίας, ἀπάντων παρόντων 5  
ταῦτα προφερόμενοι. Ursin. et 246, 22—27 Ambr.

XVII. (18, 20) Ἐπέψαμέν σε, ὦ Φαβρίκιε, πρεσ-  
βευτὴν σὺν ἑτέροις δυσὶν ὑπατικοῖς ἀνδράσι πρὸς  
βασιλέα Πύρρον ὑπὲρ αἰχμαλώτων λύσεως διαλεξό-  
μενον ἤκεις ἀπὸ τῆς πρεσβείας, τοὺς μὲν αἰχμα- 10  
λώτους οὐκ ἄγων, οὐδὲ ἄλλο τῇ πόλει φέρων ἀγαθὸν  
οὐθέν, αὐτὸς δὲ βασιλικὰς δωρεάς εἰληφῶς μόνος  
τῶν συναποσταλέντων σοι πρέσβων, καὶ ἦν ὁ δῆμος  
ἀπεψηφίσατο ποιήσασθαι εἰρήνην, ταύτην ποιήσας  
μόνος, ἐπ' οὐθενὶ τῆς πόλεως ἀγαθῷ. πόθεν γάρ; 15  
ἀλλ' ἵνα προδῶς αὐτὴν τῷ βασιλεῖ, καὶ διὰ σοῦ μὲν  
ἐκείνος ἅπασαν Ἰταλίαν ὑφ' αὐτῷ ποιήσεται, δι'  
ἐκείνου δὲ σύ τῆς πατρίδος ἀφέλη τὴν ἐλευθερίαν.  
τοῦτο γὰρ ἐστὶν ὃ διώκουσιν ἅπαντες οἱ μὴ τὴν ἀλη-  
θινήν, ἀλλὰ τὴν προσποιητὸν ἐπιτηδεύσαντες ἀρετήν, 20  
ὅταν εἰς ὄγκον καὶ μέγεθος πραγμάτων προέλθωσιν.  
(21) εἰ δὲ δὴ μὴ τὸ πρεσβευτικὸν ἔχων ἀξίωμα, μηδὲ  
παρὰ τῶν πολεμίων τῆς πατρίδος, μηδ' ἐπὶ προδο-  
σία καὶ τυραννίδι τῶν σεαυτοῦ πολιτῶν ἐδωροδόκεις,  
ἀλλ' ἰδιώτης ὢν καὶ παρ' ἀνδρὸς συμμαχον καὶ ἐπ' 25  
οὐδενὶ κακῷ τῆς πόλεως, ἄρ' οὐ δι' ἐκείνα τῆς με-  
ρίστης ἄξιος εἰ ζημίας, ὅτι διαφθείρεις μὲν τοὺς  
νέους πλοῦτου καὶ τρυφῆς καὶ πολυτελείας βασιλικῆς  
ζηλον εἰς τοὺς βίους εἰσάγων, οἷς πολλῆς δεῖ σωφρο-  
σύνης, εἰ μέλλει σωθῆσθαι τὰ κοινά· κατασχύνεις 30  
δὲ τοὺς σεαυτοῦ προγόνους, ὧν οὐθεὶς ἐξέβη τοὺς  
πατρίους ἐθισμούς, οὐδ' ἠλλάξατο πλοῦτον αἰσχρὸν

ἀντὶ πενίας καλῆς, ἀλλ' ἅπαντες ἐπ' αὐτῆς ἔμειναν  
 τῆς μικρᾶς οὐσίας, ἣν σὺ παραλαβὼν ἐλάττωα ἢ  
 κατὰ σεαυτὸν ἠγγίσω· (22) διαφθείρεις δὲ τὴν ἐκ  
 τῶν προτέρων ἐπιτηδευμάτων γενομένην σοι δόξαν,  
 5 ὡς ἐγκρατῆς καὶ σώφρων καὶ πάσης αἰσχροῦς ἐπιθυ-  
 μίας κρείττων; ἔπειτα χαίρήσεις κακὸς ἐξ ἀγαθοῦ  
 γεόμενος, ὅτ' ἔδει σε, καὶ εἰ πρότερον πονηρὸς  
 ἦσθα, πεπαῦσθαι; ἢ τῶν καλῶν τινὸς ἔτι μεθέ-  
 ξεις τῶν ὀφειλομένων τοῖς ἀγαθοῖς, ἀλλ' οὐκ ἄπει-  
 10 μάλιστα μὲν ἐκ τῆς πόλεως, εἰ δὲ μὴ γ' ἐκ τῆς  
 ἀγορᾶς; *Ambr.*

XVIII. Ἄν ταῦτα λέγοντες ἐκγράψωσί με τῆς βου-  
 λῆς καὶ μεταγάρωσιν εἰς τὰς τῶν ἀτιμῶν φυλάς, τί  
 πρὸς αὐτοὺς ἔξω λέγειν δίκαιον ἢ ποιεῖν; τίνα τὸν  
 15 μετὰ ταῦτα βίον ζήσομαι τηλικαύτη περιπεσῶν ἀτι-  
 μία, καὶ τοὺς ἐξ ἑμαυτοῦ πάντας περιβαλὼν; (23)  
 σοὶ δὲ αὐτῷ τί χρήσιμος ἔτι φανήσομαι, τὸ δύνασθαι  
 τι καὶ τιμᾶσθαι παρὰ τοῖς πολίταις ἀποβαλὼν, δι' ἃ  
 νῦν ἔσπουδακας περὶ ἐμοῦ; λείπεται δὴ τὸν οὐδε-  
 20 μίαν ἔτι χώραν ἐν τῇ πατρίδι κατέχειν δυνάμενον  
 ἀπιέναι πανοικεσία, τὰς ἀσχήμονας αὐτοῦ κατα-  
 γνόντα φυχάς. ἔπειτα ποῦ τὸν λοιπὸν ἔσομαι χρόνον;  
 ἢ τίς ὑποδέχεται με τόπος ἀπαροησίστου γεόμενου  
 ὡσπερ εἰκός; ἢ σὴ βασιλεία, νῆ Δία, καὶ παρεξῆεις  
 25 μοι σὺ τὴν τυραννικὴν ἅπασαν εὐδαιμονίαν; καὶ  
 τί μοι τηλικούτο δώσεις ἀγαθόν, ὅσον ἀφελεῖ τὸ  
 πάντων τιμιώτατον κτημάτων ἀφελόμενος, τὴν ἐλευ-  
 θερίαν; (24) πῶς δ' ἂν ὑπομείναι δυναίμην ἐγὼ  
 τοῦ βίου μεταβολήν, ὅψε δουλεύειν διδασκόμενος;  
 30 ὅπου γὰρ οἱ γεννηθέντες ἐν βασιλείαις καὶ τυραννί-  
 σιν, ὅταν τὸ εὐγενὲς ἔχωσι, τῆς ἐλευθερίας γλίχονται,  
 καὶ πάνθ' ἠγροῦνται τὰ γὰρ τὰ ταύτης ἐλάττω, ἢ που οἱ

ἐν ἐλευθέρῳ καὶ ἐτέρων ἄρχειν μαθούση πόλει βιώ-  
 σαντες πρῶτος οἴσουσι τὴν ἐκ τῶν κρείττωνων ἐπὶ  
 τὰ χεῖρα μεταβολήν, ἐξ ἐλευθέρων ὑπομείναντες  
 δοῦλοι γενέσθαι, ἵνα λαμπρὰς παρατιθῶνται καθ'  
 ἡμέραν τραπέζας, καὶ πολλοὺς θεράποντας περιά- 5  
 ρωνται, καὶ γυναικῶν καὶ παίδων εὐπρεπῶν ἀφει-  
 δεῖς ἀπολαύσεις λαμβάνωσιν, ὡσπερ ἐν τούτοις τῆς  
 ἀνθρωπίνης εὐδαιμονίας κειμένης, ἀλλ' οὐκ ἐν  
 ἀρετῇ; (25) αὐτῶν δὲ τούτων, ἵνα συγχωρήσῃ τις  
 αὐτὰ πολλῆς εἶναι σπουδῆς ἄξια, τίς γένοιτ' ἂν ἴλαρὰ 10  
 χρῆσις οὐκ ἔχουσα τὸ βέβαιον; ἐφ' ἑαυτὸν γὰρ ἔστι  
 τοῖς παρέχουσι τὰς ἡδονὰς ταύτας, ὅταν αὐτοὶ θέ-  
 λητε, πάλιν αὐτὰς ἀφαιρεῖσθαι. ἐγὼ γὰρ λέγειν τοὺς  
 φθόνους, τὰς διαβολὰς, τὸ μηδένα χρόνον ἄνευ κιν-  
 δύνου καὶ φόβου ζῆν, τὰλλα πολλὰ, ὅσα φέρει χαλεπὰ 15  
 καὶ οὐκ ἄξια γενναίου φρονήματος ὁ παρὰ τοῖς βα-  
 σιλεῦσι βίος. μὴ τοσαύτη μανία κατάσχοι Φαβρίκιον,  
 ὥστε τὴν περιβόητον καταλιπόντα Ῥώμην τὸν ἐν  
 Ἠπείρῳ προελέσθαι βίον, καὶ ἔξον ἠγεμόνος ἠγεῖσθαι  
 πόλεως ὑφ' ἐνὸς ἀνδρὸς ἄρχεσθαι μηθὲν ἴσον τοῖς 20  
 ἄλλοις φρονούντος καὶ τὰ πρὸς ἡδονὴν ἀκούειν παρὰ  
 πάντων ἐθισθέντος. (26) ἀλλάξαι μὲν γε τὸ φρόνημα  
 καὶ ταπεινὸν ἑμαυτὸν ποιῆσαι βουλόμενος, ἵνα μη-  
 δὲν ὑποπτεύης ἐξ ἐμοῦ κακόν, οὐκ ἂν δυναίμην·  
 διαμένων δὲ τοιοῦτος, οἶον ἢ φύσις καὶ τὰ ἔθνη πε- 25  
 ποιήκε με, βαρὺς φανήσομαι σοι, καὶ περισπᾶν δόξω  
 τὴν ἠγεμονίαν εἰς ἑμαυτόν. τὸ δ' ὅλον ἔχω σοι παρ-  
 αινεῖν, μὴ ὅτι Φαβρίκιον, ἀλλὰ μηδ' ἄλλον μηδένα  
 δέχεσθαι τῇ βασιλείᾳ μήτε κρείττωα μήτε ἴσον  
 σεαυτοῦ, μήθ' ὅλως ἄνδρα ἐν ἐλευθέροις ἦθρεσι τρα- 30  
 φέντα καὶ φρόνημα μείζον ἢ κατ' ἰδιώτην ἔχοντα. οὔτε  
 γὰρ ἀσφαλῆς βασιλεῖ σύνοικος ἀνήρ μεγαλόφρων



οὔτε ἡδύς. ἀλλὰ περὶ μὲν τῶν ἰδίων συμφερόντων ἃ σοι πρακτέον ἐστὶν αὐτὸς διαγνώσῃ, περὶ δὲ τῶν αἰχμαλώτων ἐπιεικὲς τι βουλευσάμενος ἄφες ἡμᾶς ἀπιέναι.

5 (27) Ὡς δὲ ἐπαύσατο λέγων, ἀγασθεὶς αὐτοῦ τὴν εὐγένειαν τῆς ψυχῆς ὁ βασιλεὺς, τῆς δεξιᾶς λαμβάνεται καὶ φησὶν· Οὐκέτι θαναμάζειν ἐπέρχεται μοι, διὰ τί περιβόητος ἡ πόλις ὑμῶν ἐστὶ καὶ τοσοῦτον ἡγεμονίας περιβέβληται μέγεθος, τοιούτων ἀνδρῶν οὔσα τροφός· καὶ μάλιστα μὲν οὖν ἐβουλόμην 10 ἂν ἐξ ἀρχῆς μηδεμίαν συμβῆναί μοι πρὸς ὑμᾶς διαφοράν· ἐπεὶ δὲ συνέβη, καὶ θεῶν τις ἐβούλετο πειραθέντας ἡμᾶς τῆς ἀλλήλων δυνάμεως καὶ ἀρετῆς τότε συναγαγεῖν, ἔτοιμός εἰμι διαλύεσθαι· καὶ ἵνα 15 πρῶτος ἄρξω τῶν φιλανθρώπων, ἐφ' ἃ παρακαλεῖτέ με, χαρίζομαι τῇ πόλει τοὺς αἰχμαλώτους ἅπαντας ἄνευ λύτρων. *Ambr.*

Διβύην χειρωσάμενος μέχρι καὶ τῶν προσωκεανίων ἐθνῶν. *Steph. Byz. s. v. Ωκέανος.*

Κωστάντεια — ἐστὶ καὶ Βρεττίας ἄλλη, ὡς Διονύσιος ἑνεακαιδεκάτῳ Ῥωμαικῆς ἀρχαιολογίας. *Steph. Byz.*

## EXCERPTA

EX

LIBRO XX.

I. [Πύρρου καὶ Ῥωμαίων ὑπάτων Ποπλίου Δεκίου καὶ Ποπλίου Σουλπικίου]

Συνθέμενοι δε διὰ κηρῶν τὸν χρόνον ἐν ᾧ διαγωνιοῦνται κατέβαινον ἐκ τῶν στρατοπέδων καὶ εἰς τάξιν καθίσταντο τοιάνδε· βασιλεὺς μὲν Πύρ- 5 ρος τὴν Μακεδονικὴν φάλαγγα πρώτην ἔταξεν ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος, καὶ μετ' αὐτὴν τοὺς ἐκ τοῦ Τάραντος μισθοφόρους Ἰταλιώτας. ἔπειτα τοὺς ἐξ Ἀμπρακίας καὶ μετ' αὐτοὺς τὴν Ταραντίνων λεύκασπιν φάλαγγα· ἐξῆς δὲ τὸ Βρεττίων καὶ 10 Λευκανῶν συμμαχικόν. ἐπὶ μέσης δὲ τῆς φάλαγγος Θεσπρωτοὺς τε καὶ Χάονας, τούτοις δὲ συνεχεῖς τοὺς Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων καὶ Ἀθαμάνων μισθοφόρους· τελευταίους δὲ Σαννίτας τὸ λαῖον ἐκ- 15 πληροῦντας κέρας. τῆς δὲ ἵππου τὴν μὲν Σαννίτιν καὶ Θετταλικὴν καὶ Βρεττίαν καὶ τὴν ἐκ τοῦ Τάραντος μισθοφόρον ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος ἔστησεν, τὴν δὲ Ἀμπρακιῶτιν καὶ Λευκανὴν καὶ Ταραντι- 20 νην καὶ τὴν Ἑλληνικὴν μισθοφόρον ἦν ἐξεπλήρουν Ἀκαρνᾶνες τε καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Μακεδόνες καὶ Ἀθα- 20 μᾶνες ἐπὶ τοῦ λαίου. τοὺς δὲ ψιλούς καὶ τοὺς ἐλέφαντας διχῆ νείμας, ἀμφοτέρων κατόπιον ἔστησε τῶν

κεράτων, σύμμετρόν τι χωρίον ἀφρεσιῶτας ὀλίγον ἐπανεστῆκός τοῦ πεδίου. αὐτὸς δὲ τὸ καλούμενον βασιλικὸν ἄγγμα τῶν ἐπιλέκτων ἱππέων ὁμοῦ τι δισχιλίων περὶ αὐτὸν ἔχων ἐκτὸς ἦν τάξεως, εἶναι τοῖς 5 κἀμνονοσιν αἰεὶ τῶν σφετέρων ἐξ ἑτοίμου ἐπάρακσιν.

Οἱ δὲ ὕπατοι κατὰ μὲν τὸ λαϊὸν κέρας ἔστησαν τάγμα τὸ καλούμενον πρῶτον ἐναντίον τῇ Μακεδονικῇ καὶ Ἀμπρακιστικῇ φάλαγγι καὶ τοῖς μισθοφόροις τῶν Ταραντίνων. ἐπόμενον δὲ τῷ πρῶτῳ 10 τάγματι τὸ τρίτον, καθ' ὃ μέρος ἡ λευκασπίς ἦν τῶν Ταραντίνων φάλαγγ καὶ τὸ Βρεττίων καὶ τὸ Λευκανῶν συμμαχικόν. συναφῆς δὲ τῷ τρίτῳ τὸ τέταρτον ἔστησαν, κατὰ τοὺς Μολοιτοὺς τε καὶ Χάονας καὶ Θεσπρωτοὺς· τὸ δὲ δευτέρου ἐπὶ τοῦ δεξιῷ κέρατος 15 ἐναντίον τοῖς μισθοφόροις τοῖς ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος Αἰτωλοῖς καὶ Ἀκαρῶσι καὶ Ἀθαμᾶσι καὶ τῇ Σαννιτῶν θυρεαφόρῳ φάλαγγι. Λατίνους δὲ καὶ Καυπανοὺς καὶ Σαβίνους καὶ Ουβρικούς καὶ Ουολούσκους καὶ Μαρουγκίνους καὶ Πελλήγους καὶ Φερεντανούς 20 καὶ τοὺς ἄλλους ὑπηκόους, εἰς τέτταρα διελόντες μέρη, τοῖς Ῥωμαίοις παρενέβαλον τάγμασιν, ἵνα μὴδὲν αὐτοῖς ἀσθενὲς εἴη μέρος. τὴν δὲ ἵππου τὴν τ' οἰκίαν καὶ τὴν συμμαχικὴν διελόντες ἐπ' ἀμφοτέρων ἑτάξαν τῶν κεράτων. ἐκτὸς δὲ τάξεως τοὺς τε 25 φιλοὺς κατέστησαν καὶ τὰς ἀμάξας, τριακοσίας τὸν ἀριθμὸν, ἃς παρεσκευάσαντο πρὸς τὴν τῶν ἐλεφάντων μάχην. αὐταὶ κεραίας εἶχον ἐπιβεβηκνίας στόμιξιν ὀρθοῖς πλαγίας, εὐτρόχους, ὅπη βουληθεῖη τις ἅμα νοήματι περιάγεσθαι δυναμένης· ἐπ' ἄκρων δὲ 30 τῶν κεραιῶν ἢ τριόδοντες ἦσαν ἢ κέστροι μαχαιοειδεῖς ἢ δρέπανα ὀλοσίδηρα ἢ καταρράκτας τινὰς ἐπιροπιτούντας ἀνωθεν βαρεῖς κόρακας. πολλαῖς δ'

αὐτῶν χεῖρες προσήρητητο πυροφόροι στυπία πολλῇ πίττη λελιπασμένα περὶ αὐτὰς ἔχουσαι, προεικείμεναι τῶν ἀμαξῶν, αἷς ἐμελλον ἐστηκότες ἐπ' αὐτῶν τινες, ὅτε πλησίον γένοιτο τῶν θηρίων, πλήσαντες 5 πυρὸς ἐπὶ τὰς προβοσκίδας αὐτῶν καὶ τὰ πρόσωπα τὰς πληγὰς φέρειν. ἐφροσθήκεσαν δὲ ταῖς ἀμάξαις τετρακύκλοις ὑπαρχούσαις καὶ τῶν ψιλῶν συχνοὶ τοξοῖται καὶ χερμάται καὶ τριβόλων σιδηρῶν σφενδονῆται καὶ παρ' αὐτὰς κάτωθεν ἔτι πλείους ἕτεροι.

Τάξις μὲν αὕτη τῶν στρατευσάντων ἦν ἀμφοτέρων· ἀριθμὸς δὲ τοῦ βασιλικῷ μυριάδες ἑπτὰ 10 πεζῶν, ἐν οἷς Ἕλληνες οἱ τὸν Ἴονιον κόλπον διαπεράσαντες ἐπὶ μυριοῖς ἦσαν ἑξακισχίλιοι· τοῦ δὲ Ῥωμαικοῦ πλείους τῶν ἑπτὰ μυριάδων· ἐξ αὐτῆς μέντοι τῆς Ῥώμης ὁμοῦ τι δισμύριοι. ἱππεῖς δὲ παρεγένοντο 15 Ῥωμαῖοι μὲν ἀμφὶ τοὺς ὀκτακισχιλίους, Πύρροι δὲ μικρῶ πλείους καὶ θηρία ἑνὸς δέοντα εἴκοσι. Ath.

II. Ἐπεὶ δὲ τὰ σημεῖα τῆς μάχης ἀνεδείχθη, παιανίσαντες οἱ στρατιῶται καὶ τὸ σύνολον ἀλαλάξαντες 20 ἐχώρουν ὁμοῦσε, καὶ συμπεσόντες ἐμάχοντο πᾶσαν ἀποδεικνύμενοι τὴν ἐνόπλιον ἐπιστήμην. οἱ μὲν ἱππεῖς οἱ παρὰ ἀμφοτέρα τεταγμένοι τὰ κέρατα, προειδότες ἐν οἷς ἐπλεονέκτου αὐτοὶ τῶν πολεμίων, εἰς ταῦτα κατέφευγον· Ῥωμαῖοι μὲν εἰς τὴν ἐκ χειρὸς 25 καὶ σταδιαίαν μάχην· τὸ δὲ τῶν Ἑλλήνων ἱππικὸν εἰς τὰς περιελάσεις καὶ τοὺς ἐξελιγμούς· καὶ οἱ μὲν ὅποτε διώκονται ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων, ἐπιστρέψαντες τοὺς ἵππους καὶ τοὺς χαλινοὺς κατασχόντες ἐπεξομάχουν, οἱ δὲ ὅποτε τοὺς Ῥωμαίους μάθοιεν εἰς ἀντίπαλα καθισταμένους, ἐπὶ δόρῳ κλίναντες καὶ δι' 30 ἀλλήλων ἐξελλίξαντες περιεδίνουν τοὺς ἵππους αὐθις ἐπὶ τὸ μέτωπον καὶ τὰ κέντρα προσβαλόντες ἐχώρουν

ὁμόσε. ἡ μὲν οὖν δὴ τῶν ἱππέων μάχη τοιαύτη τις ἦν· ἡ δὲ τῶν πεζῶν τῇ μὲν ἐμπερήσ ἐκείνη, τῇ δὲ διάφορος. ἐμπερήσ μὲν κατὰ τὸ σύμπαν, διάφορος δὲ κατὰ τὰ μέρη. τὸ μὲν γὰρ δεξιὸν κέρας ἐπιρροπέ-  
 5 στερον ὑπῆρχεν ἑκατέροις, τὸ δ' ἀριστερόν ὑποδε-  
 ἔστερον. οὐ μέντοι σὺν τῷ ἀσχήμῳ τὰ νῶτα τοῖς πολεμίοις ἐνέκλιναν οὐδέτεροι, ἀλλὰ σὺν κόσμῳ καὶ παρὰ ταῖς σημεῖαις μένοντες ἑκάτεροι καὶ τὴν προ-  
 10 δὲ ἀριστεύσαντες ἦσαν ἐκ μὲν τῆς βασιλικῆς στρα-  
 τιᾶς Μακεδόνες· οὗτοι γὰρ ἀνέστειλαν τὸ πρῶτον τῶν Ῥωμαίων στρατόπεδον καὶ τοὺς σὺν αὐτοῖς τα-  
 χθέντας Λατίνους· ἐκ δὲ τῆς Ῥωμαικῆς οἱ συνελθόν-  
 15 τες εἰς τὸ δεύτερον τάγμα Μολοττοῖς καὶ Θεσπρω-  
 τοῖς καὶ Χάοσις ἐναντίοι. κελεύσαντος δὲ τοῦ βασι-  
 λέως τοὺς ἐλέφαντας ἐπὶ τὸ κάμνον τῆς στρατιᾶς ἄγειν, μαθόντες τὴν ἔφοδον τῶν θηρίων οἱ ταῖς κεραιοφόροις ἐπιβεβηκότες ἀμάξαις ἤλανον ὁμόσε.  
 οὗτοι τὸ μὲν πρῶτον ἐπέσχον τῆς ὁρμῆς τὰ θηρία,  
 20 παίοντες ταῖς μηχαναῖς καὶ τὰς πυρφόρους χεῖρας  
 εἰς τὰς ὄψεις αὐτῶν ἐντρέποντες. ἔπειτα οὐκέτι προσ-  
 αγόντων τὰ θηρία τῶν ἐφρονηκότες τοῖς πύργοις,  
 ἀλλὰ ταῖς λόγχαις βαλλόντων ἄνωθεν καὶ τῶν ψιλῶν  
 διακοπτόντων τὰ περικείμενα γέγρα ταῖς ἀμάξαις καὶ  
 25 νευροτομούντων τοὺς βόας [καὶ] καταπηδῶντες ἀπὸ  
 τῶν ὄχημάτων οἱ πρὸς ταῖς μηχαναῖς κατέφευγον εἰς  
 τοὺς ἔγγιστα πεζοὺς καὶ πολλὴν παρεῖχον αὐτοῖς τα-  
 ραχὴν. οἱ δὲ ἐν μέσῃ τῇ βασιλικῇ φάλαγγι ταχθέντες  
 Λευκανοὶ καὶ Βρεῖττιοι χρόνον οὐ πολὺν ἄγωνισάμενοι  
 30 τρέπονται πρὸς φυγὴν ὑπὸ τοῦ τετάρτου Ῥωμαικοῦ  
 τάγματος ἀνασταλέντες. ὡς δὲ ἄπαξ ἐνέκλιναν οὗτοι,  
 καὶ διεσπάρα τὸ κατ' αὐτοὺς μέρος τῆς φάλαγγος,

οὐδὲ οἱ τὴν πλησίον αὐτῶν λαβόντες στάσις Ταραν-  
 τῖνοι παρεμένον, ἀλλὰ ἐντρέψαντες κἀκεῖνοι τὰ νῶτα  
 τοῖς πολεμίοις ἔφευγον. *Ath.*

III. Βασιλεὺς δὲ Πύρρος ὡς ἔμαθεν ὅτι Λευκανοὶ  
 καὶ Βρεῖττιοι καὶ Ταραντῖνοι φεύγουσι προτροπάδην, 5  
 καὶ λελώβηται τὸ κατ' ἐκείνους μέρος ἢ φάλαγγι, ἐκ τῆς  
 καθ' ἑαυτὸν ἴλης μέρος τι παραδοὺς ἑτέροις ἠγεμόσι,  
 καὶ ἀπὸ τοῦ δεξιοῦ κέρατος ἑτέρους ἱππεῖς ὄσους ὑπέ-  
 λαβεν ἀρκεῖν ἀποστέλλει βοηθούς τοῖς ὑπὸ τῶν Ῥω-  
 10 μαίων διασκομμένοις. ἐν οἷς δὲ ταῦτα ἐγένετο χρόνοις, 10  
 παρὰ τοῦ δαιμονίου βοήθεια τοῖς Ῥωμαίοις ἐκδηλος  
 γίνεται. Λαυνίων γὰρ τινες ἐκ πόλεως Ἀργυροῖπων,  
 ἦν νῦν Ἄρπους καλοῦσι, πεζοὶ μὲν τετρακισχίλιοι,  
 ἱππεῖς δὲ ἀμφὶ τοὺς τετρακοσίους, ἐπίκουροι τοῖς  
 15 ὑπάτοις ἀποσταλέντες, ὡς ἐγένοντο πλησίον τοῦ βα- 15  
 σιλικῶ στρατοπέδου τὴν κατὰ νότου τῶν πολεμίων  
 ἄγουσαν ὁδὸν ἀπὸ ταῦτομάτου πορευόμενοι, καὶ τὸ  
 πεδῖον εἶδον μεστὸν ἀνθρώπων, ὀλίγον ἐπισχόντες  
 αὐτόθι χρόνον καὶ λογισμοὺς παντοδαποὺς λαβόντες,  
 καταβαίνειν μὲν ἀπὸ τῶν μετεώρων καὶ συλλαμβά- 20  
 20 νειν τῆς μάχης ἀπέγνωσαν, οὔτε ὅπη τι φίλιόν ἐστιν  
 εἰδότες οὔτε ὅπη πολέμιον, οὔτ' ἐν ᾧ χωρίῳ στάντες  
 ὠφέλειάν τινα παρέξουσι τοῖς σφετέροις δυνάμενοι  
 συμβαλεῖν, κράτιστον δὲ ὑπέλαβον εἶναι περιστάντες  
 τὸ στρατόπεδον τῶν πολεμίων ἐξελεῖν, ὡς αὐτοὶ τε 25  
 25 πολλὰς καὶ καλὰς ἔξοντες ὠφελείας, εἰ κρατήσειαν  
 τῶν ἀποσκευῶν, καὶ μεγάλην παρέξοντες τοῖς πολε-  
 μίοις ταραχὴν, εἰ θεάσαιτο καιόμενον ἄφνω τὸν  
 χάρακα· ἀπέχε δὲ τὸ χωρίον τῆς μάχης οὐ πλέον  
 εἴκοσι σταδίων. ταῦτά τε δὴ βουλευσάμενοι καὶ 30  
 30 παρὰ αἰχμαλώτων τινῶν ἀκούσαντες, οὓς ἐπὶ ξυλι-  
 σμῶν ἐλθόντας εἰλήφισαν, ὅτι κομιδῇ τινες ὀλίγοι

φυλάττουσι τὸν χάρακα, προσέβαλον αὐτοῖς παντα-  
 χόθεν. ὑπὲρ ὧν ἐπιγνοῦς ὁ Πύρρος ἰππέως τινὸς  
 ἀπαγγείλαντος, ὃς ἀρξάμενος πολιορκεῖσθαι τοῦ χά-  
 5 ρακος διεξέλασας τὸν ἵππον καὶ τὰ κέντρα προσβα-  
 λῶν παρῆν διὰ ταχέων, τὴν μὲν [γὰρ] ἄλλην δύναμιν  
 ἐν τῷ πεδίῳ κατέχειν ἔγνω καὶ μήτε ἀνακαλεῖν μήτε  
 κινεῖν τὴν φάλαγγα, τοὺς δ' ἐλέφαντας καὶ ἀπὸ τῶν  
 ἰππέων τοὺς εὐτολμοτάτους ἐπιλεξάμενος ἀποστέλλει  
 βοηθοὺς τῷ χάρακι. ἔτι δὲ τούτων πορευομένων ἐκ-  
 10 πολιορκηθεὶς ἄφνω ὁ χάραξ ἀνάπτειται. καὶ οἱ δια-  
 πραξάμενοι τὸ ἔργον, ὡς ἔμαθον ἀπὸ τῶν μετεώρων  
 ἐπιόντας σφίσι τοὺς ἀπὸ τοῦ βασιλέως ἀπεσταλ-  
 μένους, εἰς ὄρους τινὸς κορυφῆν ἔφυγον, ἔνθα οὔτε  
 τοῖς θηρίοις ἀνελθεῖν θάδιον ἦν οὔτε τοῖς ἵπποις.  
 15 οἱ δὲ βασιλικοὶ τοῦ καιροῦ τῆς βοηθείας ὑστερή-  
 σαντες ἐπὶ τοὺς ἐκ τοῦ τρίτου καὶ τετάρτου τάγματος  
 Ῥωμαίους ἐτρέποντο πολὺν προεληλυθότας ἀπὸ τῶν  
 ἄλλων, ὅτε τοὺς κατὰ σφῶς πολεμίους ἐτρέψαντο.  
 προιδόντες δὲ αὐτῶν οἱ Ῥωμαῖοι τὴν ἔφοδον εἰς  
 20 ὑψηλόν τι καὶ λάσιον χωρίον ἀναδραμόντες εἰς τάξιν  
 καθίσταντο. οἱ μὲν οὖν ἐλέφαντες οὐ δύναμενοι  
 πρὸς τὸν ὄχθον ἀναβαίνειν οὐδὲν αὐτοὺς ἠδίκουν,  
 οὐδὲ αἱ τῶν ἰππέων ἴλαι· οἱ δὲ τοξόται καὶ σφενδο-  
 νῆται βάλλοντες πανταχόθεν κατετίτρωσκόν τε καὶ  
 25 διέφθειρον ἐξ αὐτῶν συχνούς. αἰσθήσεως δὲ γενο-  
 μένης τοῖς ἡγεμόσι τῶν ἐκεῖ πραττομένων, Πύρρος  
 μὲν ἐκ τῆς ἀσπιστικῆς φάλαγγος Ἀθαμῶνάς τε καὶ  
 Ἀκαρῶνας καὶ τῶν Σαννιτῶν τινὰς ἀποστέλλει, ὁ δὲ  
 30 τῶν Ῥωμαίων ὑπατος Ἰλας τινὰς ἰππέων, ἐπειδὴ  
 τοιαύτης ἔδει τοῖς πεζοῖς συμμαχίας. καὶ κατὰ τὸν  
 αὐτὸν χρόνον ἕτερα πάλιν ἐκεῖ γίνεται μάχη πεζῶν  
 τε καὶ ἰππέων, καὶ φόνος ἔτι πλείων.

Ἀρξάμενου δὲ τοῦ βασιλέως καὶ οἱ τῶν Ῥωμαίων  
 ὑπατοὶ τοὺς ἑαυτῶν ἀνεκάλουν περὶ καταφορὰν ὄν-  
 τος τοῦ ἡλίου, καὶ διαβιβάσαντες τὸν ποταμὸν ἀπῆ-  
 γον εἰς τὸν χάρακα συσκιάζοντος ἤδη. ἡ δὲ τοῦ Πύρ-  
 ρου δύναμις ἀπολωλεκυῖα σκηνὰς τε καὶ ὑποζύγια 5  
 καὶ ἀνδράποδα καὶ τὴν ἀποσκευὴν ἅπασαν, ἐπὶ με-  
 τεώρου τινὸς χώρου παρενέβαλεν, ἔνθα τὴν ἐπιού-  
 σαν νύκτα διήγαγεν ὑπαίθριος, ἀσκευής, ἀθεράπευ-  
 τος, οὐδὲ τῆς ἀναγκαίας εὐποροῦσα τροφῆς, ὥστε  
 καὶ διαφθαρῆναι συχνούς τραυματίας, οἷς ἐνῆν ἔτι 10  
 σώζεσθαι βοηθείας τε καὶ κηδεμονίας μεταλαβοῦσιν.  
 τοιοῦτον τέλος ἐτυχεν ἡ δευτέρα μάχη Ῥωμαίοις  
 πρὸς Πύρρον περὶ πόλιν Ἄσκλον. Ath.

IV. Ὅτι περὶ τὴν Ῥηγίνων πόλιν πάθος γίνεται  
 δεινόν, οἷον καὶ περὶ Μεσσήμην ἐγένετο τὴν ἐν Σι- 15  
 κελίᾳ, μεγάλης φυλακῆς καὶ προνοίας ἄξιον ἀπάσαις  
 ταῖς πόλεσιν. ἀνάγκη δὲ τὰς αἰτίας καὶ τὰς προφά-  
 σεις τῶν κατασχόντων αὐτὴν κακῶν προειπεῖν. Ὅτε  
 Λευκανοὶ καὶ Βρέττιοι δυνάμεσι πολλαῖς ἐπὶ Θου- 20  
 ρίους στρατεύσαντες τὴν τε χώραν αὐτῶν ἐξεπόρθη-  
 σαν καὶ τὴν πόλιν περιχαρᾶκόσαντες ἐπολιόρουν·  
 ἐφ' οὓς ἀπεστάλη Ῥωμαίων δύναμις, ἧς ἡγεῖτο Φα-  
 βρικός ὁ ὑπατος· φοβηθέντες οἱ Ῥηγῖνοι μὴ καὶ ἐπὶ  
 σφῶς οἱ βάρβαροι Ῥωμαίων ἀπελθόντων στρατιᾶν  
 ἀποστελλώσι, καὶ τὴν Ταραντίνων πόλιν ἐν ὑποψίαις 25  
 ἔχουτες, ἐδεήθησαν τοῦ Φαβρικού δυνάμιν τῇ πό-  
 λει λιπεῖν πρὸς τὰς αἰφιδίους τῶν βαρβάρων ἐπι-  
 δρομάς, καὶ εἴ τις ἐκ τῶν Ταραντίνων ἐπιβουλή  
 σφισιν ἀπροσδόκητος γένοιτο. καὶ λαμβάνουσι Καμ-  
 πανοὺς μὲν ὀτακοσίους, Σιδικίλους δὲ τετρακοσίους, 30  
 ὧν ἀπάντων ἡγεῖτο Δέκιος Καμπαῦος τὸ γένος. οὐ-  
 τος ὁ ἀνήρ, ὅτε κατάγοιτο παρὰ τοῖς ἐπιφανεστάτοις

τῶν ἐπιχωρίων ἐστιώσεις [τε] λαμπρὰς κατὰ τὴν φιλοφροσύνην τῶν ξένων ἐστιώμενος, κατασκευάσας οἰκιῶν λαμπρὰς καὶ βαθυπλούτους παρὰ πολλοῖς ὄρων κατ' ἀρχὰς μὲν ἐμακάριζε τοὺς Ῥηγίνους τῆς εὐδαιμονίας, ἐπειθ' ὡς ἀναξίους ἐφθόνη, τελευτῶν δ' ὡς πολεμίους ἐπιβουλεύειν ἤρξατο. καὶ προσλαβῶν κοινῶν τῶν ἀπορορήτων βουλευμάτων τὸν γραμματεῖα πανοῦργον ἄνδρα καὶ πάσης πονηρίας ἀρχιτέκτονα, πρὸς αὐτὸν πάντας Ῥηγίνους ἀποκτείνει καὶ τὴν εὐδαιμονίαν αὐτῶν τὴν μὲν αὐτὸς κατασχεῖν, τὴν δὲ τοῖς στρατιώταις διελθεῖν, λέγοντος ὅτι Μεσσήνην ὀλίγον πρότερον εἶλον... [ὑφ' οὗ] πεισθεῖς, καὶ τὸν τρόπον τῆς ἐπιχειρήσεως σὺν αὐτῷ βουλευσάμενος, τοὺς ταγματάρχας καὶ τοὺς ἐπιφανεστάτους τῶν στρατιωτῶν εἰς τὸ συνέδριον ἐκάλεσεν· δεηθεῖς δὲ ἀπάντων ἀπορορήτους φυλάξει τοὺς λόγους, κίνδυνον ἔφη μέγαν αὐτῷ ἐπιχειρησθῆναι πολλῆς πάνυ φυλακῆς καὶ ταχείας δεόμενον, ὡς τοῦ καιροῦ μὴ διδόντος ἀναστροφῆν. πεπυσμένους γὰρ τὴν Πύρρον διάβασιν τοὺς ἐπιφανεστάτους Ῥηγίνων κρούφα διαπέμπεσθαι πρὸς αὐτὸν ὑπισχνουμένους κατασφάξειν τὴν φρουρὰν καὶ παραδώσειν ἐκεῖνα τὴν πόλιν. ἔτι ταῦτα λέγοντος αὐτοῦ παρῆν τις ἐγκάθετος, ἀνχηρὸς ὡς ἐξ ὁδοῦ, γράμματα ὑπ' αὐτοῦ Δεκίου κατεσκευασμένα κομίζων, ὡς παρὰ ξένου δὴ τινος ἰδίου, ἐν οἷς ἐδηλοῦτο μέλλον ὁ βασιλεὺς ἀποστέλλειν ἐπὶ τὸ Ῥηγιον πεντακοσίους στρατιώτας ὡς καταληφθόμενος τὴν πόλιν, ἀνοιξείν ὑπεσχημένων αὐτοῖς Ῥηγίνω τας πύλας. Τινὲς μὲν λέγουσι τὸν γραμματηφόρον ὑπὸ Φαβρικίου τοῦ ὑπάτου κατὰ σπουδὴν ἀπεστάλθαι, τὴν δ' ἐπιστολὴν ταῦτα περιέχειν, ἃ μικρῶ πρότερον ἔφην, καὶ παραινεῖν Δεκίῳ φθάσαι

τοὺς Ῥηγίνους· ἔχει δὲ λόγον ἀμφοτέρω. εἶδειξε δὲ ταῦτα τοῖς ἐν τῷ συνεδρίῳ παροῦσι, καὶ ἐπεὶ τάχιστα νύξ ἐγένετο, φράσαντες οἱ ταγματάρχαι τοῖς ἄλλοις στρατιώταις ἃ διενουῦντο πράττειν ἐπὶ τὰς οἰκίας τῶν Ῥηγίνων ἐχώρουν, καὶ τοὺς μὲν εὐχόμενους ἔτι, τοὺς δὲ κοιμωμένους καταλαβόντες ἐν τοῖς ἰδίῳις κατασφάττουσιν ἐφεστῖοις ἀντιβολούντας καὶ γόνασι προσκυλιόμενος καὶ ἀνθ' ὅτου ταῦτα πάσχουσι μαθεῖν ἀξιούντας, οὔτε ἡλικίας οὔτε τύχης οὐδεμιᾶς φειδόμενοι. φονεύσαντες δὲ τοὺς ἄνδρας ἔτι δεινότερον ἔργον ἐξεργάσαντο, τὰς τε γυναῖκας τῶν ἰδίων ξένων καὶ τὰς παρθένους διελόμενοι συνῆσαν ἀκούσας, ὧν τοὺς πατέρας καὶ τοὺς ἄνδρας ἐν ὀφθαλμοῖς ἀπέκτειναν. Δέκιος δὲ ἀντὶ φρουράρχου τύραννος ἐγερόνει τῆς Ῥηγίνων πόλεως· καὶ λογιζόμενος ὅτι δώσει Ῥωμαίοις ὧν ἔδρασε δίκας, Καμπανοῖς τοῖς κατέχουσι Μεσσήνην συμμαχίαν τίθεται μεγίστην ἰσχὺν τῶν ἐν Σικελίᾳ πόλεων ἔχουσι, καὶ τὴν πόλιν διὰ πολλῆς εἶχε φυλακῆς. Esc.

V. Ἡ δὲ βουλὴ μαθοῦσα τὰ περὶ τοὺς Ῥηγί-  
 νους πάθη παρὰ τῶν διαφυγόντων τὸν ὄλεθρον, οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον ἀναμείνασα χρόνον ἀποστέλλει στρατιῶν νεοσύλλεκτον ἄγοντα τὸν ἕτερον τῶν κατὰ πόλιν στρατηγῶν. φθάσασα δὲ τὴν Ῥωμαίων ἄφιξιν ἢ τοῦ δαιμονίου πρόνοια τὸν ἡγεμόνα τῆς φρουρᾶς Δέκιον ἀντὶ τῶν ἀνοσίων βουλευμάτων εἰς τὰ κυριώτατα τοῦ ζῆν ἐτιμωρήσατο μέρη, νόσον εἰς τοὺς ὀφθαλμοὺς ἐμβαλοῦσα δεινὰς περιοδονίας φέρουσαν· ἢν ἰάσασθαι προθυμούμενος ἄνθρωπος ἐκ Μεσσήνης ἰατρὸν μεταπέμπεται Δεξιμάτην ὄνομα, πυνθανόμενος ἄριστον εἶναι τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡλικίαν ἰατρῶν, ἀγνοῶν δὲ ὅτι Ῥηγίνος ἦν

τὸ γένος ὅς ἀφικόμενος εἰς τὸ Ῥήγιον ἐναλείφει  
 τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ καυστικῷ φαρμάκῳ, καὶ  
 διακελευσάμενος ἀνέχεσθαι τὰς περιωδυνίας ἕως  
 ἂν ἀφίκηται, καταβάς ἐπὶ θάλατταν εἰς τὸ παρε-  
 5 σκευασμένου πορθμείου ἐνέβη καὶ πρὶν αἰσθῆσθαι  
 τινὰ τὸ πραχθῆν εἰς Μεσσήνην ἀπέπλευσεν. Δέκιος  
 δὲ μέχρι μὲν τινος ἐκκαιομένης τῆς ὁράσεως ἀλγη-  
 δόνας τε δεινὰς ὑπομένουσιν ἠνάειχτο τὸν ἰατρὸν προσ-  
 δεχόμενος ὥς δὲ πολὺς ἐγίνετο ὁ χρόνος καὶ τὰς  
 10 περιωδυνίας ἀδύνατος ἦν ἔτι φέρειν, σπογγίσας τὸ  
 φάρμακον καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀνοίξας ἔγνω τὰς  
 ὄψεις ἐκκεκαυμένας, καὶ τὸν ἐξ ἐκείνου χρόνον διέ-  
 μινε τυφλός ἡμέρας τε ὀλίγας ἔτι περιενέγκας ὑπο-  
 χεῖριος τοῖς Ῥωμαίοις γίνεται συλληφθεὶς ὑπὸ τῶν  
 15 ἰδίων. ταύτην γὰρ οἰόμενοι τινες ἀπολογία [Φαβρι-  
 κίου] τὴν τε πόλιν ἀνέφξαν τῷ στρατηγῷ καὶ τὸν  
 Δέκιον δῆσαντες παρέδωκαν Φαβρικίῳ. ὁ δὲ τὴν μὲν  
 πόλιν ἀποδίδωσι τοῖς περιοῦσι Ῥηγίων, τοὺς δὲ  
 φρουροὺς ἅπαντα καταλιπεῖν αὐτόθι κελεύσας ἀπή-  
 20 γαγεν οὐδὲν ἐπιφερομένους ἔξω τῶν ὀπλων ἔξ ὧν  
 τοὺς κορυφαιοτάτους ἀνδρας ἐπιλεξάμενος, οὓς ἀπέ-  
 φαινον οἱ λοιποὶ τῶν ἀνοσίων βουλευμάτων εἶναι  
 κοινωνοὺς, δεσμίους εἰς Ῥώμην ἤγαγεν· οὓς ἐν ἀγορᾷ  
 μάλιστα αἰκισάμενοι, ὡς ἦν πάτριον ἐπὶ τοῖς κα-  
 25 κούργοις κείμενοι, ἀπέκτειναν τῷ πελέκει τὰς κεφα-  
 λὰς ἀποκοπέοντας, ἐκτὸς Δεκίου καὶ τοῦ γραμματέως·

Δέκιος τις Καμπανὸς φρονήταρχος ἐν τῇ Ῥηγίων πόλει  
 καταλειφθεὶς ὑπὸ Φαβρικίου Ῥωμαίου ὑπέατο, καὶ τῆς εὐ-  
 δαιμονίας τῆς πόλεως ἔρασθεὶς, ἐπιστολὴν πλάσσεινος ὡς  
 παρὰ ξένου δὴ τινος ἰδίου, ἐν ἣ ἔδηλοντο μέλλον ὁ βασι-  
 λεὺς Πύρρος ἀποστέλλειν ἐπὶ τὸ Ῥήγιον πεντακισχιλίους  
 ἀνδρας καταληφόμενος τὴν πόλιν, ἀνοίξειν ὑποσχόμενος  
 αὐτοῖς Ῥηγίων τὰς πύλας, ταύτην εὐρῶν πρόφασιν τοὺς

οὔτοι δὲ παρακρουσάμενοι τοὺς φυλάττοντας ἢ χρη-  
 μασιν ὠνησάμενοι τὸ μὴ μεθ' ὕβρεως ἀποθανεῖν  
 ἑαυτοὺς διεχειρίσαντο. καὶ ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτοις. Esc.

VI. (19, 2) Αὐτὸς δὲ ὁ Πύρρος τοὺς Ὀμηρικούς  
 ἐπιφθεγξάμενος στίχους, οὓς Ἐκτωρ αὐτῷ πεποιήται 5  
 πρὸς Αἴαντα λέγων, ὡς ὑπὸ Ῥωμαίων εἰρημένους  
 πρὸς ἑαυτὸν·

Τῷ σε καὶ οὐκ ἐθέλω βαλέειν, τοιοῦτον εἶντα,  
 Αἰθρη ὀπιπτεύσας, ἀλλ' ἀμφαδόν, αἴ κε τύχοιμι  
 καὶ μετὰ τοῦτ' εἰπὼν ὅτι κινδυνεύει πονηρὰν πε- 10  
 ποιῆσθαι τὴν ὑπόθεσιν τοῦ πολέμου πρὸς ἀνθρώπους  
 ὀσιωτάτους Ἑλλήνων καὶ δικαιοτάτους, μίαν ἔφη  
 θεωρεῖν ἀπαλλαγὴν τοῦ πολέμου καλὴν καὶ συμφέ-  
 ρουσαν, εἰ φίλους ἀντὶ πολεμίων αὐτοὺς ποιήσαιο,  
 15 φιλανθρωπίας τινὸς μεγάλης καταρξάμενος.

(3) Προαχθῆναι δὲ κελεύσας τοὺς Ῥωμαίων  
 αἰχμαλώτους, καὶ δοὺς ἅπασιν ἐσθῆτας ἐλευθέρους  
 προεπούσας σώμασι καὶ ἐνοδίους δαπάνας, παρεκά-  
 λεσεν αὐτοὺς μεμνησθαι, οἷος εἰς αὐτοὺς ἐγένετο,  
 καὶ τοῖς ἄλλοις λέγειν ὅταν δ' εἰς τὰς ἑαυτῶν ἐλ- 20  
 θῶσι πατρίδας, πάσῃ προθυμίᾳ πράττειν ὅπως φί-  
 λους ποιήσουσι τὰς πόλεις.

Ἄμαχον δὲ τινὰ ἰσχὺν τὸ βασιλικὸν ἔχει χρυσίον,  
 καὶ οὐδεμίαν εὐρηται πρὸς τοῦτο τὸ βέλος ἀνθρώποις  
 φυλακῆ. Ambr. 25

2358 VII. (19, 4) Ὅτι Κλεινίας ὁ Κροτωνιάτης τύραν-  
 νος ὧν ἀφείλετο τὴν ἐλευθερίαν τὰς πόλεις, φυγάδας

Ῥηγίους πάντας κατέσφαξε, καὶ τὰς αὐτῶν γυναῖκας καὶ  
 παρθένους μετὰ τῶν στρατιωτῶν διελόμενος, τύραννος τῆς  
 πόλεως ἦν· μετὰ δὲ νοσήσας τοὺς ὀφθαλμοὺς, ἰατρὸν ἐκ  
 Μεσσηνίας μεταπέμπεται, Δεξικράτην ὄνομα, πυνθανόμενος  
 ἄριστον αὐτὸν εἶναι. Ambr.

ἀθροίσας ἐκ παντός τόπου καὶ δούλους ἐλευθερώσας·  
 οἷς τὴν τυραννίδα κρατυνάμενος τοὺς ἐπιφανεστάτους <sup>2359</sup>  
 Κροτωνιατῶν οὓς μὲν ἀπέκτεινεν, οὓς δὲ ἐξέβαλεν  
 ἐκ τῆς πόλεως· Ἀναξίλας δὲ Ῥηγίνων τὴν ἀκρόπολιν  
 5 κατελάβετο, καὶ πάντα τὸν τοῦ βίου χρόνον κατα-  
 σχῶν Διόφρουσι τῷ παιδί τὴν ἀρχὴν κατέλιπε. καὶ  
 ἄλλοι ἀπὸ τούτων δυναστείας ἐν ταῖς πόλεσι κατα-  
 σκευάσαντες πάντα τὰ πράγματα διέφθειραν. (5) Ἡ  
 10 δὲ τελευταία τε καὶ πασῶν μερίστη ἀνάσις ἀπάσις  
 ταῖς πόλεσιν ἢ Διονυσίου τυραννὶς ἐγένετο τοῦ  
 κρατήσαντος Σικελίας. διέβη γὰρ εἰς Ἰταλίαν ἐπὶ  
 Ῥηγίνοισι Λοκρῶν ἐπικαλεσαμένων, οἷς ἦσαν οἱ  
 Ῥηγίνοι διάφοροι· καὶ συνελθόντων ἐπ' αὐτὸν Ἰτα-  
 15 λιωτῶν δυνάμει μεγάλας, συνάψας μάχην ἀπέ-  
 κτεινε συνηοὺς καὶ πόλεις αὐτῶν δύο κατὰ κράτος  
 ἐξείλεν. εἶτ' αὐθις ἑτέραν ποιησάμενος διάβασιν  
 Ἰπκωνεῖς ἀνέστησεν ἐκ τῆς ἑαυτῶν, οὓς ἀπήγαγεν εἰς  
 Σικελίαν, καὶ Κροτωνιάτας ἐξείλε καὶ Ῥηγίνοισι, καὶ  
 20 διετέλεσεν ἔτη δώδεκα τούτων τυραννῶν τῶν πόλεων.  
 ἐπειθ' οἱ μὲν τὸν τύραννον δεδιότες τοῖς βαρβάροις <sup>2360</sup>  
 αὐτοὺς ἐνεχείριζον, οἱ δ' ὑπ' ἐκείνων πολεμούμενοι  
 τῷ τυράννῳ τὰς πόλεις παρεδίδουσιν· ὑφ' οὗτου δὲ  
 πάσχουεν ἀεὶ κακῶς δυσχεραίνοντες εὐρίπου δίκην  
 τῆδε καὶ τῆδε πρὸς τὸ συντηχὸν ἐγράποντο. *Vales.*  
 25 VIII. (19, 6) Ὅτι Πύρρος διέβη τὸ δεύτερον εἰς  
 Ἰταλίαν, οὐ χωροῦντων αὐτῷ τῶν ἐν Σικελίᾳ πρα-  
 γμάτων κατὰ νοῦν διὰ τὸ μὴ βασιλικὴν φανῆναι  
 τὴν ἡγεμονίαν αὐτοῦ ταῖς ἐπιφανεστάταις πόλεσιν,  
 ἀλλὰ δεσποτικὴν. εἰσαχθεὶς γὰρ εἰς Συρακούσας  
 30 ὑπὸ τε Σωσιστράτου τοῦ κρατοῦντος τῆς πόλεως τότε  
 καὶ Θοίνωνος τοῦ φρουράρχου, παραλαβὼν παρ'  
 ἐκείνων τὰ χρήματα καὶ ναῦς χαλκεμβόλους ὁμοῦ τι

διακοσίας, καὶ πᾶσαν ὑφ' ἑαυτῷ ποιησάμενος Σι-  
 κελίαν πλὴν Διλυβαίου πόλεως, ἣν ἔτι μόνην Καρ-  
 χηδόσιοι κατεῖχον, εἰς ἀνθάδειαν τυραννικὴν ἐγρά-  
 πετο. *Vales. et Suidas. s. v. Πύρρος.*

(7) Τὰς τε γὰρ οὐσίας τῶν Ἀγαθοκλέους οἰκείων <sup>5</sup>  
 ἢ φίλων ἀφαιρούμενος τοὺς παρ' ἐκείνου λαβόντας  
 τοῖς ἑαυτοῦ φίλοις ἐχαρίσατο, καὶ τὰς μερίστας ἐν  
 ταῖς πόλεσιν ἀρχὰς τοῖς ἰδίῳις ὑπασπισταῖς καὶ λοχα-  
 2361 γοῖς προσένειμεν, οὐ κατὰ τοὺς ἐπιχωρίους ἐκάστης  
 πόλεως νόμους, οὐδ' εἰς τὸν εἰωθότα χρόνον, ἀλλ' <sup>10</sup>  
 ὡς αὐτῷ φίλον ἦν. δίκας τε καὶ ἀμφισβητήσεις καὶ  
 τὰς ἄλλας πολιτικὰς οἰκονομίας ἀπάσας τὰς μὲν  
 αὐτὸς διήτα, τὰς δὲ τοῖς περὶ τὴν αὐλήν ἀναστρέ-  
 φειν καὶ διακρίνειν ἀπεδίδου ἀνθρώποις οὐθὲν ἔτε-  
 15 ρον ὁρῶσιν ὃ τι μὴ κερδαίνειν καὶ καθηδυναθεῖν <sup>15</sup>  
 τὰς εὐπορίας· καὶ διὰ ταῦτα πάντα βαρὺς ταῖς ὑπο-  
 δεξαμέναις πόλεσι καὶ μισητὸς ἦν. (8) αἰσθόμενος  
 δ' ὑπούλως ἤδη πολλοὺς πρὸς ἑαυτὸν ἔχοντας, εἰς  
 τε τὰς πόλεις φρουρὰς εἰσήγε πρόφασιν ποιούμενος  
 τὸν ἀπὸ Καρχηδονίων πόλεμον, καὶ τοὺς ἐπιφανε- <sup>20</sup>  
 στάτους ἄνδρας ἐξ ἐκάστης πόλεως συλλαμβάνων  
 ἀπέκτεινεν, ἐπιβουλὰς καὶ προδοσίας εὐρηκεῖναι ψευ-  
 σάμενος· ἐν οἷς καὶ Θοίνων ὁ φρουράρχος, ὃς ὑπὸ  
 πάντων ὁμολόγητο πλείστην σπουδὴν καὶ προθυμίαν  
 εἰς τε τὴν διάβασιν αὐτῷ καὶ τὴν παράληψιν τῆς <sup>25</sup>  
 νήσου παρεσχῆσθαι· καὶ γὰρ ὑπήντησεν αὐτῷ ναυ-  
 2362 τικὸν στόλον ἄγων, καὶ τὴν ἐν ταῖς Συρακούσαις  
 νήσον, ἣν αὐτὸς ἐκράτει, παρέσχεν. ἐπιχειρήσας δὲ  
 καὶ Σωσιστράτου συλλαβεῖν διήμαρτε τῆς ἐλπίδος,  
 προαισθημένου τὴν ἐπιβουλὴν τοῦ ἀνδρὸς καὶ φυ- <sup>30</sup>  
 γόντος ἐκ τῆς πόλεως. ἀρξαμένων δὲ ταράττεσθαι  
 τῶν πραγμάτων καὶ ἡ τῶν Καρχηδονίων πόλις και-

ρὸν ἐπιτήδειον εἰληφέναι νομίζουσα πρὸς ἀνάκτησιν τῶν ἀπολωλότων χωρίων στρατιὰν ἀπέστειλεν ἐπὶ τὴν νῆσον. *Vales.*

IX. (19, 9) Ὅτι ἀμηχανοῦντα τὸν Πύρρον καὶ 5 πόρους παντοδαπούς ἐπιζητοῦντα ὄρωντες αὐτὸν οἱ κάκιστοι καὶ ἀνοσιώτατοι τῶν φίλων, Εὐήγορος Θεοδώρου καὶ Βάλακρος Νικάνδρου καὶ Δείναρχος Νικίου, τῶν ἀθέων καὶ ἐξαγίστων δογματίων ζηλωταί, πόρον ὑποτίθενται χρημάτων ἀνόσιον, τοὺς ἱερούς 10 ἀνοίξει τῆς Περσεφόνης θησαυρούς. ἦν γὰρ ἱερὸν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἅγιον καὶ πολὺν χρυσὸν ἐκ παντός τοῦ χρόνου πεφυλαγμένον ἄθικτον ἔχον, ἐν ᾧ χρυσός τις ἄβυσσος, ἀόρατος τοῖς πολλοῖς κατὰ γῆς κείμενος. ὑπὸ τούτων ἐξαπατηθεῖς τῶν κολάκων, καὶ τὴν 2363

15 ἀνάγκην κρείττονα παντός ἠγασάμενος πράγματος, τοῖς εἰσηγησαμένοις τὴν γνώμην ἀνδράσι διακόνοις τῆς ἱεροσυλίας ἐχρήσατο, καὶ τὸν ἐξελεθόντα χρυσὸν ἐκ τοῦ ἱεροῦ ναυσὶν ἐνθέμενος μετὰ τῶν ἄλλων χρημάτων ἀπέστειλεν εἰς Τάραντα, πολλῆς μεστός εὐθυμίας γενόμενος. *Vales. et Suidas s. v. Πύρρος.*

(10) Ἡ δὲ δικαία πρόνοια τὴν αὐτῆς δύναμιν ἀπεδείξατο. ὡς γὰρ ἀνήχθησαν αἱ νῆες ἀπὸ τοῦ λιμένος, τὴν μὲν ἀπόγειον αὐραν λαβοῦσαι προέκοψαν· ἄνεμος δ' ἐναντίος γενόμενος καὶ δι' ὅλης νυκτός 25 κατασχὼν ὡς μὲν κατέκλυσεν, ὡς δ' εἰς τὸν τῆς Σικελίας πορθμῶν ἐξέβαλεν, ἐν αἷς δὲ παρεκομίζετο τὰ ἀναθήματα καὶ ὁ προενεχθεὶς ἐκ τῶν ἀναθημάτων χρυσός ἐπὶ τοὺς Λοκρούς ἐξώκειλεν αἰγιαλούς· καὶ τοὺς μὲν πλείοντας ἐν αὐταῖς ἐν τῇ παλιγοροῖα 30 τῶν κυμάτων κατακλυζομένους διέφθειρε, τὰ δ' ἱερὰ χρήματα διασπασθεισῶν τῶν νεῶν ἐπὶ τὰς ἐγγίστα τῶν Λοκρῶν θύνας ἐξέβρασεν. ὁ δὲ βασιλεὺς κατα- 2364

πλαγεῖς ἅπαντα τὸν κόσμον καὶ τοὺς θησαυρούς ἀπέδωκε τῇ θεῷ, ὡς παραιτησόμενος αὐτῆς διὰ τοῦτο τὸν χόλον·

Νῆπιος, οὐδὲ τὸ ἦδει, ὃ οὐ πείσεσθαι ἔμελλεν.

Οὐ γὰρ τ' αἴψα θεῶν τρέπεται νόος αἰὲν ἔόντων, 5 ὡς Ὀμηρῶ εἶρηται. ἀλλ' ἐπειδὴ τῶν ἱερῶν ἐτόλμησεν ἄφασθαι χρημάτων καὶ πόρον ὑποθέσθαι πολέμου, ἀνόνητον ἐποίησε τὴν ἔννοιαν αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον, ἵνα παράδειγμα καὶ παίδευμα πᾶσιν ἀνθρώποις γένοιτο τοῖς μεθ' ἐαυτόν. *Vales.* 10

X. (19, 11) Διὰ τοῦτο καὶ ὑπὸ Ῥωμαίων ἠτήθη ὁ Πύρρος κατὰ κράτος· οὐ γὰρ στρατιὰ τις φαύλη καὶ ἀνάσκητος ἦν αὐτῷ, ἀλλ' ἡ κρατίστη τῶν τότε οὐσῶν ἐν Ἑλληνίῃ καὶ πλείστους ἀγωνισαμένη πολέμους· οὐδὲ πλήθος ἀνδρῶν τῶν τότε παραταξαμένων 15 ὀλίγον, ἀλλ' ὅσον καὶ τριπλάσιον εἶναι· οὐδὲ στρατηγὸς τῶν ἐπιτυχόντων τις, ἀλλ' ὃν ἅπαντες ὁμοροῦσι μέριστον γενέσθαι τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡλικίαν ἀκμασάντων στρατηγῶν· οὐδὲ τόπου φύσις ἄνισος οὔτ' ἐπικουρίας τοῖς ἑτέροις ἄφιξις αἰφνίδιος 20 οὔτ' ἄλλη τις συμφορὰ καὶ πρόφασις ἀπροσδόκητος ἐπιπεσοῦσα συνέτριψε τὰ Πύρρου πράγματα, ἀλλ' ὁ τῆς ἐσεβηθείσης θεᾶς χολός, ὃν οὐδ' αὐτὸς ἠγνόει Πύρρος, ὡς Πρόξενος ὁ συγγραφεὺς ἱστορεῖ καὶ αὐτός ὁ Πύρρος ἐν τοῖς ἰδίοις ὑπομνήμασι γράφει. *Vales.* 25

XI. (19, 12) Ἐμελλον ὅπερ εἰκὸς ὀπλῆται κρά- 30 νησι καὶ θώραξι καὶ θυρεοῖς βαρεῖς πρὸς ὀχθηρὰ χωρία καὶ μακρὰς ἀτραπούς πορευόμενοι καὶ οὐδὲ ταύτας λεωφόρους, ἀλλ' αἰγότριβας δι' ὕλης τε καὶ κρημνῶν, τάξιν τε οὐδεμίαν φυλάξιν, καὶ πρὸν ἐπιφανῆναί σφισι τοὺς πολεμίους ἐξασθενήσιν τὰ σώ- 30 ματα δίψει καὶ κόπῳ.



Τοὺς τοῖς ἵππικοῖς δόρασιν ἐκ διαλαβῆς ἀμφοτέρωσιν ταῖς χερσὶ κρατουμένοις μαχομένους συστάδην καὶ τὰ πολλὰ κατορθοῦντας ἐν ταῖς μάχαις Πρίγκιπας Ῥωμαῖοι καλοῦσιν. *Ambr.*

5 XII. (19, 13) Ἐν τῇ νυκτί, ἐν ἣ τὴν στρατιάν ἀπάξειν ὁ Πύρρος ἐμελλεν ἐπὶ τὸ ὄρος τῷ Ῥωμαίων ἐπιθησόμενος χάρακι λάθρα, ἔδοξε κατὰ τοὺς ὕπνουσιν ἐκπεσεῖν αὐτοῦ τοὺς πλείους ὀδόντας, καὶ  
10 πλήθος αἵματος ἐκ τοῦ στόματος φέρεσθαι. ταραχθεὶς δὲ διὰ τὴν ὄψιν καὶ μεγάλην ἔσεσθαι συμφορὰν μαντευόμενος ἤδη γὰρ αὐτῷ καὶ πρότερον τοιαύτην ὄψιν ἐνυπνίου θεασαμένῳ δεινὴ τις συνέβη δυσπο-  
15 τία· ἐβούλετο μὲν ἐπισχεῖν τὴν ἡμέραν ἐκείνην, οὐκ ἴσχυσε δὲ νικῆσαι τὴν πεπωμένην, ἐναντιου-  
εἶναι τὸν καιρὸν ἐκ τῶν χειρῶν ἀξιούντων. *Vales. Ambr.*

(14) Ἀναβάντων δὲ τῶν σὺν τῷ Πύρρῳ μετὰ τῶν ἐλεφάντων αἰσθῆσιν οἱ Ῥωμαῖοι λαβόντες  
20 σκυμνίον ἐλέφαντος τιτρώσκουσιν, ὃ πολλὴν ἀκοσμίαν τοῖς Ἕλλησιν ἐνεποίησε καὶ φυγὴν· οἱ δὲ Ῥωμαῖοι δύο μὲν ἐλεφάντας ἀποκτείνουσιν, ὀκτὼ δὲ κατακλείσαντες εἰς χωρίον ἀνέξοδον παραδόντων  
25 τῶν ἐπ' αὐτοῖς Ἰνδῶν ζῶντας παραλαμβάνουσι· τῶν δὲ στρατιωτῶν πολὺν φόνον ἐργάζονται. *Ambr.*

XIII. (20, 1) Ὁ ὕπατος Φαβρίκιος τιμητῆς γενόμενος ἄνδρα δυοὶ μὲν ὑπατείαις, μίᾳ δὲ δικτατορείᾳ κεκοσμημένον, Πόπλιον Κορνήλιον Ρουφίνον ἐξέβα-  
30 λεν ἐκ τοῦ συνεδρίου τῆς βουλῆς, ὅτι πρῶτος ἐν ἀργυρῶν ἐκπωμάτων κατασκευῇ πολυτελής ἔδοξε γενέσθαι, δέκα λίτρας ἐκπωμάτων κτησάμενος· αὐτὰ δ' εἶσιν ὀλίγα πλείους ὀκτὼ μνῶν Ἀττικῶν. *Ambr.*

(2) Ἀθηναῖοι μὲν δ' ἔξῃς ἔτυχον, ὅτι τοὺς ἄθυμους καὶ ἀργούς καὶ μηδὲν ἐπιτηδεύοντας τῶν χρησίων ὡς ἀδικοῦντας τὸ κοινὸν ἐξημίουν· Λακεδαιμόνιοι δέ, ὅτι τοῖς πρεσβυτάτοις ἐπέτρεπον τοὺς ἀκοσμοῦντας τῶν πολιτῶν ἐν ὀφρῶν τῶν δημο-  
5 σίων τόπῳ ταῖς βακτηρίαις παῖειν· τῶν δὲ κατ' οἰκίαν γενομένων οὔτε πρόνοιαν οὔτε φυλακὴν ἐποι- οὔντο, τὴν αὔλειον θύραν ἐκάστῳ ὄρον εἶναι τῆς ἐλευθερίας τοῦ βίου νομίζοντες. (3) Ῥωμαῖοι δὲ  
10 πᾶσαν ἀναπετάσαντες οὐλίαν, καὶ μέχρι τοῦ θωμά- τίου τὴν ἀρχὴν τῶν τιμητῶν προαγαγόντες, ἀπάντων ἐποίησεν ἐπίσκοπον καὶ φύλακα τῶν ἐν αὐταῖς γινο-  
μένων, οὔτε δεσπότην οἰόμενοι δεῖν ὧμὸν εἶναι περὶ τὰς τιμωρίας οἰκετῶν, οὔτε πατέρα πικρὸν ἢ μαλθα-  
15 κὸν πέρα τοῦ μετροῦ περὶ τέκνων ἀγωγὰς, οὔτε ἄνδρα περὶ κοινωνίαν γαμετῆς γυναικὸς ἄδικον, οὔτε παῖδας γηραιῶν ἀπειθεῖς πατέρων, οὔτε ἀδελφοὺς  
20 γνησίους τὸ πλεῖον ἀντὶ τοῦ ἴσου διώκοντας, οὐ συμπόσια καὶ μέθας παννυχίους, οὐκ ἀσελγείας καὶ φθορὰς ἡλικιῶν νέων, οὐχ ἑρῶν ἢ ταφῶν προγοι-  
25 κὰς τιμὰς ἐκλιπούσας, οὐκ ἄλλο τῶν παρὰ τὸ καθήκον ἢ συμφέρον τῇ πόλει πραττομένων οὐδέν.

ἐληίζοντο τὰς κτήσεις τῶν πολιτῶν κατὰ τὴν τοῦ βασιλῆειν αἰτίαν. *Ambr.*

XIII. (20, 4) Νεμέριος Φάβιος Πίκτωρ καὶ 25 Κόιντος Φάβιος Μάξιμος καὶ Κόιντος Ὀγούλιος πρὸς τὸν Φιλάδελφον Πτολεμαῖον πρεσβεύσαντες [περὶ πρεσβείας] καὶ δωραῖς ἰδίαις τιμηθέντες ὑπ' αὐτοῦ ἤρχε δὲ τῆς Αἰγύπτου δεύτερος μετὰ τὸν Μα-  
30 κεδόνα Ἀλέξανδρον· ἐπειδὴ κατέπλευσαν εἰς τὴν πόλιν, τὰ τε ἄλλα ἀπήγγειλαν ὅσα διεπράξαντο κατὰ τὴν ἀποδημίαν, καὶ τὰς δωραῖς ἅς παρὰ τοῦ βασι-

λέως ἔλαβον εἰς τὸ δημόσιον ἀνήνεγκαν· οὓς ἡ βουλή πάντων ἀγασθεῖσα τῶν ἔργων οὐκ εἶασε δημοσιῶσαι τὰς βασιλικὰς χάριτας, ἀλλ' εἰς τοὺς ἑαυτῶν οἶκους ἀπενέγκασθαι τιμὰς ἀρετῆς καὶ κόσμους ἐκρόνους.

<sup>5</sup> Ambr.

XV. (20, 5) Οἱ Βρεῖττιοι ἐκόντες ὑποταγέντες Ῥωμαίοις τὴν ἡμίσειαν τῆς ὄρεινῆς παρέδωκαν αὐτοῖς, ἣ καλεῖται μὲν Σίλλα, μεστὴ δ' ἐστὶν ὕλης εἰς οἰκοδομὰς τε καὶ ναυπηγίας καὶ πᾶσαν ἄλλην κατασκευὴν εὐθέτου· πολλὴ μὲν γὰρ ἐλάτη πέφυκεν οὐρανομήκης ἐν αὐτῇ, πολλὴ δὲ αἰγειρος, πολλὴ δὲ πείρα πεύκη ὀξύη τε καὶ πίτυς καὶ φηγὸς ἀμφιλαφῆς καὶ μελίαι ταῖς διαρροεῦσαις λιβάσι πιαίνουμεναι, καὶ πᾶσα ἄλλη βαθεῖα συννφαινομένη τοῖς κλάδοις ὕλη σκιερὸν ἀποτελοῦσα δι' ὅλης ἡμέρας τὸ ὄρος.

(6) Ἐξ ἧς ἡ μὲν ἔγγιστα θαλάττης καὶ ποταμῶν φνομένη τιμηθεῖσα τὴν ἀπὸ εἰζῆς τομὴν ὀλόκληρος ἐπὶ τοὺς λιμένας τοὺς ἔγγιστα κατέγεται, πάση δεαρκῆς Ἰταλία πρὸς τε τὰ ναυτικὰ καὶ πρὸς τὰς τῶν οἰκιῶν κατασκευὰς· ἡ δὲ ἄνω θαλάττης καὶ ποταμῶν πρόσω κορμασθεῖσα κατὰ μέρη κώπας τε παρέχει καὶ κοντοὺς καὶ ὄπλα παντοῖα καὶ σκευὴ τὰ κατοικίδια, φορὰδην ὑπ' ἀνθρώπων κομιζομένη· ἡ δὲ πλείστη καὶ πιοιότητι πιττουργεῖται καὶ παρέχει πασῶν ὧν ἰσμεν ἡμεῖς εὐωδιστάτην τε καὶ γλυκνιτάτην τὴν καλουμένην Βρεῖττιαν πίταν· ἀφ' ἧς μεγάλας ὁ τῶν Ῥωμαίων δῆμος καθ' ἕναστον ἐνιαυτὸν ἐκ τῶν μισθώσεων λαμβάνει προσόδους. Ambr.

XVI. (20, 7) Ἐγένετο δευτέρα ἐπανάστασις ἐν τῇ πόλει τῶν Ῥηγίνων ὑπὸ τῆς καταλειφθείσης αὐτόθι Ῥωμαικῆς καὶ συμμαχικῆς φρουρᾶς, καὶ δι' αὐτὴν σφαγαὶ τε πολλῶν ἀνθρώπων καὶ φυγαί. τού-

τους τιμωρησόμενος τοὺς ἀποστάντας ἄτερος τῶν ὑπάτων Γάιος Γενύκιος ἐξήγαγε τὴν στρατιάν· γενόμενος δὲ τῆς πόλεως ἐγκρατῆς, Ῥηγίνων μὲν τοῖς φυγαῖσι ἀπέδωκε τὰ ἑαυτῶν ἔχειν, τοὺς δὲ ἐπιθεμένους τῇ πόλει συλλαβῶν δεσμίους εἰς Ῥώμην ἀπήγαγεν· ἐφ' οἷς οὕτως ἀγρίσθη καὶ ἠγανάκτησεν ἡ τε βουλή καὶ ὁ δῆμος, ὥστε μηδεμίαν γνώμην ἐπιεικῆ γενέσθαι περὶ αὐτῶν, ἀλλὰ πάσαις ταῖς φυλαῖς δὴ ἀπάντων τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις τὸν ἐπὶ τοῖς κακουργοῖς τεταγμένον ὑπὸ τῶν νόμων καταψηφισθῆναι θάνατον. (8) Κυρωθέντος δὲ τοῦ περὶ τῆς τιμωρίας δόγματος πάτταλοι τε κατεπάγησαν ἐν τῇ ἀγορᾷ, καὶ παραγόμενοι κατὰ τριακόσιους ἄνδρας, περιηγμένοι τοὺς ἀγκῶνας ὀπίσω προσεδουνοτο τοῖς παττάλοις γυμνοί· ἔπειτα μάλιστα αἰκισθέντες ἀπάντων ὁρώντων ἀπεκόπτοντο τῷ πελέκει τοὺς ὑπὸ ταῖς κεφαλαῖς νοτιαλοὺς τένοντες· καὶ μετὰ τούτους ἕτεροι τριακόσιοι, καὶ αὐθις ἄλλοι τοσοῦτοι διεφθάρησαν, οἱ σύμπαντες τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι. καὶ οὐδὲ ταφῆς ἔτυχον, ἀλλ' ἔλκυσθέντες ἐκ τῆς ἀγορᾶς εἰς ἀναπεπταμένον τι πρὸ τῆς πόλεως χωρίον ὑπὸ οἰωνῶν καὶ κυνῶν διεφθάρησαν. Ambr.

XVII. (20, 9) τὸ ἄπορον πλήθος, ᾧ καλῶν καὶ δικαίων φροντὶς ἦν οὐδεμία, παρακρουσθέν ὑπὸ Σαυρίτου τινὸς εἰς τὸ αὐτὸ συνέρχεται. καὶ τὸ μὲν πρῶτον ἐπὶ τοῖς ὄρεσιν ἄγραυλον καὶ μέλινα τὸν βίον εἶχεν· ἐπεὶ δὲ πλείον ἦδη καὶ ἀξιόμαχον ἐδόκει γεγονέναι, πόλιν ἐχυρὰν καταλαμβάνεται, ὅθεν ὁρμώμενον ἐληίζετο πᾶσαν τὴν κύκλω χάσαν. ἐπὶ τούτους ἐξήγαγον στρατιάν οἱ ὑπατοὶ· καὶ οὐ πολλῇ σὺν πραγματείᾳ τὴν πόλιν αἰρησά-

μενοι, τοὺς μὲν αἰτίους τῆς ἀποστάσεως αἰκισάμενοι ῥάβδοις ἀπέκτειναν· τοὺς δὲ λοιποὺς ἐλαφροπώλησαν. ἔτυχε τῷ πρότερον ἐνικατῷ πεπραμένη μετὰ τῶν ἄλλων δορικῆτων ἢ γῆ, καὶ τὸ πᾶν ἀπὸ τῆς τιμῆς ἀργύριον διηρημένον τοῖς πολίταις. *Ambr.*

## INDEX SCRIPTORUM.

- C. Aelius III 67.  
 Aelii I 7.  
 Aelius Tubero I 80.  
 Aeschylus ἐν Προμηθεὺς λυομένη I 41.  
 Agathyllus Arcas ἐν ἐλεγείῳ I 49. — I 72.  
 Anaximenes I 1.  
 Antigonus I 6.  
 Antiochus Syracusanus ἐν Ἰταλίας οἰκισμῷ I 12. 22. 35. 73.  
 Arctinus I 68. 69.  
 Argivorum sacerdotum commentarii I 72.  
 Ariaethus ὁ γράψας τὰ Ἀρκαδικὰ I 49.  
 Aristoteles I 72.  
 Atthidum scriptores I 8.  
 Callias ὁ τὰς Ἀγαθουλέους πράξεις ἀναγράψας I 72.  
 Callistratus ὁ περὶ Σαμοθράκης συνταξάμενος I 68.  
 Calpurnii I 7.  
 Calpurnius Piso I 79. XII 4.  
 L. Piso ὁ τιμητικὸς II 38. 39. 40. L. Piso Frugi III 7. L. Piso ἐν τῇ πρώτῃ τῶν ἐπιφανῶν ἀναγραφῶν III 15.  
 Censoriae tabulae I 74. IV 22.  
 Cephalon Gergithius I 49. 72.  
 L. Cincius I 6. 74. 79. II 38. 39. XII 4.  
 Damastes Sigensis I 72.  
 Demagoras I 72.  
 Dionysius Chalcidensis I 72.  
 Eratosthenes I 74.  
 Euxenus ὁ ποιητὴς ἀρχαῖος I 34.  
 Fabius II 38. 39. 40. III 15. 30. 64.  
 Fabius Maximus I 7.  
 Q. Fabius I 6. 74. VII 71.  
 Q. Fabius Pictor I 79. 80. 84.  
 Gellii I 7.  
 Gellius II 72. III 6. VI 11. VII 1.  
 Cn. Gellius II 31. 76.  
 Hegesippus ὁ περὶ Παλλήτης γράψας I 49.  
 Hellanicus Lesbicus I 22. 35. ἐν Φορωνίδι I 28. ἐν τοῖς Τρωικοῖς I 48.  
 Herodotus I 27. 29.  
 Hieronymus Cardianus ἐν τῇ περὶ τῶν ἐπιγόνων πραγματείᾳ I 6. I 7.  
 Homerus I 46. 53. II 12. V 74. VII 72. XX 6. 9.  
 Licinius Macer I 7 II. 52. III 6. V 74. VI 11. VII 1.

- L. Manlius I 19.  
 Menecrates Xanthius I 48.  
 Myrsilus Lesbios I 23. 28.  
 Phanodemus ὁ τὴν Ἀπτικὴν  
 γράφας ἀρχαιολογίαν I 61.  
 Pherecydes Atheniensis I 13.  
 Philistus Syracusanus I 22.  
 Polybius I 6. 7. 32. 74.  
 Pontificum tabulae VIII 56.  
 Porcius Cato I 7. 11. 13. 74.  
 79. II 49. III 15.  
 Proxenus XX 10.  
 Pyrrhus ἐν τοῖς ὑπομνήμασιν  
 XX 10.  
 Satyrus ὁ τοὺς ἀρχαίους μύ-  
 θους συναγαγὼν I 68.  
 C. Sempronius I 11. 13.  
 Silenus I 6.  
 Sophocles ἐν Ἰνῶν I 25. ἐν  
 Λαοκόωντι I 48. ἐν Τριπτο-  
 λέμῳ I 12.  
 Terentius Varro ἐν ἀρχαιολο-  
 γίαις I 14. II 21. ἐν τῇ  
 θεολογικῇ πραγματείᾳ III  
 62. — II 47. 48.  
 Theophrastus ἐν τοῖς περὶ  
 βασιλείας V 73.  
 Theopompus I 1.  
 Thucydides I 22. 25.  
 Timaeus Siculus I 7. 67. 74.  
 ἐν κοιναῖς ἱστορίαις I 6.  
 Valerius Antias I 7. II 12.  
 Vennonius III 15.  
 Xanthus Lydus I 28.  
 Xenagoras I 72.  
 Zenodotus Troezenius II 49.

## INDEX NOMINUM.

- A.  
 Aberrigines I 10.  
 Aborigines I 9. 10. 13. 14. 16.  
 17. 19. 20. 22. 23. 26. 30.  
 31. 33. 39. 40. 43—45. 57.  
 59. 60. 63. 72. 73. 89. II 1.  
 35. 48—50.  
 Acallaris Eumedis filia I 62.  
 Acanthus Lacedaemonius VII  
 72.  
 Acarnanes I 51. XX 1.  
 Acestorides Atheniensium ar-  
 chon V 37.  
 Achaei I 25. 46—48. 52. 58.  
 63. 69. 72. 89. II 66. XII 16.  
 Achaeus Neptuni f. I 17.  
 Achaia I 11. 17. 25.  
 Achilles I 48. 52. V 17. VII  
 72.  
 Actium I 50.  
 Adriaticum mare I 2. II 49.  
 L. Aebutius cos. IX 67. X 7.  
 P. Aebutius Elva cos. V 58.  
 T. Aebutius Elva mag. eq. VI  
 2. 4. 5. 11. 69.  
 Aecalum (?) castellum XVI fr.  
 Aegesta Siciliae urbs I 52. 53.  
 Aegestus Troianus I 47. 52.  
 Aegestus Laviniensium sacer-  
 dotum primus I 67.  
 Aegestus Numitoris f. I 76.  
 Aegyptii VII 70.  
 Aegyptus I 2. 36. IV 25. XX  
 14.  
 Aemilia virgo vestalis II 68.  
 L. Aemilius Mam. f. cos VIII  
 82—84. 86. 87. IX 16. 17.  
 37. 41. 51.  
 L. Aemilius Barbula cos. XIX 6.  
 Q. Aemilius legatus XIX 13.  
 Tib. Aemilius L. f. cos. IX  
 51. 52. 55. 59.  
 Aenea Thraciae oppidum I 49.  
 Aenea Latinorum oppidulum  
 I 73.  
 Aeneas Anchisae et Veneris f.  
 I 43. 45—60. 62. 64—67.  
 69—73. II 2. 5. 66. III 31.  
 IV 68. VI 69. 80. VIII 21.  
 XII 16.  
 Aeneas alius I 53.  
 Aeneas Sylvius I 71.  
 Aenesias Tarentinus XIX 4.  
 Aeolica dialectus I 90.  
 Aequi VI 34. 42. 45. 76. 77.  
 VIII 8. 16. 26. 62—64. 68.  
 82. 91. IX 1. 2. 12. 14. 16.  
 17. 35. 50. 55—62. 64—71.  
 X 9. 10. 20—22. 24. 26. 30.  
 37. 43. 46—48. 53. XI 3. 4.  
 7. 8. 15. 18. 20. 21. 23. 25.  
 28. 30. 41. 47. 54.  
 Aequiculi II 72.  
 Aequimelum XII 4.  
 Aesculapius V 13. VII 72.

- Aesopus VI 83.  
 Aesymnetae V 73.  
 Aetoli I 17. 51. XX 1.  
 Aezei populus I 12.  
 Aezeus Lycaonis f. I 11. 12.  
 Agatharchus Corcyrensis olympionica IV 41.  
 Agathocles Syracusanorum tyrannus XX 8.  
 Agylla I 20 III 58.  
 Aiax VII 72. XX 6.  
 Alba Longa I 45. 66. 67. 73. 80. 81. 85. II 65. III 3. 30. 31. 34. IV 49. VI 80.  
 Albani I 30. 73. 76. II 2. 36. 37. 50. 53. 62. III 1—31. 33. 34. IV 49. 53. V 23. 74. VI 20. VIII 8. 19.  
 Albanus ager I 37. XIV 8.  
 Albanus lacus XII 10. 12.  
 A. mons IV 49. VIII 87. A. vinum I 66. XIV. 8.  
 Alba Silvius I 71.  
 Albula fluvius I 71.  
 Alcaeus poeta V 73.  
 Alcmena Herculis mater I 40.  
 Alcyone sacerdos Argiva I 22.  
 Alexander Priami f. I 48.  
 Alexander Macedonum rex I 2. 49. XX 14.  
 Algidum X 21 XI 3. 23. 28. 40. 44.  
 Allo dius Silvius I 71.  
 Alpes I 10. 41. XIV 1.  
 Alpheus fluvius I 34.  
 Alsium I 20.  
 Aluntium Siciliae opp. I 51.  
 Ambracia I 50. XX-1.  
 Ambraciotae XX 1.  
 Ambracius sinus I 50.  
 Ambrax Dexameni f. I 50.  
 Amita Latini uxor I 64.  
 Amiterna Sabinorum opp. I 14. II 49.  
 Amphictyon IV 25.  
 Amphictyones IV 25.  
 Amulius I 71. 76—85. V 74.  
 Amyntor Phrastoris f. I 28.  
 Anactorium Aearnaniae opp. I 51.  
 Anaxilas Rheginorum tyrannus XX 7.  
 Anchisa opp. I 73. portus I 51.  
 Anchises Aeneae pater I 43. 48. 51. 53. 62. 64. 73. II 2. III 31. XII 16.  
 Anchises Atheniensium archon VIII 1.  
 Anio fluvius III 23. 55. 63. 64. V 37. VI 45.  
 Anius Deliorum rex I 50. 59.  
 Antenna opp. II 32. 35. IV 3. VI 55.  
 Antennates I 16. II 33. 35. VI 21.  
 Antenoridae I 46.  
 Anthemone Aeneae f. I 49.  
 Antias Ulixis f. I 72.  
 Antiatas IV 49. VI 3. 7. 92—94. VII 19. 37. 63. VIII 30. 82. 84. IX 56. 58. 60. 62. X 20. 21.  
 Antigenes Atheniensium archon VII 1.  
 Antistius Petro Gabinus IV 57.  
 Antium Volscorum caput V 36. VI 3. VIII 1. 86. IX 59. X 21. 43.  
 T. Antonius xvir X 58. XI 23. 33.  
 Apennini montes I 9. 14. III 44.  
 Apiolani Latin. populus III 49.  
 Apollo I 23. XII 9. A. Delphicus II 61. IV 69. A. Fricopius IV 25.  
 C. Aquilius cos. VIII 64—67. X 36.  
 L. et M. Aquilii V 6. 7. 9. 10.  
 Arcades I 11. 25. 31—34. 40. 42. 44. 45. 50. 68. 79. 89. III 1.  
 Arcadia I 49. 54. 60. 61. II 1. 35.  
 Archedemides Atheniensium archon IX 61.

- Arche stratides Atheniensium archon IV 1.  
 Ardeas Ulixis f. I 72.  
 Ardea XIII 5.  
 Ardeates II 72. IV 7. 64. 85. V 1. 61. XI 52. 54. 62.  
 Argei I 38.  
 Argivi I 89. VII 66. 72.  
 Argos I 17. 21. 22. 35. 39. 41. 43.  
 Argyrippa XX 3.  
 Aricia VI 32. VII 6.  
 Aricini V 36. 51. 61. 62. VII 5. XI 52.  
 Aristocrates Cumanus VII 2.  
 Aristodemus Cumanus V 36. VI 21. VII 2. 4—12.  
 Arpi XX 3.  
 Arretini Etruriae populus III 51.  
 Artemis XII 9. A. Ephesia IV 25. v. Diana.  
 Artemisium V 17.  
 Artimedes Chalcidensis XIX 2.  
 Aruns Tuscus XIII 10.  
 Aruns Porsenae f. V 30. 36. VII 5. 6.  
 Ascanius I 47. 53. 54. 65. 66. 70. 72. 73. II 5. 63. III 31.  
 Ascanius lacus I 47.  
 Asculum XX 4.  
 Asia I 2. 18. 26. 28. 61. 68. IV 62. VI 80.  
 Asies Cotyis f. I 27.  
 Assaracus Trois f. I 62.  
 Assyriorum imperium I 2.  
 Assyr. mulier i. e. Semiramis IV 25.  
 Asterope Atlantis f. XIV 1.  
 Astylus Crotoniata Olympion. VIII 1.  
 Astylus Syracusanus Olympion. VIII 77.  
 Athamanes XX 1. 3.  
 Athenae I 25. II 54. IV 13. 72. V 17. VII 73. IX 68. X 51. 54. XII 8. XIV 2.  
 Athenaeum promontorium I 51.  
 Athenienses I 3. 28. 63. II 8. 9. 17. III 11. IV 74. V 65. VII 73. XI 1. XIV 6. XX 13.  
 L. Atilius Luscus tr. mil. XI 61.  
 M. Atilius IV 62.  
 Atlas I 61.  
 Tullus Attius Volscorum dux VIII 1—5. 11—13. 57—59. 67.  
 Attius Navius augur III 70. 72.  
 Atys Cotyis f. I 27. 28.  
 Atys Manis f. I 27.  
 Aventinus mons I 32. 71. 79. 84. 86. II 37. III 43. 63. IV 26. X 31. 32. XI 43. 44.  
 Avernus mons VII 11. XII 16.  
 Augustus I 7.  
 Aurunci I 21. VI 32. 37.  
 Ausones I 11. 22. 29. XV 3.  
 Ausonia I 35.  
 B.  
 Babylon I 36. IV 25.  
 Bacchanalia II 19.  
 Bacchiadae III 46.  
 Balacrus Pyrrhi amicus XX 9.  
 Batea Dardani uxor I 50. 62.  
 Batia Aboriginum opp. I 14.  
 Bebrycia I 54.  
 Bola Latii opp. VIII 18.  
 Bolani V 61. VIII 18.  
 Bovillae Latii opp. VIII 20.  
 Bovillenses V 61. VIII 20.  
 Bruttii I 89. XIX 6. 13. 16. XX 1. 2. 4. 15.  
 Bubetani Latii pop. V 61.  
 Buthrotum Epiri portus I 51.  
 C.  
 Cabani Latinorum populus V 61.  
 Cabiri I 23.

- Caecus I 39. 40. 42.  
 L. Caecilius Metellus II 66.  
 L. Caedicius tr. pl. IX 28.  
 Caedicius XIII 6. 9.  
 Caelius Tuscus II 36.  
 Caelius mons II 36. 50. III 1.  
 Caenina I 79. II 32. 33. 35.  
 V. 7.  
 Caeninenses II 34. 35.  
 Caere I 20. III 58.  
 Caeretani III 58. IV 27.  
 Caietae promontorium I 53.  
 Cales XV fr.  
 Calliades archon Athen. IX 1.  
 Callias archon Athen. VII 1.  
 X 26.  
 Callipolis Tarentinorum portus XIX 3.  
 Calliroe Oceani f. I 27. Scamandri f. I 62.  
 Callithea Choraeci f. I 27.  
 Calpetus Silvius Albanorum rex I 71.  
 Calpurnius Piso cos. I 3.  
 Camera II 50. V 21. 40. 49. 61.  
 Camerini II 50. 54. III 51.  
 V 21. 49. 51.  
 Campani VII 1. 10. XV 3-6. XX 1. 4.  
 Campani campi I 21. 37. VIII 3.  
 Campania VI 32. 50. XV 3. 4.  
 Cannae II 17.  
 C. Canuleius tr. pl. XI 57. 58.  
 Capena porta VIII 4.  
 Capetus Silvius I 71.  
 Capitolium I 32. 34. II 15. 34. 38. 50. 66. 70. V 36. VI 1. 30. VII 72. VIII 22. IX 48. X 14. 16. 20. 37. XI 4. 37. XII 2. 6. XIII 6-8. 12. XIV 4.  
 Capitolinus collis I 34. II 1. 37. III 69. IV 61.  
 Capua I 73. VII 10. XV 4.  
 Caphyae Arcadiae opp. I 49.  
 Capys Troianus I 49. 62. 73.  
 Capys Silvius I 71.  
 Caria IV 25.  
 Carinae I 68. III 22. VIII 79.  
 Carmenta I 31. 32.  
 Carmentalis porta I 32. X 14.  
 Carthaginienses I 3. 38. 90.  
 II 66. XX 8.  
 Carthago I 38. 74. II 17.  
 Carventani Latinorum populus V 61.  
 Sp. Carvilius II 25.  
 Casilinum Campaniae opp. XV 4.  
 Cassander Macedonum rex I 49.  
 Sp. Cassius Vecellinus cos V 49. 75. VI 20. 49. 91. 94. VIII 68. 69. 71-73. 76-82. 87. IX 3. 37. 51. X 38.  
 Castores VI 13. VII 72.  
 Caucasius (?) mons Arcadiae I 61.  
 Celer Romuli sodalis I 87.  
 Celeres II 13. 64. IV 71. 75.  
 Celtus Heraclis f. XIV 1.  
 Ceraunii montes I 14.  
 Ceres I 12. 33. 61. VI 17. 89. 94. VIII 79. X 42.  
 Cetia Latinorum oppidum VIII 36.  
 Chaerephanes Atheniensium archon X 53.  
 Chaeronea II 17.  
 Chalcidenses I 25. VII 3.  
 Chaones XX 1. 2.  
 Chares Atheniensium archon IX 37.  
 Charondas II 26.  
 Charops Atheniensium archon I 71. 75.  
 Choraeus Callithea pater I 27.  
 Chryse Pallantis f. I 61. 62. 68.  
 Cinaethium promontorium I 50.  
 Cinaethus Aeneae sodalis I 50.  
 Circe Solis filia I 72. IV 45. 63.

- Circeji Latinorum opp. IV 63. V 61. VIII 14.  
 Claudia tribus V 40.  
 App. Claudius Sabinus (V 40.) V 66. VI 23. 24. 26. 27. 29. 30. 37. 39. 40. 59. 65. 68. 69. 78. 88. VII 15. 22. 47. VIII 5. 71. 73-75. 81. X 30.  
 App. Claudius App. f. Sabinus VIII 90. IX 42-44. 46-50. 52-54.  
 App. Claudius App. f. Decemvir X 54-60. XI 1. 4-16. 21-25. 28-39. 41. 46. 49.  
 App. Claudius Caecus XVI 3.  
 C. Claudius, App. f. Sabinus X 9. 12. 13. 15-17. 30. 32. XI 7. 15. 17. 19. 21. 22. 49. 55. 56. 60.  
 M. Claudius XI 28-30. 32. 34. 36. 37. 46.  
 T. Claudius Sabinus V 40.  
 Claudius Nero I 3.  
 Cleondas Thebanus olympionica III 46.  
 Clinias Crotoniata XX 7.  
 Cloelia gens III 29.  
 Cloelia V 33. 35.  
 Cloeliae fossae III 4. VIII 22.  
 Cloelii X 41. 42.  
 Cloelius Albanorum dictator III 2-4. 9.  
 Gracchus Cloelius Aequorum dux X 22-24.  
 Q. Cloelius Siculus V 59. 70-72. 75. 76.  
 T. Cloelius Siculus tr. mil. XI 61.  
 Clusini Etruriae populus III 51. V. 21. 34. XIII 11.  
 Clymene Oceani f. I 17.  
 Clytadora Laomedontis f. I 62.  
 Codone Aeneae f. I 49.  
 Collatia III 50. IV 64.  
 Collina porta II 67. IX 24. 68. C. tribus IV 14.  
 Collinus collis II 70.  
 Cominium XVII et XVIII 4. 5.  
 Post. Cominius cos. V 50. VI 1. 49. 91. 94. VIII 22.  
 Compitalia IV 14.  
 Q. Considius tr. pl. IX 27.  
 Constantia Bruttii opp. XIX fr.  
 Consualia I 33. II 31.  
 Consus II 31.  
 Copiolani (?) VIII 19.  
 Cora III 34. Corani V 61.  
 Corbienses Latin. pop. V 61.  
 Corbio Latinorum opp. VI 3. VIII 19. X 24. 26. 30.  
 Coreyraei VII 66.  
 Coretus mons I 14.  
 Corinthii I 51. IV 56.  
 Corinthus III 46. IV 29.  
 Coriolani Latinorum populus V 61. VI 92. VII 19. VIII 30.  
 Corioli IV 45. VI 92.  
 A. Cornelius Cossus XII 5. 6. XV 10.  
 L. Cornelius cos. X 20. 21. XI 16-21. 44. 63.  
 L. Cornelius Sulla V 77. VIII 80.  
 M. Cornelius Xvir X 58. XI 15. 16. 23.  
 P. Cornelius Rufinus cos. XX 13.  
 P. Cornelius cos. XIX 13.  
 Ser. Cornelius cos. VIII 77. 82.  
 Corniculani montes I 16.  
 Corniculum Latinorum opp. III 50. IV 1.  
 Cortona (Corthonia) I 26.  
 Cotys Manis f. I 27.  
 Cremera castellum IX 15. 16. 18. 23. 27. 59.  
 Creta I 18.  
 Cretenses I 13. II 23. 61.  
 Creusa Aeneae uxor III 31.  
 Criasis I 18.  
 Crimismus fluvius I 52.  
 Criso Himeraeus olympionica XI 1.  
 Cronius collis I 34.

Croto II 59. XIX 1.  
 Croto Ubrorum opp. I 20.  
 26. 28.  
 Crotoniatae I 29. XX 7.  
 Crusaei Thraces I 47. 49.  
 Crustumeria II 32. 53. VI 55.  
 X 26. XI 23. 25. 27.  
 Crustumerini II 36. 53. III 49.  
 50.  
 Cumae V 26. 36. VI 21. VII  
 2. 6. XII 1. XV 6.  
 Cumani VII 3. 4. 6—12. XV 6.  
 Cures Sabinorum urbs II 36.  
 48. 49.  
 Curites (Quirites) II 36. 46.  
 48. 58. V 49.  
 Curetes I 17. II 22. 61. 70.  
 VII 72.  
 Curia via I 14.  
 Curiatius Albanus III 13.  
 Curiatii fratres III 13—18.  
 22. 29.  
 Curtius lacus II 42.  
 Mettus Curtius II 42. 46.  
 M. Curtius XIV 11.  
 Cutilliae I 15. 19. II 49.  
 Cyclades I 18.  
 Cyllene mons I 13.  
 Cyllene nympa I 13.  
 Cyprinus vicus III 22.  
 Cypselus III 46.  
 Cythera I 50.

## D.

Daicles Messenius olympio-  
 nica I 71.  
 Damasias archon Athen. III  
 36.  
 Dantes Argivus olympionica  
 IX 37.  
 Dardanidae II 2.  
 Dardanus Ionis f. I 50. 61.  
 62. 68. 69. II 66.  
 Dardanus opp. I 46. 47. 60. 61.  
 Dascylitis regio I 47.  
 Daunii I 37. VII 3. XX 3.  
 Daunus XII 16.  
 Decius Campanus XX 4. 5.

M. Decius VI 83. tr. pl. VII  
 39. 47. 52. 53. 63. 64. VIII  
 31.  
 P. Decius cos. XX 1.  
 Deianira Lycaonis f. I 11. 13.  
 Delphi I 18 II 61. XIX 1.  
 Delphicum oraculum IV 69.  
 XII 10.  
 Delii I 59.  
 Delus insula I 50.  
 Demaratus Corinthius III 46.  
 47. 50.  
 Deucalion Promethei f. I 17.  
 Dexamenus Herculis f. I 50.  
 Dexicrates Rheginus XX 5.  
 Diana II 22. 50. III 43. IV  
 25. 26. X 32. XI 43. XII 9.  
 Dictaeus mons II 61.  
 Dimas Dardani f. I 61.  
 Dinarchus Niciae f. XX 9.  
 Dinomenes Gelonis pater VIII 1.  
 Diognetus archon Athen. VI  
 49.  
 Diomedes I 69. XII 16.  
 Dionysus II 19. VII 72.  
 Dionysia VII 73.  
 Dionysius Syracusanus VII 1.  
 XX 7.  
 Dioryctos I 50.  
 Diphilus archon Athen. XI 62.  
 Dis pater II 10.  
 Dius Fidius II 49. IV 58. IX  
 60.  
 Dodona I 18. 19. 51. 55.  
 Dodonaei I 14.  
 Dorienses I 28. III 11. IV 25.  
 Drepana I 52.  
 Caeso Duillius Xvir X 58. XI  
 23.  
 M. Duillius tr. pl. XI 46.

## E.

Ecetra Volseorum opp. VIII  
 36.  
 Ecestrani IV 49. VI 32. VIII  
 4. X 21.  
 Echinades insulae I 51.

Egeria nympa II 60. 61.  
 Egerius Tarquinius Collatinus  
 III 50. 57. IV 64.  
 Electra Atlantis f. I 50. 61.  
 Elis I 34. II 1. 2. 66.  
 Elyma Siciliae opp. I 52.  
 Elymi I 22. 53. 63.  
 Elymus mons I 53.  
 Elymus Troianus I 47. 52. 53.  
 Emathion Romi pater I 72.  
 Enyalius II 48. 50.  
 Epei I 34. 42. 60. II 1. 2.  
 Ephesus IV 25. Ephesia Arte-  
 mis II 22. IV 25.  
 Epirotae XIX 9.  
 Epirus I 51 XIX 8. 18.  
 Epiteldes Lacedaemonius  
 olympion. IV 1.  
 Erechtheum XIV 2.  
 Eretrienses VII 3.  
 Eretum III 32. 58. IV 3. 51.  
 V 45. XI 3.  
 Erichthonius Dardani f. I 50.  
 62.  
 Erythea insula I 39. II 1.  
 Erythrae prope Idam I 55.  
 Erythrae Asiae urbs. IV 62.  
 Esquilina porta IX 68.  
 Esquilina tribus IV 14.  
 Esquilinus collis II 37. IV 13.  
 Etruria I 30. v. Tyrrhenia  
 Etrusci I 30. v. Tyrrheni  
 Euander I 31. 32. 40. 42. 43.  
 60. 79. 80. 84. 89. II 1.  
 Euboea I 18.  
 Euegorus Theodori f. XX 9.  
 Eumaeus VII 72.  
 Eumedes Acallaridis pater I  
 62.  
 Eunomus Lycurgi nepos II  
 49.  
 Europa I 2. 36. 47. 55. 61.  
 VI 80. XIV 1.  
 Eurybates Atheniensis olym-  
 pion. III 1.  
 Euryleon Aeneae f. I 65. 72.  
 Eurystheus I 39.  
 Euxinus pontus I 3. 89.

## F.

Fabia gens IX 15. 16. 18—23.  
 27.  
 Modius Fabidius II 48.  
 Caeso Fabius Caes. f. quae-  
 stor VIII 77. cos. VIII 82.  
 83. 84. 86. IX 1—4. 8. 9. 11.  
 13. 14—16. 22.  
 M. Fabius Caes. f. cos. VIII  
 87. IX. 5. 9. 11. 15. 22.  
 Num. Fabius Pictor legatus  
 XX 14.  
 Q. Fabius Caes. f. cos. VIII  
 77. 82. 90. IX 11. 22.  
 Q. Fabius M. f. Vibulanus  
 cos. IX 22. 59—61. X 20  
 —24. 58. XI 4. 5. 16. 23. 63.  
 Q. Fabius legatus ad Gallos  
 XIII 12.  
 Q. Fabius Maximus XVII et  
 XVIII 4.  
 Q. Fabius Maximus legatus  
 XX 14.  
 C. Fabricius cos. XIX 13—18.  
 XX 4. 13.  
 Falerii I 21. XIII 1.  
 Falernus ager I 37. F. vinum  
 I 66. XIV 8.  
 Falisci XIII 1. 2.  
 Faunus I 31. 42. 43. V 16.  
 Faustinus bubuleus Numitoris  
 I 84.  
 Faustulus I 79—84. 87.  
 Ferentinae lucus III 34. 51.  
 IV 45.  
 Ferentinum Samnitium urbs.  
 XVII fr.  
 Feronia II 49. III 32.  
 Fescennia I 21.  
 Fetiales II 72. X 23. XV 9.  
 Ficana III 38.  
 Ficulnenses I 16. III 51.  
 Fidenae II 53—55. III 6. 7.  
 8. 23. 25. 27. 50. 55. 57. 58.  
 IV 51. 52. V 40—43. 52. 54.  
 57. 61. VI 55. X 22. 26. XI  
 27. 44.

Fidenates II 53. 54. III 6. 9.  
23—26. 28. 39—41. V 51.  
52. 58—60. XII 5.  
Fides publica II 75. V 68.  
M. Flavoleius IX 10. 13.  
Formiani XV 7. 8.  
Fortinenses Latii populus V 61.  
Fortuna IV 27. 40. F. mulie-  
bris VIII 55.  
Forum boarium I 40. IV 27.  
Romanum I 68. 87. II 50.  
VI 1.  
Forum Popilium I 21.  
Fregellae XV 8. XVI fr.  
Fregellani XV 10.  
Frentani XX 1.  
Metus Fufetius III 5. 7—  
12. 15—17. 22—30.  
Fundani XV 7. 8.  
Furiae *Ἐφύρες* II 75.  
L. Furius cos. IX 36. 37. 59.  
M. Furius Camillus dict. XII  
14. 16. XIII 1—3. 5. 6. 9.  
XIV 3.  
M. Furius M. f. Camillus dict.  
XIV 9. XV 1.  
P. Furius cos. IX 40. 63. 64.  
Q. (?) Furius procos. IX 69.  
Ser. Furius cos. IX 62. 66.  
Ser. (?) Furius procos. IX 16.  
17.  
Sex. Furius cos. VIII 16.  
Sp. Furius cos. IX 1. 2. X 53.  
C. Furnius tr. pl. XI 53.

## G.

Gabii I 84. IV 53—58. 85.  
V 3. 22. 61.  
Galatia XIV 1.  
Galli I 38. 74. VII 70. XIII  
6—12. XIV 8. 9. XV 1. XIX  
13.  
Gallia *Κελτικὴ* I 10. VIII 87.  
XIII 10. XIV 1.  
Gegania gens III 29.  
Gegania Tarquinii uxor IV 7.  
L. Geganius VII 1. 20.

M. Geganius Macerinus cos.  
XI 51. 63.  
T. Geganius Macerinus cos.  
VII 1. 16. 19.  
Gelon Syracusanorum tyran-  
nus VII 1. VIII 10.  
C. Genucius cos. XX 16.  
Cn. Genucius tr. pl. IX 37.  
38. X 38.  
M. Genucius cos. XI 53. 56. 58.  
T. Genucius cos. X 54. 56.  
XI 56. 60. 61.  
T. Genucius tr. pl. IX 27.  
Geryones I 35. 39. 41.  
Germania XIV 1.  
Glanis fluvius VII 3.  
Graeci *Ἕλληες* I 3—5. 9.  
11. 16. 17. 20. 21. 26. 28—  
31. 33—35. 38. 41. 42. 45.  
49. 57. 60. 61. 64. 69. 84.  
89. II 2. 3. 8. 9. 16—  
19. 22. 25. 26. 31. 64. 68.  
70. 72. 75. III 10. 11. 23.  
61. IV 26. 29. 31. 73. 76.  
V 8. 17. 19. 73. VI 8. 80.  
84. 90. VII 3. 4. 70. 72. 73.  
VIII 10. 17. 27. 55. 80. 83.  
X 51. 54. 56. XIV 6. XV 5.  
XVI 4. XX 1. 2. 12.  
Graecia *Ἑλλάς* I 3. 11. 18.  
23—25. 28. 31. 89. II 17.  
III 46. VII 3. 12. 70. IX 1.  
XIV 6.

## H.

Haemonia I 17. 60. II 1.  
Hadie Tulli f. I 27.  
Hannibalicum bellum II 17.  
Hector XX 6.  
Hectoridae I 47.  
Helena VII 72.  
Helenus Priami f. I 51.  
Hellespontus I 18. 29. 47. 61.  
XII 8.  
Hemiochides Athen. archon.  
III 46.  
Herculaneum I 44.  
Hercules I 28. 32. 34. 35.

38—44. 60. 89. II 1. IV  
29. V 17. VI 1. VII 72. XII  
9. XIV 1.  
Herculis columnae I 3 XIV 1.  
Hercynia silva XIV 1.  
App. Herdonius X 14. 16. 37.  
XI 4.  
Turnus Herdonius Coriolanus  
IV 45—48.  
Lar Herminius cos. XI 51.  
T. Herminius IV 85. V 22—24.  
26. 36. VI 12.  
Hernici IV 49. V. 20. 62. VI  
5. 7. 25. 50. 76. VIII 64—72.  
74. 77. 78. 83. IX 5. 16. 35.  
59. 62. 67. 69. 70. X 15. 20.  
XI 2. 47.  
Hersilia Romuli uxor II 45.  
Hersilius III 1.  
Hesperia I 35. 49.  
Hestiaotis I 18.  
Hieromneme Anchisae mater  
I 62.  
Hipparchus Athen. archon VI  
1.  
Hippocrateia feriae Arcadum  
I 33.  
Hippocrates Siciliae tyrannus  
VII 1.  
Hippomedon Cumanus VII 4.  
10.  
Hipponienses XX 7.  
Horati lucus V 14.  
Horatia pila III 22.  
Horatii fratres III 14—16. 18.  
Horatius III 12. 17.  
C. Horatius cos. IX 18. 24.  
C. Horatius cos. X 26. 28. 30.  
M. Horatius III 21. 23. 27. 30.  
31. V 23.  
M. Horatius Pulvillus cos. IV  
85. V 19. 21. 23. 32. XI 5.  
M. Horatius Barbatus cos. XI  
5. 6. 22. 23. 38. 45. 48. 56  
—59.  
P. Horatius Cocles V 23—25.  
35.  
P. Horatius cos. X 53. 56.

Hostilius Medullianus III 1.  
Tullus Hostilius I 66. 75. II  
23. 70. III 1—37. 40.  
Hybrilides Athen. archon VII  
1.

## I.

Ianus Curiatius III 22.  
Ianiculum I 73. II 76. III 45.  
47. V 22. IX 14. 24. 26.  
Iapudes XVI fr.  
Iapyges I 22. XIX 1.  
Iapygia I 11. 12. 51. XIX 1.  
Iasus Iovis f. I 61.  
Iberia I 34. 41. 44. II 17.  
Iberi I 22. 89.  
Iberus Herculis f. XIV 1.  
L. Icilius tr. pl. X 31. 32. 33.  
40.  
L. Icilius Sp. f. XI 28. 30.  
31. 38. 46.  
M. Icilius X 49.  
Sp. Icilius tr. pl. VI 88. VIII  
31. IX 1. 2.  
Ida mons I 46—48. 55.  
Idaea dea II 19.  
Idaeus Dardani f. I 61.  
Ilia Numitoris f. I 76. 77. 79.  
84.  
Ilienses I 46. 69. II 66.  
Ilios I 39. 45—48. 54. 60. 63.  
65. 69. 72. II 2. 65. VI 80.  
Inachus Oceani f. I 25.  
Indi VII 70. XX 12.  
Iones I 25. 28.  
Ionicum mare I 18. 51.  
Ionius sinus I 10. 11. 28.  
XX 1.  
Irus VII 72.  
Isagoras Athen. archon I 74.  
V 1.  
Ischomachus Crotoniata olym-  
pion V 1. 37.  
Issa insula I 14.  
Ister XIV 1.  
Italus I 35. 72. 73.  
Itali I 12. II 71. X 54.  
Italia I 3. 7. 9—12. 16. 18.



19. 22—29. 31. 33—36. 38  
—42. 44. 45. 49. 51. 53. 54.  
60. 66. 69. 72. 73. 89. II 1.  
2. 17. 59. 66. III 10. 32. 46.  
IV 61. 64. 69. VII 2. 3.  
VIII 21. 26. 87. IX 42. X  
51. XII 1. 14. 16. XIII 10.  
11. XIX 1. 2. 3. 9. 17.  
XX 8.  
Italiotae I 12. XIX 9. 14. XX  
1. 7.  
Iulia gens I 70. III 29.  
Iulius II 63.  
C. Iulius Iulus cos. VIII 1.  
3. 90. X 56.  
Vep. Iulius cos. IX 37. 41.  
Iulus Ascanii f. I. 70.  
Iunia gens V 18.  
L. Iunius Brutus I 74. IV 67  
—85. V 1. 5. 6. 8—12. 14.  
15. 17—19. 48. VII 36. VIII  
79.  
L. Iunius Brutus tr. pl. VI  
70. 72. 80. 84. 85. 88. 89.  
VII 14—17.  
M. Iunius IV 68.  
T. Iunius Brutus aed. pl. VII  
26.  
T. Iunius L. f. Brutus V 6. 10.  
Tib. Iunius L. f. Brutus V 6.  
10.  
Iuno I 21. 51. II 50. I. Capito-  
lina III 69. IV 59. 61.  
XIII 7. I. Lucina IV 15.  
I. Sororia III 22. I. Veien-  
tana XIII 3.  
Iupiter Ζεύς I 17. 23. 27. 33.  
40. 50. 61. 65. II 5. 10. 19.  
61. 72. I. Capitolinus III  
69. 70. IV 59. 61. V 35. VI  
68. VII 68. VIII 39. I. Fe-  
retrius II 34. I. Inventor I  
39. I. Latiaris IV 49. VIII  
87. I. Pavorius VI 90. I.  
Stator II 50. I. Terminus  
II 74.  
Iustitia Δίκη II 75.  
Iuventas III 69. IV 15.

## L.

- Labicani Latii populus V 61.  
VIII 19.  
Lacedaemonii II 13. 14. 17.  
23. 24. 28. 49. V 74. VII  
72. XI 1. XIV 6. XIX 1.  
XX 13.  
C. Laetorius tr. pl. IX 46.  
48.  
C. Laetorius Mergus XVI 4.  
Lanuvini Latii pop. V 61.  
Laocoon I 48.  
Laomedon I 34. 52. 62.  
Sp. Larcus V 22—24. 26. 36.  
39. 41. 75. VII 68. VIII 22.  
64. 90. 91.  
T. Larcus Flavius cos. V 50.  
59. 60. 70—72. 75—77. VI  
1. 19. 21. 35. 37. 42. 81. 82.  
92.  
Larissa Pelasgi mater I 17.  
Larissa Campaniae urbs I 21.  
Thessaliae X 53.  
Latina via IV 63.  
Latinae feriae IV 49. 95. VIII  
87.  
Latini I 9. 29. 45. 60. 64—66.  
70. 84. 87. II 2. 66. III 10.  
11. 21. 23. 31—34. 37—40.  
49—54. 57. 65. 66. IV 3. 6.  
9. 25. 26. 45. 47. 49. 53. 65.  
V 3. 12. 20—23. 26. 33. 50  
—54. 58—62. 68. 76. VI 1  
—21. 23. 25. 29. 34. 36. 42.  
63. 74. 75. 80. 90. 94. 95.  
VII 53. 71. VIII 6. 12. 15.  
17—19. 26. 36. 48. 69—72.  
74. 77. 78. 83. 87. 91. IX  
1. 5. 14. 16. 35. 59. 60. 67.  
70. X 15. 20. 22. 26. XI 2.  
47. XV 3. 7. XX 1.  
Latinium (?) Opicorum regio  
I 72.  
T. Latinus VII 68.  
Latinus rex I 9. 43. 44. 57—  
60. 64. 70. 72. 73. II 2.  
Latinus Silyius I 71.

- Latona VII 72. XII 9.  
Lavina Anii f. I 59. Euandri  
f. I 32. 43. Latini f. I 59.  
60. 64. 70.  
Lavinates I 57. 59. II 51. 53.  
III 11. V 61. VIII 36.  
Lavinium I 45. 59. 63—67. II  
51. 52. III 34. V 12. VIII  
21. 22. 49.  
Laurentia Faustuli uxor I 84.  
87.  
Laurentes V 61.  
Laurentum I 45. 53. 55. 63.  
V 54.  
Lauretum III 43.  
Lausus Mezentii f. I 65.  
Leleges I 10. 17.  
Lemnos I 35.  
Leonnatus Leophanti f. XIX  
12.  
Leophron Anaxilae f. XX 7.  
Leostratus Atheniensium ar-  
chon III 1. VIII 77.  
Lesbos I 18.  
Lethaei campi VIII 52.  
Leucaria Latini f. I 72.  
Leucas Acarnaniae insula I  
50. 51.  
Leucasia insula I 53.  
Leucippus Lacedaemonius  
XIX 3.  
Leuctra II 17.  
Liber Λίβερτος VI 17. 94.  
VII 72.  
Libera Κόρη VI 17. 91.  
Libitina IV 15.  
Libya I 2. 36. XIX 18.  
Libyes VII 70.  
C. et P. Licinii tr. pl. VI 89.  
Licinius Crassus II 6.  
Licinius Stolo XIV 12.  
Ligures I 10. 22. 40. 41. 89.  
VII 72.  
Lilybaeum XX 8.  
Liris fluvius I 9.  
Lista Aboriginum caput I 14.  
Locrenses I 17. XX 7. 9.  
Locri Epizephyrii XIX 4.

- Longula Volscorum opp. VI  
91. VIII 36. 85.  
Lucani XVII et XVIII 1—3.  
XIX 6. 9. 13. 16. XX 1—9.  
Lucretia IV 64—67. 70. 82.  
L. Lucretius cos. IX 69. 71.  
X 7. XI 15.  
P. Lucretius trib. mil. XII 6.  
Sp. Lucretius praef. urbi IV  
70. 71. 76. 82. 84. V 11. 19.  
T. Lucretius cos. V. 20. 22.  
23. 40—42.  
Lucumo Etruscus II 37. 42.  
43. XIII 10.  
Luna II 50.  
Lupa I 84.  
Lupercal I 32.  
Lycaea I 80.  
Lycæon Aezei f. I 11. Pe-  
lasgi f. I 11. II 1.  
Lycæones I 12.  
Lycæonia II 1.  
Lycurgus II 23. 49. 61.  
Lycus Thessalus Olympionica  
X 53.  
Lydi I 27. 28. 30. II 71. III  
61.  
Lydia I 27.  
Lydus Atyis f. I 27. 28.

## M.

- Macar Criasi f. I 18.  
Macedones I 2. 49. 90. II 17.  
XX 1. 2.  
Macedonia I 3. II 17.  
Sex. Maclius XI 44.  
Sp. Maclius Felix XII 1. 2. 4.  
C. Maenius tr. pl. VIII 87.  
Maeones I 27.  
Maeonia I 27.  
Maea I 72.  
Malitiosa silva III 33.  
L. Mamilius Tusculanus X  
16.  
Octavius Mamilius IV 45. 47.  
V 21. 22. 26. 34. 35. 50. 51.  
53. 61. 76. VI 2. 4. 5. 11. 12.

Mamurius opifex II 71.  
 Manes Iovis f. I 27.  
 T. Manlius Torquatus II 26.  
 VIII 79. XV 4.  
 A. Manlius cos. IX 36. 37.  
 X 52. 56.  
 Cn. Manlius cos. IX 5. 6. 11.  
 12.  
 M. Manlius Capitolinus XIII  
 8. XIV 4.  
 Marcii IV 4. 5. 8. 11.  
 Ancus Marcius I 75. II 76.  
 III 35—46. 48. 49. 72. IV  
 4. 6. 11. 34.  
 C. Marcius Coriolanus VI 92—  
 94. VII 19. 21—27. 30. 34. 37.  
 38. 41—47. VIII 1—60. 67.  
 78. 84.  
 C. Marcius Rutilus cos. XIV  
 13. XV 3.  
 Marrucini XX 1.  
 Mars *Ἄρης* I 14. 31. 77. II 2.  
 48. 56. IV 22. VI 13. XIV 2.  
 Marsi I 89.  
 Marsicum bellum IV 62. VIII  
 80.  
 Martius campus IV 22. V 13.  
 VII 59. XI 49.  
 Maruvium Aboriginum opp. I  
 14.  
 Matiene Tiora Aboriginum opp.  
 I 14.  
 Medorum imperium I 2.  
 Medullia III 1. 34. 38. VI  
 55.  
 Medullini II 36. VI 34.  
 Mefula Aboriginum opp. I  
 14.  
 Megacles Epirota XIX 12.  
 Melas sinus I 61.  
 Memphiticae pyramides IV 25.  
 Agrippa Menenius C. f. La-  
 natus cos. V 44. 46. 47. VI  
 49. 57. 61. 65. 67—69. 83.  
 87. 88. 96. IX 27.  
 Agrippa Menenius trib. mil.  
 XII 6.

L. Menenius cos. X 54. 55.  
 T. Menenius Agr. f. Lanatus  
 cos. IX 18. 23. 27. 34.  
 Menippa Pencii f. I 28.  
 Mercurius *Ἑρμῆς* I 31. II 1.  
 XII 9.  
 Mesapii campi I 37.  
 Messana Siciliae urbs. XX  
 4. 5.  
 Messene XIX 1.  
 Messenii XIV 6.  
 Metilia gens III 29.  
 Meton Tarentinus XIX 8.  
 Mezentius Etruscorum rex I  
 64. 65. II 5.  
 Milesii VII 66.  
 Milionia XVII fr.  
 Miltiades Atheniensium ar-  
 chon VII 3.  
 Minerva *Ἀθηνᾶ* I 33. 68. III  
 69. VII 72. XIV 2. M. Ca-  
 pitolina IV 59. 61. A. Po-  
 lias VI 69.  
 Minos II 61.  
 Minturna I 9. XVI fr.  
 L. Minucius cos. X 22—25.  
 Xvir X 58. XI 20. 23.  
 M. Minucius Angurinus cos.  
 VI 1. 20. VII 27. 33. 38. 60.  
 VIII 22. 29—35.  
 P. Minucius cos. VII 1. 19.  
 Q. Minucius cos. X 26. 30.  
 Minucius praef. annonae XII  
 1. 2. 4.  
 Miseni portus I 53. VII 3.  
 XII 1.  
 Mitylennaei V 73.  
 Mnemosyne VII 72.  
 Molossi I 72. XX 1. 2.  
 Morges Itolorum rex I 12. 73.  
 Morgetes I 12.  
 Mosynoeci I 26.  
 Mucia prata V 35.  
 C. Mucius Cordus V 25. 27—  
 31. 35.  
 Mugillani Latii pop. VIII 36.  
 Mugonia porta II 50.  
 Musae II 60. VII 72.

Myscelus Crotonis conditor  
 II 59.

## N.

Naevia prata V 14.  
 Nanas Teutamidis f. I 28.  
 Napetinus sinus I 35.  
 Narnia XVIII fr.  
 Nautia gens VI 69.  
 Nautius Aeneae socius VI 69.  
 C. Nautius IX 28. 35. X 22.  
 23. 25. XI 20.  
 Serv. Nautius tr. mil. XII 6.  
 Sp. Nautius cos. VI 69. VIII  
 16.  
 Neapolis I 44. XV 6.  
 Neapolitani XV 5—8.  
 Nemesis II 75.  
 Neoptolemus I 46. 47.  
 Nepete XIII fr.  
 Neptunus *Ποσειδών* I 17. 33.  
 53. II 30. 31. VII 72. XII  
 9. XIV 2.  
 Nequinum XVII fr.  
 Nesos Arcadiae opp. I 49.  
 Nice Pallantis f. I 32. 33.  
 Niceas Locrus Olympionica  
 V 50.  
 Nicodemus Athen. archon VIII  
 83.  
 Nilus XII 10.  
 Niobe I 11. 17.  
 Nolani XV 5.  
 Nomentum II 53. Nomentani  
 III 50. V 61.  
 Norba VII 13. Norbani V 61.  
 T. Numicius Priscus cos. IX  
 56.  
 Numicius fluvius I 64.  
 Numitor I 71. 76. 78—85. II  
 30. V 74.  
 Numitoria XI 29. 30. 34. 36.  
 P. Numitorius XI 28. 30—34.  
 38. 46.

## O.

Oblacus Volsinius Ferentanus  
 XIX 12.

Oceanus I 3. 17. 25. 27. 41.  
 Oericulum XVIII fr.  
 Oerisia IV 1. 2. 4. 10.  
 Oeniadae insulae I 51.  
 Oenotri I 12. 22. 35. 89. II  
 1. 35.  
 Oenotria I 12.  
 Oenotrus Lycaonis f. I 11. 60.  
 II 1.  
 Q. Ogulnius XX 14.  
 Olympia VII 72. 73.  
 Olympus I 18.  
 Omphale I 28.  
 Ophrynum Troadis opp. I 46.  
 47.  
 Opica regio I 72.  
 Opici I 22. 53. 89. VII 3.  
 M. Oppius XI 43. 44.  
 Opimia virgo vestalis VIII  
 89.  
 Sp. Oppius Xvir X 58. XI 23.  
 44. 46.  
 Orchomenos Arcadiae opp. I  
 49.  
 Ortona Latinorum opp. VIII  
 91. X 26.  
 Orvium Aboriginum opp. I  
 14.  
 Ossa mons I 18.  
 Ostia I 9. III 44. XII 1.

## P.

Padus fluvius I 18.  
 Paganalia IV 15.  
 Palatina tribus IV 14.  
 Palatinus mons III 43.  
 Palatium Aboriginum opp. I  
 14.  
 Palinurus portus I 53.  
 Palladia I 68. 69. II 66.  
 Pal(ia)(n)tium Romae regio  
 I 31. 34. 39. 40. 45. 79. 80.  
 84—86. II 1. 37. 50. 66. 70.  
 III 68. V 36. 39. XIV. 2.  
 Pallantium Arcadiae urbs I  
 31. 60. II 1.

- Pallantium promontorium XIX 2.  
 Pallas Lycaonis f. I 33. 61. 62.  
 Pallas Herculis f. I 32. 43.  
 Pallene Thraciae regio I 47. 49. 50. 54.  
 Pamphylium mare I 3.  
 Pan Lycaeus I 32. 80. Pan I 38. 79. VII 72.  
 Panathenaea II 70.  
 C. Papirius pontifex III 36.  
 C. Papirius cos. II 25.  
 L. Papirius Mugillanus cos. XI 62.  
 M. Papirius rex sacrorum V 1.  
 Parilia I 88.  
 Parmenides Paestanus Olympion. IX 56.  
 Parnasus mons I 17.  
 Parthenii Tarenti conditores XIX 1.  
 Parthi II 6.  
 Patro (?) I 22.  
 Patro Thuriensis I 51.  
 Patroclus V. 17. VII 73.  
 Pedani Latii populus V 61. VIII 19. 26.  
 Pelargi I 28.  
 Pelasgi I 9. 13. 17—26. 28—30. 33. 44. 60. 89. II 1. 2. 22. 49. III 58.  
 Pelasgiotis I 17.  
 Pelasgus Iovis f. I 11. 13. 17.  
 Pelasgus Neptuni f. I 17.  
 Pelasgus Phrastoris pater I 28.  
 Peligni XX 1.  
 Peloponnesii I 34. 44. 45. 60. 89.  
 Peloponnesus I 3. 11. 17. 21. 25. 50. 60. 61. 68.  
 Pelops V 17.  
 Penates I 67. 68.  
 Peneus I 28.  
 Pentri XVII et XVIII 4.  
 Pergamum I 46.  
 Periander Corinthius IV 56.  
 Persae I 2. III 61. Persicum bellum XI 1.  
 Pencetii I 11.  
 Pencetius Lycaonis f. I 11.  
 Phaeton Atheniensium arch. IX 18.  
 Phenentae I 34. 60.  
 Pheneos I 42.  
 Philiscus Atheniensium arch. XI 1.  
 Philonides Tarentinus XIX 5.  
 Phocis I 18.  
 Phoroneus I 11. 17.  
 Phrasicles Atheniensium archon X 1.  
 Phrator Pelasgi f. I 28.  
 Phryges I 29. 47. II 19.  
 Phrygia I 48. 53. 54. 61.  
 Phthiotis I 17.  
 Phthius Neptuni f. I 17.  
 Picetia pagus Romanus V 40.  
 Pinaria gens I 40.  
 Pinaria virgo Vestalis III 67.  
 L. Pinarius cos. IX 40.  
 P. Pinarius Rufus cos. VIII 1. 3. 22.  
 Pisa Pelasgorum opp. I 20.  
 Pisatae I 34.  
 Pisatis regio I 34.  
 Pittacus Mytilenaens II 26. V 73.  
 Placiani I 29.  
 Plataeae V 17.  
 Pleiades Atlantis filiae I 61.  
 Q. Poetelius Xvir X 58. XI 23.  
 Politorium Latinorum opp. III 37. 38. 43.  
 Polusca Volseorum opp. VI 91. VIII 36.  
 Polymnastus Cyrenaens olympionica X 26.  
 Pometia v. Suessa.  
 Pometini IV 50. 53. X 37.  
 Pometini campi II 49. IV 63. V 26. VI 29. VII 1. 2.  
 Pompeii Campaniae opp. I 44.  
 Numa Pompilius I 75. II 23.

27. 58—76. III 1. 6. 35. 36. IV 3. 10. 73.  
 Pompo Pompilius II 58.  
 M. Pomponius cos. II 25.  
 Pontifices II 73.  
 Tib. Pontificius tr. pl. IX 5.  
 Pontius Samnitium imperator XVI 1.  
 Pontus Euxinus I 3. 89. XIV 1.  
 Popilli forum I 21.  
 Lars Porsena V. 21. 22. 27. 28. 32. 34—36. 54. 65. 74. VII 5.  
 Posidonia I 73. II 1.  
 A. Postumius P. f. Albus cos. VI 2—6. 10—14. 16—18. 21. 22. 33. 69. 94. VII 71.  
 A. Postumius Albus cos. IX 62. 63. 65.  
 P. Postumius A. f. Tubertus V 37. 39. 44—47. VI 69.  
 Sp. Postumius Albinus cos. IX 60. X 52. 56.  
 Postumius Megellus cos. XVII. XVIII 4. 5.  
 Postumius legatus XIX 5. 6.  
 Postumii X 41. 42.  
 Potitia gens I 40.  
 Praeneste IV 53.  
 Praenestini V 61. VIII 65.  
 Priamus I 48. 52. III 31.  
 Prisci Latini I 45.  
 Privernates XIV 13.  
 Procas Silvius I 71.  
 Prochyta insula I 53.  
 Prometheus I 17. 41. XVI 1.  
 Proserpina II 19. III 32. XX 9.  
 Ptolemaeus Philadelphus XX 14.  
 Ancus Publicius Coranus III 34.  
 Publilius (?) tr. mil. XVI 5.  
 Punica bella I 4. 6. 8. II 66.  
 Puteal III 71.  
 Pyrenaei montes XIV 1.  
 Pyrgion Atheniensium archon I 74.  
 Pyrrhus I 6 XIX 8—13. 17. XX 1—4. 6. 8—12.  
 Pythagoras Laco Olympionica II 58.  
 Pythagoras philosophus II 59.  
 Pythicum oraculum I 49.

## Q.

- Querquetulani Latii pop. V 61.  
 Quinctilia gens III 29.  
 Sex. Quinctilius cos. X 53.  
 Quinctia via I 14.  
 C. Quinctius (?) cos. XI 53.  
 Caeso Quinctius L. f. Cincinnatus X 5—10. 13. 17.  
 L. Quinctius Cincinnatus cos. X 8. 17. 18. 23—25. 27. 30. XI 15. 20. XII 2. 4.  
 T. Quinctius dictator. XIV 5.  
 T. Quinctius Capitolinus cos. IX. 43. 44. 48—50. 57—59. 61. 63. 64. X 23. 25. XI 15. 55. 56. 63.  
 T. Quinctius Poenus cos. XII 6.  
 Quirinalis collis II 37. 50. 62. IX 60.  
 Quirinus *Ἐρμᾶλιος* II 48. 63.  
 Quirites II 46.

## R.

- C. Rabuleius tr. pl. VIII 72.  
 M. Rabuleius Xvir X 58. XI 23.  
 Rasena I 30.  
 Rea silyia I 76.  
 Reate I 14. 15.  
 Reatini I 14. II 48. 49.  
 Regillum Sabinorum opp. V 40. XI 15.  
 Regillum laeus VI 3.  
 Remuria I 85—87.  
 Remus v. Romus.  
 Renus fluvius XIV, 1.  
 Rhea II 50. III 32. VII 72.

Rhegini XX 4. 5. 7. 16.  
 Rhegium XIX 2. XX 5.  
 Rhene nympha I 61.  
 Ripaei montes XIV, I.  
 Roma mulier Troiana I 72.  
 Roma urbs I 29. 33. 39. 45.  
 66. 68. 71. 72. 73. II 16. 30.  
 35. 37. 46. 50. 52. 54. 56.  
 65. 72. III 3. 4. 11. 27. 29  
 —33. 37. 43. 44. 46. 56. 63.  
 67. IV 6. 13. 26. 53. 53. 55.  
 60. 61. 64. 66. V 1. 3. 4.  
 17. 21. 26. 37. 40. 44. 53.  
 60. 73. VI 1. 4. 12. 13. 19.  
 45. VII 1. 2. 18. 20. 72.  
 VIII 2. 9. 14. 22. 26. 46.  
 67. 70. 89. IX 7. 17. 24. 34.  
 42. 56. X 14. 20. 25. 43. 47.  
 53. XI 3. 23. 28. 49. XII  
 1. 8. 10. 15. XIII 4. 6. 12.  
 XIV 2. 11. XV 3. XVI 4.  
 5. XIX 18. XX 5.  
 Romani I 2. 4. 6. 7. 9. 14. 18.  
 21. 26. 30—34. 38. 40. 42.  
 44. 45. 49. 59. 60. 67. 73.  
 87. 88—90. II 1. 5. passim.  
 T. Romilius cos. X 33. 44—  
 46. 48. 49. 50. 52. 56.  
 Romulus Martis f. I 9. 45.  
 49. 71. 75. 79. 80. 82. 85—  
 88. II 2—57. 62. 63. 65. III  
 1. 3. 34. 41. 49. 61. 71. IV 10.  
 73. VI 80. VIII 40. XIV 2.  
 Aeneae f. I 72. 73. Latini f.  
 I 72.  
 Romus Aeneae f. I 72. 73.  
 Latini f. I 72. Ulixis f. I  
 72. Ascanii f. I 72. Itali f.  
 I 72. Martis f. I 71. 79—82.  
 85—87. II 2.  
 Rusellani Etruriae populus III  
 51.  
 Rutuli I 43. 57. 59. 64. V 62.

## S.

Sabini I 14. 37. II 32. 33. 36  
 —46. 48. 49. 51. 58. 62. 70.

III 1. 9. 10. 28. 32. 33. 40.  
 42. 51. 52. 55—57. 59. 63  
 —66. 69. IV 3. 9. 45. 46.  
 50—52. 59. 67. 82. V 37—  
 46. 48. 49. VI 7. 21. 25. 31.  
 34. 41. 42. 44. 49. 50. 62.  
 75—77. 95. VIII 40. 70.  
 IX 34—36. 55—57. X 14.  
 22. 23. 25. 26. 30. 37. 53.  
 XI 3. 4. 7. 8. 15. 18. 20.  
 21. 23. 41. 48. XX 1.  
 Sabus Sanci f. II 49.  
 Sacer mons VI 45. X 35.  
 Sacra via II 50.  
 Salaminia pugna V 17.  
 Salii II 70. III 32.  
 Salinae II 55. III 41.  
 Sallentinum promontorium I  
 51.  
 Samii XIV 6.  
 Samnites I 89. XV 3—10.  
 XVI 1. XVII. XVIII 1—4.  
 XIX 6. 9. 10. 13. 16. XX 1.  
 Samniticum bellum XV 3.  
 Samon Mercurii f. I 61.  
 Samothrace I 61. 68. II 66.  
 Saneus II 49. IV 58.  
 Sardinia II 17.  
 Satricani Latii pop. V 61.  
 VIII 36.  
 Saturnalia IV 14.  
 Saturnia terra I 18. 19. 34.  
 35. 45.  
 Saturnia Aboriginum opp. I  
 20. 85.  
 Saturnius collis I 34. 38. 44.  
 89. II 1.  
 Saturnus Κρόνος I 34. 36. 38.  
 II 19. 50. III 32. VI 1. VII  
 72.  
 Satyri VII 72.  
 Satyrium Iapygiae regio XIX  
 1.  
 Scamandrius Hectoris f. I 47.  
 Scamandrus Callirhoes pat.  
 I 62.  
 Scamandrus Mitylenaeus olym-  
 pion. IX 18.

Scaptius Latinorum populus  
 V 61.  
 Scaptius XI 52.  
 Sceleratus vicus IV 39.  
 Scylletinus sinus I 35.  
 Seythae VII 70. XIV 1.  
 Sempronii X 41. 42.  
 A. Sempronius Atratinus cos.  
 VI 1. 2. VII 20. VIII 64.  
 74. 90.  
 A. Sempronius Atratinus tr.  
 mil. XI 61.  
 C. Sempronius Gracchus II 11.  
 L. Sempronius Atratinus cos.  
 XI 62.  
 Senones XIX 13.  
 Septem aquae I 14. Septem  
 pagi II 55. V 31. 36. 65.  
 M. Sergius Xvir X 58. XI 23.  
 Servilia gens III 29.  
 C. Servilius cos. IX 16.  
 C. Servilius Ahala Mag. eq.  
 XII 2. 4.  
 P. Servilius P. f. Priscus cos.  
 VI 23. 25—32. 39. 57. 69.  
 76.  
 P. Servilius Priscus cos. IX  
 67. X 7.  
 Q. Servilius Priscus mag. eq.  
 VI 40.  
 Q. Servilius Priscus IX 57. 60.  
 Q. Servilius cos. XV 3.  
 Ser. Servilius cos. IX 25. 26.  
 28. 29. 33. 35.  
 P. Sestius cos. X 54—56.  
 Setini Latinorum populus V  
 61.  
 Sibylla I 49. 55.  
 Sibyllina oracula I 34. 55.  
 III 67. IV 62. VI 17. VIII  
 37. X 29. XII 9. XIV 11.  
 Sicani I 22. 55.  
 Sicania I 22.  
 L. Siccus Dentatus X 36. 37.  
 40. 42—49. 52. 56. XI 25  
 —27. 44.  
 T. Siccus cos. VIII 64. 67.  
 IX 12—14. X. 36.

Sicilia I 22. 35. 44. 51. 52.  
 54. 63. II 66. VII 1. 2. 20.  
 37. 66. VIII 70. XIX 2. XX  
 4. 7—9.  
 Sicilicum I 16. II 1.  
 Sicinius Albanus III 13.  
 C. Sicinius Bellatus tr. pl.  
 VI 45. 70. 72. 82. 89. VII  
 33. 35. 36. 38. 39. 61.  
 Sp. Sicinius (?) tr. pl. VII  
 14. 17.  
 Siculi I 9. 16. 17. 19—22. 52.  
 53. 60. II 1. 35. 49.  
 Siculus rex I 22.  
 Siculum fretum I 12.  
 Sidicini XV 3. XX 4.  
 Signia IV 63. V 58.  
 Sila silva XX 15.  
 Sileni VII 72.  
 Silvius Aeneae f. I 70.  
 Smyrus Atheniensium archon  
 V 50.  
 Sol I 55. II 50.  
 Solon II 26. V 65.  
 Solonium (?) Etruriae urbs II  
 37.  
 Sosistratus Syracusanus XX 8.  
 Sparta II 49.  
 Spartiatae II 17. III 11.  
 Spes IX 24.  
 Sphaerus Lacedaemonius  
 olympionica III 36.  
 Spina opp. I 18.  
 Spineticum Padi ostium I 18.  
 28.  
 T. Statius tr. pl. IX 28.  
 Suburana tribus IV 14.  
 Suessa Pomestia IV 50—53.  
 59. VI 29. 74.  
 P. Sulpicius cos. XX 1.  
 Q. Sulpicius Camerinus cos.  
 VII 68. VIII 22.  
 Ser. Sulpicius P. f. Camerinus  
 cos. V 52. 54. VI 20. 69.  
 Ser. Sulpicius Camerinus cos.  
 X 1. 52. 56.

Sulpicius Rufus XIV 7.  
Suna Aboriginum opp. I 14.  
Sybaris XIX 1.  
Syracusae VI 62. XX 8.  
Syracusani VII 1.

## T.

Tanaquil L. Tarquinii uxor  
III 47. IV 2. 7. 10. 30.  
Taras fluvius XIX 1.  
Tarentini XV 5. XIX 3. 5. 6.  
8—10. XX 1. 3. 4.  
Tarentum I 73. II 1. XIX 1.  
6. 14. XX 1. 9.  
Tarpeia virgo II 38—40.  
Tarpeius collis III 69. IV 60.  
61.  
Sp. Tarpeius cos. X 48.  
Tarquinii Tyrrhenorum urbs  
III 46. V 3.  
Tarquinenses IV 27. V 3. 14.  
54. 74.  
Arms Tarquinius Demarati f.  
III 46.  
Arms Tarquinius Collatinus  
III 50. 65. vide et Egerius.  
Arms Tarquinius Prisci nepos  
IV 28. 30. 79.  
Arms Tarquinius Superbi f.  
IV 63. 69. V 15.  
Lucumo Tarquinius Demarati  
f. Priscus I 75. III 39. 40.  
46—73. IV 1—9. 11. 27. 29.  
34. 41. 48. 64.  
L. Tarquinius mag. equitum  
X 24.  
L. Tarquinius Aruntis f. Col-  
latinus I 74. IV 64. 67. 70.  
71. 73. 76. 82. 84. V 1. 5—7.  
9—12. 19. VIII 49.  
L. Tarquinius Superbus I 75.  
IV 6. 7. 28—*fin* V 1—7.  
13—15. 20—23. 26. 31—34.  
40. 51—53. VI 1. 2. 11. 21.  
95. VII 2. 12. 71. VIII 5.  
64. IX 60. XI 5. 41.  
M. Tarquinius V 54. 57.  
P. Tarquinius V 54. 57.

Sex. Tarquinius Superbi f. IV  
55—58. 63. 64. 82. 85. V  
15. 22. 40. 41. 58. 61. 76.  
VI 4. 5. 11. 12.  
T. Tarquinius Superbi f. IV  
63. 69. V. 15. 22. VI 5. 11.  
Tarquinia Servii Tullii uxor  
IV 28. 40. 79.  
Tarquinia Bruti mater IV 68.  
Tarracina XV 3.  
Tartarus II 19.  
T. Tatius II 36. 38. 40. 41.  
46. 48. 50—53. 62. IV 67.  
Telegonus Latini f. I 72.  
Telegonus Ulixis f. IV 45.  
Telephus I 28.  
Tellene III 38. 43. Tellenen-  
ses I 16. V 61.  
Tellus *Ἥ* I 27. VIII 79.  
C. Terentius tr. pl. X 1.  
A. Termenius (?) cos. X 48.  
Terminalia II 74.  
Terminus III 69.  
Testruna Sabinorum opp. II 49.  
Teucer Troadis rex I 61. 62.  
Teucris Phrygiae regio I 61.  
Teutamides Amyntoris f. I 28  
Thais, Aenesiae Tarentini  
cognomen XIX 4.  
Theogenides Athen. archon  
IX 56.  
Thebani I 3. II 17.  
Themis Graecorum II 75.  
Themis vel Carmenta I 31.  
32. 40. VII 72.  
Themistocles Athen. archon  
VI 34.  
Thericles Athen. archon IV 41.  
Theseus V 17.  
Thesproti XX 1. 2.  
Thessali II 9. V 74. XX 1.  
Thessalia I 17. 60. 89. II 1.  
Thessalonice I 49.  
Thoenon Syracusanus XX 8.  
Thracas I 47. XIV 1.  
Thracia I 2. 49. 61. 63.  
Thrasylbulus Milesius IV 56.  
Thurii XIX 13.

Tiberinus rex Alban. I 71.  
Tiberis fluvius I 9. 28. 31. 38.  
45. 79. 85. II 1. 55. 69. 76.  
III 25. 41. 44. 45—55. 57.  
67. IV. 27. V 22. 26. 35. 37.  
IX 14. 34. 68. X 8. 14.  
XI 3.  
Tibur V. 37.  
Tiburtini I 16. V 61.  
Tiora Aboriginum oppidum I  
14.  
Tisicrates Crotoniata Olym-  
pion. VI 34. 49.  
Titanes VII 72.  
Sex. Titius tr. pl. IX 69.  
Tolerini Latii pop. V 61. VIII  
17. 26.  
Lar Tolumnius XII 5.  
Torrhebi I 28.  
Torrhebus Atyis f. I 28.  
Torymbas Thessalus olympion.  
X 1.  
Trebula Aboriginum opp. I 14.  
Trigemina porta I 32. 39.  
Trinaeria I 22.  
Triopium Apollinis templum  
II 25.  
Triptolemus I 12.  
Troas I 47. 61. 67. 89. II 66.  
Troes I 29. 34. 42. 45—47.  
49—53. 55—65. II 2. VIII  
21.  
Troicum bellum I 9. 11. 22.  
26. 31. 73. II 2.  
Troia Italiae locus I 53. Epiri  
collis I 51.  
Troia I 11. 28. 47. 52. 63. 72.  
Tros Erichthonii f. I 62.  
Tuccia virgo Vestalis II 69.  
Tullia IV 28—30. 39.  
Tullius Corniculanus IV 1.  
Servius Tullius Rom. rex I  
75. III 65. 72. IV 1—40.  
42. 43. 45. 48. 68. 79. V. 2.  
75.  
M'. Tullius Longus cos. V 52.  
57.  
Tullus Terrigena I 27.

Talus Turannius II 46.  
Turnus Latinus I 64.  
Turnus Ascanii subulcus I 70  
Tusculum IV 45. V. 21. 36.  
76. IX 71. X 22. 24. XI 23.  
Tusculani V 61. VIII 36. IX  
68. X 16. 20—22. 24. 43. 47  
XI 3. XIV 6.  
Tuscus vicus V 36.  
Tyrrheni I 11. 20. 23. 25. 26.  
28—30. 64. 65. 89. II 5. 22.  
37. 39. III 9. 10. 26. 28. 45.  
46. 48. 51. 53. 56—62. 65.  
66. IV 3. 9. 12. 26. 29. 59.  
65. V 5. 6. 15. 16. 22. 23.  
26—28. 31—34. 36. 48. 51.  
54. 61. 62. 65. VI 21. 62.  
74. 95. VII 1. 3. 5—7. VIII  
8. 91. IX. 1. 2. 4—7. 10—  
26. 28. 29. 34—36. X 37.  
XI 54. XII 5. XIII 10. XV 3.  
Tyrrhenia I 28. 37. II 36.  
III 47. 58. IV 6. 27. V 3.  
7. 14. VI 50. 74. VII 12.  
VIII 91. IX 1. 5. 16. 18. 35.  
X 8. XII 1. 14. XIX 6.  
Tyrrhenum mare I 9. 10. 45.  
53. 63. 72. II 1. 49. III 44.  
IV 63. XV 5.  
Tyrrhenus Atyis f. I 27. Her-  
culis f. I 28. Telephi f.  
I 28.

## V.

Valeria gens XI 5.  
Valeria Poplicolae soror VIII  
39—43. 55.  
L. Valerius M. f. Poplicola  
VIII 77. 87. 88. IX 51. 55.  
L. Valerius P. f. Potitus XI  
4—6. 19—24. 38. 39. 44.  
45. 47—49. 50. 56—59.  
L. Valerius Potitus I 74.  
M'. Valerius Vol. f. Poplicolae  
VI 23. 39. 40. 42. 43. 57  
59. 60. 65. 69. 71—73. 77  
88. VII 54. 57. 67. VIII 30

- M. Valerius Corvinus XV 1. 3.  
M. Valerius Poplicola V 37.  
39. 50. 51. VI 12.  
M. Valerius cos. X 31.  
M. Valerius P. f. Poplicola  
V 64. VI 12.  
P. Valerius Poplicola IV 67.  
70. 71. V 7. 12. 14—17. 19  
—21. 32. 33. 35. 40. 41. 48.  
70. 75. VI 39. VII 41. VIII  
39. X 59. XI 4. 5. XVI.  
XIX 16.  
P. Valerius P. f. Poplicola  
cos. VI 12. VII 1. 20. IX  
28. 34. 35. 49. X 9. 15—17.  
XI 4.  
P. Valerius Laevinus cos.  
XIX 9—11.  
Volesus Valerius II 46. IV 67.  
V 12.  
Sp. Vecilius Latinorum dux.  
III 34.  
Veientes II 54. 55. 56. III 6.  
7. 9. 23—26. 41. 57. IV 27.  
V 14. 15. VI 74. VIII 82.  
91. IX 1. 5. 14—18. 26. 34.  
35. XI 54. XII 5. 10—15.  
XIII 3. 6. 7.  
Veii II 54.  
Velia urbis Romae locus I 20.  
68. V 19. 48.  
Velitrae III 41. VI 42. VII  
13. Veliterni Latii pop. V  
61. VIII 67.  
Venus Ἀφροδίτη I 48—51. 53.  
62. II 2.  
Venus Libitina IV 15.  
Venusia XVII. et XVIII. 5.  
Vesbola Aboriginum opp. I  
Vesta I 69. 76. II 50. 64—68.  
III 67. VI 13.  
Vetulionates III 51.  
Veturia Coriolani mater VIII  
39—41. 43. 44. 46. 48. 53.  
C. Veturius cos X 33. 48.  
49.  
P. Veturius Geminus cos. V  
58.

- T. Veturius Geminus cos. VI  
32. 42. IX 69—71. X 7. 56.  
Victoria Νίκη I 15. 32. 33.  
Viminalis collis IV 13.  
Vindicius servus V 7.  
A. Virginius A. f. Caelimon-  
tanus cos. VI 33. 42. 69. IX  
25. 26. 29. 33. 56. 59.  
A. Virginius tr. pl. X 2. 6. 9.  
12. 13. 22. 26. 28—30.  
A. Virginius legatus X 49.  
L. Virginius XI 28—30. 32—  
38. 40. 42. 43. 46.  
Op. Virginius Tricostus cos.  
V 49.  
P. Virginius VI 37.  
Proc. Virginius cos. VIII 55.  
68. 71. 72. 75. IX 37. 51.  
Sp. Virginius cos. X 31.  
Sp. Virginius X 49.  
T. Virginius cos. VI 2. 4. 5.  
IX 14.  
T. Virginius cos. XI 51.  
Virginia XI 28—37.  
C. Visellius Ruga tr. pl. VI  
89. VII 26.  
M. et M'. Vitellii V 6.  
Ulixes I 69. 72. IV 45. VII  
72. XII 16.  
Umbri I 10. 13. 16. 19—22.  
26. 27. 29. 89. II 49. VII  
3. 72. XX 1.  
Umbria I 13. 19.  
Volaterrani Etruriae pop. III  
51.  
Volcanal II 50. VI 67. VII  
17. XI 39.  
Volcanus Ἡφαιστος II 50. 54.  
IV 2. VII 72. XVI 1.  
P. Volero tr. pl. IX 39. 41.  
43.  
M. Volscius X 7.  
L. Volscius X 7.  
Volsci III 41. IV 49. 52. 53.  
82. V. 62. VI 3—5. 7. 8.  
14—17. 23. 25. 27. 29. 30.  
32. 34. 36. 37. 39. 41. 43.  
44. 50. 76. 77. 91. 92. 94.

- VII 2. 12. VIII 1—4. 9—12.  
14—20. 26. 35. 36. 40—47.  
48. 51. 54. 57. 58. 61—64.  
67. 68. 70. 82—86. 88. IX  
16—18. 24. 50. 53. 56—58.  
62. 65. 67—71. X 9. 10. 14.  
18. 20. 21. 36. 37. 53. XI  
41. 47. 54. XV 3. 7. 10.  
XX 1.  
Voluturnus fluvius VII 3. XV 4.  
Volumnia Marcii uxor VIII  
40—42. 45. 46.  
P. Volumnius cos. X 1.  
Uranus II 18.  
Urbina vestalis virgo IX 40.

- Xenophon Corinthius olyn-  
pionica IX 61.  
Xerxes IX 1.  
Xypetaeon Atheniensium pa-  
gus I 61.

- Zacynthos Dardani f. I 50.  
Zacynthos insula I 50.  
Zephyrium promontorium  
XIX 4.